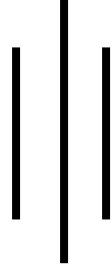
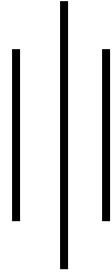


मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन



त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय-
अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह (पुरानो
पाठ्यक्रम शै.वर्ष वि.सं. २०५५/०५६) को
दोस्रो वर्षको आठौँ पत्रको प्रयोजनार्थ
प्रस्तुत



शोधपत्र



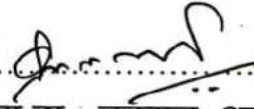
शोधार्थी

भवानीशङ्कर भट्टराई
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय,
कीर्तिपुर काठमाडौँ

शोधनिर्देशकको मन्तव्य

'मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन' शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र भवानीशङ्कर भट्टराईले मेरो सुपरिवेक्षणमा नेपाली विषयको स्नातकोत्तर तह (पुरानो पाठ्यक्रम शैक्षिक वर्ष वि.सं. २०५५/०५७) दोस्रो वर्षको आठौँ पत्रको प्रयोजनका लागि तयार गर्नुभएको हो । उहाँको लेखनप्रति म सन्तुष्ट छु । अतः आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुरसमक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०६०/१२/१६


.....
प्रा.डा. व्रतराज आचार्य
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रि.वि., कीर्तिपुर
काठमाडौँ ।

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

नेपाली केन्द्रीय विभाग
कीर्तिपुर

मिति: १४/२/०६१

स्वीकृतिपत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागका छात्र श्री भवानीशङ्कर भट्टराईले स्नातकोत्तर तह (पुरानो पाठ्यक्रम शैक्षिक वर्ष वि.सं. २०५५/०५७), दोस्रो वर्षको आठौं पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पार्नुभएको 'मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन' शीर्षकको शोधपत्र आवश्यक मूल्याङ्कन गरी स्वीकृत गरिएको छ ।

मूल्याङ्कन समिति

हस्ताक्षर

१) प्रा.डा. दयाराम श्रेष्ठ (विभागीय प्रमुख)

.....

२)  (साह्य परीक्षक)



३) प्रा.डा. ब्रतराज आचार्य (शोधनिर्देशक)

.....

कृतज्ञताज्ञापन

प्रस्तुत शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत स्नातकोत्तर तहको दोस्रो वर्षको आंशिक परिपूर्तिका लागि तयार गरिएको हो । यस शोधपत्रमा भानुभक्तका पनाति श्री मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन गरिएको छ । शोधलेखन निश्चय पनि गहन खोजअनुसन्धानको विषय हो, यसलाई सम्पन्न गर्न अनुसन्धानात्मक दृष्टि र धैर्यको आवश्यकता पर्दछ, तदनुरूप मैले यसलाई खोजमूलक र वस्तुपरक बनाउने यथाशक्य प्रयत्न गरेको छु ।

प्रस्तुत शोधपत्र मेरा आदरणीय निर्देशक गुरु प्रा.डा. ब्रतराज आचार्यज्यूको कुशल निर्देशन, सहयोग र परामर्शअनुरूप पूर्ण भएको हो । त्यसैले म वहाँप्रति सर्वप्रथम हार्दिक आभार र कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । त्यस्तै यस शोधपत्रको निर्माणक्रममा मैले शोधनायक मुक्तिनाथ आचार्यज्यूबाट हार्दिकतासाथ सामग्री, सहयोग र स्नेह पाएको छु, त्यसको लागि म वहाँप्रति चिरऋणी रहने छु । साथै यस शोधपत्र को निर्माणक्रममा पुस्तकालयीय र अन्य सहयोग जुटाइदिने भानु जन्मस्थल विकास समिति एवं भानु संस्कृत विद्यापीठ-चुँदी र सिद्धार्थ शिक्षासदन, भरतपुरप्रति म कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । त्यसैगरी सल्लाह-सुभाष एवं प्राविधिक सहयोग प्रदान गर्नुहुने भानु संस्कृत विद्यापीठका प्राचार्य माधवप्रसाद लामिछाने, सिद्धार्थ शिक्षासदनका शिक्षक पदमप्रसाद अर्याल, भानु सं.विद्यापीठका उप-प्राध्यापकहरू नारायणप्रसाद पौड्याल, पूर्णचन्द्र वाग्ले, चूडामणि भण्डारी एवं सहायक प्राध्यापक धुवराज गौतमप्रति म श्रद्धावनत छु । यस शोधपत्रको निर्माणमा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग गर्नुहुने चुँदीवासी महानुभावहरूलाई साधुवाद अर्पण गर्दछु । त्यस्तै यसको निर्माणमा अमूल्य सुभाष र व्यवस्थापकीय सहयोग प्रदान गर्नुहुने दिदी रमा दाहालप्रति पनि धन्यवाद टर्न्याउँछु । अन्त्यमा यस शोधपत्रको पाण्डुलिपि साफी गर्न सहयोग गर्ने जीवनसंगिनी अम्बिका र भाइ हरिप्रसाद तथा कम्प्युटर टड्क्न गर्ने पपुलर स्टेशनरी-भरतपुर र प्राविधिक सहयोग गर्ने स्टुडेन्टस् कम्प्युटर सर्भिस, कीर्तिपुर, नयाँबजारलाई धन्यवाद दिन्छु ।

मिति : २०६०/१२/१८

भवानीशङ्कर भट्टराई
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रि.वि., कीर्तिपुर

विषयसूची

पृष्ठसङ्ख्या

पूर्वपृष्ठ

| | |
|--------------------------|-----|
| १. शोधनिर्देशकको मन्तव्य | ii |
| २. स्वीकृतिपत्र | iii |
| ३. कृतज्ञताज्ञापन | iv |
| ४. विषयसूची | v |
| ५. संक्षिप्त शब्दसूची | ix |

परिच्छेद : एक शोध-परिचय

| | | |
|------|----------------------|---|
| १.१ | शोधशीर्षक | १ |
| १.२ | शोधकार्यको प्रयोजन | १ |
| १.३ | विषय-परिचय | १ |
| १.४ | समस्याकथन | २ |
| १.५ | उद्देश्यकथन | २ |
| १.६ | पूर्वकार्यको समीक्षा | २ |
| १.७ | शोधकार्यको औचित्य | ८ |
| १.८ | शोधकार्यको सीमाङ्कन | ८ |
| १.९ | शोधविधि | ८ |
| १.१० | शोधपत्रको रूपरेखा | ९ |
| १.११ | समय विभाजन | ९ |

परिच्छेद : दुई

मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यिक यात्रा

| | | |
|--------|----------------------------------|----|
| २.१ | जीवनी | |
| २.१.१ | जीवनीको रूपरेखा | १० |
| २.१.२ | पारिवारिक पृष्ठभूमि | १० |
| २.१.३ | जन्म | ११ |
| २.१.४ | बाल्यकाल | ११ |
| २.१.५ | अक्षरारम्भ र प्रारम्भिक शिक्षा | १२ |
| २.१.६ | व्रतबन्ध | १२ |
| २.१.७ | तनहुँसुर र ठूलीपोखरीमा अध्ययन | १२ |
| २.१.८ | विवाह | १३ |
| २.१.९ | रानीपोखरी पाठशालामा अध्ययन | १३ |
| २.१.१० | जागिरमा प्रवेश | १३ |
| २.१.११ | निजामती परीक्षा उत्तीर्ण | १४ |
| २.१.१२ | जागिरमा बढुवा | १४ |
| २.१.१३ | बन्दीपुर अदालत र काठमाडौँमा सेवा | १४ |
| २.१.१४ | गृहस्थी सञ्चालन | १४ |

| | | |
|--------|---|----|
| २.१.१५ | राजनीतिमा चासो | १५ |
| २.१.१६ | पुनः जागिरमा संलग्नता | १५ |
| २.१.१७ | अद्वैतसंस्थामा प्रवेश | १५ |
| २.१.१८ | तालुकदारको जिम्मेवारी | १६ |
| २.१.१९ | साहित्यिक क्षेत्रमा प्रवेश | १६ |
| २.१.२० | उद्योगसञ्चालन प्रयास | १६ |
| २.१.२१ | अद्वैतसंस्थामा केन्द्रीय सचिव | १७ |
| २.१.२२ | अध्ययन, लेखन र प्रकाशनमा संलग्नता | १७ |
| २.१.२३ | भ्रमण | १८ |
| २.१.२४ | आर्थिक अवस्था | १८ |
| २.१.२५ | बसोबास र पारिवारिक स्थिति | १९ |
| २.१.२६ | सामाजिक कार्यमा संलग्नता | १९ |
| २.१.२७ | सम्मान तथा उपाधि | २० |
| २.२ | मुक्तिनाथ आचार्यको व्यक्तित्व | २० |
| २.२.१ | पृष्ठभूमि | २० |
| २.२.२ | शारीरिक व्यक्तित्व | २१ |
| २.२.३ | जीवनीकार व्यक्तित्व | २१ |
| २.२.४ | कवि व्यक्तित्व | २१ |
| २.२.५ | निबन्धकार व्यक्तित्व | २२ |
| २.२.६ | आध्यात्मिक व्यक्तित्व | २२ |
| २.२.७ | सामाजिक व्यक्तित्व | २२ |
| २.२.८ | व्यावसायिक व्यक्तित्व | २३ |
| २.२.९ | भ्रमणशील व्यक्तित्व | २३ |
| २.२.१० | जागिरे व्यक्तित्व | २३ |
| २.२.११ | जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यलेखनबीच अन्तःसम्बन्ध | २४ |
| २.३ | मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्रा, चरण विभाजन र प्रवृत्ति | २४ |
| २.३.१ | मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्रा | २४ |
| २.३.२ | प्रकाशित कृतिहरूको विधागत वर्गीकरण | २५ |
| २.३.३ | अप्रकाशित कृतिहरू | २५ |
| २.३.४ | मुक्तिनाथको साहित्यिक यात्राको चरण विभाजन | २६ |

परिच्छेद : तीन
मुक्तिनाथ आचार्यका काव्यकृतिको विवेचना

| | | |
|----------|----------------------------------|----|
| ३.१. | पृष्ठभूमि | २९ |
| ३.१.१ | 'आह्वान' खण्डकाव्यको विवेचना | २९ |
| ३.१.१.१ | रचना, प्रकाशन, प्रेरणा, र प्रभाव | २९ |
| ३.१.१.२ | आख्यानयोजना | ३० |
| ३.१.१.३ | सारवस्तु | ३१ |
| ३.१.१.४ | शीर्षकविधान | ३४ |
| ३.१.१.५ | भावविधान | ३५ |
| ३.१.१.६ | सर्गयोजना र आयाम | ३५ |
| ३.१.१.७ | लयविधान | ३५ |
| ३.१.१.८ | कथनपद्धति | ३५ |
| ३.१.१.९ | बिम्ब र प्रतीकयोजना | ३६ |
| ३.१.१.१० | अलङ्कारविधान | ३७ |
| ३.१.१.११ | भाषाशैली | ३८ |
| ३.१.१.१२ | निष्कर्ष | ३९ |

| | | |
|--------|-----------------------------------|----|
| ३.२. | 'हितको संवाद' खण्डकाव्यको विवेचना | ३९ |
| ३.२.१ | रचना, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव | ३९ |
| ३.२.२ | आख्यानयोजना | ३९ |
| ३.२.३ | सारवस्तु | ४१ |
| ३.२.४ | शीर्षक विधान | ४२ |
| ३.२.५ | भावविधान | ४३ |
| ३.२.६ | सर्गयोजना र आयाम | ४३ |
| ३.२.७ | लयविधान | ४४ |
| ३.२.८ | कथनपद्धति | ४५ |
| ३.२.९ | बिम्ब, अलङ्कार र प्रतीकयोजना | ४५ |
| ३.२.१० | भाषाशैली | ४५ |
| ३.२.११ | निष्कर्ष | ४६ |
| ३.३. | विवेकचूडामणिको विवेचना | ४७ |
| ३.३.१ | रचना, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव | ४७ |
| ३.३.२ | आख्यानयोजना | ४८ |
| ३.३.३ | सारवस्तु | ५० |
| ३.३.४ | शीर्षकविधान | ५२ |
| ३.३.५ | भावविधान | ५२ |
| ३.३.६ | सर्गयोजना र आयाम | ५३ |
| ३.३.७ | लयविधान | ५४ |
| ३.३.८ | कथनपद्धति | ५४ |
| ३.३.९ | बिम्ब तथा प्रतीकयोजना | ५५ |
| ३.३.१० | अलङ्कार प्रयोग | ५६ |
| ३.३.११ | भाषाशैली | ५७ |
| ३.३.१२ | अनुवादकला | ५८ |
| ३.३.१३ | मौलिकता | ६१ |
| ३.३.१४ | निष्कर्ष | ६२ |

:

परिच्छेद चार मुक्तिनाथका जीवनीपरक कृतिहरूको विवेचना

| | | |
|-------|--|----|
| ४.१ | 'भानुको भावना' को विवेचना | ६४ |
| ४.१.१ | रचनाकाल, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव | ६४ |
| ४.१.२ | चरित्रनायक | ६४ |
| ४.१.३ | घटना | ६५ |
| ४.१.४ | परिवेश | ६८ |
| ४.१.५ | उद्देश्य | ६९ |
| ४.१.६ | भाषाशैली | ७० |
| ४.१.७ | निष्कर्ष | ७१ |
| ४.२ | आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनीको विवेचना | ७१ |
| ४.२.१ | रचनाकाल, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव | ७१ |
| ४.२.२ | चरित्रनायक | ७२ |
| ४.२.३ | घटना | ७३ |
| ४.२.४ | परिवेश | ७६ |
| ४.२.५ | उद्देश्य | ७६ |
| ४.२.६ | भाषाशैली | ७७ |
| ४.२.७ | आयाम | ७८ |
| ४.२.८ | अन्य कृतिसँग तुलना | ७८ |

| | |
|--|----|
| ४.२.९ मुक्तिनाथका निजी खोज | ८८ |
| ४.२.१० दुई जीवनीपरक कृतिका एकै घटनामा फरक मत | ८९ |
| ४.२.११ निष्कर्ष | ९० |

परिच्छेद : पाँच
मुक्तिनाथ आचार्यका फुटकर रचनाहरूको विवेचना

| | |
|--|----|
| ५.१ परिचय र विवरण | ९१ |
| ५.२ मुक्तिनाथका फुटकर कविताहरूको विवेचना | ९१ |
| ५.३ मुक्तिनाथका लेखरचनाहरूको विवेचना | ९४ |

परिच्छेद : छ
उपसंहार तथा निष्कर्ष

| | |
|------------------------------|-----|
| ६.१ उपसंहार | ९७ |
| ६.२ निष्कर्ष | ९९ |
| ६.३ भावी अनुसन्धानका विषयहरू | १०० |

परिशिष्टहरू
सन्दर्भ सामग्री विवरण

सक्षिप्तशब्दसूची

| सङ्क्षेपीकृत शब्द | पूर्णरूप |
|-------------------|---|
| अनू.प. | : अनूदित पद्य |
| अप्र.शो. | : अप्रकाशित शोधपत्र |
| खोजपूर्ण जीवनी | : आदिकवि भानुभक्त आचार्यः खोजपूर्ण जीवनी |
| गो.प. | : गोरखापत्र |
| चौ.सं. | : चौथो संस्करण |
| चौ.सं.सं. | : चौखम्बा संस्कृत संस्थान |
| ज.ब.रा. | : जङ्गबहादुर राणा |
| छैठौं.सं. | : छैठौं संस्करण |
| ते.सं. | : तेस्रो संस्करण |
| दो.सं. | : दोस्रो संस्करण |
| ने.रा.प्र.प्र. | : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान |
| ने.औ.वि.क. | : नेपाल औद्योगिक विकास कम्पनी |
| प्र.गृ. | : प्रकाशनगृह |
| पृ. | : पृष्ठ |
| पङ् | : पङ्क्ति |
| प्रा. | : प्राध्यापक |
| पाँचौं सं. | : पाँचौं संस्करण |
| सं.मा.वि. | : संस्कृत माध्यमिक विद्यालय |
| भा.ज.वि.स. | : भानु जन्मस्थल विकास समिति |
| मूलप. | : मूलपद्य |
| रत्न पु.भ. | : रत्नपुस्तक भण्डार |
| वि.सं. | : विक्रम संवत् |
| साभा प्र. | : साभा प्रकाशित |
| सम्पा. | : सम्पादक |
| सच्चा जीवन चरित्र | : आदिकवि भानुभक्त आचार्यको सच्चाजीवन चरित्र |
| सा.स. | : साहित्य सम्मेलन |

परिच्छेद एक शोध-परिचय

१.१ शोधशीर्षक

यस शोधपत्रको शीर्षक 'मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन' रहेको छ ।

१.२ शोधकार्यको प्रयोजन

यो शोधकार्य स्नातकोत्तर तहको नेपाली विषयको आठौं पत्रको प्रयोजनका निम्ति लेखिएको हो ।

१.३ विषय-परिचय

प्रस्तुत शोधपत्र शोधनायक मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी र व्यक्तित्वको प्रकाशन गर्दै उनका पुस्तकाकार र फुटकर रचनाहरूको विवेचनामा केन्द्रित छ । वि.सं. १९८३ मा पिता देवीभक्त तथा माता दिव्यलोकाका साहिंला पुत्ररत्नका रूपमा चुँदीरम्घामा जन्मिएका मुक्तिनाथले संस्कृतमा प्रथमा र निजामतीतर्फ ११ कक्षा उत्तीर्ण गरेका छन् । अध्ययनकै क्रममा उनी निजामती सेवातर्फ आकृष्ट भई वि.सं. १९९९ वैशाखबाट लेखनदास सिपाही पदमार्फत जागिरमा प्रविष्ट देखिन्छन् । त्यसपछि क्रमशः खरदार पदसम्म बढुवा भई वि.सं. २०२० पछि उनले जागिरबाट अवकास लिएका छन् । यसपछि वि.सं. २०२३ मा अद्वैतसंस्थामा प्रवेश भई उनी वि.सं. २०३६-०३९ बीच सो संस्थाको केन्द्रीय सचिव समेत भएका छन् । यसै बीच उनले लेखनदास र तालुकदारी कार्यलाई निरन्तरता दिँदै वि.सं. २०३२-०३५ बीच घरेलु उद्योग सञ्चालनप्रयास पनि गरेका छन् । हाल उनी उपर्युक्त व्यावसायिक कार्यहरूबाट विरत भई आध्यात्मिक र साहित्यिक क्षेत्रमा संलग्न रहदै आएका छन् । मुक्तिनाथ आचार्यको व्यक्तित्वपुञ्ज साहित्यिक, आध्यात्मिक र सामाजिक व्यक्तित्वको सङ्गमबाट बनेको देखिन्छ । उनी साहित्यमा कविता, खण्डकाव्य, जीवनी, अनुवादकाव्य र निबन्धरचनामा संलग्न छन् भने आध्यात्मिक क्षेत्रमा ज्ञान भक्ति र वैराग्ययोगको अध्येता व्याख्याताका रूपमा सुपरिचित छन् । त्यस्तै सामाजिक क्षेत्रमा उनी विद्यालय सञ्चालक, निर्माणकर्ता, अशक्त एवं असहायप्रति कानुनी सहयोगी, सामाजिक कार्यहरूको सञ्चालक र व्यवस्थापक एवं भूमिदाता र चन्दादाताका रूपमा पनि चिनिएका छन् । यी कार्यहरूमध्ये कतिपय क्षेत्रमा उनको नेतृत्वदायी भूमिका रहेको छ । उनका हालसम्म दुई खण्डकाव्य, दुई भानुभक्तीय जीवनी र एउटा पद्यानुवाद काव्य गरी पाँच कृति प्रकाशित छन् । 'आह्वान' (२०२९) र 'हितको संवाद' (२०३९) उनका खण्डकाव्य हुन् भने 'भानुको भावना' (२०२९) र 'आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी' (२०४२) उनका प्रकाशित जीवनीमूलक कृति हुन् । उनको पद्यानुवाद काव्य आदि शङ्कराचार्यद्वारा रचित 'विवेकचूडामणि' को नेपाली पद्य भावानुवाद (२०५८) हो । यसका अतिरिक्त उनका एक दर्जन लेखरचनाहरू अन्य

पत्रपत्रिकाहरूमा प्रकाशित देखिन्छन् । प्रस्तुत शोधपत्रमा शोधनायकका उपर्युक्त कृतिहरूको विवेचना गरिएको छ ।

१.४ समस्याकथन

वि.सं. २०१८ मा सार्वजनिक भएको 'देशको ठूलो धन: जनबल' शीर्षकको कविता मार्फत साहित्यिक क्षेत्रमा उदाएका मुक्तिनाथले विभिन्न विधा उप-विधाका ती कृति मार्फत के कस्ता विषय र भाव अभिव्यक्त गरेका छन् ? त्यस्तै नेपाली साहित्यका चर्चित व्यक्तित्व भानुभक्त आचार्यको जीवनीमा आधारित उनका दुई कृतिले चरित्रनायकको चरित्र सम्बन्धी मतमतान्तरित विषयहरूमा के कस्तो निष्कर्ष प्रदान गरेका छन् ? त्यसैगरी आदि शङ्कराचार्यद्वारा रचित विवेकचूडामणिलाई नेपालीमा छन्दोबद्ध भावानुवाद गरेका मुक्तिनाथले त्यसमा के कति साहित्यिक मर्म र अनुवादकौशल प्रदर्शन गरेका छन् ? यी र यस्ता केही समस्याहरू उठाएर यस शोधमा तिनीहरूको समाधान गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

१.५ उद्देश्यकथन

वि.सं. २०१८ बाट साहित्यिक यात्रा प्रारम्भ गरेका मुक्तिनाथले प्रारम्भिक रचनाहरूमा जनगणना र कृषिगणना सम्बन्धी चेतना प्रवाह गर्दै साहित्यिक कृतिहरूमा नीति, दर्शन, अध्यात्म, समाज आदि विषयमार्फत उपदेश र राष्ट्रनिर्माणको भावना पोखेका छन् । त्यस्तै उनले भानुभक्त आचार्यको जीवनीमार्फत उनका जीवनचरित्रका विविध पक्षहरूमाथि प्रकाश पार्दै भानुभक्तको पारिवारिक स्रोतबाट प्राप्त भएका र खोजअनुसन्धानबाट उपलब्ध केही विषयहरूमा खोजमूलक निष्कर्ष प्रदान गरेका छन् । त्यसैगरी अनूदित काव्य विवेकचूडामणिमा काव्यिक मर्यादालाई कायम गर्दै उनले अनुवादसम्बन्धी मान्यताको सामान्य पालना गरेका छन् । साथै यस अनुवादकाव्यमा मौलिकता पनि प्रस्तुत गरेका छन् ।

१.६ पूर्वकार्यको समीक्षा

क) मुक्तिनाथ आचार्यको वि.सं. २०२८ मा प्रकाशित 'भानुको भावना' नामक कृतिसम्बन्धी समीक्षात्मक टिप्पणीहरू यसप्रकार छन् :

अ) पं. रुद्रशङ्कर पौडेल यस कृतिबारे लेख्छन्- "कवि भानुभक्तको जीवनीका बारेमा विभिन्न ग्राम र देशवासी कविहरूले कल्पनाका भरमा उल्लेख गर्नुभएको विषयभन्दा कविजीकै परम्परागत रक्तबीजबाट उत्पन्न भई कविजीकै रहन-सहनमा फस्टाउनुभएका कविप्रपौत्र मुक्तिनाथले भानुभक्तका फुटकर कविताहरूको एवं तद्देशवासी जनताहरूको चालचलन र जनश्रुतिलाई समेत हृदयङ्गम गरी लेखेको लेख नै सर्वात्मना सुन्दर र सम्मानित हुने छ, भन्ने मेरो दृढधारणा रहेको छ ।" वस्तुतः कुनै पनि व्यक्तिको जीवनी उसको सन्ततिले लेख्दा जति आधिकारिक र प्रामाणिक हुनसक्छ, त्यति भौगोलिक दूरीमा रहेको व्यक्तिले लेख्दा नहुनसक्छ । अतः भानुभक्तको जीवनचरित्रका स-साना घटनाहरूको प्रकाशन गर्ने मुक्तिनाथको सर्वपक्षीय खोजी भानुभक्तीय जीवनगाथाको निकर्ण गर्न निश्चय पनि दृढप्रमाण हुनेछ, भन्ने आशा गर्न सकिन्छ, तर उक्त कथन मुक्तिनाथका कृतिमूल्याङ्कनको सार नभई भूमिकाकथनमात्र भएकोले पूर्ण देखिँदैन ।

- आ) सूर्यविक्रम ज्ञवाली भानुको भावनाको भूमिकामा (वि.सं. २०२८, पृ. ६) लेख्छन्- “मुक्तिनाथ आचार्य दार्शनिक व्यक्तित्व हुनाले वहाँले आफ्ना प्रपितामह भानुभक्तलाई कर्मयोगी दार्शनिकका रूपमा चिनाउने जुन प्रयत्न गर्नु भएको छ त्यो प्रशंसनीय छ ।” निश्चय पनि भानुभक्त कर्मयोगी व्यक्तित्व हुन् । यो कुरा मुक्तिनाथको जीवनीको अध्ययनबाट प्रष्ट हुन्छ । तर मुक्तिनाथको व्यक्तित्वको समग्रता दार्शनिकतामात्र नभएकोले यो भनाइ पनि मुक्तिनाथको व्यक्तित्वपहिचान गराउँन पर्याप्त देखिँदैन ।
- इ) शिवगोपाल रिसाल भानुको भावनाको भूमिकामा (वि.सं. २०२८, पृ. १५) लेख्छन्- “आफ्ना बराजूको जीवनी र उनका समीक्षात्मक भावना लिएर नेपाली साहित्यको जीवनी र समीक्षा क्षेत्रमा पहिलोपटक देखा परेका मुक्तिनाथ आचार्यले आफ्ना कृतिमा आफूले देखेका, सुनेका र लेखिएका प्रायः घटनालाई राम्रो ढङ्गले प्रस्तुत गरेका छन् । मुक्तिनाथ आचार्यले यस कृतिमा भानुभक्तको दार्शनिक पक्षलाई मार्मिक ढङ्गले अभिव्यक्त गरेको देखिन्छ । प्रतिपादनशैली पनि रोचक र पौराणिक ढङ्गको भएकाले प्रस्तुत पुस्तकको आफ्नै विशेषता देखिन्छ ।” रिसालले उठाएको अर्को सन्दर्भ वर्णनशैलीको हो । रिसालले यस कृतिको शैलीलाई पौराणिक भनी उल्लेख गरे पनि मुक्तिनाथको शैलीशिल्पको सम्पूर्णता पौराणिकतामात्र नभएकोले उक्त भनाइ यस कृतिको विवेचनमा पर्याप्त छैन ।
- ई) डिल्लीराम मिश्र श्रमजीवी नेपाल अधिराज्यमा तनहुँमा (वि.सं. २०४५, पृ. ४०२-३) नामक कृतिमा लेख्छन्- “मुक्तिनाथको प्रस्तुत कृति समालोचनात्मक जीवनी हो ।” भानुभक्तीय जीवनीमा आधारित प्रस्तुत कृति समालोचनात्मक शैलीमा लेखिएको छ, भन्ने मिश्रको अभिप्राय भए पनि यसमा समालोचनात्मक शैलीको भिनो सङ्केत मात्र देख्न सकिन्छ ।
- उ) नेपाल अधिराज्यमा तनहुँको दोस्रो संस्करणमा उनी (वि.सं. २०५७, पृ. २६३) लेख्छन्- “संसारको सबैभन्दा ठूलो शक्ति भावनाशक्ति हो । भावना वा भाव शक्तिको चरमोत्सर्गपछि मात्र मानिसमा तर्क-वितर्क द्वन्द्व र चिन्तन पक्षको महत्त्व बढ्न जान्छ । असल भावनाले राम्रै वस्तुको सिर्जना गर्दछ । भानुभक्तको भावना पवित्र थियो । साँघुरिएको र असमानतापूर्ण समाजलाई सम्याउदै बाँच र बाच्च देऊको भावनालाई चरितार्थ गर्नु नै उनको भावना हो । भानुभक्तले जुन ज्ञानको उपदेश दिएका छन् तिनै प्राचीन दर्शनसम्मत ज्ञानलाई हामीले जीवनाधार तुल्याउनुपर्छ, भन्ने निचोड भानुको भावनामा रहेको छ ।” भावनाले संसारमा परिवर्तन ल्याउने चर्चा गर्दै भानुभक्तमा विद्यमान बाँच र बाँच्चदेऊको भावना मुक्तिनाथको यस कृतिमा आफूले पाएको कुरा डिल्लीराम मिश्रले उल्लेख गरेपनि यस कृतिमा समानताको भावना मुखरित भएको देखिँदैन । यसमा त भानुभक्तसम्बद्ध आध्यात्मिक र परोपकारी भावनाको सामान्य चर्चा छ ।

ख) मुक्तिनाथ आचार्यको 'आह्वान' खण्डकाव्यसम्बन्धी समीक्षात्मक टिप्पणीहरू यसप्रकार छन् :

अ) बालकृष्ण सम आह्वान खण्डकाव्यको भूमिकामा (वि.सं. २०२८ पृ. ग-घ) लेख्छन्- “कवि मुक्तिनाथ आचार्यले आफ्ना बराजूको सरस र सरलशैलीलाई यस काव्यमा सफलतापूर्वक उतारेका छन् । “उनले यस काव्यमा देशको यथार्थ अवस्था बुझेर जनतालाई उपदेश दिने कुरामा अहिले भानुभक्त भएका भए के लेख्दाहुन् सो भावना उतार्न सफल भएका छन् ।” माथिका भनाइको विश्लेषणबाट सम यस काव्यमा प्राप्त सरलशैली र औपदेशिकतालाई महत्त्व दिन्छन् भन्ने अवगत हुन्छ ।

आ) सूर्यविक्रम ज्ञवाली आह्वान खण्डकाव्यको भूमिकामा (वि.सं. २०२९, पृ. ड-च) लेख्छन्- “भानुभक्तले जो ज्ञानको उपदेश आफ्ना कविताहरूमा गरेका छन् तिनै प्राचीन दर्शनसम्मत ज्ञानलाई हामीले जीवनाधार तुल्याउनुपर्छ भन्ने मुक्तिनाथ आचार्यको विचार रहेको छ। आजको समाजमा भएको व्यक्तिगत र जातीय समस्याको विकासको परिणाम स्वरूप जन्मिएका अन्य समस्याहरूलाई निराकरण गर्न आवश्यक पर्ने मानसिक पृष्ठभूमि सहितको ज्ञान कस्तो र कुन दर्शनसम्मत हुनुपर्छ भन्ने कुरालाई मुक्तिनाथको यस खण्डकाव्यले राम्ररी प्रस्तुत गरेको छ ।” वस्तुतः मुक्तिनाथ प्राचीन दर्शनसम्मत ज्ञानका अनुयायी हुन् । हाम्रा प्राचीन आदर्शलाई मुक्तिनाथले महत्त्व दिएको कुरा ज्ञवालीको उक्त कथनबाट बुझ्नसकिन्छ । हाम्रा प्राचीन परम्परा र ज्ञानलाई हामीले आत्मसात गर्नुपर्छ भन्ने सन्दर्भमा उनको उक्त टिप्पणी उपयुक्त नै देखिन्छ ।

इ) भवानी घिमिरे आह्वान खण्डकाव्यको भूमिकामा (वि.सं. २०२९, पृ. ६) लेख्छन्- “हाम्रो समाजको असमानता हटाएर बाँच र बाँच्नदेऊको भावनालाई अङ्गाल्दै आह्वान खण्डकाव्यले उज्यालो भविष्यका लागि सारा नेपालीहरूलाई हुट्टुहुट्ट्याएको छ । हामी वहाँका सरल पङ्क्तिहरूबीच भानुभक्तलाई चियाउन सक्छौं ।” घिमिरेले प्रस्तुत काव्यलाई असमानता हटाएर समानता ल्याउने पहलकदमीका रूपमा मूल्याङ्कन गरे पनि यसका अतिरिक्त प्रकृतिचित्रण, नीति र दर्शन पनि यसको सारवस्तु भएकोले प्रस्तुत कृतिले यस विषयलाई मात्र महत्त्व दिएको देखिँदैन ।

ई) 'नयाँ किरण' साप्ताहिक (वि.सं. २०३० पृ. ?) आह्वान खण्डकाव्यका बारेमा लेख्छ- “मुक्तिनाथ यस काव्यमा आह्वानकर्ता भएर मात्र उभिएका छैनन्, अपितु समस्याहरूको समाधानकर्ताका रूपमा समेत चिनिएका छन् । “यस कृतिमा मुक्तिनाथले आजको नेपालले गर्नुपर्ने उन्नति र प्रगतिका सम्बन्धमा समसामयिक राष्ट्रियताको भावलाई पोखेका छन् । “यस पुस्तिकामा उनले धर्म, विकास, मेल, मित्रता शान्ति एवं उद्योगधन्दा तथा विद्याबुद्धि र गरिबी आदिका सम्बन्धमा केवल समस्यामात्र नदर्शाएर समाधान पनि दिएका छन् । त्यसैले प्रस्तुत आह्वानलाई केवल कोरा प्रश्नवाचक चिन्ह अगाडि उपस्थित

गराइदिने आह्वानको रूपमा मात्र नलिई समाधानयुक्त आह्वानको रूपमा समेत ग्रहण गर्न सकिन्छ ।” मुक्तिनाथको यस कृतिलाई उक्त पत्रिकाले गरिबी, असमानता, बेमेल आदि समस्याहरूलाई समाधान गर्ने माध्यमका रूपमा हेर्न सकिने निष्कर्ष निकाल्नु उपयुक्त देखिए पनि उक्त भनाइ यस कृतिको विवेचनमा पूर्ण छैन ।

- उ) डिल्लीराम मिश्र श्रमजीवी नेपाल अधिराज्यमा तनहुँ पुस्तकमा (वि.सं. २०४५ पृ. ४०१-३) लेख्छन्- “श्री आचार्यका कृतिमा प्राकृतिक सौन्दर्य, कर्तव्याकर्तव्यको दिशाबोध, नैतिक उपदेश तथा आध्यात्मिक जीवनपद्धतिमा विचारभावना पोखिएको पाइन्छ, भने मौलिक चित्रण गर्नमा पनि यस कृतिबाट योगदान पुग्न गएको छ ।”
- ऊ) ‘नेपाल अधिराज्यमा तनहुँ’ को दोस्रो संस्करणमा उनी (वि.सं. २०५७ पृ. २६३-६४) लेख्छन्- “वि.सं. २०२९मा प्रकाशित उनको दोस्रो पुस्तक आह्वान मौलिक पद्य हो । प्राकृतिक सौन्दर्यवर्णन र कर्तव्यनिर्देशन यस काव्यमा पाइने खुराक हुन् ।” प्रस्तुत काव्य प्रकृति चित्रणमूलक छ, भन्ने मिश्रको कथन आंशिक सत्य भए पनि यो कृति मौलिक पद्य हो भन्ने विचार चाहिँ सत्य देखिँदैन ।

ग)

- ‘हितको संवाद’ खण्डकाव्यसम्बन्धी समीक्षात्मक टिप्पणीहरू यसप्रकार छन् :
- अ) माधव घिमिरे यस कृतिको भूमिकामा (वि.सं. २०३४, पृ. ख) लेख्छन्- “हाम्रा ऋषिमुनिहरू जरामा पानी हाल्ने कुरा गर्छन् हाँगामा पानी हाल्ने एकैछिनमा सुकेर जान्छ, जरामा पानी हाल्ने रूख सधैं हरियो भइरहन्छ । जीवनलाई हरियो बनाउन हाम्रो मूल प्रवृत्तिको परिष्कार गर्नु पर्छ अनि हाम्रा उप-प्रवृत्तिहरू आफैँ परिष्कृत बन्छन् । चोरी नगर भन्नु हाँगामा पानी हाल्नु जस्तै हो भने लोभ नगर भन्नु जरामा पानी हाल्नु जस्तै हो । हाम्रो आशय पवित्र बन्नुपर्छ अनि हाम्रा सबै व्यवहारहरू स्वतः पवित्र बन्छन् । मैले हितको संवादमा यही कुरा पाएँ ।” हाम्रा मूल प्रवृत्ति र आशय परिष्कृत भए भने हाम्रो जीवन स्वतः परिष्कृत बन्ने हुनाले हाम्रा मूल प्रवृत्तिलाई सुधार्न मुक्तिनाथका कृतिले प्रेरित गरेको कुरा माधव घिमिरेले बताएका छन् ।
- आ) उपेन्द्र आचार्य (वि.सं. २०३९, पृ. ?) लेख्छन्- “नागरिकहरूको हित के गर्दा हुन्छ भन्ने विषयमा लेखिएको प्रस्तुत कृतिले नसाले ग्रस्त आजको युवावर्गलाई तीक्ष्णप्रहार गरेको छ । यो खण्डकाव्य नैतिक र शैक्षिक दृष्टिले उपयोगी हुनका साथै यसले आध्यात्मिक चेतनाको लहर पनि फैलाएको छ ।” मुक्तिनाथको प्रस्तुत कृति नागरिकको हित चिताउने दिशामा केन्द्रित हुनका साथै उनीहरूमा आध्यात्मिक जागरण ल्याउन सफल छ, भन्ने कुरा आचार्यले सङ्केत गरेको पाइन्छ ।
- इ) डिल्लीराम मिश्र श्रमजीवी नेपाल अधिराज्यमा तनहुँ, दो.सं. मा (वि.सं. २०५७, पृ. २६४) लेख्छन्- “मुक्तिनाथको हितको संवाद

मौलिक खण्डकाव्य हो । यस कृतिमा शत्रु र मित्रको स्वरूप, पाप पुण्य र हिंसाको स्वरूप, दिनचर्या कस्तो हुनुपर्छ ?, देवपूजाको रहस्य, सत्वादिगुणकर्मयोगको स्वरूप र त्यसको फल तथा भक्ति र ज्ञानको स्वरूपका बारेमा वर्णन गरिएको छ ।” समीक्षक मिश्रले हितको संवादलाई संरचनात्मक आधारमा खण्डकाव्य स्वीकारेका छन् । यस काव्यमा केही तत्त्वहरू नपाइएका कारण यसलाई खण्डकाव्य सिद्धान्तअनुसार खण्डकाव्य भन्न कठिन देखिन्छ तापनि यसलाई आधुनिक र पृथक् पहिचान भएको खण्डकाव्य भन्न सकिन्छ ।

ई) डिल्लीराम मिश्र कान्तिपुर दैनिकमा (वि.सं. २०५९, पृ.?) लेख्छन्- “रामगीता र भानुभक्तीय रामायणको सस्कारजन्य-पद्धतिबाट रसाएर हितको संवाद चुँदीखोलाको पानी जस्तै निर्मल छ । हितको संवादको सन्देश के भने प्रत्येक मानिसको नियत, चरित्र र नैतिक आशय पवित्र बन्नुपर्छ । तब मात्र सारा व्यवहार र शैलीहरू स्वतः पवित्र बन्छन् ।” समीक्षक मिश्रले माधव घिमिरेको समर्थन गर्दै हाम्रा नियत, चरित्र र नैतिक आशय पवित्र बन्नुपर्छ भन्ने कुरालाई समर्थन गरेका छन् । अतः हितको संवादमा माधव घिमिरेले औल्याएको मूल आशय पवित्र बनाउने कुरामा मिश्रको समर्थनले यस काव्यको मुख्य सन्देश यही हो भन्न थप मद्दत पुगेको छ ।

घ)

आदिकवि भानुभक्त आचार्य : खोजपूर्ण जीवनीसम्बन्धी समीक्षात्मक टिप्पणीहरू यसप्रकार छन् :

अ) आमोदवर्धन कौडिन्यायन गोरखापत्रको शनिवासरीय परिशिष्टाङ्कमा (वि.सं. २०४४) लेख्छन्- “नेपाली राष्ट्रिय आदिकवि भानुभक्त आचार्यका विषयमा परम्परागत कुराहरूमा परिष्कार गर्दै जानु राम्रो हो तर विनाप्रमाण कहिले केही र कहिले केही भनेर अन्योलको वातावरण सृष्टि गर्नु राम्रो देखिदैन ।” आमोदवर्धनले उठाएको स-प्रमाण परिष्कारको कुरा अत्यन्त उपयुक्त देखिन्छ ।

आ) डिल्लीराम मिश्र श्रमजीवी नेपाल अधिराज्य तनहुँ पुस्तकमा (वि.सं. २०४५, पृ. ४०२-३) लेख्छन्- “यसपूर्व अन्य जीवनीकार-हरूले भानुभक्तीय जीवनी प्रकाशित गरेका भए पनि अन्दाज गरेको वस्तुभन्दा देखेको वस्तु नै सत्य हुने भएकाले मुक्तिनाथको यो जीवनी अवश्यै खोजपूर्ण हुनसक्छ ।” भानुभक्तकै अर्का सन्तति नरनाथ आचार्यद्वारा लिखित सच्चाजीवन चरित्रसँग यस कृतिको तुलना गर्दै मिश्र अगाडि लेख्छन्- “नरनाथ र मुक्तिनाथका विचार बाहिनमा पहिलो कुरा मानिसलाई हेर्ने दृष्टिकोण भिन्न हुनसक्छ भने दोस्रो कुरा चाहिँ मुक्तिनाथको यस कृतिभन्दा पच्चीस वर्ष पहिले नरनाथले भानुभक्तीय जीवनी प्रकाशित गरेका हुदाँ उनी अवश्यै आधिकारिकताको नजिक पुगेका छन् ।” पारिवारिक स्रोतको मानिसले अनायास पनि चरित्रनायकबारे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष धेरै जानकारी पाएको हुन्छ । जीवनीकारभन्दा नरनाथ र नरनाथभन्दा मुक्तिनाथ

भानुभक्तका नजिकका पारिवारिक व्यक्तित्व भन्ने निष्कर्ष सत्यको नजिक हुनसक्छ ।

- इ) डिल्लीराम मिश्र कान्तिपुरमा यस कृतिबारे (वि.सं. २०५९ पृ. ?) लेख्छन्- “अन्वेषक मुक्तिनाथ आचार्यको खोजपूर्ण जीवनी एक सकारात्मक पाइला हो । यस कृति मार्फत मुक्तिनाथले भानुभक्तीय जीवनीमा देखापरेका गल्तीहरूको निरूपण गर्दै समालोचकीय क्षेत्रमा विशेष योगदान पुऱ्याएको चर्चा गरेका छन् ।”
- ई) रत्ननिधि रेग्मी साप्ताहिक विमर्शमा (वि.सं. २०५१ पृ. ?) लेख्छन्- “मुक्तिनाथले खोजपूर्ण जीवनीमा मोतीराम भट्ट, ब्रह्म शमशेर, नरनाथ, सूर्यविक्रम ज्ञवाली आदिका तर्कहरूमाथि बहस चलाएका छन् । साथै उनले परम्परा एवं अन्यस्रोतबाट सुनेका एवं पाएका सामग्रीहरूलाई विश्लेषण गरेर भानुभक्तीय जीवनीका विवादास्पद घटनाहरूमा देखिएका भ्रमहरूको तर्कसाथ निवारण गरेका छन् ।” मुक्तिनाथले आफ्नो कृतिमा पूर्ववर्ती जीवनीकारका धारणाहरूको खण्डन गरेको कुरा निश्चय नै साँचो हो । तर उनले विवादित घटना प्रसङ्गको समाधानमा भने पूर्ण सफलता पाएको देखिँदैन ।

ड)

मुक्तिनाथ आचार्यको अनूदित काव्य विवेकचूडामणिसम्बन्धी समीक्षात्मक टिप्पणीहरू यसप्रकार छन् :

- अ) माधव घिमिरेको भनाइलाई साभार गर्दै हिमालय टाइम्सका सम्वाददाता (वि.सं. २०५९, पृ. ?) लेख्छन्- “आदिकवि भानुभक्त आचार्यका पनाति मुक्तिनाथ आचार्यले संस्कृत महाकाव्यको नेपाली अनुवाद गरेर आफ्ना पुर्खाको विडो मात्र धानेका छैनन्, अपितु नेपाली साहित्यको इतिहासमा महत्त्वपूर्ण योगदान समेत दिएका छन् ।” माथिका घिमिरेका भनाइअनुसार विवेकचूडामणिलाई महाकाव्य स्विकारिएको छ ।
- आ) माधव घिमिरेको भनाइलाई साभार गर्दै कान्तिपुर संवाददाता (वि.सं. २०५९, पृ. ?) लेख्छन्- “विज्ञानको विकासले आजको विश्व अणुविभाजन भैँ खण्ड-खण्डमा रूपान्तरित भएको बेला प्रत्येकले आफूभित्र साधना गरेर संसार हेर्ने दृष्टिकोण बनाउनुपर्छ । यसै सन्दर्भमा प्रकाशित यो कृति शान्तिको स्रोत हुनसक्छ ।” वस्तुतः आजको सन्दर्भमा कवि घिमिरेले यस पुस्तकबाट गरेको आशा अत्यन्त सान्दर्भिक र उपयुक्त छ । त्यही समाचारकै क्रममा प्रस्तुत अनुवाद पढ्नेलाई सजिलो र सुन्नेलाई श्रुतिमधुर छ भनेर श्रीभद्र शर्माले दिएको प्रतिक्रिया उचित छ, किनकि यो कृति गम्भीर विषयमा तयार भएर पनि अत्यन्तै सरल र सरस छ । तर त्यस समाचारमा बीस वर्ष लगाएर अनुवाद गरिएको भन्ने कुरा चाहिँ सर्वथा गलत हो । अनुवादक स्वयंले दिएको जानकारीअनुसार प्रस्तुत कृति चार वर्षमा (वि.सं. २०४६-०५०) तयार भएको हो ।

इ) डिल्लीराम मिश्र कान्तिपुर पत्रिकामा (वि.सं. २०५९, पृ. ?) लेख्छन्-
 “आदि शङ्कराचार्यद्वारा संस्कृतमा विरचित विवेकचूडामणि जस्तो महाकाव्यको कवि मुक्तिनाथ आचार्यले वि.सं. २०५८ मा छन्दोबद्ध भावानुवाद गरेका छन् । ऐतिहासिक संस्कृत महाकाव्य रामायणको नेपाली अनुवाद गर्ने भानुभक्तका पनातिले उक्त कृतिलाई नेपालीमा अनुवाद गर्नु गौरवको विषय हो ।” मिश्रले यस अनुवादलाई भावानुवाद स्वीकारेका छन् । अनुवादकले पनि यस कृतिको भूमिकामा भावानुवाद लेखेका छन् । कृतिको समग्र अध्ययन गर्दा पनि यो अनुवाद शब्दानुवाद र छाया अनुवाद सिद्ध नभई भावानुवाद नै हो भन्ने पुष्टि हुन्छ । मिश्रले उठाएको दोस्रो कुरा भानुभक्त आचार्यले रामायणको भावानुवाद गरेको परम्परामा मुक्तिनाथले पुर्खाको बिडो थामेका छन् भन्ने कुरा चाहिँ उपयुक्त छ ।

मुक्तिनाथका कृति सम्बद्ध माथिका व्याख्यान, विश्लेषण, भूमिकाकथन र परिचयात्मक लेखहरू उनका कृतिहरूको अध्ययन विवेचनमा पर्याप्त देखिदैनन् । यिनीहरूमार्फत मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, उनको बहुआयामिक व्यक्तित्व र उनले हालसम्म प्रकाशित गरेका साहित्यिक कृति र फुटकर रचनाहरूको तात्त्विक विवेचन, विश्लेषण, तुलना र निष्कर्ष समाहित भएको पाइदैन । अतः प्रस्तुत शोधपत्रमा लेखकका प्रकाशित कृति र फुटकर रचनाहरूको तात्त्विक विवेचन आदि प्रस्तुत गरिएको छ ।

१.७ शोधकार्यको औचित्य

नेपाली साहित्यको खण्डकाव्य जीवनी र अनुवाद उपविधामा कलम चलाएका मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, उनको बहुआयामिक व्यक्तित्व र उनका साहित्यिक आध्यात्मिक तथा फुटकर रचनाहरूको अध्ययन विवेचन गर्नु नितान्त आवश्यक देखिन्छ । अतः सो उद्देश्य परिपूर्तिका लागि यस शोधपत्रको तयारी गरिएको हो ।

१.८ शोधकार्यको सीमाङ्कन

यस शोधपत्रमा साहित्यकार मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, उनको व्यक्तित्व र उनले हालसम्म प्रकाशित गरेका दुई खण्डकाव्य, दुई जीवनीपरक कृति, एउटा अनूदित काव्य र एक दर्जन फुटकर लेखरचनाहरूको तात्त्विक विवेचन गरी निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ । साथै अतिरिक्त पक्षान्तर्गत जीवनीमूलक कृतिमा अन्य समान प्रकृतिका कृतिसँग यसको तुलना गरिएको छ भने अनुवाद काव्यमा चाहिँ अनुवादशैली र मौलिकताबारे छोटो अध्ययन गरिएको छ । उपर्युक्त कृतिका गूढतत्त्वको अध्ययन विवेचनलाई यस शोधपत्रको सीमा बनाइएको छ ।

१.९ शोधविधि

प्रस्तुत शोधपत्रमा अध्ययन गरिएका साहित्यिक कृतिहरूलाई सम्बद्ध विधाका आधारभूत तत्त्वहरूका आधारमा विवेचन गरी निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ । साथै अतिरिक्त महत्त्वपूर्णपक्षान्तर्गत जीवनीमूलक कृतिमा मिल्दा अन्य कृतिसँग तुलना प्रस्तुत छ भने अनूदितकाव्यमा चाहिँ अनुवादशैली र मौलिकताको पहिचान गर्ने प्रयत्न गरिएको छ । यस क्रममा शोधकार्यलाई व्यवस्थित र वस्तुगत बनाउन पुस्तकालयीय तथा क्षेत्रीय पद्धतिबाट सामग्रीहरू सङ्कलन गरेर तिनीहरूलाई वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, तुलनात्मक र

जीवनीपरक आदि मिल्दा पद्धतिहरूबाट अध्ययन विश्लेषण गरी शोधनिष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

१.१० शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रलाई सन्तुलित र व्यवस्थित ढङ्गले निर्माण गर्न निम्नानुसारको परिच्छेद र विषय विभाजन गरिएको छ :-

- परिच्छेद एक : शोधपरिचय
- परिच्छेद दुई : मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यिक यात्रा
- परिच्छेद तीन : मुक्तिनाथ आचार्यका काव्यकृतिहरूको विवेचना
- परिच्छेद चार : मुक्तिनाथ आचार्यका जीवनीपरक कृतिहरूको विवेचना
- परिच्छेद पाँच : मुक्तिनाथ आचार्यका फुटकर रचनाहरूको विवेचना
- परिच्छेद छ : उपसंहार तथा निष्कर्ष

१.११ समय विभाजन

प्रस्तुत शोधपरिचय वि.सं. ०५९ मङ्सिरको पहिलो सातामा स्वीकृत भएको हो । त्यसपछि वि.सं. ०६० चैत्र सम्ममा सामग्री सङ्कलन, लेखन, परिष्कार र टङ्गणकार्य सम्पन्न गरी अध्ययन कार्यलाई पूर्णता प्रदान गरिएको छ ।

परिच्छेद दुई

मुक्तिनाथ आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यिक यात्रा

२.१ जीवनी

२.१.१ जीवनीको रूपरेखा

जीवनका यावत् पक्षहरूको क्रमबद्ध वर्णन नै जीवनी हो।^१ जीवनीमा मूलतः व्यक्तिका क्रियाकलाप, उसको पारिवारिक अवस्था र उसको जीवनमा घटेका विविध घटनाहरूलाई क्रमसँग वर्णन गरिएको हुन्छ। व्यक्तिका भोगाइहरू समाजमा उसको स्थान, उसको सीप, कलाकौशल आदि विषयहरू पनि जीवनीभित्र अटाएका हुन्छन्। यसमा लेखकले व्यक्तिविशेषको स्तुति वा निन्दा नगरी तटस्थ व्यक्तिको भूमिका निर्वाह गरेको हुन्छ। वास्तवमा भन्ने हो भने व्यक्तिविशेषको सम्पूर्ण वा आंशिक जीवनका तथ्यपूर्ण घटना, उसका मानसिक प्रभाव, अनुभव तथा क्रियाकलापको क्रमबद्ध विवरण सविस्तार प्रस्तुत गरिएको रचना नै जीवनी हो।^२ जीवनीमा मूलतः तीन तत्त्व हुन्छन् :- इतिहास, व्यक्ति र साहित्य।^३ इतिहासमा सत्यताको जलप हुन्छ भने व्यक्तिमा उसले जीवनभर भोगेका अनुभूतिहरू सङ्गालिएका हुन्छन्। यी दुवै तत्त्वलाई साहित्यले कलात्मक बनाउँछ। त्यसैले जीवनीलाई साहित्यको एक शाखा भनिएको हो। यसमा कल्पनाशीलता र भावुकता जस्ता कुराको सट्टा व्यक्तिका जीवनसँग सम्बन्धित यथार्थ घटनाहरू नै मुख्य विषयवस्तुका रूपमा आएका हुन्छन्।

व्यक्तिको जन्म, बाल्यकाल, शिक्षादीक्षा, संस्कारहरू, सेवा, विविध क्षेत्रमा उसको संलग्नता, उसको पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक र राजनैतिक स्थिति, व्यवसाय, भ्रमण जस्ता जीवनका विविध पक्षहरू जीवनीअन्तर्गत समेटिएका हुन्छन्। प्रस्तुत शोधपत्रमा पनि मुक्तिनाथ आचार्यको जीवन यात्राको क्रममा देखिएका उपर्युक्त पक्षहरूको कालक्रमिक अध्ययन गरिएको छ।

२.१.२ पारिवारिक पृष्ठभूमि

आचार्यहरूको मूलथलो जुम्ला मानिन्छ। जुम्लाबाट पूर्वतर्फ विस्तारित हुने क्रममा रम्घाली आचार्यका पुर्खाहरू पाल्पाबाट चुँदी रम्घा आई बसोबास गर्न थालेको अनुभव गरिन्छ।^४ रम्घाली आचार्यहरूको वंशावलीमा श्रीकृष्ण आचार्य पूर्वका दश पुस्ताको नामावली उल्लेख भएकाले तिनीहरूको बसोबास चुँदीरम्घामै भएको हुनसक्छ।

श्रीकृष्ण पछिका धनञ्जय, भानुभक्त र रमानाथले पनि आफ्नो जीवन चुँदीरम्घा धर्मशालामै बिताएको पाइन्छ। रमानाथका छोरा देवीभक्तको जन्म र बाल्यकाल रम्घामा बिते पनि वि.सं. १९४३ पछि उनीहरूको परिवार रम्घाकै केही माथिल्लो भागमा सरेको थियो र उनको जीवन रम्घा गाउँस्थित शिखरमै बितेको थियो। श्रीकृष्ण आचार्य सम्पन्न र

^१ थापा, मोहनहिमांशु. साहित्यपरिचय. चौ.सं., ललितपुर : साभा प्र., २०५०, पृ. २२७।

^२ शर्मा, मोहनराज र अन्य (सम्पा.), नेपाली साहित्यको संक्षिप्त इतिहास. चौ.सं., ललितपुर : साभा प्र., २०४९, पृ. १८०।

^३ गौतम, कृष्ण. आधुनिक आलोचना अनेकरूप अनेक पठन. ललितपुर: साभा प्र., २०५०, पृ. ६०।

^४ आचार्य, ब्रतराज. आदिकवि भानुभक्त... ललितपुर : भा.ज.वि.स., २०५८, पृ. १-२।

प्रतिष्ठित ब्राह्मण भएकाले उनका सन्तानहरू पनि त्यस भेगमा इज्जतदार व्यक्तित्वका रूपमा परिचित थिए । रमानाथका छोरा देवीभक्तले भाइहरूसँग अंशवण्डा गर्दा ३०० मुरी खेत र त्यसैअनुसारको बारी जग्गा पाउनाले उनीहरूको जग्गा-जमिन प्रशस्तै भएको प्रमाणित हुन्छ ।

देवीभक्तले आफ्नो घरमा कमारा-कमारी र हली गोठालाहरू राखेका थिए ।^४ उनले सरकारी सेवा नगरेका भए पनि आफ्ना पुर्खा धनञ्जय खरदार भएका कारण उनी पनि गाउँमा खरदारका रूपमा परिचित थिए । उनी भानुभक्तका साक्षात् नाति र गाउँका विर्ताबालसमेत भएकाले गाउँमा उनीहरूको परिवारलाई 'ठूलाघरे' समेत भनिन्थ्यो । उनले दुई विवाह गरेका थिए । जेठी श्रीमती दिव्यलक्ष्मी एक सन्तान-(बद्रीनाथ)की आमा हुनासाथ परलोक भएपछि उनकै ठाहिँली बहिनी दिव्यलोकासँग देवीभक्तले दोस्रो विवाह गरेर घरजम बसाएका थिए । यसपछि कान्छी श्रीमतीबाट सूर्यनाथ, मुक्तिनाथ, विश्वनाथ र हरिनाथ गरी चार छोरा र एक छोरी (चन्द्रकला) जन्मिए । देवीभक्तका जेठा छोरा बद्रीनाथ, माहिला सूर्यनाथ र काहिँला विश्वनाथ हाल दिवङ्गत भइसकेका छन् भने साहिला मुक्तिनाथ, बहिनी चन्द्रकला र कान्छा भाइ हरिनाथ जीवित छन् ।^५ प्रस्तुत शोधपत्र देवीभक्तका साहिँला पुत्र मुक्तिनाथको जीवनीलेखन र उनका कृतहरूको अध्ययनमा आधारित छ ।

२.१.३ जन्म

मुक्तिनाथ आचार्यको जन्म वि.सं. १९८३ ज्येष्ठ २४ गते आइतबार एकादशी तिथिका दिन, पिता देवीभक्त तथा माता दिव्यलोकाका साहिँला पुत्ररत्नका रूपमा भएको थियो ।^६ उनको न्वारनको नाम चिन्तामणि थियो । त्यसबेला उनका पिताले बोलाउनका लागि मुक्तिनाथ राखेका थिए । पछि समाज एवं साहित्यमा सोही नाम नै प्रचलित भएकोले हिजोआज उनी मुक्तिनाथ नामबाट प्रचलित छन् ।^७ उनी तत्कालीन पश्चिम ३ नम्बर तनहुँ दोरदोर मौजाअन्तर्गत पर्ने रम्घा गाउँमा जन्मिएका हुन् । हाल उक्त ठाउँ गण्डकी अञ्चल तनहुँ जिल्लाअन्तर्गतको भानु गा.वि.स. को वडा नं. ३ मा पर्दछ ।

२.१.४ बाल्यकाल

केटाकेटीहरू ३-४ वर्षको भएदेखि १३-१४ वर्षको भएसम्मको आवस्था बाल्यावस्था हो ।^८ मुक्तिनाथको उक्त अवस्था बालसुलभ क्रियाकलापमा बितेको थियो । हजुरबुवा बितेको १४ वर्षपछि जन्मिएका मुक्तिनाथले उनको वात्सल्यप्रेम पाउन नसके पनि हजुरआमा तथा बाबुआमाको यथेष्ट स्नेह एवं माया-ममतामा हुर्किने अवसर पाएका थिए । उनी यस अवस्थामा खेलन एवं डुल्न निस्कदा आफ्ना दाजु सूर्यनाथसँग जाने गर्दथे । डन्डीबियो, गोपेलौरी, गिरा र टाँडेलौरी उनका बाल्यावस्थाका खेल थिए । पछि उनी बाघचालमा पनि आकर्षित भए । बाबु कडा स्वभावका भएकाले उनलाई गाउँका खेल, नाँच, रमाइलो मेला,

^४ मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्तजानकारी ।

^६ मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^७ मुक्तिनाथ आचार्यबाट लिखित अप्रकाशित आत्मजीवनीबाट ।

^८ मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^९ कार्की, उपेन्द्र. **शिक्षामनोविज्ञान**. काठमाडौं: विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, २०१४, पृ. ४७-४८ ।

भजनकीर्तन र बालुन आदिमा जाने अनुमति थिएन ।^{१०} उनी बुबा नभएको मौकामा भने कहिलेकाँही भागेर बालुननृत्य हेर्न जाने गर्दथे ।

२.१.५ अक्षरारम्भ र प्रारम्भिक शिक्षा

वि.सं. १९९० को परिवेशमा चुँदी भेगमा पठन-पाठनको लागि विद्यालयको व्यवस्था थिएन । शिक्षित व्यक्तिहरू आफ्ना छोराछोरीलाई घरमै अक्षर चिनाएर संस्कृतका रुद्री, चण्डी आदि पुस्तकहरू पढाउने गर्थे । पिता देवीभक्तले अमरकोश, रुद्री, चण्डी र केही स्तोत्रहरू पढेका हुनाले आफ्ना छोराहरूलाई घरमै अक्षरारम्भ गराई संस्कृतका प्रारम्भिक ग्रन्थहरू पढाएका थिए । यस क्रममा पिताले आफ्ना दाजुलाई अमरकोष पढाउँदा पढाउँदै मुक्तिनाथले अक्षरारम्भपूर्व नै प्रथमकाण्ड कण्ठ गरिसकेका थिए । तापनि उनले ६ वर्षको उमेरमा मात्र पिता देवीभक्तसँग बाह्रखरी सिक्ने मौका पाएका हुन् ।^{११} त्यसबेला कापी कलम र मसीको व्यवस्था थिएन । सुरुमा धुलौटोमा कोरेर अक्षरारम्भ गरेपछि मसुरे कटुसको मसीमा बाँसको कलमले चोपेर बाँसकै सुप्लोमा लेख्न लगाएर उनको लेखन अभ्यास भएको थियो । त्यसपछि उनले बाँसको कलमले नेपाली कागजमा लेखन-अभ्यास गरेर दक्षता हासिल गरेका थिए । पिता देवीभक्त बिहान सन्ध्या गरेर भगवतीस्तोत्र पाठ गरी भोजन गर्थे । आमा पनि भानुभक्तीय रामायणका श्लोकहरू सधैं गुनगुनाउने गर्थिन् । यस्तो पारिवारिक वातावरणमा हुर्किएका मुक्तिनाथले कलिलो उमेरमै भानुभक्तीय रामायणका केही श्लोक र भगवतीस्तोत्र कण्ठ गरेको जानकारी पाइन्छ ।^{१२}

२.१.६ व्रतबन्ध

हिन्दूविधिअनुसार ब्राह्मणले आफ्ना छोराहरूको व्रतबन्ध आठ वर्षको उमेरमा गराउनुपर्छ ।^{१३} तदनुरूप पिता देवीभक्तले वि.सं. १९९१ मा मुक्तिनाथको व्रतबन्ध गराएका थिए । त्यसबेला उनी आठ वर्षमा प्रवेश गरेका थिए । “गायत्री दिनु बाबुको छ अधिकार भिक्षा दिनु माइको”^{१४} भन्ने वचनअनुसार पिता देवीभक्तले नै पुत्र मुक्तिनाथलाई मन्त्रदान गरेका थिए । त्यसकारण मुक्तिनाथका गायत्रीगुरु पनि पिता देवीभक्त नै देखिन्छन् ।

२.१.७ तनहुँसुर र ठूलीपोखरीमा अध्ययन

अक्षरारम्भ गराएर चण्डी एवं अमरकोष पढाएका पिता देवीभक्त आफ्ना छोरालाई पढाउने उपयुक्त संस्कृतविद्यालयको खोजीमा थिए । यसैबीच वि.सं. १९९१ मा शिक्षित व्यक्तिहरूको पहलमा तनहुँसुरमा संस्कृत भाषापाठशालाको स्थापना भयो । त्यहाँ रुद्रशङ्कर

^{१०} मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^{११} पूर्ववत् ।

^{१२} पूर्ववत् ।

^{१३} याज्ञवल्क्य. याज्ञवल्क्यस्मृति आचाराध्याय. वाराणसी : चौखम्बा सं.सं., २०५०, पृ. ७ ।

^{१४} आचार्य, नरनाथ. कविसम्राट् भानुभक्त आचार्यको सच्चा जीवन चरित्र. काठमाडौं : नरनाथ आचार्य, २०१७, पृ. २४ ।

पौड्याल अध्यापकका रूपमा नियुक्त हुनुभयो ^{१५} सो पाठशालाको स्थापना भएकै दिन पिता देवीभक्तले मुक्तिनाथलाई दाजु सूर्यनाथका साथ उक्त विद्यालयमा प्रवेश गराए । त्यस विद्यालयमा मुक्तिनाथले रुद्री, शुक्लयजुर्वेद बीस अध्याय र मध्यसिद्धान्तकौमुदी सुवन्तखण्डसम्म अध्ययन गरे । वि.सं. १९९७ मङ्सिरमा सो विद्यालय छोडेर उनी लमजुङ जिल्लास्थित जितासातधारे ठूलीपोखरी भाषापाठशालामा भर्ना भए । त्यहाँ उनले गुरु तीर्थराज आचार्यसँग मध्यसिद्धान्तकौमुदीको तिङन्तखण्ड पढ्न सुरु गरे । उनले त्यस विद्यालयमा करिब १५ महिना जति अध्ययन गरे ।^{१६}

२.१.८ विवाह

मुक्तिनाथको विवाह वि.सं. १९९७ फागुनमा भएको हो । त्यसबेला उनी १४ वर्षका थिए । उनको विवाह रम्घाकै उत्तरी पानीढलोमा अवस्थित फाउँदी गाउँका एकदेव पण्डितकी जेठी छोरी यशोदा देवीसँग भएको थियो ।^{१७} यशोदादेवी त्यस बेला १२ वर्षकी थिइन् । त्यस बेलाको सामाजिक रीतिस्थितिमा उनीहरूको उमेर विवाहका निम्ति उपयुक्त नै थियो । विवाहपूर्व यशोदादेवी निरक्षर थिइन् । चुँदी भेगको शैक्षिक जागरणका कारण उनले विवाह पश्चात् पनि अक्षर चिन्ने अवसर प्राप्त गरिन् र हाल उनी साक्षर छिन् ।^{१८}

२.१.९ रानीपोखरी पाठशालामा अध्ययन

तनहुँसुर र ठूलीपोखरीमा अध्ययन प्रगति हुन नसकेको ठहर गरी पिता देवीभक्तले वि. सं. १९९८ फागुनमा मुक्तिनाथलाई काठमाडौँस्थित रानीपोखरी संस्कृतपाठशालामा प्रवेश गराएका थिए तर त्यहाँ भर्ना भएर पनि उनले अध्ययनमा त्यति प्रगति गर्न सकेनन् । पाठशालामा रहँदा उनले गुरु बुद्धिनाथसँग मध्यसिद्धान्तकौमुदी तिङन्तखण्डको केही अंश र रघुवंश द्वितीयसर्ग पढेर प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण गरेको देखिन्छ ।^{१९} वि. सं. १९९९ जेष्ठमा जागिरतर्फ आकर्षित भई उनले अध्ययनलाई बीचमै छोडे ।

२.१.१० जागिरमा प्रवेश

मुक्तिनाथ अध्ययनबाट विरत भई जागिरको खोजीमा आफ्नी फुपू विष्णुमायाका साथ, तत्कालीन चिफसाहेव पद्मशमशेरका हजुरिया मिरसुब्बा सोमप्रसाद सापकोटाकहाँ पुगेका थिए । उनले मुलुकीअड्डाका प्रमुख सरदार भूपध्वज कार्कीलाई भनसुन गरिदिएपछि भूपध्वजले मुक्तिनाथलाई बोलाएर लिखित र मौखिक परीक्षा लिई जागिरमा लगाइदिए । यसरी वि.सं. १९९९ वैशाखबाट उनी लेखनदास सिपाही पदमा नियुक्त भई जागिरमा प्रविष्ट भए ।^{२०}

^{१५} पौडेल, रुद्रशङ्कर. 'पश्चिम तीन नम्बर तन्हौ ज्यामुक पाठशालाबाट चढाएको रिपोर्ट'. भानु सं.मा.वि. स्वर्णजयन्ती स्मारिका. काठमाडौँ : स्वर्ण ज.स.आ.स., २०५१, पृ. १०८ ।

^{१६} मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^{१७} पूर्ववत् ।

^{१८} पूर्ववत् ।

^{१९} पूर्ववत् ।

^{२०} पूर्ववत् ।

२.१.११ निजामती परीक्षा उत्तीर्ण

लेखनदास सिपाही पदमा सेवारत रहँदा मुक्तिनाथले वि.सं. २००३ कार्तिकमा निजामतीतर्फको मध्यमा परीक्षा दिई लेख, हिसाब, सेस्ता, भूगोल र साहित्य विषय भएको ५०० पूर्णाङ्कको उक्त परीक्षा प्रथम श्रेणीमा उत्तीर्ण गरे । यही नै उनको औपचारिक अध्ययनको अन्तिम तह थियो ।^{२१}

२.१.१२ जागिरमा बढुवा

वि.सं. २००३ मा निजामती मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण गरेपछि मुक्तिनाथ नौसिन्दा पदमा बढुवा भए र मासिक नौ रूपियाँ तलब पाउन थाले । सो पदमा रहेर दुई वर्ष काम गरेपछि उनी वि.सं. २००५ मा बहिदार पदमा पुनः बढुवा भए र मासिक तलब एघार रूपियाँ बुझ्नथाले । त्यस पदमा पनि एक वर्ष नपुग्दै वि.सं. २००६ मा नायव राइटर पदमा पुनः बढुवा हुन पुगे ।^{२२}

२.१.१३ बन्दीपुर अदालत र काठमाडौँमा सेवा

वि.सं. २००८ भदौमा मुक्तिनाथ घरपायकको कार्यालय बन्दीपुर अदालतमा सरुवा एवं तहरिर मुखिया पदमा बढुवा भए । त्यसबेला अदालतले प्रहरी कार्यालयका कामहरू समेत गर्नुपर्थ्यो । यसरी काम गर्दा वि.सं. २०११ असोजमा तनहुँ धिरिङ नाङ्गेटार निवासी गुणाखर देवकोटाको घरमा भएको चोरीकाण्ड सम्बन्धी उजुरीमा मुक्तिनाथ आचार्यको नेतृत्वमा गएको सर्जिमिन टोलीले पक्रेर ल्याएका चोरहरूमध्ये जुद्धे कुमाल भन्ने व्यक्ति खोरमा परेकै अवस्थामा २१ औँ दिनमा मरेको हुँदा त्यस घटनामा मुक्तिनाथलाई दोषी ठहर्‍याई बन्दीपुर अदालतमा उजुरी दर्ता भयो । आफ्नै अदालतको कर्मचारीका सम्बन्धमा सोही अदालतले कारवाही अगाडि बढाउँन नमिलेपछि मुक्तिनाथ विरुद्धको सो निवेदन दोस्रो तहको अपिल अड्डा (काठमाडौँ) लगियो र उनी पनि अड्डासार भई चारखाल अड्डामा पुऱ्याइए ।^{२३} उक्त अदालतले सो मुद्दाको फैसला गर्न एक महिना लगाएकाले उनी डिल्लीबजारको खोरमा महिनादिनसम्म थुनिए । फैसलापछि सफाइ पाएर उनी पुनः बन्दीपुर अदालतमै केही दिन हाजिर भएर प्रधानन्यायालयमा सरुवा गरी काठमाडौँ गए ।^{२४} सो न्यायालयमा काम गर्दागर्दै वि.सं. २०१२ मा पिताको देहावसान भएपछि उनले अदालती जागिर छोडेर घरव्यवहार सम्हाल्नथाले ।

२.१.१४ गृहस्थी सञ्चालन

वि.सं. २०१२ भाद्र पछि मुक्तिनाथ गृहस्थी सञ्चालन गरेर रम्घा गाउँमै बस्न थाले । पिताको देहावसान र दाजुहरू पनि छुट्टिएका हुनाले घरको सम्पूर्ण जिम्मेवारी उनले नै

२१ पूर्ववत् ।

२२ पूर्ववत् ।

२३ स्थानीय सूर्यनाथ ढकालले दिएको जानकारी ।

२४ पूर्ववत् ।

वहन गर्नु पयो ।^{२५} उनले त्यसबखत आधुनिक प्रविधिले खेती गर्ने र पशुचौपाय पालेर आय-आर्जन गर्ने प्रयत्न गरेका थिए । दुई वर्षसम्म सो प्रविधि अँगाल्दा राम्रो आय-आर्जन नभएपछि उनले वि.सं. २०१४ मा सो कार्य पनि छोडे ।^{२६}

२.१.१५ राजनीतिमा चासो

मुक्तिनाथमा राजनीतिक संस्कार जागिरमा प्रवेश गर्दादेखि नै भएको बुझिन्छ । तर सरकारी सेवामा रहँदा राजनीति गर्न नपाइने हुनाले उनी सक्रिय भएका थिएनन् । वि.सं. २०१२ सालमा आफ्ना मामाका छोरा भाइ श्रीभद्र शर्माको प्रेरणाले नेपाली काङ्ग्रेस पार्टीको सदस्यता लिएर उनी वि.सं. २०१४ पछि पार्टी गतिविधिमा सक्रिय हुन थाले ।^{२७} यस क्रममा वि.सं. २०१५ को संसदीय चुनावमा उनी तनहुँ जिल्लाका छडाँडा, गुँदीफर्च्याँक, कर्लुङ आदि गाँउहरूमा चुनाव प्रचारमा हिँडेका थिए । त्यसपछि भने उनी राजनीतिमा सक्रिय भएनन् ।^{२८}

२.१.१६ पुनः जागिरमा संलग्नता

वि.सं. २०१७ पौषमा केन्द्रीय तथ्याङ्कविभागबाट जनगणना र कृषिगणना सम्बन्धी काम गर्न अस्थायी खरदारहरूको माग भएको हुँदा मुक्तिनाथले सो पदमा आवेदन दिए र उक्त पदका निमित्त योग्य ठहरिई वि.सं. २०१७ पौषबाट खरदार पदमा नियुक्त भई पुनः जागिरमा प्रवेश गरे र वि.सं. २०१८ मा भएको जनगणना र वि.सं. २०१९ मा भएको कृषि गणनासम्बन्धी कार्यमा संलग्न भए । यस क्रममा उनले गीतिकविता गाएर जनगणना सम्बन्धी कार्यक्रमको राम्रो प्रचार गरेका गरेका थिए । त्यसैगरी उनले वि.सं. २०२० मा भएको जनसंख्या सभे कार्यका निमित्त धादिङ जिल्लाको सेर्तुङ, याचुलिञ्चु, तिप्लिङ फुलखर्क आदि गाँउहरूमा गएर पनि काम गरेका थिए । पछि वि.सं. २०२० असोजपछि उनले सो कार्यालयबाट अवकाश प्राप्त गरे ।^{२९}

२.१.१७ अद्वैतसंस्थामा प्रवेश

वि.सं. २०२० पछि मुक्तिनाथको विचारमा ठूलो परिवर्तन आएको पाइन्छ । डा. क्षितीशचन्द्र चक्रवर्तीको प्रभाव र आध्यात्मिक भावनाले आकर्षित गर्दै गएपछि उनले आध्यात्मिक चिन्तनलाई बढी समय दिनथाले । यसैक्रममा उनी वि.सं. २०२३ मा अद्वैतसंस्था चुँदीशाखामा प्रवेश गरे र अध्यात्मदर्शन सम्बन्धी सत्सङ्गमा दिनहुँ संलग्न हुनथाले ।^{३०} यसैबीच वि.सं. २०२५ मा उनी अद्वैतसंस्था चुँदीशाखाको सचिवसमेत बने । नियमित रूपमा सत्सङ्गमा उपस्थित हुनु, गुरु क्षितीशचन्द्र चक्रवर्तीद्वारा दिइएका प्रवचनहरू सुन्नु र गुरुद्वारा

^{२५} मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^{२६} स्थानीय सूर्यनाथ ढकालले दिएको जानकारी ।

^{२७} मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^{२८} पूर्ववत् ।

^{२९} पूर्ववत् ।

^{३०} स्थानीय विश्वानाथ आचार्यले दिएको जानकारी ।

लिखित आध्यात्मिक ग्रन्थहरूको अध्ययन गर्नु यस पछिको दिनचर्या बन्यो । यसरी उनले उक्त संस्थामा रहेर काम गर्दा सङ्गठन विस्तारमा समेत सक्रियता देखाएको पाइन्छ ।^{३१}

२.१.१८ तालुकदारको जिम्मेवारी

प्रशासन एवं अदालतमा काम गरेको अनुभव बटुलेका मुक्तिनाथले वि.सं. २०२४ मा तालुकदारीकार्यको जिम्मा लिएर तनहुँ जिल्लाअन्तर्गतका बन्दीपुर, पुर्कोट, कर्लुङ, र फराक चौर आदि थुम-मौजाहरूबाट तिरो सङ्कलन गरी जिल्ला मालपोत कार्यालयमा दाखिला गरेको पाइन्छ ।^{३२} त्यसबेला सरकारी तिरो सङ्कलन गरेर मालपोत कार्यालयमा सयरूपियाँ खडा गरे बापत पाँचरूपियाँ कमिशन दिने प्रचलन थियो ।^{३३} उनले यही तालुकदारीको जिम्मेवारीलाई वि.सं. ०३४ सम्म वहन गरेको पाइन्छ ।^{३४}

२.१.१९ साहित्यिक क्षेत्रमा प्रवेश

मुक्तिनाथ वि.सं. २०१५ देखि नै साहित्य सिर्जनामा संलग्न भएको जानकारी पाइन्छ । उनका केही गीत र कविताहरू वि.सं. २०१५ सालको संसदीय चुनावको समयमा 'नेपाल पुकार' नामक पत्रिकामा प्रकाशित भएको^{३५} जानकारी प्राप्त भए पनि सोधखोजका क्रममा उक्त पत्रिका हालसम्म प्राप्त गर्न सकिएको छैन । त्यसपछि वि.सं. २०१८ मा भएको जनगणना एवं वि.सं. २०१९ मा भएको कृषिगणनामा उनले 'देशको ठूलो धन : जनबल' र 'कृषिगणनाको महत्त्व' शीर्षकका गीतिकविता गाएर जनगणना र कृषिगणनाको महत्त्व गाउँगाउँमा प्रचार गरेका थिए ।^{३६} यी दुबै रचनाहरू हालसम्म प्रकाशित भएका छैनन् । उनको पहिलो पुस्तकाकार कृति 'भानुको भावना' वि.सं. २०२९ हो । यो कृति भानुभक्त आचार्यको जीवनीमा आधारित छ । यो मुक्तिनाथको प्रथम प्रकाशित कृति हो । यसपछि सोही साल फागुनमा उनको दोस्रो कृति 'आह्वान' (खण्डकाव्य) प्रकाशित भएको छ । यस कृतिको रचना पश्चात् मुक्तिनाथ फुटकर कविता लेखनतर्फ आकृष्ट भएका छन् । यसक्रममा उनले वि.सं. २०३२ मा 'भानुको परिचय' नामक फुटकर कवितासङ्ग्रह तयार गरेका छन् तर यो कृति हालसम्म पनि अप्रकाशित नै छ ।^{३७}

२.१.२० उद्योग सञ्चालनप्रयास

मुक्तिनाथको उद्यमशील व्यक्तित्व केही समय उद्योग व्यवसाय सञ्चालनमा समेत प्रवृत्त भएको छ । उनले वि.सं. २०३३ मा आफ्नो जेठो छोरो नारायणभक्तलाई केन्द्रीय घरेलु उद्योगको कार्यालयमा तालिम लिन लगाई लघुउद्योग सञ्चालन गर्ने प्रयास गरेको पाइन्छ ।

^{३१} पूर्ववत् ।

^{३२} मुक्तिनाथ आचार्यद्वारा लिखित आत्मजीवनीबाट ।

^{३३} स्थानीय विश्वनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^{३४} स्थानीय सूर्यनाथ ढकालबाट प्राप्त जानकारी जानकारी ।

^{३५} मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^{३६} पूर्ववत् ।

^{३७} पूर्ववत् ।

यसै क्रममा सोही साल ने.औ. वि.क. बाट अट्ठाईस हजार ऋण लिएर चुँदीबेसीस्थित आफ्नो घरमा 'भानु-ग्रामीण कपडा उत्पादन केन्द्र' का नामबाट कपडा निर्माणसम्बन्धी लघुउद्योग सञ्चालन गरेका थिए^{३८} तर गाउँमा बजार व्यवस्थाको अभाव, निकासीको कठिनाइ र दक्ष कामदारको अभावले गर्दा सो उद्योग तीन वर्षपछि बन्द भयो।^{३९}

२.१.२१ अद्वैतसंस्थामा केन्द्रीय सचिव

अद्वैतसंस्थाका गतिविधिहरूमा संलग्न रहदैगर्दा मुक्तिनाथ वि.सं. २०३६ मा सो संस्थाको केन्द्रीय सचिव बनेका छन्। त्यसपछि उनले गुरु क्षितीशचन्द्र चक्रवर्तीको सान्निध्यमा रहेर वेदान्तदर्शनसम्बन्धी गहन अध्ययन समेत प्रारम्भ गरेको पाइन्छ। केन्द्रीय सचिवको कार्य गर्दैरहेका अवस्थामा २०३७ सालमा गुरु क्षितीशचन्द्र चक्रवर्तीबाट जनकपुर मोक्षपन्थ विभागको सभापतिमा नियुक्ति पाई दुवैतर्फको काम सुचारु रूपले सञ्चालन गरे। यस क्रममा उनले वि.सं. २०३६-०३९ का बीचमा भारतका वाराणसी, हरिद्वार, हृषीकेश र उत्तरकाशीमा भएका सत्सङ्ग समारोहहरूमा संस्थाको प्रतिनिधित्व गर्दै सहभागी हुने अवसर प्राप्त गरे। वि.सं. २०३९ मा संस्थाको सेवाविस्तारका क्रममा उनले नेपालका मध्यपश्चिम एवं सुदूर पश्चिमका केही जिल्लाहरूको भ्रमणसमेत गरे। यसरी संस्थाका गतिविधिमा संलग्न रहँदा उनले वि.सं. २०३७ मा अद्वैतसंस्थाबाट प्रदान गरिने 'प्रोज्ज्वलतारा पदक' प्राप्त गरे, तर सो संस्थाको आपसी द्वन्द्वका कारण वि.सं. २०३९ मा उनीमाथि अनियमितताको आरोप लगाइयो^{४०} र उनलाई सो संस्था छोड्न बाध्य तुल्याइयो।

२.१.२२ अध्ययन लेखन र प्रकाशनमा संलग्नता

वि.सं. २०३९ सालपछि मुक्तिनाथ आध्यत्मिक एवं साहित्यिक कृतिहरूको अध्ययन, भानुभक्तको खोजपूर्ण जीवनी लेखन, साहित्यिक कृति र आध्यात्मिक कृतिको रचना तथा केही कृतिको प्रकाशनमा संलग्न भएका छन्। यस क्रममा उनले वि.सं. २०३९ मा रचना गरेको खण्डकाव्य 'हितको संवाद' को प्रकाशन भएको छ। त्यसपछि लामो समयको अध्ययन अनुसन्धान पछि तयार भएको 'आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी' वि.सं. २०४२ मा प्रकाशित भएको छ। यी दुई कृतिहरूको प्रकाशनसँगसँगै उनले 'ज्ञानकुञ्जिका' नामक आध्यात्मिक लेखसङ्ग्रह पनि तयार गरेका थिए तर यो अप्रकाशित नै छ। यसपछि उनी विवेकचूडामणिको अध्ययनतर्फ आकर्षित भएका देखिन्छन्। वि.सं. २०४३ देखि उनले सो कृतिको गहिरो अध्ययन प्रारम्भ गरी वि.सं. २०४६ बाट नेपालीमा पद्यानुवाद प्रारम्भ गरेका छन्। सो अनुवाद वि.सं. २०५० मा पूर्ण भई वि.सं. २०५८ मा प्रकाशित समेत भएको छ। त्यसपछि भानुभक्तीय रामायणलाई नेपालीमा गद्यानुवाद गरी वि.सं. २०५० मा ठाकुरराम बहुमुखी क्याम्पस, वीरगञ्जका प्राध्यापकद्वय भगवान् चन्द्र ज्ञवाली र भीमचरण थापाको सहयोगले उनले त्यसलाई हिन्दीमा अनुवाद गराएका छन्। उक्त कार्य वि.सं. २०५२ मा पूरा भएको को छ। त्यस पछि उनलाई गीताको ज्ञान भक्ति र वैराग्य योगले आकर्षित गर्‍यो र वि.सं. २०५५-०५७ मा उनले भगवान् पशुपतिनाथको महिमा र गीतोक्त त्रियोग नामक

^{३८} मुक्तिनाथ आचार्यद्वारा लिखित आत्मजीवनीबाट।

^{३९} स्थानीय सूर्यनाथ ढकालबाट प्राप्त जानकारी।

^{४०} रामचन्द्र पण्डितबाट प्राप्त जानकारी।

आध्यात्मिक लेखसङ्ग्रह तयार गरेका छन् । वि.सं. २०५७-०५८ मै उनको 'आत्मजीवनी एवं फुटकर कवितासङ्ग्रह' पनि तयार भएको छ । यसरी साहित्यिक र आध्यात्मिक गरी हाल सम्म उनले एघार कृतिहरू तयार पारेका छन् । तिनीहरूमध्ये चार कृति आफैँ र एक कृति अन्य प्रकाशकमार्फत प्रकाशित छन् । हाल उनी भानुभक्तिय रामायणको हिन्दी गद्यानुवाद प्रकाशन गर्ने तयारीमा जुटेका छन् । यसै बीच वि.सं. २०५८ मा 'खोजपूर्ण जीवनी' को पुनः प्रकाशन समेत भएको छ ।^{४१}

२.१.२३ भ्रमण

मुक्तिनाथ आचार्यले भानुजयन्ती एवं अन्य समारोहमा सहभागी हुन, अद्वैतसंस्थाका विभिन्न कार्यक्रममा भाग लिन र तीर्थस्थलहरूको दर्शन एवं ग्रन्थ प्रकाशन गर्न, भारत एवं नेपालका विभिन्न ठाउँहरूको भ्रमण गरेका छन् । तल उनले घुमेका ठाउँको विवरण प्रस्तुत गरिन्छ :-

- क) वि.सं. २०२९ मा भानुजयन्तीमा सहभागी हुन जाँदा दार्जिलिङ, खर्साङ, कालिङपोङ र सिक्किमको भ्रमण ।
- ख) वि.सं. २०३६-३९ मा अद्वैतसंस्थाका कार्यक्रममा सहभागी हुन भारतका हरिद्वार, हृषीकेश, वाराणसी र उत्तरकाशीको भ्रमण ।
- ग) वि.सं. २०३६-०३९ मा अद्वैतसंस्थाको सेवाविस्तार गर्न नेपालका मध्यपश्चिम र सुदूरपश्चिमका केही जिल्लाको भ्रमण ।
- घ) वि.सं. २०४१ मा उत्तरवङ्ग विश्वविद्यालयद्वारा आयोजित समारोहमा सहभागी हुन भारतको सिलगुढीको भ्रमण ।
- ङ) वि.सं. २०४१ साउन-कार्तिकमा तीर्थस्थलहरूको दर्शनार्थ भारतका कलकत्ता, मद्रास, आन्ध्रप्रदेश, बङ्गलोर, पुट्टपती, तिरुपति, हैदरावाद र वाराणसीको भ्रमण ।
- च) वि.सं. २०४२मा पुनः सिक्किम भ्रमण ।
- छ) वि.सं. २०४२ फागुनमा रामजन्मभूमि अयोध्याको भ्रमण ।
- ज) वि.सं. २०४२ चैतमा पुस्तक प्रकाशनार्थ वाराणसीभ्रमण ।

२.१.२४ आर्थिक अवस्था

वि.सं. २०१९ मा मुक्तिनाथका दाजुभाइहरू छुट्टिएका थिए । त्यस समयमा उनले अंशका रूपमा पाएको २० रोपनी खेत एवं ७ रोपनी पाखो जग्गा नै उनको पुख्र्यौली सम्पत्ति हो । त्यसपछि उनले वि.सं. २०४५ मा ५ रोपनी खेत र १३ रोपनी पाखो जग्गा किनेका छन् । फलतः हाल उनको र परिवारका नाउँमा चुँदीमा २५ रोपनी खेत र १८ रोपनी पाखो जग्गा रहेको पाइन्छ ।^{४२} यस बाहेक उनका जेठा एवं कान्छा छोराको परिवारले उनलाई समय-समयमा यथाशक्य आर्थिक सहयोग गर्ने गरेका छन् । यही आयबाट उनको पारिवारिक जीवन चलेको पाइन्छ ।

^{४१} मुक्तिनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

^{४२} पूर्ववत् ।

२.१.२५ बसोबास र पारिवारिक स्थिति

वि.सं. २०१९ मा गाउँबाट भरेर चुँदी बैँसीमा बसोबास गर्दै आएका मुक्तिनाथका चार छोरा र चार छोरी गरी ८ सन्तान जन्मिएका थिए । तिनीहरूमध्ये एउटी छोरी र दुई छोराको पहिले नै निधन भैसकेकोले हाल उनका दुई छोरा र तीन छोरी मात्र छन् । तल उनका सबै सन्तानहरूको जन्म र मृत्यु साल उल्लेख गरिएको छ :-

| १. | छोरातर्फ | जन्मसाल | निधन साल |
|----|---------------------------|---------|----------|
| क) | नारायणभक्त | २००६ | - |
| ख) | रविभक्त | २०१५ | २०१६ |
| ग) | श्यामभक्त (जुम्ल्याहा) | २०१९ | - |
| | रामभक्त | २०१९ | २०२२ |
| २. | छोरीतर्फ | जन्मसाल | निधन साल |
| क) | कमला | २००८ | २०११ |
| ख) | सीता | २०१० | - |
| ग) | पुण्यप्रभा | २०१७ | - |
| घ) | ज्ञानप्रभा | २०२३ | - |

उनका जीवित सन्तानहरूमध्ये जेठा छोरा नारायणभक्त हाल काठमाडौँमा आयुर्वेदिक औषधीपसल सञ्चालन गरेर अस्थायी रूपमा बसोबास गर्दै आएका छन्, भने कान्छा छोरा श्यामभक्त सुर्खेतमा जागिरे जीवन बिताइरहेका छन् । उनले त्यही स्थायी बसोबासको व्यवस्था समेत मिलाएका छन् ।^{४३}

२.१.२६ सामाजिक कार्यमा संलग्नता

मुक्तिनाथ आचार्य वि.सं. २०१८ देखि हालसम्म विभिन्न सामाजिक सङ्घ संस्थाहरूमा संलग्न रहेका छन् । उनको सामाजिक संलग्नतालाई तल कालक्रमिक रूपमा उल्लेख गरिएको छ ।

- क) वि.सं. २०१८ माघ पङ्के चुँदी वेसी, पङ्के बगैँचा : लक्ष्य होम सञ्चालक समिति सचिव ।
- ख) वि.सं. २०२०-०२३ चन्द्रावती मा.वि. टुहुरेपसल : विद्यालय व्यवस्थापन समिति अध्यक्ष
- ग) वि.सं. २०२५-०३६ अद्वैतसंस्था चुँदी शाखा: सचिव ।
- घ) वि.सं. २०३०-०३५ भानु नि.मा.वि., चुँदी बैँसी: विद्यालय सहयोग समिति अध्यक्ष: ।
- ङ) वि.सं. २०३३-०३५ भानुपुस्तकालय चुँदीवेसी: सञ्चालक समिति अध्यक्ष ।
- च) वि.सं. २०३६-०३९ अद्वैतसंस्था केन्द्रीय सचिव ।
- छ) वि.सं. २०५३-भानुपुस्तकालय, चुँदी बैँसी: पुस्तकालय संचालक समिति अध्यक्ष ।

^{४३} पूर्ववत् ।

ज) वि. सं. २०५४ देखि भानुजन्मस्थल विकास समिति सदस्यमा मनोनीत ।

२.१.२७ सम्मान तथा उपाधि

समाजसेवा, साहित्यकलेखन एवं आध्यात्मिक लेखनमा प्रवृत्त मुक्तिनाथले विभिन्न समयमा केही सम्मान तथा उपाधि पाएका छन् । तल ती सम्मानहरूलाई समयक्रमअनुसार प्रस्तुत गरिएको छ :-

- क) वि.सं. २०३७ मा अद्वैतसंस्था केन्द्रीय कार्यसमितिबाट प्रोज्ज्वल तारा पदक ।
- ख) वि.सं. २०५८ मा गाउँसभा कोषबाट प्रशंसा-पत्र सहित दोसल्ला ओढाएर सम्मान ।
- ग) वि.सं. २०५९ भानु जयन्तीमा भा.ज.वि.स.द्वारा विक्रे टोपी र प्रशंसा-पत्रद्वारा सम्मान ।^{४४}

२.२ मुक्तिनाथ आचार्यको व्यक्तित्व

२.२.१ पृष्ठभूमि

कुनै पनि व्यक्तिको निजीविशेषता नै व्यक्तित्व हो । व्यक्तिका निजी विशेषताहरू पनि उसले प्राप्त गरेको अवसर, उसको सामर्थ्य र उसको सीपको आधारमा भिन्न-भिन्न हुन्छन् । समाजमा साधारण कलाकौशल प्रदर्शन गर्ने व्यक्तिको व्यक्तित्व सामान्य हुन्छ, भने असाधारण सीप कला वा खुबी देखाउने व्यक्तिको व्यक्तित्व विलक्षण हुन्छ । व्यक्तिका यस्ता विशेषताहरू साधारण-असाधारण जे भए पनि तिनीहरूले अरूलाई प्रभावित बनाउन सक्नुपर्छ । त्यसैले अरूलाई प्रभावित पार्न सक्ने विशेषतालाई नै व्यक्तित्व भनिएको हो । यसका अतिरिक्त व्यक्तिको शारीरिक बनावट, आकार-प्रकार, रङ र पहिरनलाई पनि व्यक्तित्व नै भनिन्छ, तर यो पक्ष व्यक्तित्वको गौणपक्ष हो । समष्टिमा अरूलाई प्रभावित बनाउन सक्ने वैयक्तिक विशेषता नै व्यक्तित्व हो ।

कुनै पनि व्यक्तिको व्यक्तित्वनिर्माण आफैँ भएको हुदैन । व्यक्तिको व्यक्तित्व निर्माणमा उसको पारिवारिक पृष्ठभूमि र परिवेशले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । यसका साथै व्यक्तिले प्राप्त गरेको शिक्षादीक्षा, व्यावहारिक ज्ञान र रुचिले पनि व्यक्तित्व निर्माणमा सहयोग पुऱ्याएको हुन्छ ।

आदिकवि भानुभक्त आचार्यको सन्ततिका रूपमा चौथो पुस्तामा जन्म हुनु मुक्तिनाथ आचार्यको व्यक्तित्व निर्माणको प्रमुख आधार हो भने आचार्य परिवारको शैक्षिक एवं धार्मिक वातावरण, विद्वान्हरूसँगको साहचर्य, संस्कृत एवं नेपालीका आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थहरूको पारायण-प्रवचन र भानुभक्तीय सामायणको गायनव्याख्यान आदिले उनको व्यक्तित्वको कलेवर निर्माण गर्न महत्वपूर्ण सहयोग पुऱ्याएका छन् । यी विभिन्न पृष्ठभूमिबाट निर्मित उनको व्यक्तित्वलाई शारीरिक व्यक्तित्व, जीवनीकार व्यक्तित्व, कवि व्यक्तित्व, निबन्धकार व्यक्तित्व, व्यावसायिक व्यक्तित्व, भ्रमणशील व्यक्तित्व र जागिरे व्यक्तित्वका रूपमा विभाजित गरेर अध्ययन गर्न सकिन्छ ।

^{४४} पूर्ववत् ।

२.२.२ शारीरिक व्यक्तित्व

व्यक्तिको उचाइ, मोटाइ, आकार-प्रकार, शीलस्वभाव, खानपिन, आचरण व्यवहार आदि शारीरिक व्यक्तित्वअर्न्तगत पर्दछन् । मभौलो कद , सामान्य जिउडाल, चम्किला एवं तेजस्वी आँखा, गहुँगोरो वर्ण र चौडा पुष्ट छाती नै मुक्तिनाथ आचार्यको शारीरिक बनावट हो । उनी औपचारिक स्थलमा राष्ट्रिय पोसाक एवं लट्टी र अनौपचारिक ठाउँहरूमा कमिज सुरवाल र जुहारीकोटमा सजिएका हुन्छन् । सानाप्रति स्नेह-सद्भाव प्रकट गर्नु तथा ठूलाप्रति यथायोग्य आदरगर्नु उनको वैयक्तिक गुण हो ।^{४५} सन्तुलित सात्विक आहार तथा विहारले उनी जीवनको चौथो वयः सन्धिमा प्रवेश गर्दा पनि तन्दुरुस्त रहेका छन् । अरूलाई चाँडै प्रभावित बनाउने कला उनीसँग भएको कारणले उनले देश र विदेशका धेरै मानिसहरूबाट प्रशंसा पाएका छन् ।^{४६} रामायणलाई मीठो भाकामा गाउनसक्ने स्वर र दार्शनिक भाव भएका कविता रचन सक्ने तीव्र कल्पनाशक्ति उनीसँग छ । साथै कठिनतम र चुनौतीपूर्ण काम गर्ने आँट र साहस पनि उनमा छ । उनी कुनै कामको थालनी अत्यन्तै लगन र परिश्रमपूर्वक गर्छन् तर त्यसलाई उत्तिकै गतिमा निरन्तरता दिन सक्दैनन् र थालिएको काम नटुङ्गिदै उनी अन्त मोडिन्छन् । यसरी उनी कैयौं पटक असफल पनि भएका छन् । उनको बोलीमा थोरै अहंपन र गर्वको मात्रा पाइने भएकाले उनी केही ठाउँमा सफल हुन नसकेका हुन् भन्ने कतिपय मानिसहरूको टिप्पणी रहेको छ ।^{४७} उनी कडा स्वभावका र निर्भीक छन् भन्ने कुरामा सबै गाउँलेहरू सहमत छन् । गाउँलेहरूको मूल्याङ्कनमा उनी सामान्य मिलनसार व्यक्तित्व हुन् । विहान सबेरै उठेर स्नानसन्ध्या एवं पूजापाठ गरेर भोजन गर्नु उनको नियमित दिनचर्चा हो । उनी सनातन धर्मका अनुयायी हुन् ।^{४८}

२.२.३ जीवनीकार व्यक्तित्व

मुक्तिनाथको जीवनीकार व्यक्तित्व भानुभक्त आचार्यको जीवनीलेखनमा केन्द्रित देखिन्छ । उनले हालसम्म भानुभक्त आचार्य सम्बन्धी दुई जीवनीपरक कृतिहरू प्रकाशित गरिसकेका छन् । ती दुई मध्ये दोस्रो कृतिको पुनर्मुद्रण समेत भइसकेको छ । यिनै कृति र भानुभक्तको जीवनीसम्बन्धी फुटकर लेखका आधारमा मुक्तिनाथको जीवनीकार व्यक्तित्व भाङ्गिएको छ । वि.सं. २०२९ देखि जीवनीकारका पङ्क्तिमा उभिएका मुक्तिनाथले पहिलो कृति मार्फत त्यति धेरै परिचय हाँसिल गर्न नसके पनि दोस्रो कृतिको प्रकाशनपछि राम्रो ख्याति कमाएका छन् । यसका साथै भानुभक्तीय जीवनीका कतिपय विवादास्पद विषयहरूमा नयाँ धारणा प्रस्तुत गरेर उनी निकै चर्चित पनि भएका छन् । फलतः उनको जीवनीकार व्यक्तित्व राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा समेत परिचित बन्न पुगेको छ ।

२.२.४ कवि व्यक्तित्व

मुक्तिनाथको कवि व्यक्तित्व फुटकर कविता, खण्डकाव्य र अनूदित काव्यको त्रिवेणी भई बगेको छ । उनी वि. सं. २०२० को उत्तरार्द्धपछि काव्यरचनामा प्रवृत्त भएका छन् ।

^{४५} स्थानीय सूर्यनाथ ढकालबाट प्राप्त जानकारी ।

^{४६} स्थानीय ऋषिभक्त ढकालबाट प्राप्त जानकारी ।

^{४७} स्थानीय रामचन्द्र पण्डित, विश्वनाथ आचार्य र ऋषिभक्त ढकालबाट प्राप्त जानकारी ।

^{४८} ऋषिभक्त ढकालबाट प्राप्त जानकारी ।

त्यस पछि उनले दुई खण्डकाव्य, एक अनूदित काव्य र एकदर्जन जति फुटकर कविताहरू प्रकाशित गरेका छन् । उनको 'आह्वान' खण्डकाव्य विषय तथा भाव दुबै दृष्टिले सुन्दर देखिन्छ । तर यो कृति समालोचकका आँखामा पर्न सकेको देखिँदैन । 'हितको संवाद' खण्डकाव्य साहित्यभन्दा अध्यात्मतर्फ बढी आकृष्ट छ । तेस्रो कृति विवेकचूडामणिको प्रकाशन पछि भने उनको कवि व्यक्तित्व राष्ट्रियस्तरमै परिचित हुन पुगेको छ । यसको विमोचन समारोहमा राष्ट्रियस्तरका कवि एवं समालोचकहरूले यसबारे प्रशस्त चर्चापरिचर्चा गरेका छन् । यसको थप अध्ययन हुन बाँकी नै छ ।

२.२.५ निबन्धकार व्यक्तित्व

मुक्तिनाथ बालनिबन्धहरूको रचना गरेर वि. सं. २०२४ पछि निबन्धकारका रूपमा देखा परेका छन् । उनले २०२४मा बाल निबन्धहरू लेखी 'कर्णधारको लागि' शीर्षकको कृति तयार पारेका छन् । तर उक्त कृति हालसम्म पनि प्रकाशित हुन सकेको छैन । अतः मुक्तिनाथको निबन्धकार व्यक्तित्व आफ्नै गाउँसमाजमा समेत परिचित हुन सकेको देखिँदैन ।

२.२.६ आध्यात्मिक व्यक्तित्व

मुक्तिनाथको जीवनको पूर्वाद्ध जागिर र व्यावसायमा बिते पनि उत्तरार्द्धको वय साहित्यसाधनाका साथै आध्यात्मिक लेखन, ईश्वरीय चिन्तन तथा सत्सङ्गमा व्यतीत भएको देखिन्छ । यस अवस्थाको उनको आध्यात्मिक व्यक्तित्व दर्शनसँग सम्बद्ध पुस्तकहरूको लेखन, प्रकाशन र आध्यात्मिक सत्सङ्गमा विभक्त भए पनि उनले आफ्नो अधिकतम समय अद्वैतदर्शनको चिन्तनमै बिताएका छन् । यस अवधिमा उनी अद्वैतसंस्था मार्फत र व्यक्तिगत रूपमा पनि अध्यात्मज्ञानको प्रचार-प्रसार गर्न र मानिसलाई मोक्षप्राप्तिको उपाय बताउन देशदेशान्तर घुमेका छन् । यस भ्रमणबाट उनी अद्वैतदर्शनको प्रचारकका रूपमा राष्ट्रियस्तरमै परिचित भएका छन् । तर उनको त्यो छवि हालसम्म रहन सकेको देखिँदैन । बरु आजकाल उनी आध्यात्मिक चिन्तकका रूपमा चिनिन थालेका छन् । वि.सं. २०५८ मा प्रकाशित विवेकचूडामणि उनलाई आध्यात्मिक चिन्तकका रूपमा परिचित गराउन सफल कृति बन्न पुगेको छ ।

२.२.७ सामाजिक व्यक्तित्व

मुक्तिनाथको सामाजिक व्यक्तित्व विद्यालयनिर्माण तथा सञ्चालन गर्न, गाउँमा असक्त र असहाय मानिसहरूप्रति आफूले जानेको र सकेको सेवा प्रदान गर्न एवं सामाजिक तथा धार्मिक कार्यक्रमहरूमा यथाशक्य सहयोग गर्न केन्द्रित देखिन्छ । मुक्तिनाथले सामाजिक कार्यहरूमा नेतृत्वदायी भूमिका निर्वाह गरेर असल सामाजिक कार्यकर्ताको जिम्मेवारी बहन गरेका छन् । उनको सामाजिक देन समाजमा धार्मिक एवं शैक्षिक जागरण ल्याउन र गाउँका बेरोजगार युवालाई घरेलु कपडा बुनाइ सम्बन्धी तालिम प्रदान गर्न सक्रिय छ ।^{४९} उनको सामाजिक संलग्नता र सेवा जीवनको उत्तरार्द्धको अपेक्षा पूर्वाद्धमा बढी सक्रिय देखिन्छ । अतः उनी हालको नयाँ पिढीका सामुभन्दा उनकै समकालीन व्यक्तिहरूमाभ

^{४९} स्थानीय प्रयागदत्त आचार्यबाट प्राप्त जानकारी ।

सामाजिक कार्यकर्ताका रूपमा बढी परिचित छन्।^{५०} हाल उनी समाजसेवामा कम सक्रिय देखिएका छन्।

२.२.८ व्यावसायिक व्यक्तित्व

मुक्तिनाथ वि. सं. २०१२ पछि व्यावसायिक कार्यमा संलग्न हुनथालेका हुन्। उनको यो संलग्नता वि.सं. २०२० पूर्व सामान्य र त्यसपछि सक्रिय बन्दै गएको पाइन्छ। यसपछि उनी वि.सं. २०३४ सम्म नै संलग्न रहेका छन्। यस बीचमा उनले तालुकदारी, लेखनदास र उद्योग सञ्चालन गरी मूलतः तीन कार्यलाई प्रमुखता दिएका छन्। उनले यस भेगमा तालुकदार भई निरन्तर १० वर्षसम्म काम गरेका कारणले उनी क्षेत्रीयस्तरमै तालुकदार व्यक्तित्वका रूपमा चिनिएका छन्। यसका अतिरिक्त मुक्तिनाथलाई यस भेगका व्यक्तिले चिन्ने दोस्रो आधार लेखनदास व्यक्तित्व हो। उनले लेखनदास भएर करिब तीन दशकसम्म यस क्षेत्रमा काम गरेको पाइन्छ। यस बाहेक मुक्तिनाथको सामान्य चिनारी उद्योग सञ्चालकका रूपमा समेत भएको छ। तर यसको परिचय तीन वर्षभन्दा बढूता रहन सकेन। यी तीन कार्यलाई निरन्तरता दिइरहेकै अवस्थामा मुक्तिनाथले वि.सं. २०३३ मा भानु पुस्तकालय भवनको निर्माण गरेर व्यावसायिक ठेकेदारको परिचय पनि स्थापित गरेका छन्। तर पछि उनले यस कार्यलाई पनि निरन्तरता दिएनन्। यसैले उनको व्यवसायिक व्यक्तित्व तालुकदारी र लेखनदासका रूपमा केही सफल देखिए पनि अरू क्षेत्रमा प्रायः क्षणिक प्रकृतिको नै देखिन्छ।

२.२.९ भ्रमणशील व्यक्तित्व

मुक्तिनाथले भारत एवं नेपालका धार्मिक एवं पर्यटकीयस्थलहरूको धेरै पटक भ्रमण गरिसकेका छन्। भानुजयन्तीमा आयोजित समारोहमा सहभागी हुन एवं पुस्तक प्रकाशन गर्न गरिएका ती भ्रमणहरूले मुक्तिनाथलाई भ्रमणशील व्यक्तित्वको रूपमा चिनाएका छन्। उनका ती भ्रमणहरू सामान्य अवलोकन भ्रमण नभएर एक महिनादेखि चार महिनासम्म गरिएका निरन्तरभ्रमण हुन्। जीवनको पूर्वार्द्धमा उनले यस्ता थुप्रै भ्रमणहरू गरे पनि हाल उनी भ्रमणशील देखिदैनन्। ती भ्रमणबाट उनी भ्रमणशील व्यक्तित्वका रूपमा आफ्नो गाँउ समाजमा चिनिएका छन्।

२.२.१० जागिरे व्यक्तित्व

मुक्तिनाथको जागिरे जीवनको अनुभव १६ वर्षभन्दा लामो छैन। यति छोटो अवधिमा पनि उनले दुईवटा संस्थामा जागिर खाएका छन्। यस सेवाबाट उनी जागिरे व्यक्तित्वका रूपमा आफ्नो गाउँ र सम्बन्धित क्षेत्रमा परिचित छन्। उनले पछिल्लो पटक जागिर खाँदा नियुक्ति लिएको खरदार पदबाट हालसम्म पनि चिनिन पुगेका छन्। उनले वि.सं. २०२० पूर्व नै जागिर खाएका कारण वर्तमान पिँढीलाई उनको जागिरे व्यक्तित्वबारे स्पष्ट जानकारी हुन नसके पनि उनका समकालीन व्यक्तित्वहरूको मूल्याङ्कनमा उनी रवाफिला, कर्तव्यपरायण र साहसी जागिरेका रूपमा देखिएका छन्। उनी आफ्नो जागिरकालमा जीवन

^{५०} पूर्ववत्।

नै जोखिममा पर्ने काम समेत गरेर कर्तव्यपालन गर्दथे भन्ने उनका उनका निकटवर्तीहरूको कथन छ।^{५१}

२.२.११ जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यलेखनबीच अन्तःसम्बन्ध

मुक्तिनाथ आचार्यले जीवनको चौथो प्रहरसम्म पाइला टेक्दा पारिवारिक र सामाजिक समस्याहरू, जीवनका तीता-मिठा अनुभवहरू एवं राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय परिवेशलाई भोगिसकेका छन्। विद्यार्थी जीवनका सुखद क्षण, जागिरे जीवनका क्रममा भुक्त सुखद तथा दुःखद अनुभवहरू कृतिअध्ययनबाट प्राप्त शास्त्रीय ज्ञान, साहित्य साधनाबाट जन्मिएका कृतिहरू प्रकाशित भएपछि आर्जित ख्याति आदिले उनलाई अनुभवी व्यक्तित्वका रूपमा उभ्याएका छन्। यिनै विविध अनुभवहरूबाट मुक्तिनाथको साहित्यिक र आध्यात्मिक व्यक्तित्व परिपक्व बन्दैगएको छ। समाजसँग घुलमिल हुनसक्ने व्यावहारिक ज्ञान, शास्त्रीय प्रवचन गर्नसक्ने शास्त्र सम्मत ज्ञान, त्यसलाई समाजमा प्रयोग गर्न सक्ने युक्ति र जीवन जगत्का दीर्घकालीन अनुभूतिहरू उनीसँग छन्। यी तीन तत्त्वले उनको व्यक्तित्वलाई खारेर ७८ वर्षको पाको उमेरमा पनि चम्किलो र सशक्त बनाएका छन्। यिनै दृश्य र भुक्त अनुभवहरू तथा दीर्घसाधनाको परिणतिका रूपमा उनको साहित्यसिर्जना मौलाएको देखिन्छ। मुक्तिनाथको वर्तमान प्रसिद्धि, उनको जीवनानुभूति, उनको व्यक्तित्व र साहित्यिक योगदानको सामञ्जस्यबाट निर्मित देखिन्छ। अतः यी तीन तत्त्व बीच अन्तःसम्बन्ध रहेको स्पष्ट हुन्छ।

२.३ मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्रा, चरण विभाजन र प्रवृत्ति

२.३.१ मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्रा

मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्रा वि.सं. २०१८ बाट सुरु भएको हो। उनको साहित्यिक यात्राको रेखाङ्कन गर्ने पहिलो कविता 'देशको ठूलो धन जनबल' हो। यो कविता वि.सं. २०१८ मा सार्वजनिक भएको मानिन्छ। यसपूर्व वि.सं. २०१५ को आमनिर्वाचनअगाडि उनका केही कविताहरू 'नेपाल पुकार' नामक पत्रिकाका प्रकाशित भएको जानकारी पाइए^{५२} पनि ती कविताहरू हालसम्म उपलब्ध हुनसकेका छैनन्। अतः वि.सं. २०१८ मा लिखित उपर्युक्त शीर्षकको कविताबाट उनको साहित्यिक यात्रा सुरु भएको मान्न सकिन्छ। त्यसपछि उनले वि.सं. २०१९ मा 'कृषिसङ्ख्या लिएको किन ?' कविता लेखेका छन्। यी दुई कविता हालसम्म कुनै पत्रिकामा प्रकाशित नभए पनि जनगणना र कृषिगणनाको प्रचारका क्रममा लेखकले गाउँ-गाउँमा सार्वजनिकीकरण गर्दै हिडेका थिए। यसपछि दशवर्षसम्म लेखकका कुनै पनि कृति र फुटकर रचनाहरू प्रकाशित भएका छैनन्। वि.सं. २०२४ मा लेखिएको 'कर्णधारको लागि' निबन्धसङ्ग्रह पनि हालसम्म प्रकाशित हुन सकेको देखिँदैन। उनको प्रथम प्रकाशित कृति चाँहिँ भानुको भावना (वि.सं. २०२९) नामक भानुभक्तीय जीवनी हो। यसै साल उनको दोस्रो कृति 'आह्वान' खण्डकाव्य प्रकाशित भएको पाइन्छ। यी दुई कृतिको प्रकाशनपछि लामो समयसम्म लेखकका अन्य कृति प्रकाशित देखिँदैनन्। वि.सं. २०३९ मा तेस्रो कृति 'हितको संवाद' खण्डकाव्य प्रकाशित भएको छ। यसको प्रकाशनपछि उनी भानुभक्तको जीवनीलाई परिष्कार गर्नतर्फ संलग्न देखिएका छन्।

^{५१} स्थानीय विश्वनाथ आचार्यबाट प्राप्त जानकारी।

फलस्वरूप वि.सं. २०४२ मा परिष्कार र परिवर्धनका साथ उनले 'आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी' प्रकाशित गरेका छन् । यसपछि वि.सं. २०५८ मा संस्कृतको आध्यात्मिक काव्य 'विवेकचूडामणि'को नेपाली पद्यानुवादलाई प्रकाशित गराएका छन् । यी कृतिहरूका अतिरिक्त मुक्तिनाथका एकदर्जन जति लेख र कविताहरू राष्ट्रिय एवं स्थानीय पत्रिकाहरूमा छापिएका छन् । उनका प्रकाशित कृतिहरू गद्य एवं पद्यसंरचनामा आबद्ध छन् । गद्यअन्तर्गत उनी एउटै जीवनी उपविधामा प्रविष्ट छन् भने पद्यमा चाहिँ कविता उपविधाको सूक्ष्मरूप फुटकर कविता, मभौलो रूप खण्डकाव्य र बृहत्तरूप अनुवाद काव्यको रचनामा संलग्न देखिएका छन् । यी बाहेक उनका अप्रकाशित कृतिहरू पनि आधादर्जन जति छन् । तिनीहरू निबन्ध, प्रबन्ध, जीवनी र कविताको सूक्ष्मरूप (फुटकर कविता) आदि उपविधामा विभक्त छन् । तल मुक्तिनाथ आचार्यका ती प्रकाशित अप्रकाशित कृतिहरूको विधागत वर्गीकरण गरी लेखन र प्रकाशनकालको विवरण दिइएको छ :-

२.३.२ प्रकाशित कृतिहरूको विधागत वर्गीकरण

१. जीवनी

| कृति | प्रकाशनकाल | प्रकाशन स्थान | प्रकाशक |
|---|------------|---------------|---------|
| अ) भानुको भावना | २०२९ | काठमाडौँ | लेखक |
| आ) आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी | २०४२ | काठमाडौँ | लेखक |

२. काव्यविधा

| कृति | प्रकाशनकाल | प्रकाशन स्थान | प्रकाशक |
|--|------------|---------------|-----------|
| अ) आह्वान (खण्डकाव्य) | २०२९ | चितवन | लेखक |
| आ) हितको संवाद (खण्डकाव्य) | २०३९ | काठमाडौँ | लेखक |
| इ) विवेकचूडामणि (छन्दोबद्ध नेपाली भावानुवाद) | २०५८ | विराटनगर | गौतम प्र. |

२.३.३. अप्रकाशित कृतिहरू

| क | निबन्ध | रचनाकाल | कैफियत |
|----------|---|---------|-------------------------|
| | अ) कर्णधारको लागि (निबन्धसङ्ग्रह) | २०२४ | वस्तुपरक |
| ख | कवितासङ्ग्रह | | |
| | अ) भानुको परिचय | २०३२ | साहित्यिक, पद्य |
| | आ) फुटकर कवितासङ्ग्रह | २०५९ | साहित्यिक, गद्यपद्य |
| ग | जीवनी | | |
| | अ) आत्मजीवनी | २०५९ | - |
| घ | प्रबन्ध | | |
| | अ) ज्ञानकुञ्जिका | २०३९ | साहित्यिक आध्यात्मिक |
| | आ) भगवान् पशुपतिनाथको महिमा र गीतोक्त त्रियोग | २०५७ | साहित्यिक आध्यात्मिक |

२.३.४ मुक्तिनाथको साहित्यिक यात्राको चरण विभाजन

हरेक साहित्यकारका साहित्यिक यात्रामा विभिन्न मोड, घुम्ती र चरणहरू आउने गर्छन् । ती चरणहरूले लेखकको साहित्यिक यात्राको समग्ररूप तयार बनाएका हुन्छन् । यस्ता मोड, चरण र उपचरणहरूको विभाजन गर्न अन्वेषकले कुनै नकुनै स्पष्ट आधार लिएको हुन्छ । यस्ता आधारहरूमा रचनाका प्रवृत्तिगत परिवर्तन, रचनाहरूको परिणाम, गुणस्तर, कृतिरचनाको समय, प्रकाशनकाल विषयवस्तुको क्षेत्रगत परिवर्तन, भाषिक परिष्कृति आदिलाई मुख्य रूपमा अगाडि सार्न सकिन्छ । प्रस्तुत शोधपत्रमा मूलतः कृतिरचनाको परिमाण एवं प्रवृत्तिगत परिवर्तन र अंशतः रचनाकाल, प्रकाशनकाल, भाषिक परिष्कृति आदिलाई मुख्य आधार मानेर शोधनायक मुक्तिनाथ आचार्यको चारदशक लामो साहित्यिक यात्रालाई पृष्ठभूमिकाल, विकासकाल, र उत्कर्षकालका रूपमा विभाजित गरी अध्ययन गरिएको छ ।

| | | | | |
|------------|--------|------|------|--------------|
| प्रथम चरण | वि.सं. | २०१८ | २०२८ | पृष्ठभूमिकाल |
| दोस्रो चरण | वि.सं. | २०२९ | २०४१ | विकासकाल |
| तेस्रो चरण | वि.सं. | २०४२ | २०५८ | उत्कर्ष |

क) प्रथम चरण (वि.सं. २०१८-२०२८)

मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्राको यो चरण पृष्ठभूमि काल हो । यस चरणमा उनका कुनै पनि साहित्यिक कृतिहरू प्रकाशित हुन सकेका छैनन् । यद्यपि वि.सं. २०१५ मै उनको प्रथम कविता 'नेपाल पुकार' नामक पत्रिकामा प्रकाशित थियो भन्ने सुनिएको छ तर हाल उक्त कविता छापिएको 'नेपाल पुकार' को अड्क प्राप्त गर्न नसकिएकोले वि.सं. २०१८ मा सार्वजनिक भएको 'देशको ठूलो धन जनबल' शीर्षकको कवितालाई उनको प्रथम रचना मानेर सोही रचनामार्फत उनको साहित्यिक यात्राको निर्धारण गरिएको हो । गीतिलयमा र सरल भाषामा आबद्ध उक्त कवितामा साहित्यिकता कम र विषयवस्तुको प्रस्तुति विशेष छ । यस कविताको मूलउद्देश्य जनगणनाको महत्त्वप्रदर्शन गर्नु रहेकोले पनि साहित्यिक भाव कम भएको हुनसक्छ । त्यस पछिको दोस्रो कविता 'कृषिसंख्या लिएको किन?' पनि उही भाकामा लेखिएको अन्त्यानुप्रास मिलेको प्रचारमुखी कविता हो । यसमा कृषि गणनाको महत्त्व दर्शाउँदै यसबाट मानिसलाई हुने फाइदाको वर्णन गरिएको छ । यी दुवै कविता साहित्यिक उद्देश्यले भन्दा जनगणना सम्बन्धी प्रचारको उद्देश्यले रचिएका कारण यिनीहरूमा कलात्मकता कम पाइन्छ तापनि केही साहित्यिकता पाइने भएकोले यिनीहरूलाई कविताको कोटीमा समावेश गरिएको हो । त्यसपछि वि.सं. २०२४ सम्म लेखकले फुटकर वा सिङ्गो कृतिको रचना गरेको पाइँदैन । वि.सं. २०२४ मा उनले दश बालनिबन्धहरूको सङ्ग्रह 'कर्णधारको लागि' तयार गरेका छन् । तर उक्त कृति हालसम्म पनि अप्रकाशित अवस्थामै छ । बाल्यजीवनका कर्तव्यहरू, त्याज्य कर्महरू, मानवीय धर्म, प्रेम, ईश्वरमहिमा आदि विषयमा रचित उक्त निबन्धहरू सरलशैलीमा लेखिएका छन् । विषयवस्तुको सामान्यता, शैलीगत सुबोधता र नैतिक उद्देश्य उक्त निबन्धहरूमा पाइने विशेषता हुन् ।

यस चरणमा मुक्तिनाथको कलम कविता र निबन्ध उपविधामा चलेको छ । यी दुवै विधाका रचनाहरूमा विषयवस्तुगत र शैलीगत सरलता पाइन्छ । यस चरणका रचनाका उद्देश्यहरू पनि स्पष्ट छन् । लेखकले बालबालिका र साधारण गाउँलेलाई उद्देश्य बनाउनु

निबन्ध एवं कविताको रचना गरेका कारण उक्त स्थानहरूमा पाठकले गहिरिएर पढ्नुपर्दैन । यी रचनाहरू लेखकका प्रारम्भिक रचना भएकाले यिनीहरूमा पद-वाक्यगत र शैलीशिल्पगत दुर्बोध्यता खड्किदैन । यस कालका रचनामा साहित्यिकता कम पाइएको र लेखकका कृतिहरूको प्रकाशन हुन नसकेको कारण यस काललाई पृष्ठभूमिकाल भनिएको हो । समष्टिमा सामाजिक विषयवस्तु, भाषिक सरलता एवं कम साहित्यिकता र नैतिक उद्देश्यको प्राप्ति नै मुक्तिनाथको साहित्यिक यात्राको यस चरणका मूलभूत प्रवृत्तिका रूपमा देखापर्दछन् ।

ख) दोस्रो चरण (वि.सं. २०२९-०४१)

मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्रा वि.सं. २०२९ बाट दोस्रो चरणमा प्रवेश गर्दछ । यो अवधि वि.सं. २०४१ सम्म कायम रहन्छ । यो अवधि उनको साहित्यिक यात्राको विकासकालका रूपमा देखा पर्दछ । यस कालमा उनले जीवनी, खण्डकाव्य र फुटकर कविताहरूको लेखन तथा अभ्यास गरी काव्य विधामा सामाजिक ख्याति समेत हाँसिल गरेका छन् । यस समयमा उनले तीन कृतिको प्रकाशन गरेका छन् । कृतिहरूको प्रकाशनको कारण नै यो अवधिलाई पृष्ठभूमि कालभन्दा भिन्न मानिएको हो । रचनागत दृष्टिले यो समय उर्वर मानिएको छ । भानुभक्तीय खोजपूर्ण जीवनी, प्राकृतिक सम्पदाको वर्णनले मनोरम आह्वान खण्डकाव्य र नैतिक आध्यात्मिक उपदेश प्रदान गरिएको हितको संवाद खण्डकाव्य यसै अवधिमा लेखिई प्रकाशित भएका छन् । यस कालका उनका कृतिहरूमा विषयवस्तु र भाषिक परिमार्जन एवं पर्याप्त सुधार पाइन्छ । पृष्ठभूमि कालका रचनाहरूमा बालबालिका र सामान्य गाउँले प्रति लक्षित विषयवस्तु थिए भने यस चरणका कृतिहरूमा भानुभक्तीय जीवन गाथा, प्राकृतिक सम्पदा एवं नीति र अध्यात्मदर्शन पाइन्छन् । यस चरणका कृतिमा भावगत गाम्भीर्य र दार्शनिक बोझ थपिएर कृतिहरू सरलताबाट सघनतातर्फ उन्मुख भएका छन् । विषयवस्तु पनि साहित्यबाट अध्यात्मतर्फ आकृष्ट देखिन्छन् । कविताहरू गीतिलयबाट शास्त्रीय लयमा परिवर्तित छन् । कृति रचनाको उद्देश्य र कृतिगत उद्देश्यमा पनि परिवर्तन देखिएको छ । प्रथम चरणका रचनाको लक्षितवर्ग सामान्य पाठक र बालबालिका थिए भने यस चरणको लक्षितवर्ग शिक्षित साहित्यिक पाठक छन् । प्रथमिक कालीन कृतिले चेतना फैलाउनु नै प्रयाप्त थियो भने यस अवधिका कृतिहरू निश्चित लक्ष्य प्राप्त गर्न निकै सबल छन् । समष्टिमा पृष्ठभूमिकाल कृति रचनाको तयारी अवस्था हो भने विकासकाल चाहिँ कृति रचनाको अभ्यासावस्था हो । यस कालमा भानुभक्तको जीवनीको अध्ययन, प्रकृतिमूलक एवं नीतिमूलक कृतिको प्रकाशन र आध्यात्मचिन्तनतर्फ मुक्तिनाथ आकृष्ट देखिन्छन् । यही नै उनको यस चरणको मूलभूत प्रवृत्तिका रूपमा देखापर्दछ ।

ग) तेस्रो चरण (वि.सं. २०४१ - २०५८ सम्म)

यो समय मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्राको उत्कर्षकाल हो । उनको साहित्यिक यात्राको दोस्रो चरणमा प्रकाशित भानुभक्तीय जीवनीलाई उनले यसै कालमा परिष्कार एवं परिवर्द्धनका साथ छुट्टै नाम दिई प्रकाशित गरेका छन् । यसका साथै विवेकचूडामणिको नेपाली पद्यानुवाद पनि यसै अवधिमा प्रकाशित छ । यस कालखण्डका प्रकाशित मुक्तिनाथका दुवै कृतिमा परिष्कृत भाषाशैलीको प्रयोग पाइन्छ । यो विशेषता दास्रो चरणका कृतिमा कमै पाइन्छ । यस चरणमा आइपुग्दा लेखकमा अध्यात्मिक चेतनाको समेत पूर्ण विकास भएको छ । यस दृष्टिले पनि यो अवधि दोस्रो चरणभन्दा भिन्न छ । अतः

अध्यात्मचिन्तन र परिस्कृत चेतानाको विकासलाई यस समयावधिको विशेषता मान्न सकिन्छ । यो काल सङ्ख्यात्मक दृष्टिले मध्यम भएपनि उपलब्धिको दृष्टिले अत्यन्तै उर्वर देखिन्छ । यस अवस्थामा प्रकाशित लेखकका दुवै कृति उत्कृष्ट छन् र चर्चित पनि भएका छन् । खोजपूर्ण जीवनीमा लेखकको अनुसन्धान दृष्टि उद्घाटित भएको छ । मोतीराम भट्ट र नरनाथ आचार्यको जीवनीले उद्घाटित गर्न नसकेका कतिपय तथ्यहरूलाई मुक्तिनाथले पहिल्याएर किटानीका साथ टुङ्गो लगाउने प्रयास गरेका छन् । यसको भाषाशैली पनि पूर्ववर्ती कृतिका तुलानामा निकै परिस्कृत छ । त्यस्तै उनको दोस्रो कृति विवेकचूडामणिको नेपाली पद्यानुवाद अध्यात्मचिन्तनप्रति अनुवादकको भुकाउको परिणतिका रूपमा देखा पर्दछ । उनले अद्वैतदर्शनको उत्कृष्ट कृतिलाई नेपालीमा अनुवाद गरेर आफूमा विद्यमान अद्वैतपरक भावनालाई अभिव्यक्त गरेका छन् । त्यस कृतिमा रहेका दार्शनिक र गूढार्थबोधक वाक्य र पद्यहरूलाई नेपालीमा सर्लक्क उतारेर उनले आफूमा विद्यमान साहित्यक वैभवलाई प्रकाशित गरेका छन् । मुक्तिनाथद्वारा अनूदित ती पद्यहरू सिकारु अनुवादकका रचना जस्तो नभएर कुशल कालिगढद्वारा कुँदिएका मूर्तिजस्तै सुन्दर र परिष्कृत छन् । मुक्तिनाथ यस अनुवादमा आइपुग्दा एक कुशल परिष्कारवादी स्रष्टा तथा अनुवादकका पंक्तिमा उभिएका छन् । त्यसैले उनको यस काललाई अध्यात्मचिन्तनतर्फ आकृष्ट परिष्कृत चेतनाको विकास काल भनिएको हो ।

परिच्छेद तीन मुक्तिनाथका काव्यकृतिको विवेचना

३.१. पृष्ठभूमि

मुक्तिनाथले हालसम्म दुई खण्डकाव्य र एउटा अनुवादकाव्य गरी तीन काव्यकृति प्रकाशित गरिसकेका छन् । उनका ती काव्यहरू काव्यका आधारभूततत्त्वहरूको सीमामा कति आबद्ध छन् ? तिनीहरू समालोचकद्वारा कुन रूपमा मूल्याङ्कन गरिएका छन् ? र नेपाली काव्यसाहित्यको इतिहासमा तिनीहरूको के कस्तो स्थान रहेको छ, आदि विषयबारे यस परिच्छेदमा विवेचना गरिएको छ । साथै अनुवादकाव्यको विवेचना प्रसङ्गमा अनुवादशैली र मौलिकताबारे पनि सामान्य विवेचना छ । तल खण्डकाव्यका आधारभूत तत्त्वहरू (आख्यानयोजना, सारवस्तु, शीर्षकविधान, भावविधान, प्रबन्धात्मक सर्गयोजना र आयाम, भाषाशैली) का आधारमा मुक्तिनाथका काव्यहरूको विवेचना गरी निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ।

३.१.१ 'आह्वान' खण्डकाव्यको विवेचना

३.१.१.१ रचना, प्रकाशन, प्रेरणा, र प्रभाव

मुक्तिनाथले 'आह्वान' खण्डकाव्यको रचना वि.सं. २०२८-२९ मा गरी वि.सं. २०२९ फाल्गुनमा प्रकाशित गरेका छन् । कविले यस काव्यरचनाको प्रेरणास्रोतका रूपमा आफ्नो अन्तस्करणबाट उद्भूत राष्ट्रनिर्माणको विशालभावनालाई स्विकारेका छन् । तर उनको आह्वान काव्यको अध्ययन गर्दा यस कृतिको प्रेरणास्रोतका रूपमा कवि भानुभक्त आचार्यको लोकहितकारी भावना एवं महाकवि कालिदास र लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको प्रकृतिचित्रण रहेको देखिन्छ । त्यसैगरी कविशिरोमणि लेखनाथ पौड्यालका नीतिवादी धारणाले पनि उनलाई किञ्चित् प्रेरणा मिलेको देखिन्छ । यसमा भानुभक्त आचार्य र लेखनाथ पौड्यालका नैतिक औपदेशिक कृतिको अप्रत्यक्ष प्रभाव पाउन सकिन्छ । यसका अतिरिक्त राष्ट्रनिर्माणप्रति समाजको अनास्था पनि यस काव्यको प्रभावस्रोत स्वीकार्न सकिन्छ ।

प्रस्तुत खण्डकाव्यको मूल विषयवस्तु राष्ट्रनिर्माण सम्बन्धी भावनाको प्रदर्शन हो । यो विषयवस्तु सामाजिक हुनाका साथै कविकल्पित पनि देखिन्छ । कविले कतिपय ठाउँमा नीति र अध्यात्मदर्शनलाई पनि विषयवस्तुको रूपमा ग्रहण गरेका छन् । यसको स्वरूप चाहिं हाम्रो आर्थिक, शैक्षिक र चेतनागत दुरावस्था एवं हामी बीचको जातीय, वर्गीय र क्षेत्रीय वैषम्यको चित्रण एवं तिनीहरूको निराकरण गर्दै विकसित नेपालको निर्माणका लागि कविबाट गरिएको सुन्दर परिकल्पनाको बयान हो । यस काव्यका यिनै प्रेरणा, प्रभाव एवं विषयवस्तुको स्रोत तथा स्वरूपको आधारभूमिमा रहेर तल यस काव्यलाई खण्डकाव्यका आधारभूततत्त्वहरू(आख्यान योजना, सारवस्तु, शीर्षक विधान, भावविधान, प्रबन्धात्मक सर्ग योजना र आयाम, लयविधान, कथनपद्धति, बिम्ब र प्रतीक योजना, अलङ्कारविधान भाषाशैली)^{५२} का आधारमा विवेचना गरिएको छ ।

^{५२} थापा, मोहन हिमांशु. साहित्यपरिचय. चौ.सं., काठमाडौं: साभा प्र. २०५०, पृ. २२९ ।

३.१.१.२ आख्यानयोजना

क) कथावस्तु

प्रस्तुत खण्डकाव्य घटनामूलक नभएर वर्णनमूलक देखिन्छ । यस काव्यमा जीवनको एक अंशको सङ्केत गर्ने कथावस्तु पाइँदैन । काव्यमा पात्रहरू उपस्थित हुन्छन् र देशविकासको अवधारणा प्रस्तुत गरेर जान्छन् । यस क्रमले सबै पात्रहरूले हाम्रो देशको विकास गर्न हामी नेपालीहरूलाई घच्चच्याएका छन् । काव्यको आरम्भ नेपालका प्राकृतिक सौन्दर्यहरूको वर्णनबाट भएको छ । यसपछि नेपालका प्राकृतिक सम्पदाहरू एवं देवीदेवताहरूले गरेको भविष्यको सुन्दर नेपालको परिकल्पना रहेको छ । यस क्रममा हिमाल, पहाड, नद-नदी, वनजङ्गल, वन्यजन्तु एवं चारनारायणले नेपाललाई सुन्दर र विकसित गराउन हामीप्रति गरेको आग्रह रहेको छ । तिनीहरूको आग्रहको अन्त्यमा पशुपतिनाथले नेपाल आमाको आर्तनादको चर्चा गरेका छन् । त्यसपछि उनले हाम्रो देशको दयनीय अवस्थाको चर्चा गरेर यसलाई विकसित तुल्याउन हामीले गर्नुपर्ने कार्यहरूको सविस्तार वर्णन गरेका छन् र अन्त्यमा आफूले भनेका कुराहरूलाई पूर्णपालना गर्न पुनःअनुरोध गरेका छन् ।

ख) पात्रविधान

यस कृतिभित्रका पशुपतिनाथ, चारनारायण, हिमाल, वनजङ्गल, वन्यजन्तु र नदनदीहरू नेपथ्यीय र मानवेतर पात्र हुन् । मानवेतर पात्रहरूमा पनि यहाँ लौकिक र अलौकिक दुई थरी पात्रहरूको प्रयोग देखिन्छ । हिमाल, वनजङ्गल, नदनदी, वन्यजन्तुहरू लौकिक पात्रहुन् भने चारनारायण र पशुपतिनाथ अलौकिक पात्र हुन् । कृतिमा पात्रहरू भएपछि तिनीहरूको क्रियाकलाप आवश्यक हुन्छ तर यस कृतिमा पात्रहरूबीच संवाद वा क्रियाकलाप शून्यप्रायः देखिन्छ । यस कृतिका लौकिक पात्रको जीवन नै मानवमात्रका लागि प्रेरणास्रोत भएकाले यिनीहरूको विशेषताबाट हामीले शिक्षा लिनुपर्छ भन्ने लेखकको आग्रह रहेको छ । त्यस्तै काठमाडौँका चारकुनामा बस्ने चारनारायण एवं राष्ट्रदेव पशुपतिनाथ मौन भएर पनि देशको रक्षा गर्न, सधैं स्थिर रहन, जातीयता तथा साम्प्रदायिकता त्याग्न सधैं प्रेरणा दिइरहेछन् । अतः हामीले तिनीहरूबाट पनि सद् उपदेश ग्रहण गर्नुपर्छ भनेर लेखक सबैसँग अनुरोध गर्छन् । यी पात्रहरूमध्ये चारनारायण र शिव पुलिङ्गी पात्र हुन् । कार्यका दृष्टिले पशुपतिनाथ मुख्य र अन्यलाई गौण मान्न सकिन्छ । प्रवृत्ति सबैको उद्देश्य अनुकूल छ । स्वभाव सबैको गतिहीन देखिन्छ । सबैको जीवनचेतना जातिगत रहेको छ ।

ग) परिवेश

हाम्रो देशको हिमाल, पहाड र तराई नै यस कृतिभित्रको परिवेश हो । यहाँ लेखकले सेता हिमाल, अग्ला पहाड, सेती, काली, गण्डकी, चेपे, मस्याङ्दी, कर्णाली, कोशी, भेरी आदि नदीहरू रारादह, स्यापूताल, बेगनासताल, फेवाताल तराईका फाँट वनजङ्गल, राजधानी लगायतका क्षेत्र र ठाउँहरूलाई नामै लिई उल्लेख गरेका छन् । अतः यी ठाउँहरू यस कृतिका स्थानगत परिवेशका रूपमा देखापरेका छन् । यहाँ कालगत र समयगत परिवेशको स्पष्ट उल्लेख पाइँदैन । तर पनि लेखकले कृतिमा सियो र पाचकसम्म खरिद गर्ने स्थिति रहेको, छिमेकीहरूले वालेंस, टेप, टेलिभिजन ट्रान्जिस्टर आदिको निर्माण गरिसकेका हाम्रा गाउँघरमा भने स्कुल र स्वास्थ्य संस्थाहरूको स्थापना हुन नसकेको, हामी विदेशीहरूको गुलाम बन्नुपरेको अवस्थाको चित्रण गरेका छन् । लेखकले यस कृतिको रचना वि.सं. २०२८/०२९ सालमा गरेका

र यस कृतिभिन्न वर्णित परिवेश पनि त्यस परिवेशसँग मिल्दो देखिएकाले प्रस्तुत कृतिको समयगत परिवेश २०२८ सालको सेरोफेरोलाई निर्धारण गर्न सकिन्छ । यस कृतिको सामाजिक, शैक्षिक र राजनैतिक परिवेशले पनि हामीहरू विकासको पूर्वाभ्यासका क्रममा रहेको सङ्केत गर्छन् ।

३.१.१.३ सारवस्तु

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा राष्ट्रप्रेम, नैतिक सन्देश र प्रकृतिचित्रण जस्ता विषयहरू नै सारवस्तुका रूपमा आएका छन् । यी सारवस्तुहरूलाई तल उपशीर्षकहरूमा विभाजित गरेर निम्नानुसार अध्ययन गर्न सकिन्छ :

क) राष्ट्रप्रेम

मुक्तिनाथ आफ्नो देशको अगाध माया गर्ने राष्ट्रप्रेमी कवि हुन् । उनका कवितामा हाम्रो संस्कार, संस्कृति, साहित्य एवं प्राकृतिक सम्पदाहरूप्रति गहिरो माया अभिव्यक्त भएको छ । आदर्शवादी कवि मुक्तिनाथ आफ्ना कवितामा नेपालीहरूलाई आफ्नै पाखा-पखेरामा सीप कुँदेर सुख-दुखमा एक आपसमा हातेमालो गर्न आग्रह गर्छन् । त्यही परिश्रमी कार्य र एक-आपसको मेल-मिलापमा देवता पनि खुसी हुन्छन् भन्ने उनको ठहर रहेको छ । हामी विभिन्न जात-जाति धर्म र सम्प्रदायमा बाँढिएका हुनाले हाम्रा आ-आफ्नै परिधिहरू हुन सक्छन् तर राष्ट्रनिर्माणको पवित्र कार्यमा संलग्न हुँदा ती कुँडिएका भावनाहरूलाई थाती राखेर देश निर्माणको महायज्ञमा संलग्न हुनुपर्छ भन्दै कवि लेख्छन् :

हो चारजात अनि छतीस वर्ण तिम्रो ।

हो तापनि मिलिजुली गर काम राम्रो ।

वर्गीयभेद नगरी समभाव राख ।

एकै मतो गर मिलेर मिलाउ हात ॥

राष्ट्रनिर्माणको कार्यमा जुट्दा कसैले वर्गीयता, क्षेत्रीयता, जातीयता र साम्प्रदायिकता छुट्टयाउनु हुन्न । यी सबै वर्ग मिलेमात्र नेपालीहरूले सोचेअनुरूप काम गर्न सक्छन् । त्यसैले सबै क्षेत्र र वर्गका नेपालीहरू मिलेर सुन्दर नेपालको निर्माण गर्नुपर्छ भन्ने कविको शतशः आग्रह देखिन्छ । उनी राष्ट्रनिर्माणको कोरा नारा मात्र नदिएर एउटा सर्वसम्मत योजना तर्जुमा गर्छन् । सर्वप्रथम नेपालका गाउँघरमा शिक्षा, स्वास्थ्य, खानेपानी, बाटोलगायतका आधारभूत आवश्यकताहरूको परिपूर्ति गर्नुपर्छ, कृषियोग्य जमिनहरूमा सिंचाइको व्यवस्था मिलाएर नयाँ प्रविधिअनुरूप खेती गरिनुपर्छ, खानीहरूको सदुपयोग गरेर राष्ट्रकोष बढाउनुपर्छ, जडीबुटीहरूको प्रशोधन गरेर औषधि निर्माण हुनुपर्छ, जसबाट राष्ट्रमा चाँडै परिवर्तन आउने छ । नेपालभन्दा धेरै निम्जा राष्ट्रहरूले छोटै अवधिमा द्रुतगतिमा विकास गरिसकेका छन् । त्यसैले नेपालीहरू पनि परिश्रमी बनून् र देशको विकास गरून् भन्ने कविको अनुरोध छ । कवि राष्ट्रसेवक कर्मचारीहरूलाई सधैं फुर्तिलो र इमान्दार बन्न प्रेरित गर्छन् । लेखक स्वतन्त्रताका पनि अनन्यप्रेमी देखिन्छन् । उनी एक ठाउँमा हाम्रो देशको स्वतन्त्रताको सुवास विश्वभरि नै मगमगी फैलिएको चर्चा गर्दै लेख्छन्:

यो हो स्वतन्त्र र विशुद्ध तटस्थ देश

यस्को छ इज्जत ठुलो सब देश-देश ... ।

नेपालीहरू इतिहासको आरम्भदेखि नै स्वतन्त्र रूपमा विश्वसामु परिचित छन् । उनीहरू स्वतन्त्रताको असाध्यै माया गर्छन् तर उनीहरू असाध्यै अल्छी बनेका छन् । यही आलस्यपनले गर्दा उनीहरू सियो र पाचकसम्म किन्ने अवस्थामा पुगेका छन् । इर्ष्या, बेमेल, फुट आदिका कारण आर्थिक अवस्था दिनानुदिन खस्कियो छ । कति गरिबहरू रात-दिन पसिना बगाएर पनि भोकभोकै बाँच्न विवश छन् भने कति चाहिं गरिबका पसिनामा शयर गर्दै महलमा बसेका छन् । यस्तो विषम परिस्थितिप्रति खेद व्यक्त गर्दै कवि लेख्छन् :

देख्छु गरीब कहिं बस्तछ भोक-भोकै ।
बस्छन् कुनै जनहरू पनि सोख-सोखै ॥
मेरा यी सन्ततिहरू सब एक जाती ।
देखी चरक्क भइ यो चिरिइन्छ छाती ॥

कवि अन्तमा लेख्छन्: नेपालीहरूले आफ्नो देशको इज्जत राख्नसके विदेशमा बहादुर, मजदूरका रूपमा हेपिनुपर्दैन । नेपालको भविष्य पनि चम्किनेछ । अतः सबै नेपालीलाई आह्वानमा जुट्न आग्रह गर्दै कवि काव्यको अन्तमा लेख्छन्:

आमा सदा खुसि तुल्याउ बनी सपूत ।
होस् राखी काम गर है नबनी कपूत ॥
सल्लाह दिन्छु म यही तिमीहेरुलाई ।
आह्वानमा जुट छिटो सब दाजुभाई ॥

कवि मुक्तिनाथ आचार्य निश्चय पनि राष्ट्रवादी कवि हुन् तर कविको यस कृतिभित्रको राष्ट्रवादलाई आदर्शवादको बोझले ज्यादा थिचेको छ । अधिकांश कविताहरूमा कुनै नकुनै रूपमा आदर्शवादका फुर्का जोडिदिएका छन् ।

ख) नैतिक सन्देश

मुक्तिनाथ नैतिक सन्देशलाई मुख्य सारवस्तु बनाएर कविता लेख्ने कवि हुन् । उनका हरेक कविताहरूमा कहीं नकहीं नैतिक उपदेश रहेकै हुन्छन् । उनी मानिसलाई असल बन, आदर्शवादी बन भनेर प्रेरणा दिन्छन् । त्यसैले उनको नैतिक उपदेशलाई आदर्शवादभित्र राख्न सकिन्छ । उनका कविताले मानिसलाई कर्तव्यवादी, अनुशासित र परोपकारी बनेर समाजका खराब मानिसका मस्तिष्कलाई रूपान्तरित गर्नुपर्छ भन्ने शिक्षा दिन्छन् । मानिसले जीवनमा लिनै पर्ने कुरा ज्ञान हो । ज्ञानको प्राप्ति भएपछि अज्ञान आफैँ हटेर जान्छ र जीवनमा भलमल्ल घाम लाग्छ अनि विवेकको उदय हुन्छ । यही विवेकले मानिसलाई हिंसा-अहिंसा, सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, सद्-असद्, छुट्टयाउने सामर्थ्य प्रदान गर्छ । यदि मानिसले जीवनमा विवेकको प्रयोग गर्नसक्यो भने निश्चय पनि उसको जीवन सार्थक हुनेछ भन्ने लेखकको दृढ विश्वास रहेको पाइन्छ ।

नैतिक सन्देश प्रस्तुत भएको उनको एउटा पद्य तल प्रस्तुत छ :

ईर्ष्या र द्वेषअरूको कहिल्यै नगर्नु
विश्वासघातीहरूको भरमा नपर्नु ।
इच्छा नराखी मनमा जति काम पर्छ ।
गर्नु सदैव यसले पछि हीत गर्छ । ।

कवि मुक्तिनाथका खण्डकाव्यले प्रदान गर्ने नैतिक सन्देशको सारकुरा यही हो ।

ग) प्रकृतिचित्रण

मुक्तिनाथ प्रकृतिचित्रणलाई महत्त्वदिने कवि होइनन् तापनि 'आह्वान' खण्डकाव्यमा उनले ठाउँ-ठाउँमा प्राकृतिक सौन्दर्यको मनमोहक वर्णन गरेका छन् । उनको प्रकृतिचित्रण स्वतन्त्र नभई उपदेशमूलक देखिन्छ । प्रकृतिका हरेक क्रियाकलापले मानवजीवनलाई प्रेरणा दिइरहेको हुन्छ भन्ने विचारलाई आत्मसात गर्ने मुक्तिनाथले प्रत्येक प्राकृतिक वस्तुहरूको चित्रणको अन्त्यमा ती प्राकृतिक सम्पदामार्फत केही नकेही उपदेश दिएका हुन्छन् । उनको प्रकृतिचित्रण विशेष नभएर सामान्य किसिमको देखिन्छ । उनले प्रकृतिचित्रणका क्रममा प्रकृति र मानवजीवनबीच तादात्म्य सम्बन्ध देखाएको पाइँदैन । उनको प्रकृतिचित्रणमा रुसोको दार्शनिक प्रभाव वा देवकोटाको प्रकृतिलाई मानविकीकरण गर्ने शैली पनि भल्किएको देखिँदैन । उनी हाम्रा देशका प्राकृतिक सम्पदाहरूबाट मोहित भएर ती वैभवबाट हामीले केही कुरा सिक्नुपर्छ भन्ने उपदेशमात्र दिन्छन् । सगरमाथा लगायतका सेता हिमालहरू, गर्भमा विविध रत्नको खानी लिएका सुन्दर पहाडहरू, छिछ्छि गर्ने भर्नाहरू, दर्शनीय ताल-तलैयाहरू, कलकल बग्ने कोशी, कर्णाली, गण्डकी, सेती, काली, आँकु, ताँदी, चेपे, दरौँदी, त्रिशुली, मर्स्याङ्दी लगायतका नद-नदीहरू, तराईका रमाइला फाँटहरू, वनजङ्गल र वन्यजन्तुहरूको अपूर्व शोभा, काठमाडौँ उपत्यकाको मनोरम दृश्य र वाग्मती एवं विष्णुमतीको सौन्दर्य नै यस काव्यको प्रकृति हो । यिनै प्रकृतिका विविध मनोरम रूप र अवस्थाको कविले काव्यभित्र चित्रण गरेका छन् । कवि प्राकृतिक वैभवको सुन्दर चित्रण गर्छन् । अनि तिनीहरूलाई माध्यम बनाएर आफ्ना तर्फबाट उपदेश दिन्छन् । नदी, भर्ना र पहाडहरू हामीलाई शूरवीर बन्न आग्रह गर्छन् । त्यसैगरी तराईका हरिया जङ्गल र जीवजन्तुहरू सधैं जागा रहेर कर्म गर्न अनुरोध गर्छन् । सगरमाथा कर्तव्यवादी बन्न र आफ्नो शिर सधैं ठाडो बनाउन प्रेरणा दिन्छ । यी र यस्ता थुप्रै सद् उपदेशहरू हाम्रा प्राकृतिक सम्पत्तिहरूले हामीलाई दिएका छन् । यस प्रसङ्गमा कवि भन्छन् :

नेपालवासि जनता सबलाई हेरी ।

भन्छन् ती एकस्वरले नदि-ताल फेरि ॥

हाम्रो छ तागत ठूलो तिमी जान पैले ।

दिन्छौँ प्रशस्त विजुली गर काम ऐले ॥

भन्दै ती वृक्षवनजङ्गल आज टम्म ।

खम्बा वनी बसिरहेछन् खूब गम्म ॥

साथी लिएर सँगमा पनि बाघ-भालु ।

गैंडा र हात्ति अरू जन्तुहरू विषालु ॥

यस कृतिका उपर्युक्तपङ्क्तिहरू उपदेशमूलक प्रकृतिचित्रणअन्तर्गत आएका हुन् । कविले केही ठाउँमा प्रकृतिको मनोहारी चित्रण गरेका छन् । त्यसको नमुना तल प्रस्तुत छ :

भर्ना र ताल नदीको छ अपूर्व शोभा

कल्पाइ दिन्छ सबको मन खूब तोबा

हेर्दा तराईतिरको छ अपूर्व दृश्य

मैदान फाँट परी फेरि अनेक वृक्ष ॥

कविले छन्दको बन्धनभित्र बाँधिएर पनि तलका नदीहरूको नाम स्पष्ट र सग्लै रूपमा लिएका छन् । तिनीहरूको उच्चारण गर्दाको श्रुतिमाधुर्य कमनीय देखिन्छ । हेरौं-

सेती र कालि बुढिगण्डकि आँकु तादी ।
चेपे दरौदी त्रिशुली मरस्याङ्दी मादी ॥
कर्णाली कोशी दुधकोशी अरूण भेरी ।
यी देशका नद-नदी अरू ताल फेरि ॥
यस कृतिमा कविको सुकुमार कल्पना पनि भल्किएको छ । जसलाई तलका पंक्तिमार्फत प्रस्तुत गर्न सकिन्छ :

कस्को छ तागत म माथि चढेर जाऊ ।
भन्दै मनुष्य जति छौ सब आउ आऊ ॥
संसारको बलजति सब जाँची आज ।
बस्छन् हिमाल चुचुरा गरि येही काज ॥
कवि काठमाडौंको तत्कालीन सौन्दर्यबाट मोहित देखिन्छन् । उनी कान्तिपुरीलाई स्वर्गसँग तुलना गर्दै लेख्छन् :
स्वर्गै समान नगरी छ अपूर्व राम्रो ।
हो राजधानी सबको नयपालि हाम्रो ॥
यो काठमाडौं अति सुन्दर नै पुरी छ ।
विख्यात नाम यसको जगतै भरी छ ॥

कवि वाग्मती र विष्णुमतीले सुन्दर तुल्याएको काठमाडौंको प्रशंसा गर्दै लेख्छन् :

राम्रो छ दृश्य नदि वाग्मती पूर्व वगछ ।
आनन्ददायक छ क्या मनलाई हर्छ ॥
उस्तै छ दृश्य नदि विष्णुमती परि छ ।
यो पर्छ पश्चिम दिशातिर जानुपर्छ ॥

वस्तुतः यस कृतिभित्रको प्रकृतिचित्रण सरलशैलीमा गरिएको भएपनि सजीव छ । यस कृतिको कृतिचित्रणमा आलङ्कारिक चमत्कार त छैन तर पनि श्रुतिमाधुर्य भने अवश्यै पाउन सकिन्छ ।

३.१.१.४ शीर्षकविधान

प्रस्तुत खण्डकाव्यको शीर्षक आह्वान रहेको छ । यसको अर्थ 'आमन्त्रण' 'अपिल' वा 'बोलाउने काम' भन्ने हुन्छ ।^{५३} कृतिको प्रारम्भिक खण्डदेखि अन्त्यसम्म कविले कतै पात्र मार्फत र कतै आफैले सारा नेपालीहरूलाई राष्ट्रनिर्माणमा जुट्न अनुरोध गरेका छन् । कृतिका केही पद्यका प्रकृतिचित्रणबाहेक अन्य सबै पद्यहरूमा प्रत्यक्ष-परोक्षरूपमा आमन्त्रण रहेको छ । यही आमन्त्रण अर्थबोधक आह्वान पदलाई कविले यस कृतिको शीर्षकचयन गरेका छन् । प्रस्तुत काव्य 'आह्वान' सारवस्तु वा उद्देश्यलाई आधार मानेर गरिएको शीर्षकचयन हो । कृतिको मूल कथ्य र शीर्षकबीच पूर्ण तालमेल देखिएको छ ।

^{५३} पोखेल, बालकृष्ण र अन्य (सम्पा.) नेपाली बृहत् शब्दकोष. पूर्ववत्, पृ.१२४ ।

३.१.१.५ भावविधान

काव्यतत्त्वको सन्दर्भमा भावशब्दले रसलाई सङ्केत गर्दछ । साहित्यिक काव्यकृतिमा रसविधान वा भावविधानको विशेष महत्त्व रहेको हुन्छ । कृतिका प्रासङ्गिक क्षणमा अनुभूत गरिने वीर, करुण आदि रसका उत्साह शोक जस्ता स्थायीभावहरूले काव्यको सौन्दर्य बढाएका हुन्छन् । प्रस्तुत खण्डकाव्यमा पात्र-पात्राबीच क्रियाकलाप नभएको एवं वीररसको स्थायीभाव उत्साहलाई उद्दीपन गराउने पात्र विषयको वर्णन सुनेर त्यसबाट प्रभावित भई कुनै पनि पात्रमा कायिक, मानसिक, सात्विक र आहार्य अनुभावको सञ्चरण हुन नसकेको कारण यहाँ आश्रयपात्रमा स्थायीभाव जागृत हुनसकेको छैन । स्थायीभाव जागा नभएपछि पात्रपात्राहरूमा वीररसको व्यभिचारीभाव गर्व, आवेग, उग्रता, औत्सुक्य, क्रोध, वितर्क आदि पनि जाग्न सकेको छैन । अतः यस काव्यमा उद्दीपनविभाव मात्र पाइन्छ । यस कृतिका वनजङ्गल, हिमाल, पहाड, तराई, पशुपतिनाथ आदि पात्रहरूले हामी नेपालीहरूलाई उद्दीप्त बन्न प्रेरणा दिएका छन् । अतः उनीहरू उद्दीपनका विषय हुन् । उक्त प्रेरणाका आश्रय हामी नेपालीहरूको त्यहाँ उपस्थिति देखिएको छैन । अतः आश्रयको अभावमा पशुपतिनाथ पनि आलम्बन विभाव बन्न नसकेर उद्दीपन विभाव मात्र भएका छन् । काव्यप्रकाशमा विभाव मात्र भए पनि काव्य हुनसक्छ भनेर प्रकृतिचित्रण भएको एउटा पद्यलाई उदाहरण बनाइएको पाइन्छ ।^{५४} उपर्युक्तविश्लेषणबाट प्रस्तुत खण्डकाव्य भावका दृष्टिले उद्दीपनविभाव मात्र भएको काव्य हो भन्ने निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ ।

३.१.१.६ सर्गयोजना र आयाम

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा आख्यानको एकदेशीयता पाइँदैन । त्यसैगरी यस काव्यलाई सर्ग वा खण्डमा विभाजित गरिएको पनि छैन । यसरी काव्यमा आख्यानयोजना र सर्गयोजनाको अभावमा पूर्व एवं परसर्गमा घटित घटनालाई एक-आपसमा समायोजित गर्ने प्रबन्धात्मक सर्गयोजनाको आवश्यकता पनि देखिँदैन । काव्यको विषयवस्तुको सूक्ष्म अध्ययन गर्दा प्रारम्भबाट ३७ औं पद्यसम्म रहेको विषयवस्तु र त्यसपछिको विषयवस्तुबीचको भिन्नो अन्तरले तिनीहरूलाई छुट्टाछुट्टै खण्डका रूपमा परिकल्पना गर्न सकिन्छ । यसरी परिकल्पित दुई पूर्वापर विषयलाई जोड्न सेतुका रूपमा उपस्थित शिवजीको स्वरूपवर्णनले कल्पित दुई भिन्न विषयवस्तुबीच प्रबन्धात्मकताको सङ्केत गरेको छ । यस पद्यमा शिवजी आसनमा बसेर मुसुक्क हाँसेको चित्रण छ । शिवजीको मन्द मुस्कानमा सुन्दर नेपालको परिकल्पना छ, जुनकुरा शिवजीले यस पछिका पद्य मार्फत अभिव्यक्त गरेका छन् । यसरी प्रस्तुत काव्यमा प्रबन्धात्मक सर्गयोजना नपाइए पनि एउटै सर्गबीचका दुई भिन्न विषयवस्तुलाई जोड्ने प्रबन्धात्मकताको परिकल्पना गर्न सकिन्छ ।

प्रस्तुत खण्डकाव्य एउटै खण्डमा रहेको छ । वर्णमात्रिक छन्द वसन्ततिलकाका ११६ पद्य ३८ पृष्ठ नै यस कृतिको आयाम हो ।

३.१.१.७ लयविधान

लय भनेको स्वरको आरोह-अवरोहको विशेष क्रम हो ।^{५५} सङ्गीतमा जस्तै काव्यमा पनि लयको विशेष महत्त्व रहेको हुन्छ । छन्दोबद्ध कविताहरूमा स्वरको आरोह-अवरोह र स्थिर

^{५४} मम्मट. काव्यप्रकाश. (चतुर्थ उल्लास) ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, पृ. ११३ ।

^{५५} पोखेल, बालकृष्ण र अन्य (सम्पा.), पूर्ववत्, पृ. ११६८ ।

गरी तीन अवस्था रहेका हुन्छन् । त्यसैगरी शब्दोच्चारणको विश्रामस्थान र क्रमिकतालाई लयले निर्धारण गरेको हुन्छ । लयका उपर्युक्तअङ्गहरूका आधारमा नै पद्य कविताहरूले साङ्गीतिक भङ्कार प्रदान गर्दछन् । प्रस्तुत खण्डकाव्य वर्णमात्रिक छन्द वसन्ततिलकाको लययोजनामा आवद्ध रहेको छ । यस छन्दमा १४ अक्षर र तगण (SSI), भगण (SII) जगण (ISI), जगण (ISI) र दुई गुरुवर्ण रहेका हुन्छन् । प्रत्येक पाउको छैठौं एवं आठौं अक्षरमा विश्राम हुन्छ ।^{५६} यस कृतिमा उपर्युक्त लययोजना र विश्रामस्थानको पूर्णपालना भएको छ । काव्यका पद्यहरूमा शब्दविन्यासको सरलता एवं मिठास, अन्त्यानुप्रासको पूर्ण पालना, वाक्य विन्यासमा पूर्ण सरलता, भावको सरल प्रवाह पाइन्छ । यस काव्यमा गेयात्मकताको भङ्कार पाउन सकिन्छ । अतः उपर्युक्त तत्त्वहरूका आधारमा यस काव्यको लययोजना उत्कृष्ट देखिन्छ ।

३.१.१.८ कथनपद्धति

प्रस्तुत खण्डकाव्यका अधिकांश पद्यहरूमा प्रत्यक्षकथन (कविनिबद्धवक्तृप्रौढोक्ति) पद्धति र केही पद्यहरूमा अप्रत्यक्षकथन (कविप्रौढोक्ति) पद्धति पाइन्छ । यसका अतिरिक्त थोरै पद्यहरूमा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पद्धतिको मिश्रितरूप समेत पाइन्छ । ११६ पद्यमा फैलिएको यस खण्डकाव्यमा शीर्षक-उपशीर्षक विभाजित छैनन्, तापनि विषयवस्तुको भिन्नताले गर्दा काल्पनिक रूपमा विभाजित सुरुका ३७ पद्यमा विद्यमान कथनपद्धति र त्यसपछिको कथन पद्धतिमा नितान्त भिन्नता देखिन्छ । सुरुमा तीनवटै कथनपद्धति अङ्गालिएको छ, भने पछि प्रत्यक्ष कथनपद्धति मात्र अङ्गालिएको पाइन्छ । प्रत्यक्षकथन उत्तरार्द्धमा जति स्पष्ट छ, त्यसको अपेक्षा पूर्वार्द्धमा स्पष्ट अभिव्यक्त हुनसकेको देखिदैन । कवि सुरुका पद्यमा पात्रको नामोच्चारण गर्छन् र उनीहरूलाई बोल्न लगाउछन् । यसरी बोल्ने पात्रहरू कुन पद्यदेखि कुन पद्यसम्म बोलेका हुन् भन्नेकुरा छुट्ट्याउन कठिन हुन्छ । केही ठाउँमा भने पात्रहरूले आफ्ना भनाइ अन्त गरेपछि कवि भावीपात्रको स्वरूपको परिचय गराउँछन् । त्यसो गर्दा वक्ताको परिवर्तन भएको बुझिन्छ र यस पात्रले यस पद्यदेखि यस पद्यसम्म बोलेको हो भन्ने छुट्ट्याउन सकिन्छ । तल प्रत्यक्षकथनको एउटा नमुना प्रस्तुत छ :

संसारमा गरिसके अरूले विकास ।
बाँधेर हात अकमक्क भई हतास ॥
बस्छौं अभै पनि तिमीकन शर्म छैन ।
यो देख्न सुन्न अब लौ सहने म छैन ॥

त्यस्तै अप्रत्यक्षकथनको एउटा नमुना :

सेता हिमाल चुचुरा शिरमा रहेर ।
नेपाल भल्मल बनाई खुशी भएर ॥
सञ्जीवनी बुटिहरू तकसाथ लिन्छन् ।
नेपाललाई खुशी भै कन काख दिन्छन् ॥

यसरी नै अन्यत्र पनि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष र मिश्रित कथनपद्धतिका उदाहरणहरू पाउन सकिन्छ ।

३.१.१.९ बिम्ब र प्रतीकयोजना

^{५६} पन्त, भरतराज. नेपाली साहित्य कोश. काठमाडौं : ने.रा.प्र.प्र., २०५५, पृ. २९२ ।

काव्यले पाठकका मनमा छोडेको मानसिक चित्र नै बिम्ब हो ।^{५७} विशिष्ट साहित्यिक कृतिको अध्ययनपछि त्यस कृतिले पाठकमा नमेटिने गरी छाप बसाएको हुन्छ । त्यही मानसिक छाप वा प्रभावलाई बिम्ब भन्ने गरिन्छ । अर्को अर्थमा भन्दा साहित्यिक कृतिमा वर्णित वर्णनात्मक सुन्दर अनुच्छेदलाई पनि बिम्ब भन्न सकिन्छ ।

मुक्तिनाथ आचार्यको 'आह्वान' खण्डकाव्यमा प्रथमस्तरको बिम्बको प्रयोग थोरै ठाउँमा मात्र पाइन्छ । काव्यमा प्रयुक्त बिम्बहरूलाई पनि कविले ओजस्वी बनाउन सकेका छैनन् । कृतिका केही अंशहरूमा कविले हाम्रो गरिबी, पछौटेपन, अशिक्षा, स्वास्थ्योपचारको अभाव, आपसी बेमेल, दिनभरि भारी बोक्दा पनि पेट भोको रहने स्थिति जस्ता वर्णनहरूको प्रयोग गरेको पाइन्छ । ती वर्णनले नेपालीको दयनीय स्थितिको तस्वीरलाई सर्लक्क उतारेका छन् । अतः तिनीहरूलाई बिम्बका प्रारम्भिक रूप मान्न सकिन्छ ।

काव्यमा सुन्दर अनुच्छेदका रूपमा वर्णित बिम्बहरू यस कृतिका केही पद्यहरूमा पाउन सकिन्छ । कविले कृतिको प्रारम्भिक अंशमा नेपालका सुन्दर र अग्ला हिमाल, तराई एवं पहाडका रमणीय फाँट, वनजङ्गल, काठमाडौं उपत्यका एवं नदी र भर्नाहरूको कलात्मक वर्णन गरेका छन् । यी र यस्ता सुन्दर वर्णनहरू नै यस कृतिअन्तर्गतका दोस्रो स्तरका बिम्ब हुन् । यसको एउटा नमुना तल प्रस्तुत छ :

हेर्दा तराईतिरको छ अपूर्व दृश्य ।
मैदान फाँट परी फेरि अनेक वृक्ष ॥
अग्लो भई अब म हेर्दछु राजधानी ।
भन्दै बढे हलहली खूब खुशी मानी ॥

कुनै अनुपस्थित वस्तुलाई बुझाउन प्रयुक्त विशेष वस्तु नै प्रतीक हो । काव्यमा प्रतीकले, व्यक्त गर्न नसकिने धेरै कुरा वा भावलाई अभिव्यक्त गरेको हुन्छ । अतः प्रतीक अमूर्तको मूर्तविधान हो । प्रतीक काव्यको समग्ररूप, अनुच्छेद, वाक्य, वाक्यांश र पदका रूपमा समेत प्रयुक्त हुनसक्छ । प्रतीक काव्यको अनिवार्यतत्त्व नभए पनि सौन्दर्य भने अवश्य हो ।

मुक्तिनाथको आह्वान खण्डकाव्यमा कृतिगत स्तरमा प्रतीक प्रयोग पाइँदैन । कृतिको शीर्षक र यसले समेटेको समग्र विषयवस्तु प्रतीकात्मक देखिँदैन । अनुच्छेद र वाक्यस्तरका प्रतीकहरू पनि कतै कतै मात्र देखिन्छन् । वाक्यांश र पदस्तरका प्रतीकहरू भने काव्यमा प्रयोग गरेको नभई भावप्रवाहको क्रममा सहज गतिले उपस्थित भएका हुन् । यसरी यस खण्डकाव्यमा प्रयुक्त वाक्यांश र पदस्तरका प्रतीकहरूको नमुना तल प्रस्तुत गरिन्छ :

सेता हिमाल (१ औं पद्य), नेपालको अन्धकार (१०) छाती चिरिनु (४४), चारजात छत्तीस वर्ण (५०) भाइ फुटनु (१०७), छाती फुकाउनु (११५) लगायतका प्रतीकहरू यस काव्यमा प्रयुक्त वाक्यांशस्तरका प्रतीक हुन् । पदस्तरका प्रतीकहरूमा परी (२३ औं पद्य) स्वर्ग (२८) नदी, हनूमान् (३३), शङ्कर (३६), बैकुण्ठ (५९), गिद्ध (९५), भूस्वर्गलोक (९६), बुद्ध (९७), कैलाश (११०) आदि पर्दछन् । यी प्रतीकहरूमा विशिष्टता र नवीनता नभए पनि यिनीहरूले काव्यमा सौन्दर्य थपेका छन् ।

३.१.१.१० अलङ्कारविधान

मुक्तिनाथ अलङ्कारवादी कवि होइनन्, त्यसैले उनका काव्यमा नियोजित रूपमा अलङ्कारप्रयोग पाइँदैन तर पनि काव्यका केही अंशमा स्वभाविक रूपमा शब्दालङ्कार र

^{५७} श्रेष्ठ, दयाराम. नेपाली कथा भाग ४ ललितपुर : साभाप्र., २०५७, पृ. १३ ।

अर्थालङ्कारहरू प्रयुक्त देखिएका छन् । तल उनको यस काव्यभित्रको अलङ्कारिक प्रयोगको विवरण प्रस्तुत गरिन्छ ।

काव्यमा प्रयुक्त अलङ्कारहरूमध्ये धेरै ठाउँमा शब्दालङ्कार र थोरै ठाउँमा अर्थालङ्कार प्रयोग भएका छन् । शब्दालङ्कारमा अन्त्यानुप्रास अलङ्कारको पालना उनले सर्वत्र गरेका छन् । यसलाई कविले अधिकांश ठाउँमा शब्दगत समानता र केही ठाउँमा अक्षरगत समानता बनाएर प्रयोग गरेका छन् । यसका अतिरिक्त अन्य शब्दालङ्कारहरूमा यमक (१,६ औं पद्यमा साङ्केतिक), पुनरुक्तवदाभास (१२,१८ औं पद्यमा), छेकानुप्रास (७), श्रुत्यनुप्रास (८,१०) र वृत्यनुप्रास (७, १४) अलङ्कारहरू सहज र साङ्केतिक रूपमा देखिएका छन् । त्यस्तै अर्थालङ्कारहरू स्वभावोक्ति (४ औं पद्यमा साङ्केतिक), उत्प्रेक्षा (३५) र लोकोक्ति (५०,१०७) लगायतका अलङ्कारहरू यस काव्यमा पाइन्छन् । तल पुनरुक्तवदाभास अलङ्कारको एउटा उदाहरण प्रस्तुत छ :

नेपालका यी गहना धन खुब राम्रा ।

क्या स्वच्छ सुन्दर सफा नदिताल हाम्रा ॥

भर्ना र ताल नदिको छ अपूर्व शोभा ।

कल्पाइदिन्छ सबको मन खूब तोवा ॥

अर्थालङ्कार अन्तर्गतका उपमा, रूपक, दृष्टान्त, काव्यलिङ्ग प्रभृति अलङ्कारहरू स्पष्ट रूपमा नदेखिएका हुनाले तिनीहरूलाई यहाँ प्रस्तुत गरिएको छैन । यस कृतिभित्रको उनको अलङ्कारशिल्प कृतिको उत्तरार्द्धको सापेक्ष पूर्वार्द्धमा सबल देखिन्छ ।

३.१.१.११ भाषाशैली

प्रस्तुत खण्डकाव्यको भाषा सरल, प्रवाहमय र सम्प्रेषणीय रहेको पाइन्छ । कविले अधिकांश ठाउँमा सरल वाक्यको प्रयोग गरेका हुनाले पाठकलाई भाषिक दुर्बोधता खड्किदैन । कृतिमा समस्त शब्दहरू ज्यादै न्यून संख्यामा प्रयोग भएका छन् । छन्दमिलानका क्रममा वर्णहरूको तछ्छाइ-कपाइ र अन्वयसंरचनामा त्यति धेरै हेरफेर नपाइए पनि मात्रागत परिवर्तन भने प्रशस्तै पाइन्छ । यस क्रममा नेपाली र अन्यस्रोतका प्रचलित शब्दहरूलाई भर्ना शब्दमा परिणत गर्ने प्रयास कता-कता भएको देखिन्छ । यसका उदाहरणका रूपमा नेपाल - नयपाल, हावा - हवा, मर्याङ्दी - मरस्याङ्दी, आपस - आपस्त, पहाड -पाहाड, निसा - निस्सा, अलि - अल्ली, शरम - शर्म, स्कुल - इस्कुल, कोही - क्वही आदि नमुनाहरूलाई लिन सकिन्छ । कविले आफू र आफ्ना पात्रमार्फत उपदेश दिने क्रममा मध्यम आदरार्थी सर्वनाम (तिमी) र क्रियापदको प्रयोग गरेका छन् । अतः उनको औपदेशिक भाषा प्रभुसम्मत नभएर मित्रसम्मत देखिएको छ । कविले काव्यमा नेपाली जनजिब्रोमा भिजेका शब्दहरूलाई नै अधिकतर प्रयोग गरेका छन् । तिनीहरूका अतिरिक्त कानुन, इस्कुल, वालेंस, टेप, टेलिभिजन, ट्रान्जिस्टर, मोटर एवं हेलिकप्टर जस्ता अङ्ग्रेजी आगन्तुक; सराव, आपस्त, ठण्डा, सलाम, इमान, वकवाद, जमाना, खडा, एवं शर्म जस्ता अन्य स्रोतका आगन्तुक र संस्कृत स्रोतका तत्सम शब्दहरूलाई प्रयोगमा ल्याएका छन् । दाजु-भाइ, हाँसि-हाँसि, गाँसि-गाँसि, वेश-वेश, देश-देश, चिजबीज, गाउँघर, व्यभिचारीकाल, कामकाज जस्ता संयुक्त शब्दले काव्यलाई श्रुतिमधुर बनाएका छन् । लेखकले भाइ फुटे गवार लुटे, चारजात छत्तीस वर्णको साभा फूलवारी प्रभृति थुप्रै उखान र टुक्काहरूको प्रयोग गरेका छन् । संक्षेपमा सरल शैलीमा रचित यस काव्यको भाषा सरल मधुर र बोधगम्य रहेको छ ।

३.१.१.१२ निष्कर्ष

प्रस्तुत खण्डकाव्यको रचना वि.सं. २०२८/२९ मा र प्रकाशन २०२९ फाल्गुनमा भएको हो । यस कृतिको रचनामा भानुभक्त आचार्यको लोकहितकारी भावना र उनका कृतिहरूले प्रेरणा र प्रभाव प्रदान गरेका छन् । यसको विषयवस्तु नेपालीहरूको दुरावस्थाको चित्रण र भविष्यत्कालीन सुन्दर नेपालको परिकल्पना हो । यसमा आख्यानको एकदेशीयता पाइँदैन । यस काव्यमा प्राकृतिक सम्पदा र शिव, नारायण आदि लौकिक-अलौकिक पात्रहरू रहेका छन् । हाम्रो देशको हिमाल पहाड र तराई अन्तर्गतको परिवेश नै यस कृतिको परिवेश हो । यस काव्यले प्रदान गरेका सारहरूमा राष्ट्रप्रेम, नैतिक सन्देश र प्रकृतिचित्रण मुख्य रहेका छन् । यसको शीर्षकचयन सारवस्तुलाई आधार मानेर गरिएको छ । यसमा पात्रपात्राबीच क्रियाकलाप नभएकोले भावविधान स्पष्ट छैन । यसमा प्रबन्धात्मक सर्गयोजना पनि छैन । लयविधानको दृष्टिले प्रस्तुत काव्य उत्कृष्ट देखिन्छ । यसको कथनपद्धति प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष एवं मिश्रित रहेको छ । यस काव्यमा बिम्बअलङ्कार र प्रतीकहरूको समान्य प्रयोग देखिन्छ । यसको भाषा तत्सम, आगन्तुक र भर्त्ता शब्दहरूको योगबाट बनेको छ । खण्डकाव्यमा आख्यानको एकदेशीयता हुनुपर्छ भन्ने संस्कृत साहित्यको मान्यता भए पनि संस्कृत कै ऋतुसंहार बिनाआख्यानीकरणको संरचनामा आवद्ध खण्डकाव्य हो । अतः यसलाई पनि तद्धर्मी खण्डकाव्यको श्रेणीमा राख्न सकिन्छ । त्यस्तै यसमा सरल, मधुर र बोधगम्य भाषाको प्रयोग भएको छ । अतः यो काव्य खण्डकाव्यसंरचनामा मध्यम र आधुनिककालीन खण्डकाव्यपरम्परामा अवशिष्ट आदर्शवादी कृतिका रूपमा परिचित छ ।

३.२. 'हितको संवाद' खण्डकाव्यको विवेचना

३.२.१ रचना, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव

मुक्तिनाथ आचार्यको दोस्रो खण्डकाव्य 'हितको संवाद' को रचना वि.सं. २०३६-०३९ मा भएको हो । यस कृतिलाई उनले वि.सं. २०३९ श्रावणमा प्रकाशित गरेका छन् । यस कृतिको रचनामा आदिकवि भानुभक्त आचार्य र कविशिरोमणि लेखनाथ पौड्यालको परोक्ष प्रेरणा र प्रभाव देखिन्छ ।

प्रस्तुत काव्यको विषयवस्तु हितकारी कुराहरूको बयान हो । यो विषयवस्तु कविकल्पित नभएर सङ्गृहीत देखिन्छ । यी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रेरणामा आफ्नो कवित्वको प्रयोग गरेर निर्माण गरिएको प्रस्तुत खण्डकाव्यलाई तल खण्डकाव्यका आधारभूत तत्वहरूका आधारमा विवेचना गरी निष्कर्ष प्रस्तुत गरिन्छ ।

३.२.२ आख्यानयोजना

क) विषयवस्तु

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा आख्यानको ठोसरूप पाइँदैन । कविले काव्यको विषयवस्तुलाई अगाडि बढाउने क्रममा पात्रहरूको सहारा लिएका छन् तर यसको प्रारम्भमा संवाद जुन बिन्दुमा थालिएको छ त्यही बिन्दुमा समाप्त भएको पाइँदैन । एकाध ठाउँमा पात्रको मनोदशा र हाउभाउको सामान्य चित्रण छ । अतः यसले आख्यानको रूप लिनसकेको देखिँदैन ।

यस खण्डकाव्यको विषयवस्तु हितकारी उपदेशहरू व्यक्त गर्नु रहेको पाइन्छ । काव्यमा दुई पात्र उभ्याएर कविले मुख्यपात्र प्रकाशमार्फत यसको विषयवस्तु प्रस्तुत गरेका छन् । यस क्रममा कविले यस लोक र परलोकको हित गर्ने दुई किसिमका उपदेशहरूको बयान गरेका छन् । यस लोकका हितकारी

उपदेशहरूमा मानिसका कर्तव्य र अकर्तव्यहरू, आचरण र बानी व्यवहारका कुराहरू, जीवनलाई फाइदा र बेफाइदा गर्ने कुराहरू, पाप र पुण्य, दैनिकीका कुरा आदि पर्दछन् । त्यस्तै परलोक सुधार्ने उपदेशहरूमा सत्व, रज र तमोगुणको स्वरूप एवं तिनीहरूको त्याज्यता र ग्राह्यता, भक्ति र ज्ञानको स्वरूप एवं तिनीहरूबाट प्राप्त हुने फल, भक्तिका प्रकारहरू, भक्तिअनुरूप प्राप्त हुने गतिको बयान आदि पर्दछन् । त्यस्तै कविले देवपूजाको रहस्य शीर्षकमा राष्ट्रसेवा गरेर देवता खुसी पार्नुपर्छ भनेर गरेको बयानलाई पनि यसको अर्को विषयवस्तु मान्न सकिन्छ । यिनै विविध विषयवस्तुको परिधिमा यस काव्यको प्रारम्भ विकास र अन्त्य भएको छ ।

ख) पात्रविधान

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा प्रकाश र विकास गरी जम्मा दुई मञ्चीय पात्रहरूको प्रयोग भएको छ । दाजु प्रकाश उपदेशक हो भने भाइ विकास चाहिँ जिज्ञासु पात्र हो । कृतिको सुरुमा मलीन मुद्रामा रहेको भाइलाई दाजुले उसको मलीनताबारे प्रश्न गर्छन् । भाइले मानवजीवनका कर्तव्यअकर्तव्य र हितअहितबारे केही थाहा नभएकोले चिन्ता लागेको कुरा बताएपछि दाजुले जीवनमा चिन्नैपर्ने व्यक्ति शत्रु र मित्र, तिनीहरूको स्वरूप आदिबारे जानकारी गराउँछन् । यसै क्रममा भाइ पाप, पुण्य र हिंसाको स्वरूप, दिनचर्या, देवपूजाको रहस्य, त्रिगुण, भक्ति र ज्ञान आदिबारे जिज्ञासा राख्छ । दाजुले सबै प्रश्नका उत्तर दिएर जिज्ञासा शान्त पार्छन् र कृतिको अन्त्य हुन्छ । यसरी प्रस्तुत कृति खण्डकाव्य भएर पनि नाटकीय ढाँचामा प्रारम्भ, विकास र अन्त्य भएको छ । नाटकमा पात्रहरूबीच क्रियाव्यापार र द्वन्द्व आवश्यक मानिन्छ । यस कृतिमा पात्रहरूबीच शारीरिक हाउभाउँ र द्वन्द्व नपाइएपनि वाचिक क्रियाव्यापार भने ठाउँ ठाउँमा पाइन्छ । मुख्य पात्र प्रकाश र सहायक पात्र विकास बीचको एक-आपसको संवाद नै यस कृतिको वाचिक क्रियाव्यापार हो । यस काव्यमा दुवै पुलिङ्गी पात्रहरूको प्रयोग भएको छ । कृतिमा प्रकाश मुख्य पात्र र विकास सहायक पात्र रहेको छ । दुवै अनुकूल प्रवृत्तिका छन् । वैचारिक दृष्टिले दुवै गतिशील स्वभावका छन् । दुवैको जीवनचेतना वर्गगत देखिन्छ ।

ग) परिवेश

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा सामाजिक परिवेशको खासै उल्लेख पाइँदैन । कविले यस कृतिमा बाह्य एवं आन्तरिक परिवेश तथा देश, काल र वातावरणलाई महत्त्व नदिएर सारवस्तुलाई नै महत्त्वका साथ प्रस्तुत गरेका छन् तर पनि कृतिमा स्थानगत र कालगत परिवेशहरू प्रसङ्गवश आएका पनि छन् । खण्डकाव्यको प्रारम्भमा प्रकाशले विकासलाई एकान्तसेवी भनेका छन् । त्यसबाट भाइ एकान्तस्थलमा बसेको स्पष्ट हुन्छ । दाजु पनि भाइको एकान्तता भङ्ग गर्न उक्त ठाउँमा गएका छन् । अतः यस कृतिको संवाद एकान्तस्थलको वातावरणमा प्रारम्भ भएको बुझिन्छ । त्यसपछि कृतिको समाप्ति सम्म पात्रहरूले स्थान परिवर्तन गरेका छैनन् । त्यसैले यस कृतिको प्रारम्भ, मध्य र अन्त्य सम्मको बाह्य परिवेश एकान्तस्थलको रहेको छ भन्न सकिन्छ । यस कृतिको समयगत परिवेश एक बसाइको मात्र देखिन्छ । कृतिका पात्रहरूले संवादको थालनी पछि अन्त्यसम्म कतै विश्राम लिएको उल्लेख पाइँदैन । कृतिमा निर्धारित भिन्न-भिन्न तीन खण्डका विषयहरू एकै समयका हुन् वा होइनन् भन्ने कुनै स्पष्ट प्रमाण पनि पाइँदैन । ती विषयवस्तुबीच पूर्वापर समन्वय पनि छैन । तर कृतिका भिन्न तीन खण्डहरू एकै

ठाउँमा समावेश भएका कारण ती दुई पात्रबीचको संवाद एकै बसाइको हुनुपर्छ भन्ने अनुमान गर्न सकिन्छ । यो प्रस्तुत कृतिको समयगत परिवेश हो । कृतिको प्रारम्भमा भाइ मलीन मुद्रामा देखिन्छ । उसले जीवनको हित र अहित हुने केही कुरा पनि थाहा नपाएको हुनाले आफू चिन्तित भएको बताएको छ । विषयवस्तुको विकासक्रममा दाजुबाट उपदेश पाएपछि भाइका आशङ्काहरू पूर्णरूपमा समाधान हुँदै गएका छन् । त्यसकारण ऊ पनि क्रमशः प्रसन्न हुँदै गएको स्पष्ट हुन्छ । कृतिको अन्त्यमा ऊ भन्छ :

हितको अर्ती पाएर मन साँढै खुशी भयो ।

मेरो जीवनको बाटो अब राम्रै सफा भयो ।

यसरी अन्त्यमा उसले प्रसन्नता व्यक्त गरेकोले प्रत्येक प्रश्नहरूको समाधानमा उसको प्रसन्नता बढ्दै गएको बुझिन्छ । अतः प्रस्तुत कृति सुखद वातावरणमा रचिएको छ भन्न सकिन्छ ।

३.२.३ सारवस्तु

मुक्तिनाथले हितको संवाद खण्डकाव्यमा उपदेशलाई मुख्य र राष्ट्रप्रेमलाई गौण सारवस्तु बनाएका छन् । मुख्य सारवस्तु अन्तर्गत नैतिक उपदेश र आध्यात्मिक उपदेश पर्दछन् र गौण सारवस्तु अन्तर्गत राष्ट्रप्रेम पर्दछ ।

क) नैतिक उपदेश

कवि मुक्तिनाथ आचार्य नैतिक उपदेशलाई मुख्य सारवस्तु बनाएर काव्यरचना गर्ने कवि हुन् । उनले आह्वान खण्डकाव्यमा जस्तै यस कृतिमा पनि नैतिक उपदेशलाई नै मुख्यसन्देश बनाएका छन् । यस कृतिभित्र पाइने नैतिक उपदेशहरूमा गृहस्थजीवनमा आवश्यक पर्ने नैतिक र व्यावहारिक सन्देशहरू, मानवजीवनमा त्यागनुपर्ने कुराहरू, ज्ञान र अज्ञानका फाइदा-बेफाइदाहरू पर्दछन् । कवि खण्डकाव्यका बीच-बीचमा हितोपदेश, चाणक्यनीति, गीता आदि नीति ग्रन्थका पद्यहरूलाई उद्धृत गर्दै परोपकार गर्नुपर्ने, दयावान्, सरल, उदार, निरभिमानी, बन्नुपर्ने कुरा बताउछन् । कवि उपदेश दिँदै भन्छन् :-

हात गोडा र वाणी यो नियन्त्रण गरीकन ।

परोपकारमा मात्र होमिदेउ सदा दिन ॥

संसारमा सबै चिज पाइन्छ गरी यत्नले ।

बाबुआमा बिते फेरि पाइन्न नि प्रयत्नले ॥

मनको पछि लागेर जो हिँड्दछ सदा दिन ।

दुखको मार्गमा त्यसको चल्छ यात्रा सबै दिन ॥

कविले काव्यको प्रारम्भमा ज्ञान र अज्ञानको चर्चा गर्दै ज्ञानको साधर्म्य मित्र र अज्ञानको साधर्म्य शत्रुसँग गरेर ज्ञान सधैं हितकारी हुने र अज्ञान भयानक हुने कुरा बताएका छन् ।

ख) आध्यात्मिक उपदेश

मुक्तिनाथको अद्वैतदर्शनसम्बन्धी अध्ययनको प्रत्यक्ष प्रभाव 'हितको संवाद' खण्डकाव्यमा परेको देखिन्छ । यसको पलस्वरूप उनले सो काव्यमा ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, नर्क, पाप, पुण्य, हिंसा, सत्वादिगुण, पुरुषार्थ, आत्मज्ञान, आदिका बारेमा विविध कोणबाट चर्चा गरी परमेश्वरको सान्निध्य प्राप्त गर्न मानिसले अपनाउनु पर्ने

बाटोका बारेमा निर्देशित गरेका छन् । उनका कृतिहरू मानिसलाई 'चरित्रवान् एवं आर्दशवादी बन र इहलोक एवं परलोक सुधार' भन्ने प्रेरणा दिन्छन् । उनको अध्यात्मचिन्तनभित्र दार्शनिक विचार र नैतिक सन्देशको किञ्चित् अंश अन्तर्निहित हुन्छ । लेखक भक्तिका तीन तहको व्याख्या गर्दै लेख्छन् :

कर्मयोगी हुनु पैले सामान्य धर्म हो अनि ।

ज्ञानी भक्त हुनु फेरि विशेष धर्म हो पनि ॥

ब्रह्मज्ञानी हुनु ज्यादै ठूलो परमधर्म हो ।

हिन्दू संस्कृतिको भाइ उच्च आदर्श येही हो ॥

यसरी भक्तिका स्वरूप बताएपछि त्रिगुणको स्वरूप बताएर तिनीहरूको फाइदा-बेफाइदाका बारेमा समेत प्रकाश पार्दै लेख्छन् :

जो सत्वगुणी हो त्यो नै ऐश्वर्यशाली बन्दछ ।

ऐश्वर्यको गरी भोग बाह्यआनन्द लुट्छ ॥

राजोगुणी हुने जो छ धेरै जञ्जाल भैकन ।

खान लाउनको दुख हुन्छ त्यस्को सदा दिन ॥

तमोगुणी हुने जो छ जन्म लिन्छ कीरा भई ।

ज्यादै आपदले त्यस्को जान्छ जीवन दुखी भै ॥

उनको आध्यात्मिक उपदेश शीर्षकमा पाइने विषयवस्तु यही हो ।

ग) राष्ट्रप्रेम

प्रस्तुत खण्डकाव्यको मुख्य उद्देश्य राष्ट्रप्रेम नभए पनि कविले कृतिको तेस्रो खण्डमा 'देवपूजाको रहस्य' शीर्षकमा राष्ट्रवादी भावना प्रस्तुत गरेका छन् । उनको यो राष्ट्रवाद देवपूजाको प्रसङ्गसँग गाँसिएर आएको कारणले उनी देवपूजाका माध्यमबाट राष्ट्रभक्ति प्रदर्शन गर्न चाहन्छन् भन्ने स्पष्ट हुन्छ । कवि लेख्छन् :

राष्ट्रको हितको लागि जस्ले जे काम गर्दछ ।

देवताको पूजा त्यस्ले गरेको मान्नुपर्दछ ॥

सच्चा पूजा त्यही नै हो शास्त्रले यही भन्दछ ।

त्यस्तो पूजा गर्न सके जीवन साफल्य बन्दछ ॥

जनताको गरे हीत देवताको पूजा भयो ।

यस्मा शङ्का कुनै छैन यो निर्णय भयो भयो ॥

यसरी जनसेवा गरेर गरिने राष्ट्रभक्ति नै देवपूजा हो भन्ने कविको आशय रहेको छ । यस काव्यमा पाइने राष्ट्रप्रेम यही नै हो ।

३.२.४ शीर्षक विधान

प्रस्तुत खण्डकाव्यको शीर्षक 'हितको संवाद' रहेको छ । यस कृतिको विषयवस्तु पनि हितकारी उपदेशहरूको बयान हो । ती हितकर उपदेशहरूलाई कविले संवादात्मक शैलीमा प्रस्तुत गरेका छन् । अतः यस काव्यको शीर्षकविधानमा विषयवस्तुको प्रकृति र शैलीलाई समेटिएको छ । काव्यमा विषयवस्तु वा अन्य कुनै एउटा तत्त्वलाई आधार मानेर शीर्षकचयन गर्ने परम्परामा कविले दुई तत्त्वलाई आधार मानेर यस काव्यको शीर्षक राखेका छन् । यो लेखकको शीर्षकचयनमा नवीन प्रयोग हो । यसरी यस काव्यमा विषयवस्तु र शैलीलाई आधार मानेर गरिएको शीर्षकविधान सार्थक देखिन्छ ।

३.२.५ भावविधान

काव्यमा भाव शब्दले 'रस' को सङ्केत गर्दछ । रसले काव्यलाई आस्वाद्य बनाउछ । त्यसैले रसवादी आचार्यहरूले रसलाई काव्यको आत्मा मानेका हुन् । तर आख्यानयोजना एवं पात्र-पात्राबीच क्रियाकलाप नभएका काव्यहरूमा रस पक्ष कमजोर हुन्छ । विशेष गरी नीतिमूलक काव्यहरूमा यस्तो स्थिति देखिने गर्छ । 'हितको संवाद' खण्डकाव्य पनि यस्तै काव्यहरूमध्येको एक हो । प्रस्तुत काव्यको प्रारम्भ र अन्त्य प्रकाश र विकास दुई पात्रबीचको संवादमा भएको छ । काव्यको मध्य वा अन्य कुनै पनि भागमा यी दुईबीच कार्यव्यापार भएको छैन । दाजु प्रकाश भाइले सोधेका प्रश्नको जवाफ दिन्छन् । भाइ पुनःअर्को प्रश्न गर्छ । प्रकाश त्यसको पनि जवाफ दिन्छन् । अन्त्यमा दाजुबाट भक्ति, ज्ञान र वैराग्यविषयक अर्ती पाएको भाइ भविष्यमा निर्देशित आचरण गर्ने प्रतिज्ञा गर्छ र काव्यको अन्त्य हुन्छ । यहाँ जिज्ञासु पात्र विकासले दाजुबाट अर्ती पाएपछि आफ्नो व्यवहारमा परिवर्तन ल्याएको कार्यव्यापार देखाइएको छैन । त्यसकारण यसमा सम्भावित रस शान्तरसको स्थायी भाव निर्वेद उत्पन्न भएको छैन । किनकि यहाँको विषयपात्र प्रकाशलाई देखेर आश्रय पात्र विकासको हृदयमा संस्कारका रूपमा हृदयमा विद्यमान स्थायीभाव निर्वेद जाग्नसकेको छैन । यसरी आलम्बन विभाव नभएपछि आलम्बनलाई उद्दीप्त गर्ने अनुकूल प्राकृतिक वातावरणको आवश्यकता देखिँदैन र उक्त उद्दीपकतत्त्व प्रकृति पनि यस काव्यमा छैन । यसरी रसानुभूति हुने स्थायीभाव विभावमा नजागे पछि विभावका कारण जागृत भावलाई बाह्यरूपमा प्रकाशित गर्ने कार्यरूप चेष्टा (कायिक, मानसिक, सात्त्विक आहार्य) अनुभावहरू पनि भएका देखिँदैनन् । पात्रमा स्थायीभाव नै जागृत नभएपछि सञ्चारीभाव (धृति, जडता, हर्ष, मद, विवोध आलस्य) आदि पनि नभएर आश्रयमा केवल प्रसन्नता मात्र जागृत भएको बुझिन्छ ।

३.२.६ सर्गयोजना र आयाम

संस्कृत काव्यसिद्धान्तको मान्यताअनुरूप खण्डकाव्यको कथावस्तु प्रतिसर्गमा भिन्न-भिन्न भएपनि सर्गान्तको पद्यले भावीसर्गको कथावस्तुको सङ्केत गर्ने किसिमको हुनुपर्छ । यसरी भिन्न-भिन्न सर्गमा घटेका घटनाहरू पूर्वापर सम्बन्धमा आबद्ध हुने प्रक्रियालाई प्रबन्धात्मक सर्गयोजना भनिन्छ । प्रस्तुत खण्डकाव्यमा आख्यान नभएकोले प्रबन्धात्मक सर्गयोजना पाइँदैन । काव्यमा विभाजित सर्गहरूको विषयवस्तु पनि भिन्न-भिन्न रहेका छन् । काव्यको पहिलो खण्डअन्तर्गतको पहिलो शीर्षकको शत्रु र मित्रको स्वरूपको बयान प्रथमखण्डको समाप्तिसँगै समाप्त भएको छ र दोस्रो शीर्षकको विषयवस्तु 'पाप पुण्य र हिंसाको स्वरूप' को बयानतर्फ काव्य उन्मुख देखिन्छ । यस क्रमले तीनै खण्डहरूमा रहेका विषयवस्तु शीर्षकको अन्त्यसँगै समाप्त भएका छन् । तात्त्विक दृष्टिले अध्ययन गर्दा यस काव्यमा विषयवस्तुका आधारमा प्रबन्धात्मक सर्गयोजना पाइँदैन तर पात्रहरूको सम्बन्ध भने काव्यको सबै खण्डका सबै शीर्षकसँग रहेको देखिन्छ । काव्यको पहिलो खण्डको पहिलो शीर्षकमा उपस्थित दुई पात्र नै तेस्रो खण्डको अन्तिम शीर्षकसम्म पुगेका छन् । यस दृष्टिले हेर्दा यस काव्यमा पात्रपरक प्रबन्धात्मक क्षति भएको छैन । तर पनि कृतिको मुख्यतत्त्व विषयवस्तु हो । विषयवस्तुमा प्रबन्धात्मकता नपाइएकोले यस काव्यमा प्रबन्धात्मक सर्गयोजना छैन ।

प्रस्तुत खण्डकाव्य ३१ पृष्ठ, तीन खण्ड र ३३१ पद्यको विस्तृतिमा फैलिएको छ । काव्यका तीन खण्डलाई शीर्षकीकरण नगरेर खण्ड-१, खण्ड-२ र खण्ड-३ भनेर वर्गीकरण

गरिएको छ । तीन खण्ड मध्ये खण्ड-१ म दुई शीर्षक, खण्ड-२ मा एक शीर्षक र खण्ड-३ मा तीन शीर्षक राखिएका छन् । उपर्युक्तखण्ड र त्यसअन्तर्गतका शीर्षकहरूको आयाम समान छैन । तल ती खण्ड र त्यसअन्तर्गतका शीर्षकहरूमा विद्यमान विषय र पद्यसंख्या प्रस्तुत गरिन्छ :

| खण्ड | पद्यसंख्या | शीर्षक | पद्यसंख्या |
|--------|------------|--|----------------|
| खण्ड-१ | ८४ | क) शत्रु र मित्रको स्वरूप ख) पाप पुण्य र हिंसाको स्वरूप | ६२ २२ |
| खण्ड-२ | ९६ | क) दिनचर्या कस्तो हुनुपर्छ ? | ९६ |
| खण्ड-३ | १५१ | क) देवपूजाको रहस्य ख) सत्वादिगुणकर्मयोगको स्वरूप र त्यसको फल ग) भक्ति र ज्ञानको स्वरूप | ३८ ५६ ५७ |

यस काव्यमा पाइने सर्ग विधान र आयाम यही हो ।

३.२.७ लयविधान

प्रस्तुत खण्डकाव्य अनुष्टुप् छन्दको वर्णमात्रिक लयमा आधारित रहेको छ । कृतिका ३३१ पद्यमध्ये कतै पनि छन्द परिवर्तन गरिएको छैन । यस छन्दमा चार पाउ रहेका हुन्छन् । तिनीहरूमध्ये सबै पाउमा आठ-आठ अक्षर रहेका हुन्छन् । ती आठ अक्षरका चार पाउमध्ये सबै पाउका छैठौँ वर्ण गुरु (५) एवं पाँचौँ वर्ण लघु (१) हुन्छन् । पहिलो र तेस्रो पाउको सातौँ वर्ण गुरु (५) तथा दोस्रो र चौथो पाउको सातौँ वर्ण लघु हुन्छन् । पाउको अन्तिम वर्ण लघु भए पनि उच्चारण गुरु नै हुन्छ ।^{५५} उपर्युक्त लययोजनालाई प्रस्तुत कृतिमा अधिकांश ठाउँमा पालना गरिएको छ । उदाहरणको लागि एउटा पद्य प्रस्तुत गरिन्छ :

छालाको वशमा पर्दा हात्ती पर्दछ बन्धन ।

रोई-रोई त्यसै जान्छ, त्यसको भव्य-जीवन ॥

यस पद्यका चार पाउमध्ये सबै पाउका छैठौँ वर्ण गुरु एवं पाँचौँ वर्ण लघु रहेका छन् । पहिलो र तेस्रो पाउका सातौँ वर्ण पनि गुरु रहेका छन् भने दोस्रो र चौथो पाउको सातौँ वर्ण लघु रहेका छन् । अतः यस पद्यमा अनुष्टुप् छन्दको पालना भएको देखिन्छ । अन्यत्र पनि केही ठाउँ (पृ. २६, पद्य-५६ को पंक्ति दोस्रो, सातौँ वर्ण, पृ. २०, पद्य-३१, पंक्ति पहिलो, अक्षर पाँचौँ, पृ. ४ पंक्ति ३६, दोस्रो पंक्तिमा नौ अक्षर, पृ. ४ पद्य-३४, तेस्रो, पाँचौँ अक्षर गुरु र अन्य केही ठाउँ) बाहेक छन्दोभङ्ग भएको छैन ।

प्रस्तुत काव्य लयविधानको दृष्टिले सफल देखिन्छ । यसमा रहेको अनुष्टुप्छन्दको लयलाई लोकलय वा गीतिलयमा पनि गाउन सकिन्छ । गेयात्मकताको लागि आवश्यकतत्त्व अन्त्यानुप्रासको यसमा पूर्ण पालना भएको छ । त्यस्तै कोमल शब्दावलीको चयन र वाक्यगठनको सरलतालाई यसमा पालना गरिएको छ । पद्यमा भावगत र शब्दवाक्यगत सरलता पाइन्छ । उत्तरार्द्ध विषयवस्तुगत दृष्टिले कठिन भए पनि भाषिक जटिलता पाइँदैन । समष्टिमा यस काव्यमा लयविधान मध्यम छ ।

^{५५} पन्त, भरतराज. नेपाली साहित्यकोष. काठमाडौँ: ने.रा.प्र.प्र., २०५५, पृ. २८७-८८ ।

३.२.८ कथनपद्धति

प्रस्तुत खण्डकाव्य कविनिबद्धवक्तृ (कविकल्पित पात्रको प्रत्यक्ष) कथनपद्धतिमा निबद्ध रहेको छ । कृतिका तीन खण्डका सबै पद्यहरूमा प्रकाश र विकासले बोलेका छन् । काव्य संवादात्मक शैलीमा बाँधिएको हुनाले यसमा नाटकीय ढाँचाको आंशिक प्रयोग देखिन्छ । तर पात्रले धेरै पद्यसम्म एकोहोरो उपदेश दिइरहँदा संवादात्मकता खण्डित हुन खोज्दछ । यस क्रममा कविको मूलपात्र प्रकाशले पहिलो खण्डमा २० पद्यसम्म, दोस्रो खण्डमा ४० एवं ५१ पद्यसम्म र तेस्रो खण्डमा २९,३३,५० पद्यसम्म निरन्तर उपदेश दिएका छन् । काव्यका मुख्यपात्र प्रकाश आफ्ना भाइसँग मध्यम आदरको (तिमी) सम्बोधन गर्छन् भने जिज्ञासु पात्र विकास चाहिँ उच्चआदरार्थी (तपाईं) को प्रयोग गरेर बोलेको देखिन्छ ।

३.२.९ बिम्ब, अलङ्कार र प्रतीकयोजना

प्रस्तुत खण्डकाव्यमा मानसिक चित्र एवं वर्णनात्मक सुन्दर अनुच्छेद अर्थ बुझाउने बिम्बको सबल प्रयोग भएको छैन । संस्कृत साहित्यमा सादृश्यवाची अलङ्कारमा उपमानका रूपमा वर्णित बिम्बलाई काव्यमा केही ठाउँमा प्रयोग गरिएको छ । त्यहाँ त्यस प्रकृतिका पदहरू उपमा र रूपक अलङ्कारका रूपमा प्रयोग भएका छन् । काव्यमा प्रयोग गरिएका औंसीको रात जस्तै अज्ञान (पृ.२ पद्य-१३), औंसी जस्तो अज्ञानान्धकार (पृ.३१ पद्य ५४), खोलाको पानी जस्तै चलिरहने शरीर, (पृ.२९ पद्य २९) एवं सच्चिदानन्दको आत्मामा आरोप (पृ. ११, पद्य २७) र संसारको नाट्यशालामा एवं हामी मनुष्यको नाट्यपात्रमा आरोप -पृ.३० पद्य ३४) नै यस काव्यअन्तर्गतका स्फुट बिम्बहरू हुन् । यसरी काव्यमा विभिन्न उपमेयहरूको उपमानहरूसँग सादृश्य देखाइए पनि काव्यको वर्णनशैली वा भनाइमा चमत्कार नहुँदा ती बिम्बहरू चामत्कारिक हुनसकेका छैनन् । अतः यी बिम्बहरू कलात्मक मूल्यका दृष्टिले निर्बल छन् । यस काव्यमा उपलब्ध सादृश्यवाची अलङ्कारहरूलाई माथि बिम्ब-प्रतिबिम्बका रूपमा उल्लेख गरिएको र ती आलङ्कारका अतिरिक्त अन्य अलङ्कारहरू यस काव्यमा स्फुट रूपमा एवं कलात्मक मूल्यका साथ नपाइएका हुनाले यहाँ अन्य अलङ्कारको चर्चा गर्न आवश्यक देखिदैन ।

यस खण्डकाव्यका केही ठाउँमा शाब्दिक प्रतीकहरूको सामान्य प्रयोग भएको छ । तर प्रस्तुत कृति कलात्मक सौन्दर्य प्रदान गर्ने कम र उपदेश प्रदान गर्ने बृहत् उद्देश्यले रचिएको हुनाले यसअन्तर्गतका प्रतीकहरू भङ्गिमापूर्ण देखिदैनन् । तापनि काव्यको पहिलो खण्डअन्तर्गतको पहिलो शीर्षक 'शत्रु र मित्रको स्वरूप' मा प्रतीकात्मकता रहेको पाइन्छ । यस शीर्षकमा रहेको 'शत्रु' शब्दलाई कविले अज्ञान एवं आलस्य र मित्र शब्दलाई ज्ञानको प्रतीकका रूपमा प्रयोग गरेका छन् । उक्त कुरा कविको निम्न पंक्तिले पुष्टि गर्छ ।

विद्या हो मित्र मानिसको अज्ञान शत्रु हो भनी... ।

त्यस्तै अर्को ठाउँमा राष्ट्रसेवालाई देवपूजाको प्रतीक र हाम्रा मन, आँखा, जिभ्रो, कान, छाला खादि इन्द्रियहरूलाई चञ्चल एवं लोभीका प्रतीकका रूपमा प्रयोग गरेका छन् । यही नै यस काव्यको प्रतीकप्रयोग हो ।

३.२.१० भाषाशैली

प्रस्तुत खण्डकाव्य सरल र प्रवाहमय भाषामा निबद्ध रहेको छ । अनुष्टुप्छन्दको बन्धनमा बाँधिएर पनि पदको अन्वयक्रममा त्यतिधेरै विचलन आएको छैन । त्यस्तै छन्दमिलानको क्रममा पदहरू धेरै ठाउँमा भाँचिएका देखिदैनन् । तर वर्णविन्यासमा भने धेरै ठाउँमा हेरफेर गरिएको छ । वाक्यहरू अधिकांश सरल र अंशतः मिश्र एवं संयुक्त रहेका

छन् । कविले यस काव्यमा संस्कृतस्रोतका शब्दहरूको अधिकतम प्रयोग गरेका छन् । संस्कृतस्रोतका पनि पारिभाषिक शब्द, विशिष्ट शब्द र नेपाली जनजिभ्रोमा भिजेका शब्द गरी जम्मा तीन किसिमका प्रयोग भएका छन् । पहिलो प्रकृतिका शब्दहरू संस्कृतका पनि अध्यात्म र दर्शनक्षेत्रका सत्व, रज र तमोगुण, कर्मयोग, अहंममभाव, चिरसुख, पुरुषार्थ, आर्तभक्ति, अर्थार्थी भक्ति, जिज्ञासु भक्ति, सगुण एवं निर्गुण भक्ति, अद्वैतभाव जस्ता पारिभाषिक शब्द पर्दछन् । दोस्रो किसिमका शब्दहरू पनि नेपाली जनजिभ्रोले बुझ्न कठिन छ । तिनीहरूमा निरभिमानता, गुणातीत, दान्त, उपरति, दम, तितिक्षा, परिमित, निर्घृणी, मदमात्सर्य, साफल्य, एकदेशीय आदि पर्दछन् । अन्य संस्कृतस्रोतका शब्दहरू भने सर्वसाधारणले बुझ्नसक्ने किसिमका छन् । शब्दप्रयोगकै क्रममा हिन्दी स्रोतका शब्द र नेपालीका भर्रा शब्दलाई कविले थोरै मात्रामा भएपनि प्रयोग गरेका छन् । यस किसिमका शब्दका उदाहरणका रूपमा अक्कल, जबर्जस्त, ठण्डा, उपर एवं तहीं, खुबै, हुनि, छाँट, चालफाल, फिक्री, मजा जस्ता शब्दलाई लिन सकिन्छ । केही ठाउँमा कविले संस्कृतको सबर्णदीर्घसन्धि गरेर संयुक्त शब्दहरूको निर्माण गरेका छन् । त्यस्ता शब्दहरूमा हिताहित, सत्यासत्य, धर्माधर्म, नराधम, कर्मानुसार, गुणतीत, हृदयाकाश जस्ता शब्दहरूलाई उदाहरण मान्न सकिन्छ । काव्यका केही पद्यहरूमा सिङ्गा शब्दहरूलाई हलन्त/स्वरहीन बनाएर छन्दमिलान गरिएको छ । त्यस्ता शब्दहरूमा त्यसको -त्यस्को, यिनमा-इन्मा, यही-एही, अनुकूलमा-अनुकुल्मा, मनले-मन्ले आदि पर्दछन् । कविले धेरै ठाउँमा संस्कृतका गीता, चाणक्यनीति, विदुरनीति, हितोपदेश लगायतका नीतिसम्बन्धी पुस्तकका आशय र पद्यलाई यस काव्यमा प्रयोग गरेका छन् । यसका अतिरिक्त हाम्रो गृहस्थीजीवनको लागि उपयोग्य व्यावहारिक कुरालाई समेत कविले उल्लेख गरेका छन् । काव्यमा प्रसङ्गवश केही उखानटुक्का समेत समावेश भएका छन् ।

काव्यको भाषा प्रवाहमय छ । छन्दको बन्धनमा बाँधिएर पनि कवि आफ्ना कुरा/विचार बेरोकटोक अभिव्यक्त गर्न सफल छन् । तेस्रो खण्डको विषयवस्तुको गहनताले पाठकलाई केही कठिनाइ भए पनि समग्रमा सरल एवं सम्प्रेषणीय भाषाशैली प्रयोग भएको छ भन्न सकिन्छ ।

३.२.११ निष्कर्ष

प्रस्तुत काव्य मुक्त आख्यानीकरणको संरचनामा निबद्ध भएकोले यसमा आख्यानगत एकदेशीयता पाइदैन । यसको विषयवस्तु हितकारी उपदेशहरूको बयान रहेको छ । ती उपदेशहरू प्रदान गर्न कविले यस काव्यलाई तीन खण्डमा विभाजित गरेका छन् । ती खण्डहरूमा पनि भिन्न-भिन्न क्षेत्रका विषय समाविष्ट हुनाले यस कृतिमा आख्यानयोजना नपाइएको हो । यस काव्यका एउटै खण्डअन्तर्गतका पृथक्-पृथक् शीर्षकका विषयलाई आधार मानेर भिन्न-भिन्न खण्डकाव्य भन्न मिल्ने आख्यान पनि ती विषयवस्तुहरूमा रहेको देखिदैन । ती शीर्षकमा दिइएको एकोहोरो उपदेश र एउटै शीर्षकअन्तर्गतका पद्यहरू पनि कतिपय ठाउँमा मुक्त रूपमा देखिएका कारणले तिनीहरूमा आख्यानयोजना रहेको देखिदैन । प्रस्तुत काव्य प्रकृतिलाई आलम्बन बनाएर वा मुक्त आख्यानीकरणको प्रयोगवादी संरचनामा आबद्ध पनि देखिदैन । अतः जीवनको एक अंश, प्रकृतिचित्रण र प्रयोगवादी संरचनामध्ये कुनै एउटा पनि तत्त्वको सीमामा बाँधिन नसक्नु यस काव्यको आख्यानीकरण सम्बन्धी दुर्बलता हो । यही दुर्बलताले नै यसलाई खण्डकाव्यको परिधिबाट टाढा पु-याउँन खोजेको छ । त्यस्तै भावविधानको अभाव यसको दोस्रो दुर्बलता हो । यस काव्यमा आख्यान नभएकोले

आख्यानलाई अगाडि बढाउने पात्रहरूबीचको क्रियाकलाप र क्रिया-प्रतिक्रियाको अभावमा यसमा रसानुभूति हुनसकेको छैन । प्रस्तुत काव्य उपदेशप्रधान भएकोले काव्यमा पात्र-पात्राबीच विभाव, अनुभाव र सञ्चारीभावको उदय हुन नसकेको हो । यसरी रसानुभूतिको अभाव हुनु यसको दोस्रो दुर्बलता हो । काव्यको भाषा सरल भए पनि भङ्गिमापूर्ण हुनुपर्छ । यदि भाषामा सौन्दर्य देखिएन भने त्यो काव्य नभएर सामान्य रचना हुन्छ । प्रस्तुत काव्यको भाषा सरल भएर पनि कम सौन्दर्यपूर्ण रहेको छ । यस काव्यका पद्यहरूमा काव्यिक चमत्कार ज्यादै कम छ । अतः यो भाषिक दृष्टिले दुर्बल काव्यमा पर्दछ । यो यसको तेस्रो दुर्बलता हो । काव्यमा बिम्ब, अलङ्कार र प्रतीकहरू यथेष्ट अपेक्षित हुन्छन् । यी तीनै तत्त्व नभए पनि कुनै एक आवश्यक ठानिन्छ । तर यसमा बिम्ब र अलङ्कारको नगण्य र प्रतीकको सामान्य प्रयोग हुनु यसको चौथो दुर्बलता हो । यी दुर्बलताहरू हुँदा-हुँदै पनि यस काव्यलाई खण्डकाव्य भन्न मिल्ने केही सबल पक्षहरू पनि रहेका छन् । प्रस्तुत काव्य खण्डकाव्य सिद्धान्तानुरूपको मझौलो आयामको पद्यकाव्य हो । यसको पृष्ठ ३१ र ३३१ पद्यको आकारले यसलाई मझौलो आकारको काव्य सिद्ध गरेको छ । त्यस्तै खण्डकाव्यसिद्धान्तको मान्यता अनुरूप काव्य एउटै छन्द वा लयमा आवद्ध हुनुपर्नेमा यो काव्य अनुष्टुप्छन्दको लययोजनामा बाँधिएको छ । त्यस्तै खण्डकाव्य सिद्धान्तको अर्को मुख्य पक्ष लययोजना हो । यो लयात्मकताको दृष्टिले सफल देखिएको छ । खण्डकाव्यमा पात्रगत न्यूनता आवश्यक ठानिएकोमा यस काव्यमा पनि पात्रसंख्या दुई रहेको छ । यो यस काव्यको अर्को सबल पक्ष हो । त्यस्तै प्रस्तुत काव्य खण्डकाव्यको आवश्यक कथनपद्धति अनुरूप छ । यसको अर्को सबल पक्ष सारवस्तु वा उद्देश्यकथन हो । यस काव्यको शीर्षकमै उद्देश्यकथनको सङ्केत छ र काव्यरचनाको मुख्य उद्देश्य पनि हितकारी सन्देशहरू प्रदान गर्नु रहेकोले प्रस्तुत काव्यको उद्देश्यकथन सशक्त देखिन्छ । यस काव्यले धर्म, अर्थ, काम र मोक्ष मध्ये मोक्षलाई मुख्य उद्देश्य मानेको छ भने धर्मप्राप्तिलाई पनि सहयोगी उद्देश्य स्वीकारेको छ । यसका अतिरिक्त परिवेश, सर्गयोजना, आयाम, शीर्षकीकरण र अन्य पक्षहरू सामान्य छन् ।

उपर्युक्त सबल र दुर्बल पक्षहरूको विश्लेषण मूल्याङ्कनको निष्कर्ष स्वरूप के भन्न सकिन्छ, भने प्रस्तुत काव्यमा खण्डकाव्यीय मुख्य तत्त्व आख्यानयोजना, भावविधान, प्रबन्धात्मक सर्गयोजना र भाषिक सौन्दर्यको अभाव रहेको छ । त्यस्तै सारवस्तु, आयाम र लयविधानको पूर्णपालना भएको छ । अतः प्रस्तुत खण्डकाव्य काव्यसिद्धान्तको मान्यताअनुसार सामान्य खण्डकाव्यकोटीमा पर्दछ ।

३.३. विवेकचूडामणिको विवेचना

३.३.१ रचना, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव

आदिगुरु शङ्कराचार्यद्वारा रचित संस्कृत भाषाको छन्दोबद्ध काव्य विवेकचूडामणिलाई मुक्तिनाथ आचार्यले वि.सं. २०४६-५० बीच पद्यानुवाद गरेका हुन् । यस काव्यलाई वि.सं.२०५८ मा गौतम प्रकाशन (विराटनगर) ले प्रकाशित गरेको छ । विवेकचूडामणि अद्वैतदर्शनको उत्कृष्ट र तत् दर्शनका प्रवर्तक आदिशङ्कराचार्यको सर्वोत्कृष्ट र अन्तिम कृति मानिन्छ । उक्त काव्यलाई मुक्तिनाथले नेपालीमा अनुवाद गर्नमा आफ्ना पुर्खा भानुभक्त आचार्यको प्रभाव र प्रेरणा प्रमुख देखिन्छ । त्यसै गरी अद्वैतसंस्थाका तत्कालीन उपकुलपति क्षितीशचन्द्र चक्रवर्तीको प्रेरणा पनि यस कृतिको अनुवादमा सहयोगी देखिन्छ । यिनै दृढ प्रेरणा र प्रभावमा आफ्नो अध्यात्मदर्शन सम्बन्धी गहिरो अनुभव एवं आफ्ना पूर्ववर्ती

काव्यहरू रचना गर्दाको अनुभूतिलाई समायोजित गरेर तयार गरिएको प्रस्तुत कृतिलाई तल काव्यतत्त्व र अनुवादकलाको दृष्टिबाट विवेचना गरी यसमा विद्यमान मौलिकताको पनि अध्ययन गरिएको छ ।

३.३.२ आख्यानयोजना

क) विषयवस्तु

प्रस्तुत काव्यको विषय अध्यात्मचिन्तन र मोक्षप्राप्त्युपायवर्णन रहेकोले यसमा काव्यअनुकूलको कथानक पाइँदैन । कविले यसमा अध्यात्मचिन्तनअन्तर्गत जीवन जगत् र परलोकको चर्चा गर्दै सांसारिक विषयहरूको क्षणिकता र आध्यात्मिक ज्ञानको स्थायित्वबारे उल्लेख गरेका छन् । त्यसैगरी मोक्षप्राप्तिको उपायअन्तर्गत गुरुसँगको आसन्नता, गुरुद्वारा श्रावित ज्ञान, तदनुकूल आचरण र जीवनमुक्तिको लक्षण आदिबारे बताइएको छ । यस क्रममा काव्यमा अहङ्कार, शरीरत्रयको स्वरूप, पञ्चप्राण, त्रिगुण र पञ्चकोशको स्वरूप आदिको निरूपण गरिएको छ । त्यस्तै ब्रह्म र जगत्को एकता, महावाक्य विचार, वासना त्याग, अध्यासनिरूपण, असत् परिहार, समाधि, वैराग्य, ध्यान आदिको निरूपण, दृश्यको उपेक्षा, नानात्वनिषेध, बोधोपलब्धि, आदि शीर्षकअन्तर्गतका विषयहरू पनि यसअन्तर्गत समाविष्ट छन् । काव्यको सुरुमा हुनुपर्ने अनुबन्धचतुष्टयलाई काव्यान्तमा राखिएको छ । काव्यको सुरुमा चाहिँ मङ्गलाचरण, ब्रह्मनिष्ठाको महत्त्व, अधिकारी निरूपण एवं गुरुद्वारा प्रदान गरिने प्रत्यक्षज्ञानको महत्त्व, उपदेशविधि आदिबारे चर्चा गरिएको छ । लौकिक जीवनका व्यवहारहरूको त्याग र पारमार्थिक सुधारका निमित्त मानवले अवलम्बन गर्नुपर्ने मार्ग निर्दिष्ट गरिएको यस काव्यमा मूलभूत रूपमा त्याज्य र ग्राह्य विषयहरूको बयान भए पनि त्यसअन्तर्गतका विषयहरू निश्चित छैनन् । यसरी काव्यका विषयवस्तुहरूमा अनिश्चितता भए पनि पूर्वापर विषयहरूबीच आपसी सम्बन्ध कायम भएको छ । यही सम्बन्धले नै काव्यको विषयवस्तु निश्चित भएको छ ।

ख) पात्रविधान

प्रस्तुत काव्यमा गुरु, शिष्य र कवि गरी तीन पात्र रहेका छन् । गुरु काव्यका मुख्यपात्र हुन् । उनी काव्यमा उपदेष्टाका रूपमा उपस्थित छन् । काव्यमा उनको उपस्थिति ४७ औं पद्यबाट हुन्छ र उनी 'प्रश्न निरूपण' शीर्षकका दुई पद्य एवं 'मुक्ति कसरी होइन्छ?' शीर्षकका दुई पद्यका अतिरिक्त काव्यको उपान्त्य पद्यसम्म शिष्यलाई एकोहोरो उपदेश दिन्छन् । उनी शिष्यलाई स्नेहमय शब्दमा सम्बोधन गर्छन् र उपदेश ग्रहण गरे मुक्त भइने अर्ती दिन्छन् । उनले दिएको उपदेशबाट शिष्य सन्तुष्ट भएको बुझिन्छ । अतः गुरुमा प्रवचन कौशल भएको स्पष्ट हुन्छ । यस काव्यको अर्को मुख्य पात्र शिष्य हो । ऊ यस काव्यको ५२ र ५३ औं, २०२ र २०३ औं एवं २२४औं पद्यमा बोलेको छ । ती पद्यहरूमा उसले सांसारिक बन्धन र त्यसबाट मुक्त हुन प्राणीहरूले अवलम्बन गर्नुपर्ने उपायबारे गुरुसँग जिज्ञासा राखेको छ । गुरु पनि उसका प्रश्नबाट सन्तुष्ट भएकाले ऊ त्यस विषयको अधिकारी हो भन्ने देखिन्छ । ऊ गुरुबाट प्रशंसित शिष्य समेत हो । गुरुले उसलाई ठाउँ-ठाउँमा विद्वान्, कुशल, मुमुक्षु, सत्पात्र जस्तापदबाट सम्बोधन गरेका छन् । अतः ऊ प्रशंसित विनयी, अनुशासित र जिज्ञासुपात्र हो । ऊ काव्यको बोधोपलब्धि शीर्षकको अन्तमा

गुरुप्रति कृतज्ञता व्यक्त गर्छ । त्यसैले ऊ आफैँ पनि कृतज्ञ पात्र हो । यस काव्यका अर्का पात्र कवि छन् । काव्यमा कविको प्रत्यक्ष उपस्थिति नदेखिए पनि उनी काव्यको सुरुका ७ शीर्षक र अन्त्यका ३ शीर्षक गरी जम्मा १० शीर्षकका विषयहरूमा अप्रत्यक्षरूपमा उपस्थित छन् । उनी यस काव्यमा हितचिन्तक पात्रका रूपमा देखिएका छन् । उनले काव्यारम्भमा ब्रह्मज्ञानबाट मात्र मुक्त भइने कुरा बताएर सो प्राप्तिका लागि गुरुसामु गई जिज्ञासा राख्नुपर्ने कुरा बताएका छन् । त्यसै क्रममा उनले शिष्यमा हुनुपर्ने गुणका बारेमा समेत चर्चा गरेका छन् । उनी अन्तमा गुरुबाट उपदेश ग्रहण गरी शिष्य विदा भएको सूचना दिन्छन् । त्यस्तै अनुबन्धचतुष्टय र ग्रन्थप्रशंसा समेत कविबाटै वर्णित छ । तर काव्यमा कवि कतै पनि उपस्थित छैनन् । अतः उनी नेपथ्यीय पात्र हुन् ।

काव्यमा उपस्थित दुई पात्रबीच क्रियाकलाप नहुँदा काव्य प्रवचन जस्तो भएको छ । बीच-बीचमा रहेका गुरुशिष्य संवाद कुनै अत्यन्त छोटो र कुनै सय डेढसय पद्यका अन्तरालमा भएकाले काव्यमा प्रवचन सुन्ने स्रोत छ भन्ने बुझ्न पाठकलाई कठिनाई पर्छ । गुरुले बीचमा शिष्यको उपस्थिति नगण्य रूपमा देखाउने र शिष्यले पनि गुरुका उपदेशप्रति प्रतिक्रिया नजनाउने गर्नाले काव्यको उत्तरार्द्धमा संवाद टुटेको देखिन्छ । बोधोपलब्धि शीर्षकको अन्तमा शिष्य गुरुप्रति कृतज्ञता प्रदर्शन र पुनः नमन गर्छ अनि मात्र पाठकहरूले गुरुशिष्य बीच संवाद भइरहेको संझिन्छन् । यसरी काव्यमा पात्रहरूबीचको संवाद नाम मात्रको रहेको र उनीहरूबीच कुनै पनि क्रिया-प्रतिक्रिया नभएकोले यस काव्यको पात्रविधान दुर्बल देखिन्छ ।

यस काव्यमा उपस्थित सबै पात्रहरू पुरुष रहेका छन् । तिनीहरूमध्ये गुरुको भूमिका मुख्य, शिष्यको भूमिका सहायक र कविको सहयोगीका रूपमा छ । तीनै पात्र अनुकूल प्रवृत्ति र गतिहीन स्वभावका छन् । जीवनचेतना गुरु र कविको जातिगत तथा शिष्यको व्यक्तिगत रहेको छ । गुरु र शिष्यको आसन्नता मञ्चीय छ भने कविको आसन्नता नेपथ्यीय देखिन्छ ।

ग) परिवेश

प्रस्तुत काव्यमा सांसारिक जीवनको दुखमय परिवेश र साधकको ब्रह्ममा एकता भएपछि अनुभव हुने आनन्दमय परिवेशको चित्रण पाइन्छ । हाम्रो शरीररूपी संसार पञ्चमहाभूतको निर्जीवतत्त्वमा जीवतत्त्वको प्रवेशबाट निर्माण भएको छ । यसलाई पञ्चकर्मेन्द्रिय, पञ्चज्ञानेन्द्रिय, मन, अहङ्कार आदि वृत्तिहरूले दुखमय बनाएका छन् । यी वृत्तिहरू सांसारिक विषयका कारण हुन् । यिनीहरूको वासनामा प्रविष्ट प्राणी चौरासीलाख योनीको भवचक्रमा बारम्बार परिरहन्छ । यिनीहरूले प्राणीलाई विषयको भाड खुवाएर लड्न बनाउछन् र मानिस विषयवश भएर निरन्तर दुखको कहर काटिरहन्छ । वस्तुतः दृश्यमान जगत् सबै भ्रम मात्र हो । यो रज्जुमा सर्पको भ्रान्ति जस्तै हो । अज्ञानान्धकारको आवरणले ढाकिएका हामी प्राणीहरू मयिक संसार (रज्जु) लाई सर्प ठान्छौं र लड्न हुन्छौं । मन उज्यालो हुनासाथ पहिलेका सबै भ्रमहरू मिथ्या सावित हुन्छन् र सांसारिक निस्सारताको बोध भई ध्यान एवं समाधिद्वारा ब्रह्मसँग एकाकार हुन्छ र जीव ब्रह्मबीच एकता हुन्छ । त्यस अवस्थामा ब्रह्मले प्राणीहरूको जीवनचक्र, विषयको निस्सारता आदिबारे यथार्थ ज्ञान गर्छ र आफू परमानन्दको सुखानुभूति गर्छ । त्यस अवस्थाको परिवेशलाई यस काव्यमा

सुखद परिवेश भनिएको हो । यी दुखद र सुखद परिवेश यस कृतिका उद्देश्यगत परिवेश हुन् । कृतिमा पात्रहरूको मनस्थितिको समेत सामान्य सङ्केत छ । यिनीहरूको मनस्थितिले समेत परिवेशको दिग्दर्शन गराएका छन् । यस काव्यका गुरु धीर छन् । उनी काव्यारम्भदेखि अन्त्यसम्म खुशी छन् । कवि पनि काव्यको विकाससँगै सन्तुष्ट हुँदै गएका छन् । शिष्य सुरुमा व्यग्र एवं चिन्तित भए पनि अन्तमा प्रसन्न छ । यसरी काव्यारम्भमा पात्रहरूको मनस्थिति सामान्य रहे पनि अन्तमा सबै खुशी छन् । यसबाट काव्यको बाह्यपरिवेश सुखद भएको अवगत हुन्छ । यसका अतिरिक्त काव्यमा स्थानगत, कालगत एवं समयगत परिवेश बुझाउने सङ्केत पाइदैनन् ।

३.३.३ सारवस्तु

कुनै पनि कृति पढिसकेपछि त्यसबाट जुन अभिप्राय पाइन्छ त्यही नै सारवस्तु (Theme) हो ।^{५९} यसलाई अर्को शब्दमा केन्द्रीयकथ्य वा उद्देश्य पनि भन्न सकिन्छ । सारतत्त्वमै काव्यको स्तरीयताको मापन गरिने हुँदा यो काव्यका तत्त्वहरूमध्येको प्रमुखतत्त्व हो भन्न सकिन्छ । काव्यमा विषयवस्तु र सारतत्त्वबीच पारस्परिक सम्बन्ध हुने गर्छ । यस काव्यमा पाइने सारवस्तुलाई सांसारिक विषयको क्षणिकता, मोक्षोपायवर्णन र अद्वैतदर्शनको प्रस्तुति गरी मूलतः तीन शीर्षकमा विभाजित गरेर अध्ययन-विवेचन गर्न सकिन्छ ।

क) सांसारिक विषयहरूको क्षणिकता

प्रस्तुत काव्यमा सांसारिक विषयहरूलाई क्षणिक मानेर तिनीहरू मोक्षमार्गका बाधक हुन् भन्ने सिद्ध गरिएको छ । हाम्रो अगाडि देखिएको स्थूल जगत् डोरीमा सर्पको भ्रान्ति भएभैं भ्रममात्र हो । संसारका पञ्चमहाभूत, एघार इन्द्रिय, पञ्चप्राण, त्रिगुण, पञ्चकोश आदि तत्त्वहरू सबै नश्वर छन् । हाम्रो स्थूल शरीरमा प्रविष्ट पञ्चमहाभूत र इन्द्रियादिहरू जीवनको प्राप्य मोक्षका बाधक हुन् । तिनीहरूलाई विषय मान्दै कविले तिनीहरू विषयभन्दा पनि भयानक हुने चर्चा गरेका छन् । कवि लेख्छन् :

कालो सर्पसँगै रहन्छ जुन विष् त्यो वीष भन्दा पनि ।

ज्यादै तीब्र खराब विष् विषय हो यो मान्नुपर्ला अनि ॥

खाए मात्र बिगार पाछ विषले देखेर क्यै हुन्न त्यो ।

देख्नासाथ बिगार्छ है विषयले साँचो कुरा मान्नु यो ॥ अनु.प.८२ ॥

इन्द्रियहरू मानिसका शत्रु हुन् । यिनीहरूले मानिसलाई निरन्तर लक्ष्यच्युत गराइरहन्छन् । अतः यिनीहरू पनि त्याज्य छन् भन्ने कविको विचार रहेको छ । दशौं इन्द्रिय मन पनि सङ्कल्पविकल्पक छ । यसले मानिसको बुद्धिलाई चञ्चल गराउँछ । यही चित्तको चाञ्चल्यले नै मानिस मोक्ष हुनबाट वञ्चित हुन्छ । यदि कथंकदाचित् मन नियन्त्रित भयो भने पनि त्यसको अधिष्ठाता अहङ्कारले मानिसको सात्त्विक गुण र आत्मालाई वेष्टित गरिदिन्छ र आत्मातत्त्वसँगको साक्षात्कारबाट मानिस टाढिन्छ । अतः अहङ्कारमाथि विजयी भएपछि मात्र विषयादिबाट छुटकारा पाउनु संभव छ । यी नश्वर विषयादिहरूको वशमा परेर मानिस मोक्षपन्थबाट टाढिएको छ । त्यस्तै अर्को विनश्वर तत्त्व 'माया' को निरूपण प्रसङ्गमा कवि भन्छन् :

^{५९} श्रेष्ठ, दयाराम. नेपाली कथा भाग ४. पूर्ववत् पृ. १२ ।

जो सत् पनि हो र असत् पनि हो ।
जो भाव हो फेरि अभाव पनि हो ॥
वस्तुस्वरूप हो र अवस्तुरूप हो ।
बताउनै मुस्किल खूब त्यो हो ॥ अनु.प.११४ ॥
जो रज्जुको सर्प समान माया ।
सत्त्वादि गुण हो त्यसको त काया ॥ अनु.प.११५ ॥

सांसारिक विषयवासनाहरू अनित्य एवं त्याज्य छन् भन्दै कवि अगाडि लेख्छन् साधकले मुक्ति प्राप्तिको साधना गरेर आफ्नो साक्षीस्वरूप आत्मासँग साक्षात्कार गरे पनि उसमा म 'कर्ता हुँ, म भोक्ता हुँ' भन्ने वासना रहेमा उसको मोक्ष असम्भव हुन्छ । अतः साधकले आफूमा विद्यमान विषयवासनालाई अन्तर्मुखी वृत्तिद्वारा अपक्षय गर्नुपर्छ । यसरी लोकवासना, देहवासना, शास्त्रवासना त्यागेर आत्मालाई स्थिर गराउनुपर्छ । त्यसपछि सत्व र रजोगुणको सहाराले तमोगुण र सत्वको सहाराले रजोगुण नास गर्नुपर्छ । त्यसपछि ब्रह्मतत्त्वको आश्रय लिएर सत्वगुण पनि त्याग्नुपर्छ । यसरी त्रिगुणको त्यागपछि ब्रह्म र आत्मामा एकता गर्दै यिनीहरू बीचको भेदलाई अध्यासमात्र संभिनुपर्छ । अनि अहङ्कार, प्रमाद, दृश्यजगत् एवं असत् तत्त्वहरू स्वतः हटेर जान्छन् र जीवब्रह्मबीच अभेद हुन्छ । यही स्थितिलाई अद्वैतस्थिति भनिएको हो । यही अवस्थाको प्राप्तिका लागि कविले क्षणिक विषयादिहरू त्याग्न हामीलाई अनुरोध गरेका हुन् ।

ख) मोक्षोपाय वर्णन

कविले यस काव्यमा मोक्ष प्राप्त गर्न अवलम्बन गर्नुपर्ने क्रमिक साधनाहरूको दिग्दर्शन गराएका छन् । यस क्रममा कवि लेख्छन् -
कुवाको जल ढाकिबस्छ जसरी भयाउ उठी त्यो सब ।
पन्छाएपछि शुद्ध निर्मल खुबै भेटिन्छ राम्रो जल ॥
त्यस्तै कोशहरू हटाउन सके त्यो शुद्ध आत्मा हरि ।
अन्तर्यामी स्वयंप्रकाश रूपमा पाइन्छ स्पष्टै गरी ॥ अनु.प.१५९ ॥

त्यसपछि साधक द्वैतताको भ्रमबाट मुक्त हुन्छ र उसले आफू नै ब्रह्म भएको अनुभव गर्छ । उसले सबै प्राणी एवं आफू अभिन्न देख्छ । यही नै मोक्षप्राप्तिको प्रारम्भिक श्रेणी हो । जब उसले आफू एवं स्थावर जङ्गम आदिबीच समभाव देख्छ, तब ऊ मुक्त हुन्छ । यस दर्शनमा बताइएको वास्तविक मुक्ति यही नै हो । कविको तलको पद्यले यही कुराको पुष्टि गरेको छ ।

अनिष्ट वा इष्ट पदार्थ प्राप्तिमा विकार कति नलिएर चित्तमा ।

समान रूपमा रहनु सबैक्षण, त्यै नै त हो जीवन मुक्ति लक्षण ॥ अनु.प.४७९ ॥

यसरी प्रस्तुत काव्यमा मोक्षप्राप्त गर्न अवलम्बन गर्नुपर्ने उपाय बताएर मोक्षको स्वरूपको समेत दिग्दर्शन गराइएको छ ।

ग) अद्वैतदर्शनको प्रस्तुति

विवेकचूडामणि अद्वैतदर्शनको उत्कृष्ट कृति हो । यस दर्शनले ब्रह्म र जगत्लाई एउटै स्वीकार गरेको छ । वस्तुतः ब्रह्म र जगत् एउटै हो । उपाधिको भेदले मात्रै जगत्लाई ब्रह्मभन्दा भिन्न देखिएको हो । हाम्रो सामु देखिएको जगत् काल्पनिक प्रपञ्च मात्र हो । जसलाई संसारको रूपमा व्यवहार गरिन्छ । जसरी

माटोलाई घैंटो, हाँडी आदि हज्जारौं उपकरणका रूपमा देख्न सकिन्छ, त्यसरी नै ब्रह्मस्वरूप पनि संसारका लाखौं प्राणी विषयादिका रूपमा परिवर्तित हुन सक्छ । अन्ततः कल्पित उपकरण फुटेपछि माटो मै परिणत भए भैं प्रलयपछि जगत् पनि ब्रह्ममै लीन हुन्छ । देखिएका विकार र विम्बहरू सबै उपाधिवशात् भएका हुन् । यस कुरालाई ऋग्वेदको 'प्रज्ञानं ब्रह्म,' यजुर्वेदको 'अहं ब्रह्मास्मि', सामवेदको 'तत्त्वमसि' र अथर्ववेदको 'अयमात्मा ब्रह्म' जस्ता महावाक्यहरूले उल्लेख गरेका छन् । यसै क्रममा कवि तत्त्वमसि महावाक्यले सिद्ध गरेको जीव र ब्रह्मको एकात्मभावलाई आफ्ना पद्यमार्फत स्पष्ट पार्छन् । द्वैतवादीहरूले जीवतत्त्व र परमात्मतत्त्व बीच देखाएको द्वैतभावको निराकरण गर्दै कवि लेख्छन् :

तत्त्वं यो दुइमा विरोध हुनुमा कारण् उपाधि छ है ।

वास्तव् वस्तुस्वरूप भिन्न नभई यौटै स्वरूप् नै छ है ॥

तत् पद् लक्षित ईशको हुनगयो माया उपाधि अनि ।

देहादिहरू पाँच कोश हुनगए जीवको उपाधि पनि ॥ अनु.प. २५५ ॥

यसरी प्रस्तुत काव्यमा सांसारिक विषयादिलाई क्षणिक स्वीकारेर अद्वैतदर्शनसम्मत चिन्तन प्रस्तुत गरिएको छ । कविले अद्वैतदर्शनलाई दर्शनहरूमध्ये उत्कृष्ट ठहऱ्याएका छन् । उनी यस दर्शनको प्रशंसा गर्दै लेख्छन् -

अद्वैत हो परमतत्त्व र सत्यब्रह्म ।

जो देखि भिन्न अरू चीज त केही छैन ॥

जान्नु यथार्थ गरी त्यो परमात्मतत्त्व ।

जोने पछि त अरू क्यै रहदैन सत्य ॥ अनु.प. २३८ ॥

यसरी प्रस्तुत काव्यमा सांसारिक विषयलाई क्षणिक स्वीकारी अद्वैतवेदान्तदर्शनसम्मत चिन्तन प्रस्तुत गरिएको छ ।

३.३.४ शीर्षकविधान

प्रस्तुत काव्यको शीर्षक विवेकचूडामणिको नेपाली अनुवाद (छन्दोबद्ध) रहेको छ । 'विवेकचूडामणि' आदि शङ्कराचार्यको कृति हो । मुक्तिनाथले यसलाई नेपालीमा छन्दोबद्ध अनुवाद गरेका छन् । यहाँ विवेक भनेर पाँच कोशको विवेक, तीन शरीरको विवेक र अवस्थात्रयको विवेकलाई लक्षित गरिएको छ ।^{६०} चूडामणि भनेको शिरमा राखिने आभूषण हो । उक्त काव्य वेदान्तदर्शनको विशिष्ट भएकोले त्यसको नाम 'विवेकचूडामणि' राखिएको हो । यसका अनुवादक मुक्तिनाथ आचार्यले यसलाई 'नेपाली छन्दोबद्ध अनुवाद' भने पनि अनुवादको नाम वा शीर्षक राखेका छैनन् । शीर्षमा अनुवादको प्रकार (शब्दानुवाद, भावानुवाद वा छायाानुवाद) बारे कुनै उल्लेख पनि पाइदैन । कृतिको आद्योपान्त स्वरूप वार्षिक छन्दका नेपाली पद्यमा आबद्ध भएकाले यसलाई 'नेपाली छन्दोबद्ध अनुवाद' भनिएको उपयुक्त देखिन्छ । काव्यको शीर्षकले अनुवादशैलीलाई सङ्केत गरेको देखिन्छ ।

३.३.५ भावविधान

प्रस्तुत काव्यको मूल उद्देश्य मोक्षप्राप्तिको मार्गदर्शन गराउनु हो । यस क्रममा कविले मोक्षप्राप्त गर्न साधकले अवलम्बन गर्नुपर्ने कार्यका बारेमा विस्तृत बयान गरेका

^{६०} प्याकुरेल, शम्भुनाथ. विवेकचूडामणि. काठमाडौं : भक्तगण, २०५१, पृ. ३ ।

छन् । यस अवस्थामा काव्यमा शान्तरसको स्थायीभाव जागृत हुनुपर्ने देखिन्छ तर काव्यमा पात्रपात्राबीच क्रियाकलाप नभएकोले स्थायीभाव निर्वेद जाग्न सकेको छैन । यहाँ त साधकले आफ्नो अन्तःकरण ब्रह्ममा लीन बनाउनुपर्ने उपदेश छ । अतः स्थायीभाव विउभाउने पात्रको अभावमा सहृदयीमा निर्वेद स्थायीभाव जागेको छैन । यसरी विषय र आश्रयको अभावमा स्थायीभाव जाग्न नसकेपछि आलम्बन विभाव हुनसकेको छैन । निर्वेदको उद्दीपकतत्त्वको वर्णन पनि यस काव्यमा छैन । यहाँ पात्र-पात्राबीचको क्रियाकलापबाट सहृदयीमा कायिक, मानसिक, आहार्य एवं सात्विक अनुभाव जागेको छैन । त्यस्तै स्थायीभाव निर्वेदमा जागनुपर्ने धृति, जडता स्मृति, हर्ष, विबोध, आलस्य, आदि पनि प्रदीप्त हुनसकेको देखिदैन । उपर्युक्त रससामग्रीहरूको अभावमा यस काव्यमा रसानुभूति हुन नसके पनि वैराग्यबोध गराउने तत्त्वहरू विद्यमान देखिन्छन् ।

३.३.६ सर्गयोजना र आयाम

काव्यमा प्रबन्धात्मकताले सिङ्गो कथानकको एउटा मूर्तस्वरूप निर्माण गर्छ । तर कथानक एवं पात्रपात्राबीच क्रियाकलाप नभएका काव्यहरूमा प्रबन्धात्मक सर्गयोजना कमै पाइन्छ । प्रस्तुत काव्य पनि कथावस्तु र क्रियाकलाप नभएको औपदेशिक काव्य भएकोले यसमा प्रबन्धात्मकताको स्पष्ट सङ्केत देखिदैन र सर्गान्तको विषयले भावीसर्गको सङ्केत गरेको पनि छैन । त्यस्तै यस काव्यको सर्गविभाजन पनि महाकाव्य सिद्धान्तानुरूप गरिएको छैन । यसमा एउटा विषय सकिएपछि दोस्रो शीर्षक दिएर त्यसअन्तर्गतको विषयवर्णन प्रारम्भ गरिएको छ । यसरी प्रस्तुत काव्यमा काव्यमान्यता अनुसारको सर्गविभाजन र प्रबन्धात्मकता नभए पनि काव्यमा भिन्न किसिमको सर्गयोजना र प्रबन्धात्मकताको भिनो सङ्केत देख्न सकिन्छ । कविले प्रारम्भिक शीर्षकहरूमा स्थूलशरीर, त्रिगुण, पञ्चप्राण, पञ्चकोश आदि अनित्य वस्तुहरूको वर्णन गरेका छन् । त्यसपछि यी नश्वर वस्तुहरूको क्षणिकता सिद्ध गरेर साधकले विषयवासना त्यागी ब्रह्मचिन्तन गरेर तदनुकूल आचरण गर्न उपदेश दिएका छन् । यस क्रममा कविले ध्यान र वैराग्य अवलम्बन गर्न संस्मरण गराएका छन् । यसरी क्रमिक रूपमा प्रारम्भिक मार्गहरू पार गरेर ध्यान एवं त्यसबाट वैराग्य अङ्गाल्दै समाधिको अवस्थामा पुगेपछि साधकले दृश्य जगत्को उपेक्षा गर्छ र आफूब्रह्म भएको अनुभव गर्छ । यही नै मुक्ति हो भन्ने कविको कथन छ । यस प्रकार प्रस्तुत काव्यमा मुक्तिमार्ग देखाउने सिलसिलामा क्रमपूर्वक गर्नुपर्ने साधनाहरूबारे उल्लेख गरेर प्रबन्धात्मकता कायम गरिएको छ । तर यो काव्यको पूर्वसर्ग एवं परसर्गबीच नभएर केवल विषयगत देखिएको छ । अतः काव्यको प्रबन्धात्मक सर्गयोजना महाकाव्यसिद्धान्तमा वर्णित सर्गयोजनाको स्वरूप अनुकूल देखिदैन ।

प्रस्तुत काव्य १९६ पृष्ठको आयाममा फैलिएको छ । त्यसअन्तर्गत शङ्कराचार्यका ५८१ पद्यलाई कविले ६५६ पद्यमा अनुवाद गरेका छन् । नेपाली अनुवादसँगै संस्कृत पद्यहरू काव्यमा एकसाथ समावेश गरिएकाले १९६ पृष्ठको कृतिकलेवर मुक्तिनाथका रचनाहरूको मात्र नभएर मूललेखक र अनुवादक दुबैको हो । अनूदित पद्यहरूलाई कविले आवश्यकतानुसार शीर्षकहरूमा वर्गीकृत गरेका छन् । त्यस्ता शीर्षकहरूको संख्या ७६ रहेको छ । उक्त शीर्षकहरूमध्ये पाँच शीर्षकका विषय एक-एक पद्यमा र एघार शीर्षकका विषयहरू दुई-दुई पद्यमा समेटिएका छन् । अन्य शीर्षकहरू तीन पद्यदेखि ७० पद्यसम्मका देखिन्छन् । सर्वाधिक पद्यसंख्या भएको शीर्षक 'उपदेशको' उपसंहार (७०) हो । त्यसपछिको शीर्षक 'बोधोपलब्धि (४६) र समाधिनिरूपण (२५) देखिन्छन् । अन्य सबै शीर्षकहरू तीन

पद्यदेखि २४ पद्यसम्मको विस्तृतिमा फैलिएका छन् । कविले यी शीर्षकहरूलाई विभाजित गर्न खण्ड वा सर्ग छुट्टयाएको देखिँदैन । यसका अतिरिक्त कृतिको भूमिका खण्डअन्तर्गत अनुवादकको नम्र निवेदन तथा प्रकाशकको प्रकाशकीय र उपर्युक्त फैलावट नै यस कृतिको आयाम हो ।

३.३.७ लयविधान

प्रस्तुत काव्य पन्ध्रभन्दा बढी छोटो, लामा तथा मझौला वार्षिक पद्यहरूको बन्धनमा बाँधिएको छ । यस काव्यमा अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, इन्द्रवंशा प्रभृति छोटो, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी जस्ता लामा र वसन्ततिलका एवं मालिनी आदि मझौला छन्दहरूको लययोजना देखिन्छ । कतिपय ठाउँमा एघार एवं बाह्र अक्षर भएका पद्यहरूबीचको साङ्कर्य पनि पाइन्छ । ती सबै छन्दका पद्यहरूमा कविले अन्त्यानुप्रसाको समुचित पालना गरेका छन् । विषयवस्तुको जटिलताले गर्दा पद्यमा धेरै पारिभाषिक र विशेष शब्दहरू प्रयुक्त छन् । त्यस्ता शब्दहरूले काव्यको लयगत माधुर्यमा आघात पुऱ्याए पनि कविले सकेसम्म काव्यको मिठासलाई कायमै राख्ने प्रयत्न गरेका छन् । त्यस्ता पद्यहरूमध्ये छोटो छन्दका पद्यहरूमा अपेक्षकृत लयमाधुरी पाइन्छ । यी पद्यहरूमा वर्ण्य विषयका उदाहरण प्रस्तुत गरेर तथा पद्यविस्तार गरेर कविले कवितालाई सरस र सरल बनाएका छन् । यसरी विस्तार गरेर कविले दर्शन जस्तो दुर्बोध्य र गहन विषयलाई पनि सुस्वादु बनाएका छन् । तल यस्ता पद्यहरूको नमुना प्रस्तुत गरिन्छ :

अनिष्ट वा इष्ट पदार्थप्राप्तिमा ।

विकार कति नलिएर चित्तमा ॥

समान रूपमा सहनू सबै क्षण ।

त्यै नै त हो जीवन मुक्तिलक्षण ॥ अनु.प.४७९ ॥

केही पद्यमा छन्दमिलानको समस्याले, कतै विषयवस्तुको जटिलताले र कहीं अनुवादसम्बन्धी कठिनाइले लय सौन्दर्यमा सामान्य आघात पुगे पनि समग्रमा यस काव्यमा लयसौन्दर्य कायम देखिन्छ । छन्द मिलाउन केही ठाउँमा मात्रागत हेरफेर, कहीं अच्-हल् वर्णहरूबीच विपर्यय र कतिपय ठाउँमा पारिभाषिक शब्दगत कठिनाइ छ । तापनि कविले मात्रागत, वार्षिक, शाब्दिक र भावगत सरलता कायम गर्ने यथाशक्य प्रयास गरेका छन् । तदनुरूप उनले धेरै पद्यहरूमा कोमल पदावली, सरलवाक्य र वाक्यगत क्रमिकतालाई पालना गर्ने प्रयास गरेका छन् । उनका लामाछोटो दुबैथरी पद्यहरूमा गेयात्मकता पाउन सकिन्छ । अतः उनको प्रस्तुत काव्यलाई लययोजनाको दृष्टिले उत्कृष्ट काव्यपंक्तिमा समावेश गर्न सकिन्छ ।

३.३.८ कथनपद्धति

प्रस्तुत काव्यमा प्रत्यक्ष र अप्रत्यक्ष गरी दुई किसिमको कथनपद्धतिको प्रयोग भएको छ । काव्यका तीन पात्रमध्ये मुख्यपात्र गुरु प्रत्यक्षकथनमा मात्र बोलेका छन् भने सहायक पात्र शिष्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दुबै कथनपद्धतिमा बोलेको देखिन्छ । त्यस्तै अर्का सहयोगी पात्र कवि अप्रत्यक्षरूपमा उपस्थित छन् । अतः उनको कथनप्रणाली पनि अप्रत्यक्ष नै रहेको छ । गुरु पात्र काव्यको 'गुरुवाच' शीर्षकको ४७औं पद्यबाट प्रत्यक्षरूपमा आफ्ना उपदेशहरू प्रदान गर्छन् । यो क्रम 'उपदेशको उपसंहार' शीर्षकको ६५० पद्यसम्म रहेको छ । यसबीचमा 'प्रश्न निरूपण' शीर्षकका दुई पद्यमा 'मुक्ति कसरी होइन्छ ?' शीर्षकअन्तर्गतका दुई पद्यमा र 'आत्मस्वरूप विषयक प्रश्न' शीर्षकको एउटा पद्यमा शिष्यले प्रश्न गरेकोले

गुरुको प्रत्यक्षकथन खण्डित भए पनि अन्यत्र निरन्तर रहेको छ । यस काव्यको शिष्य प्रवचनस्रोता जस्तो देखिएको छ । काव्यमा ऊ आद्योपान्त रहेपनि उसको क्रियाकलाप नहुँदा अनुपस्थित जस्तो देखिएको छ । ऊ काव्यारम्भको ५२, ५३औँ २०२, २०३औँ, २२४औँ र ५७९औँ पद्यमा बोलेको छ । शिष्यले उपर्युक्त पद्यहरूमध्ये पाँच पद्यमा प्रत्यक्षकथनमा र अन्तको एउटा पद्यमा अप्रत्यक्षकथनमा आफ्ना विचार प्रकट गरेको छ । यस काव्यका तेस्रा पात्र कवि हुन् । उनी यस काव्यका नेपथ्यीय र सहयोगी पात्र हुन् । काव्यमा उनी काव्यारम्भ गर्दै प्रसङ्गउठान गर्न र अन्तमा काव्यको उपसंहार गर्न उपस्थित भएका छन् । यस प्रसङ्गमा उनी अप्रत्यक्षरूपमा काव्यारम्भको सात शीर्षकअन्तर्गतका ४६ पद्यसम्म र अन्त्यका तीन शीर्षकमा ६ पद्यसम्म निरन्तर बोलेका छन् । यस काव्यमा पाइने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्षकथन सम्बन्धी उदाहरण यिनै हुन् ।

काव्यमा प्रयुक्त प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दुबै कथनपद्धति काव्यिक गुणले ओतप्रोत देखिन्छन् । ती भनाइहरूमा कहीं अलङ्कार, कतै बिम्ब र कतै उक्तिवैचित्र्य देख्न सकिन्छ । अतः तिनीहरूलाई कविनिबद्धवक्तृप्रौढोक्ति र कविप्रौढोक्तिशैली भन्न सकिन्छ ।

३.३.९ बिम्ब तथा प्रतीकयोजना

प्रस्तुत काव्यमा बिम्बहरू सामान्यरूपमा प्रयोग भएका छन् । काव्यको उत्तरार्द्धको अपेक्षा पूर्वार्द्धमा सशक्त देखिएका यस्ता बिम्बहरूको नमुनाका रूपमा यस काव्यको ८३ औँ पद्यलाई लिन सकिन्छ । त्यस पद्यमा सांसारिक भोगका निमित्त उपयोग्य विषयहरूलाई विषसँग तुलना गरेर विषय विषभन्दा पनि जहरिलो हुने चर्चा गरिएको छ । पद्य तल प्रस्तुत छ :

कालो सर्पसँगै रहन्छ जुनविष् त्यो विषभन्दा पनि ।
ज्यादै तीब्र खराब विष् विषय हो यो मान्नुपर्ला अनि ॥
खाए मात्र विगार पाछै विषले देखेर क्यै हुन्न त्यो ।
देख्नासाथ विगार्लै है विषयले साँचो कुरा मान्नु यो ॥

विषय विषभन्दा जहरिलो छ भन्ने यहाँको बयानले सांसारिक विषयभोग अत्यन्तै भयानक छ र त्यस भोगवासनामा निरन्तर आकृष्ट गराउने हाम्रा पाँच कर्मेन्द्रिय र पाँच ज्ञानेन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहङ्कार आदि सबै शत्रु हुन् । यिनीहरूले हामीलाई निरन्तर लक्ष्यच्युत गराउने प्रयास गरिरहेका छन् । माथिको बयानले संसारको घृणास्पद विषयको भयानक चित्र हाम्रो सामु प्रस्तुत गरेको छ । प्रस्तुत काव्यमा यस्ता बिम्बहरू ८१ औँ, १३३औँ, १४०औँ, १४५औँ, १५९औँ, ३००औँ, ३३१औँ लगायतका पद्यहरूमा कतै स्पष्ट र कतै साङ्केतिक रूपमा देख्न सकिन्छ ।

सादृश्यमूलक अलङ्कारअन्तर्गत उपमान बुझाउन प्रयुक्त बिम्ब यस काव्यको दोस्रो किसिमको बिम्ब हो । उपमान भनेको संस्कृत साहित्यमा वर्णित उपमा आदि तुलनीय अलङ्कारहरूमा प्रयोग गरिने सादृश्यबोधक (मुखको सादृश्यमा प्रयुक्त चन्द्र) पद हो । यस काव्यमा यस्ता सादृश्यबोधक पदका रूपमा उपस्थित बिम्बहरू अत्यधिक देखिएका छन् । यस्ता बिम्बहरू मूलतः रूपक अलङ्कार र अंशत उपमा दृष्टान्त आदि अलङ्कारका रूपमा देखिएका छन् । तर ती बिम्बहरूमा भनाइको चमत्कार भने कमै पाइन्छ । तल एउटा नमुना प्रस्तुत गरिन्छ :

कुवाको जल ढाकिबस्छ जसरी भ्याउ उठी त्यो सब ।
पन्छ्राए पछि शुद्ध निर्मल खुबै भेटिन्छ राम्रो जल ॥

त्यस्तै कोशहरू हटाउन सके त्यो शुद्ध आत्मा हरि ।

अन्तर्यामि स्वयं प्रकाश रूपमा पाइन्छ स्पष्टै गरी ॥ अनु.प.१५९ ॥

प्रस्तुत कवितामा भ्याउ हटाएपछि निर्मल पानी भेटे भै हाम्रा शारीरिक कोशहरू हटाउन सके हरि प्राप्त गर्न सकिने कुराको वर्णनमा पानी ढाक्ने भ्याउ र हरि ढाक्ने कोशलाई प्रतिबिम्ब तथा निर्मल पानी र 'हरि'मा बिम्बभाव देखाइएको छ । उपमा अलङ्कार एवं अन्य रूपकादि अलङ्कारहरूमा पाइने यस्ता बिम्बहरू यस काव्यका ७०, ७१, १२३, १४९, ३०५, ३४० औं लगायतका पद्यहरूमा प्रयोग भएका छन् ।

वर्णनात्मक सुन्दर अनुच्छेदका रूपमा प्रयुक्त बिम्बहरू यस काव्यका तेस्रो किसिमका बिम्ब हुन् । काव्यलाई वाच्यरूपमा सुन्दर बनाउन प्रयोग गरिने शाब्दिक चमत्कार वा शब्दालङ्कारको भङ्गिमा नै सुन्दर अनुच्छेद हो । यस्ता बिम्बले काव्यको वाच्यपक्षलाई सुन्दर बनाएका हुन्छन् । यस काव्यमा यस्ता बिम्बहरूको सटिक प्रयोग पाइदैन । सामान्य रूपमा प्रयुक्त यस्तो बिम्बको एउटा नमुना तल प्रस्तुत गरिन्छ :

ब्रह्मा म हुँ विष्णु पनि म नै त हुँ ।

हुँ इन्द्र फेरी शिव नै मनै त हुँ ॥

यो विश्वब्रह्मण्ड सबै मनै त हुँ ।

मदेखि क्यै छैन अरु म एक हुँ ॥ अनु.प.४१९ ॥

माथिको पद्यमा 'म हुँ' पदको पुनरावृत्ति र 'म' पदको ब्रह्म आदि पदमा आरोपबाट उक्त पद्यको उच्चारणमा श्रुतिमधुरता पाइन्छ । प्रस्तुत काव्यमा यस्ता केही बिम्बहरू ठाउँ-ठाउँमा देखिएका छन् ।

प्रस्तुत काव्यमा प्रतीकको कम्पै प्रयोग देखिन्छ । काव्यमा अप्रस्तुत रूपमा देखिएर प्रतीकले प्रस्तुतको धर्मलाई प्रकाशित गर्नुपर्ने हो तर यस काव्यमा आएका प्रतीकहरू साङ्केतिक रूपमा उपस्थित नभएर सामान्य धर्मसहित उपस्थित भएका देखिन्छन् र यिनीहरूले प्रस्तुतलाई त्यति उजिल्याउन सकेका छैनन् । त्यस्तै यस काव्यका विभिन्न पंक्तिमा एउटै प्रतीक पनि विभिन्न धर्म लिएर उपस्थित छन् । यस क्रममा प्रतीकहरूको विशेष धर्म र सामान्यधर्म प्रकटित भएका छन् । यस्ता प्रतीकहरू अधिकांश पदस्तरका छन् । त्यस्ता केही प्रतीकहरू हुन् : राहु - अन्धकार, सूर्य - ज्योति, विष्ठा - घृणित तत्त्व, नटुवा - मिथ्याप्राणी, चन्द्र - निर्मल, अजड्सर्प - अहङ्कार, चोर - दुख, आकाश - निर्लेप, पर्वत - निश्चल, समुद्र - अपार, चन्द्रमा - पूर्णता, सूर्य - प्रकाशक, आत्मा - स्वयं प्रकाश, डोरीको सर्प - भ्रान्तिआदि ।

३.३.१० अलङ्कार प्रयोग

प्रस्तुत काव्यमा अर्थालङ्कारको धेरै र शब्दालङ्कारको सामान्य प्रयोग देखिएको छ । अर्थालङ्कारमा पनि सादृश्यमूलक अलङ्कारहरू काव्यमा यत्रतत्र देखिएका छन् । तिनीहरूमध्ये कतिपय स्पष्ट र कति चाहिँ साङ्केतिक रूपमा देखिएका छन् । संस्कृतमा प्रयुक्त अधिकांश अर्थालङ्कारलाई कविले नेपालीमा पनि जस्ताका तस्तै प्रयोग गरेको देखिन्छ । यसका अतिरिक्त केही थप पद्यहरूमा कविले नवीन अलङ्कारको प्रयोग गरेका छन् । यसरी प्रस्तुत काव्यमा धेरै ठाउँमा देखिएको अलङ्कार रूपकअलङ्कार हो । यसलाई कविले वाक्य, वाक्यांश र पदस्तरमा प्रयोग गरेको देखिन्छ । तल रूपक अलङ्कारको एउटा नमुना प्रस्तुत गरिन्छ :

संसार नामक वृक्षको बीज खुदै अज्ञान नै हो अनि ।

देहै हुँ म भनेर ठान्नु पनि जो अडकूर हो त्यो पनि ॥

फेद हो देह र प्राण इन्द्रियहरू हाँगा भए तेसका ।

पत्ता राग र द्वेष कर्म जल जो संसाररूप वृक्षका ॥ अनु.प.१५२ ॥

यस कवितामा संसारको वृक्षमा बीजको अज्ञानमा, अभिमानको अङ्कुरमा, देहको फेदमा, प्राण र इन्द्रियको हाँगामा, पत्ताको रागद्वेषमा एवं कर्मको जलमा आरोप गरेर रूपक अलङ्कारको स्पष्ट प्रयोग गरेका छन् । यो अलङ्कार संस्कृत पद्यमा पनि छ । त्यस पछिको थप पद्य (१५३औं) कविको आफ्नै सिर्जना हो । त्यसमा पूर्वप्रसङ्ग जोड्दै कविले रूपक अलङ्कारको स्पष्ट प्रयोग गरेका छन् । कवि लेख्छन् त्यस वृक्षको फूल विषयादि हो । त्यस वृक्षको फल सुखदुखादि कर्मफल हुन् । पंक्षीका रूपमा जीव त्यस वृक्षमा बस्ने गर्छ र भोक्ताका रूपमा देखिएर संसारको भोग गर्दछ भन्दा फूलको विषयमा, कर्मफलको वृक्षफलमा र जीवको पक्षीमा आरोप गरेको देखिन्छ । यस्ता रूपक अलङ्कारहरू काव्यमा धेरै ठाउँमा छन् । तर अधिकांशमा चामत्कारिता कमै पाइन्छ । अन्य केही रूपकका नमुना पद्यहरू निम्नानुसार छन् : ४२, ६१, १५९, ४१८, ५५४ औं आदि । कविले अन्य अलङ्कारहरूमा विनोक्ति (६९औं पद्य), प्रतिवस्तूपमा (७०), व्यतिरेक (८२) र निदर्शना (८९) आदि अर्थालङ्कारहरूको प्रयोग गरेका छन् । यस काव्यमा शब्दालङ्कारको प्रयोग ज्यादै न्यून रूपमा भएको छ । शब्दालङ्कारमध्ये अन्त्यानुप्रासको पालना पूर्णरूपमा भएको देखिन्छ । त्यसपछि पालना गरिएका अन्य शब्दालङ्कारहरूमा छेकानुप्रास र वृत्यनुप्रास छन् । कविले छेकानुप्रासलाई अधिकांश ठाउँमा साङ्केतिक र थोरै ठाउँमा स्पष्ट प्रयोग गरेका छन् । तल श्रुत्यनुप्रासअलङ्कारको एउटा नमुना प्रस्तुत छ :

ठूलो म हुँ मानी धनी भनेर ।

गर्ने खुबै गर्व अहं भनेर ॥

त्यो हो अहङ्कार अभिमान गर्छ ।

अन्तस्करणको यही धर्म हुन्छ ॥ अनु.प.९९ ॥

छेकानुप्रासका पद्यहरूमा ६५, ७५, ८६, ९७, ९८, ११४, १२८, १४०औं आदि मुख्य छन् । त्यस्तै श्रुत्यनुप्रास अलङ्कारको सङ्केत ४४, ७७, ५४०, ५४४, ५४५ औं आदि पद्यमा देख्न सकिन्छ । यसका अतिरिक्त वृत्यनुप्रास, लाटानुप्रास र यमक आदि शब्दालङ्कार र अन्य अर्थालङ्कारहरू काव्यमा नगण्य देखिन्छन् ।

३.३.११ भाषाशैली

प्रस्तुत काव्यको भाषा सरल र सुबोध छ । कविले संस्कृतको आशयलाई प्रायशः कवितामा समेटेका छन् । यसरी भाषान्तरको भावलाई अनुवाद गर्दा कतिपय ठाउँमा पदक्रममा विचलन आएको छ । कहीं सिङ्गो शब्दलाई हलन्त बनाएका छन् कति ठाउँमा चाहिँ संस्कृतकै पारिभाषिक शब्दहरूको प्रयोग गरेका छन् । यस्तो गर्दा सम्प्रेषणमा केही कठिनाइ हुन्छ भनेर कविले पादटिप्पणीका रूपमा विशिष्ट शब्दावलीका अर्थ लेखेर सरलीकृत गरेका छन् । वेदान्तदर्शन स्वतः कठिन विषय हो, त्यसकारण अर्थबोधमा कठिनाइ हुनु स्वभाविक मानिन्छ । तर पनि कविले सकभर बुझिने भाषाको प्रयोग गरेको मान्नुपर्छ । उनको भाषाशैली प्रवाहमय छ । उनी भन्न चाहेको कुरा निर्बाधरूपमा अभिव्यक्त गर्छन् । विषयवस्तुगत कठिनाइ, भाषान्तर अनुवाद त्यसमा पनि पद्यानुवाद जस्तो जटिल कार्यमा संलग्न भएर पनि उनले संस्कृतको आशयलाई सर्लक्क उतारेको मान्नुपर्छ । कुनै ठाउँमा

त्यति नै पद्यमा र केही ठाउँमा पद्य बढाएर उनले मूल मर्मलाई कायमै राखेको देखिन्छ । पद्यका अधिकांश वाक्यहरू सरल र आंशिक वाक्यहरू संयुक्त एवं मिश्रित छन् । छन्दमिलानका क्रममा वर्णहरूको तछ्छाइकाइ सामान्य छ, भने मात्रागत हेरफेर प्रशस्तै पाइन्छ । संस्कृतको अनुवाद भएकोले केही अनूदित पद्यमा तिनै संस्कृत र कहीं अन्य सरल संस्कृत शब्दको प्रयोग देखिन्छ, र कतै संस्कृतका पारिभाषिक शब्दहरू पनि प्रयोग भएका छन् । यसरी यस काव्यका संस्कृत शब्दहरूलाई विभाजित गर्दा विशिष्ट पारिभाषिक संस्कृत, कठिन संस्कृत र सरल संस्कृत गरी तीन तहमा वर्गीकृत गर्न सकिन्छ । यस्ता पहिलो वर्गका शब्दहरूमा प्रियमोद, आविद्यक, त्रिपुटी, जीव, जहद्, आण्डीत, सन्मात्र, चिद्घन, अध्यास, आदि पर्दछन् । त्यस्तै दोस्रो वर्गका शब्दहरूमा विषय उपराम, प्रपञ्च, सुषुप्ति, कैवल्य, प्रज्ञा, वृत्ति, लीन, असङ्गी अलिङ्ग, अक्षय, अकर्ता, अभोक्तृता, अक्रिय, निस्सीम, निष्क्रिय, परब्रह्म (सुरुवाट १६४ पृष्ठसम्म) आदि पर्दछन् । अन्य सरल संस्कृत भने साधारणले बुझ्न सक्ने देखिन्छन् । जनसाधारणले बुझ्न सक्ने शब्दलाई पनि कविले कहीं पारिभाषिक बनाएका छन् । त्यस्ता शब्दहरू विज्ञान, विषय, संसर्ग, कलारहित, उदासीन, कारण, प्रकृति, करण आदि हुन् । कविले यी शब्दका अतिरिक्त न्यूनसंख्यामा अन्य स्रोतका आगन्तुक र भर्त्ता शब्दहरूलाई पनि प्रयोग गरेका छन् ।

समष्टिमा प्रस्तुत काव्यमा भाषागत र विषयगत कठिनाइ रहे पनि कविले विषयवस्तुलाई सरल र सुबोध बनाउने दृढकसरत गरेका छन् । कवि यस कार्यमा धेरै ठाउँमा सफल भएका छन् । प्रस्तुत काव्यमा पाइने भाषाशैलीगत विशेषता यिनै हुन् ।

३.३.१२ अनुवादकला

प्रस्तुत काव्य विवेकचूडामणिको 'नेपाली छन्दोबद्ध भावानुवाद' हो । भावानुवादमा अनुवादकले मूलको भाव, आशय वा तात्पर्यलाई रूपान्तरित गरेको हुन्छ । तदनु रूप यस काव्यका अनुवादकले पनि मूलमर्मलाई प्रायशः अनुवाद गरेका छन् । अनुवादका क्रममा अनुष्टुप् छन्दको एउटा पद्यलाई कविले कतै शार्दूलविक्रीडित प्रभृति लामा छन्दका तीन पद्यसम्म बढाएर पनि मूलभावलाई समेट्ने प्रयत्न गरेका छन् । यस काव्यमा त्यस्ता मूलपद्यहरूको संख्या सात रहेको छ । एउटा पद्यलाई कविले कहीं दुई पद्यमा पनि विस्तारित गरेका छन् । काव्यमा त्यस्ता पद्यहरू धेरै छन् । कुनै ठाउँमा मूलका ६ पंक्तिलाई आठ पंक्तिमा र तीन पंक्तिलाई चार पंक्तिमा पनि रूपान्तरित गरिएको छ । कविले एक ठाउँमा (मूलपद्य ३४५-४६) मूलका दश पंक्तिलाई आठ पंक्तिमा अनुवाद गरेको देखिन्छ । तल अनुवादकलाको क्रमिक अध्ययन गरिन्छ -

मूलपद्य - नन्दितानि दिगन्तानि यस्यानन्दाम्बुविन्दुना ।

पूर्णानन्दं प्रभुं वन्दे स्वानन्दैकस्वरूपिणम् ॥ मूल प. मङ्गलाचरण ।

(अर्थ: जसको आनन्दरूपी अमृतको एक थोपाले दिशाको अन्तसम्म आनन्दित बनेको छ, त्यस्ता पूर्णआनन्दस्वरूप प्रभुलाई नमन गर्छु ।)

यसरी विस्तारित र संक्षेपीकृत गरिएका पद्यमा पाइने अनुवादकौशललाई तुलनात्मक अध्ययनबाट स्पष्ट्याउन सकिन्छ ।

अनुष्टुप्छन्दको यस पद्यलाई अनुवादकले विषमच्छन्द (प्रथम र तेस्रो पाउ स्रग्धरा, दोस्रो पाउ मन्द्राक्रान्ता र चौथो पाउ ?) मा निम्नानुसार अनुवाद गरेका छन् :

जस्को आनन्दरूपी सुखमय अति नै एकथोपा जलैले ।

ब्रह्माण्डै नै सुखमय सदा पाछै जस्को प्रभाले ॥

जस्को आनन्द नै हो स्वरूप पनि सदा पूर्ण आनन्दरूप ।

गछू धेरै नमस्कार प्रभु हजुरमा हे परब्रह्म रूप ॥अनु.प.१ ॥

माथिको मूलको अर्थलाई अनुवादकले करिब एक तृतीयांशमा बढाएका छन् । रूपान्तरित पद्यमा जस्को आनन्द नै हो, जस्को प्रभाले, हे परब्रह्मरूप, जस्ता वाक्यांश र सुखमय, अति, सदा, जस्को, प्रभाले पनि, धेरै हजुरमा, परब्रह्म जस्ता पदहरू मौलिक छन् । त्यस्तै अनुवादमा कविले सुखमय, नै, सदा, जस्को र आनन्द पदलाई दोहोऱ्याएका छन् । यसैगरी मूलपद्यमा कर्मपदका रूपमा रहेको चौथो हरफलाई कारकीय परिवर्तनका साथ एक पंक्तिमा विस्तारित गरेका छन् भने मूलमा नभएको सुखमय पदलाई कविले अनुवादमा जल र प्रभाको विशेषता बुझाउन प्रयोग गरेका छन् । त्यस्तै मूलमा प्रयुक्त दिगन्त (दिशाको अन्त) पदका ठाउँमा अनुवादकले 'ब्रह्माण्ड' पदको प्रयोग गरेको देखिन्छ । यी विविध परिवर्तनका कारण मूल आशयमा पनि भिनो परिवर्तन देखिएको छ । तल अर्को पद्यको आशय मूलसँग तुलना गरेर देखाइन्छ :

मूलपद्य

देहोऽयमित्येव जडस्य बुद्धिः

देहे च जीवे विदुषस्त्वहंधीः ॥

विवेकविज्ञानवतो महात्मनो ।

ब्रह्माहमित्येव मतिः सदात्मनि ॥मूलप.१६२ ॥

अनुवाद

जडबुद्धिवाला म हुँ देह भन्छ ।

विद्वान् म हुँ जीव भनेर ठान्दछ ॥

विवेक विज्ञानि र जो प्रबुद्ध छ ।

ब्रह्मात्म हुँ आफू भनेर ठान्दछ ॥ अनु.प.१६९ ॥

(अर्थ: शरीर नै म हुँ भन्ने मूर्खहरूको बुद्धि हुन्छ । विद्वान्हरूको देह र जीव दुवैमा आत्मबुद्धि हुन्छ । विवेक र विशेषज्ञान भएका महात्मा जनमा भने म ब्रह्म हुँ भन्ने निश्चय हुन्छ ।) यसरी समच्छन्दमा अनुवादित पद्यमा मूलपद्यको दोस्रो पंक्तिको पूर्ण अर्थ अनुवादमा देखिएको छैन । अन्य तेस्रा र चौथा पंक्तिका आशयलाई कविले तत्-तत् पंक्तिमा अनुवाद गरेका छन् । यस पद्यको अनुवादशैली प्राञ्जल देखिन्छ ।

एक ठाउँमा मुक्तिनाथले अनुष्टुप् छन्दको मूलपद्यलाई शार्दूलाविक्रीडित छन्दका तीन पद्यमा रूपान्तरित गरेका छन् । तल मूलपद्य र अनूदित पद्यका आशयबीच तुलना गरिन्छ -

मूलपद्य:

व्याघ्रबुद्ध्या विनिर्मुक्तो बाणः पश्चात्तु गोमतौ ।

न तिष्ठति छिनत्त्येव लक्ष्यं वेगेन निर्भरम् ॥मूलप.४५३ ॥

(अर्थ: बाघ हो भन्ने संझिएर गाईप्रति छोडेको बाण पछि गाई रहेछ भन्ने जाने पनि बीचमै रोकिदैन । बाणले लक्ष्यभेदेन गरेरै छोड्छ ।)

अनुवाद

कोही मानिसले शिकार गरदा क्यै लक्ष्य ताकेर त्यो ।

छोडेको जुन बाण हो त्यही गई भेदन् पनि लक्ष्यको ॥

जस्तो गर्दछ त्यै सरी जति-तति प्रारब्ध हो त्यो सब ।

ज्ञानीले पनि भोग्न बाध्य हुन गै भोग् गर्दछन् ती सब ॥

गाईलाई त बाघ ठानी भुलमा जो बाण छूटी सक्यो ।

त्यस्तै भेदन गर्छ-गर्छ सहजै आफ्नो त्यही लक्ष्यको ॥

गाई पो त रहेछ लौ भनि पछि जाने पनि क्यै गरी ।

बाण फर्कन्न कदापि लक्ष्य त्यसले हान्नेछ भेदन् गरी ॥

त्यस्तै भै गरी जो छुटेर अहिले आइरहेको पुरा ।
 ज्ञानीको पनि स्थूल यै शरीरले प्रारब्ध भन्नेकुरा ॥
 भोग्नै पछि नभोगि हुन्न जति हो भोगेर मात्रै सब ।
 त्यो प्रारब्ध हुनेछ नास बुझनु यै हो कुरा वास्तव ॥(४९६-९८)

यी अनुवादहरूको मूलमा अप्रस्तुतको मात्र प्रयोग छ भने अनुवादकले अप्रस्तुतमा प्रस्तुत जोडेर तीन पद्यमा भावानुवाद गरेका छन् । यस प्रसङ्गमा केही मौलिक वाक्यांश र पदहरू पनि देखिएका छन् । यसका साथै शिकारी प्रसङ्ग, पूर्वजन्ममा निर्धारित स्थूलशरीर ज्ञानीले पनि भोग्नुपर्ने चर्चा र प्रारब्ध समाप्तिपछि ज्ञानीको स्थूल शरीर नास हुने प्रसङ्ग अनुवादकले थपेका छन् । दोस्रो पद्यमा शिकारी प्रसङ्ग शब्दान्तरको प्रयोगका साथ दोहोरिएको छ ।

मुक्तिनाथले अनुवादका क्रममा एक ठाउँमा दशपंक्तिलाई छोट्याएर आठ पंक्तिमा अनुवाद गरेका छन् । तल मूलपद्यसँग अनूदित पद्यको तुलना देखाइन्छ -

मूल विक्षेपशक्तिविजयो विषमो विधातुं,
 निश्शेषमावरणशक्तिनिवृत्त्यभावे ।
 दृग्दृश्ययो स्फुटपयोजलवद्विभागे,
 नश्येत्तदावरणमात्मनि च स्वभावात् ॥
 निसंशयेन भवति प्रतिबन्धशून्यो,
 विक्षेपणं नहि तदा यदि चेन्मृषार्थे ॥
 सम्यग्विवेकःस्फुटजन्यबोधः
 विभज्य दृग्दृश्यपदार्थतत्त्वम् ।
 छिनत्ति मायाकृतमोहबन्धं
 यस्माद् विमुक्तस्य पुनर्न संसृतिः ॥ मूलप.३४५-४६ ॥

(अर्थ: आवरणशक्ति नहटाएसम्म विक्षेपशक्तिमाथि विजय पाउन कठिन छ । दूध र पानी जस्तै गरी द्रष्टा र दृश्यलाई पृथक् गर्नाले आवरण हटेर जान्छ र आफ्नो आत्मास्वरूप प्रकाशित हुन्छ । यसप्रकार आवरणरहित मिथ्यावस्तुले विक्षेप खडा गर्नु सम्भव हुँदैन । सम्यक्ज्ञान हुनाले उत्पन्न सम्यक् विवेकद्वारा दृश्य र द्रष्टा पदार्थलाई भिन्न गर्नाले मोहबन्धन नास हुन्छ र मानिस मुक्त हुन्छ । यसपछि पुनः संसार प्राप्त हुँदैन ।)

अनुवाद

यो आवर्ण हटाउनु र पहिले विक्षेपशक्ति पछी ।
 आफैँ हट्टछ शान्त हुन्छ सजिलै आवर्णको नास् पछी ॥
 पानी दुध समान एक रूपमा द्रष्टा र जो दृश्य छ ।
 बेगल् जान्नु विवेकले गरी त्यसै आवर्ण त्यो हट्टछ ॥
 मिथ्या दृश्यपदार्थ जानिकन त्यो सत्मात्मद्रष्टा पनि ।
 जान्नु ती दुईको स्वरूप पहिले दुबै अलग् हुन् भनी ॥
 निस्सन्देह विवेक नै हुनगए विक्षेप माया सब ।
 बन्धन् तोडिन गै अमर् हुनगई मिल्लेछ मुक्ति तब ॥अनु.प.३६२-६३ ॥

अनूदित पहिलो पद्यमा सामान्यार्थक वाक्यलाई विध्यर्थमा परिवर्तित गरिएको छ । साथै अन्तिम दुई पंक्तिका आशयलाई अनुवादकले छुटाएका छन् र अर्थमा पनि सामान्य

परिवर्तन छ । त्यस्तै दोस्रो पद्यको अनुवादमा पंक्ति र पदावलीका अर्थ छुटेका देखिन्छन् । विभक्तिगत परिवर्तन पनि देखिन्छ ।

मुक्तिनाथले एउटा पद्यको अनुवादक्रममा पद्यको चौथो पंक्तिको आशय नै छोडेका छन् । तल मूलपद्य र अनूदित पद्य एकसाथ दिइएको छ -

मूल चित्तस्य शुद्धये कर्म न तु वस्तूपलब्धये ।

वस्तुसिद्धिविचारेण न किञ्चित् कर्मकोटिभिः ॥मूलप.११॥

(अर्थ: कर्म चित्तशुद्धिका लागि मात्र हो, मुक्तिका लागि होइन । करोडौं कर्मबाट पनि मुक्ति मिल्दैन । मुक्ति त विचारबाट मिल्छ ।)

अनुवाद

कर्मको लक्ष्य हो खास चित्तशुद्धि गराउने ।)

विवेक ज्ञानले नै हो वस्तुसिद्धि गराउने ॥अनु.प.११॥

यस अनुवादमा 'करोडौं कर्मले पनि मुक्ति मिल्दैन' भन्ने अर्थलाई छोडिएको छ ।

समष्टिमा प्रस्तुत पद्यानुवाद मुक्तिनाथको प्रथम प्रयास हो । उनी यस अनुवादमा पूर्ण सफल हुनसकेका छैनन् । तापनि उनले अनुवादमा अधिकांश पद्यका भावलाई समेट्ने प्रयत्न गरेका छन् । अनूदित पद्यहरूमा प्रशस्तै काव्यात्मकता छ । कविले धेरै ठाउँमा मूलका उदाहरण, अलङ्कार, बिम्ब र प्रतीकलाई उतार्ने प्रयास गरेका छन् । भावानुवादमा पद्यको पंक्ति, वाक्यांश, वाक्य र पदलाई पुरै अनुवाद नगरेर आशयलाई मात्र रूपान्तरित गरिन्छ । तदनुरूप यस काव्यमा अनुवाद सम्बन्धी नियमको सामान्य पालना भएको छ । वेदान्तदर्शन जस्तो गम्भीर र भावगम्य विषयलाई वाक्य र पद्यमा उतार्ने प्रयत्न गर्नु कठिन कार्य हो । यस कार्यमा संलग्न भएर पनि उनले सफलता हाँसिल गरेका छन् । मुक्तिनाथको अनुवादकलामा सरसता, विस्तृतीकरण र भावगम्यताको प्रमुखता पाइन्छ ।

३.३.१३ मौलिकता

प्रस्तुत कृति अनूदित काव्य हो, तापनि यसमा मौलिकता प्रशस्तै पाउन सकिन्छ । संस्कृतका ५८१ पद्यलाई अनुवादकले ७५ पद्य बढाएर ६५६ श्लोकमा काव्यको कलेवर निर्माण गरेका छन् । यो मौलिकताको स्थूलसङ्केत हो । कविले कतिपय ठाउँमा उदाहरण र कहीं अन्य माध्यमबाट मूल पद्यको भन्दा दुई गुणा र कहीं तीन गुणा पद्यहरू निर्माण गरेका छन् । तिनीहरूमध्ये केही मौलिक छन् । यसरी प्रस्तुत काव्यमा कतिपय श्लोक, कतिपय पद्यका आधा अंश, कुनैका एकतृतीयांश, कतै एक वाक्य र धेरै ठाउँमा वाक्यांश र पदहरू मौलिक देखिएका छन् । मौलिकताको भलक दिने एउटा उदाहरण यसप्रकार छ :

मूल अर्थस्य निश्चयो दृष्टो विचारेण हितोक्तिः ।

न स्नानेन न दानेन प्राणायामशतेन वा ॥ मूल -१३॥

(अर्थ गुरुको कल्याणकारी उपदेशमा विचार गर्नाले नै सत् वस्तुको निश्चय हुन्छ । यसबाहेक सयौं स्नान, दान र प्राणायामले पनि केही लाभ हुँदैन ।

अनुवाद त्यस्तै विचारद्वारा नै तत्त्वज्ञान उदाउँछ ।

स्वरूप ज्ञानले नै त्यो दुखसारा छुटाउँछ ॥अनु.प.१३॥

काव्यानुवादका क्रममा कविले बीचबीचमा केही मौलिक पद्यहरू सृजना गरेका छन् । यस्ता अन्य पद्यहरूमा २२, ३१, ६५१ औं आदि पद्यलाई उदाहरण मान्न सकिन्छ । यी पद्यका अतिरिक्त अन्य केही पद्यहरूमा विषयवस्तुको भिनो सङ्केत देखिएको छ । त्यस्ता अनूदित पद्यहरू १७८, २१९, ४९८, ५६१ औं आदि हुन् । यस काव्यका केही अनूदित पद्यका

आधाअंशमा पनि मौलिकता देखिएको छ । तल अनूदित पद्यको मूल आशयसँग तुलना प्रस्तुत छ :

मूल अतः प्रमादान्नपरोऽस्ति मृत्युः ।
विवेकिनो ब्रह्मविदः समाधौ ॥
समाहितसिद्धिमुपैति सम्यक् ।
समाहितात्मा भवसावधानः ॥मूलप.३२९ ॥

(अर्थ : त्यसैले विवेकी एवं ब्रह्मवेत्ता पुरुषको लागि समाधिमा प्रमाद गर्नुभन्दा ठूलो अर्को मृत्यु छैन । समाहित पुरुष नै सिद्धिलाभ गर्दछ । सावधानीपूर्वक चित्तलाई स्थिर गर ।

अनुवाद : ध्यानी समाहीत पुरुषलाई नै, मिल्ने छ रात्रिसित आत्मासिद्धि नै ।
यथार्थमा गाँठि कुरा यही त हो, जानी समाहित भई बस्नु काम हो
॥अनु.प.३४४ ॥

माथिको अनूदित पद्यको उत्तरार्द्धमा मौलिकता देखिएको छ । यसैगरी २१८औं पद्यको उत्तरार्द्ध, २१९औं को उत्तरार्द्ध, ३१८औं को उत्तरार्द्ध, ३२५औं को पूर्वार्द्ध, ३४८औं को उत्तरार्द्ध आदिमा पनि मौलिकता देखिन्छ । यसका साथै अनुवादमा मूलको केही विषय पनि छोडिएको छ । काव्यका चार पंक्तिमध्ये कुनै एउटा पंक्तिमा मौलिकता देखिएका उदाहरण पाइन्छन् । ३५३औं पद्यको चौथो पंक्तिमा 'मनले विषयादि त्यागनुपर्छ' भन्नेआग्रह अनुवादकको रहेको छ । यसको सङ्केत मूलपद्यमा देखिँदैन । यसैगरी ३५९औं पद्यको पहिलो पंक्ति, ३७२औं पद्यको चौथो पंक्ति, ३७९औं पद्यको चौथो पंक्ति, ३८९औं पद्यको दोस्रो पंक्ति, ३९० औं पद्यको दोस्रो र चौथो पंक्ति लगायतका पंक्तिहरूमा पनि स्पष्ट मौलिकता देख्न सकिन्छ ।

वाक्य एवं वाक्यांशगत मौलिकता भएको एउटा पद्य मूल अर्थसँग तुलनार्थ प्रस्तुत छ :

मूल : अन्तस्त्यागो बहिस्त्यागो विरक्तस्यैव युज्यते ।
त्यजत्यन्तर्बहिः सङ्गं विरक्तस्तु मुमुक्षया ॥मूलप.३७३ ॥

(अर्थ : भित्री तथा बाहिरी त्याग गर्नु विरक्त पुरुषको लागि उपयुक्त हुन्छ । मोक्षकामीले मात्र आन्तर अथा बाह्य दुबै सङ्गको त्याग गर्दछ ।)

अनुवाद जो जो हुन् ती विरक्तवान् पुरुषले भित्री तथा बाहिरी ।
सारा दृश्य पदार्थ त्याग गरनु पर्नेछ है आखिरी ।
इच्छा मोक्ष हुने मुमुक्षु जनले दुबै कुरा त्यागदछ ।
बीना त्याग हुँदैन मोक्ष कहिल्यै यो मान्नु नै पर्दछ ॥अनु.प.३९८ ॥

उपर्युक्त अनुवादमा 'सारा दृश्य पदार्थ त्याग गर्नुपर्नेछ' र 'त्याग विना मोक्ष कहिल्यै हुँदैन यो मान्नुपर्छ ।' यी दुई वाक्यस्तरका मौलिकता देखिएका छन् । त्यस्तै 'जो जो हुन् ती' 'दुबै कुरा' जस्ता र अन्य केही पदावली स्तरका मौलिकता यस पद्यमा देखिएका छन् । अतः यस पद्यमा वाक्य, वाक्यांश र पदगत मौलिकता सिद्ध हुन्छ ।

यस काव्यमा यस्ता वाक्य, वाक्यांश र पदस्तरका पद्य, पद्यांश र पंक्तिगत मौलिकताका उदाहरणहरू धेरै नै छन् ।

३.३.१४ निष्कर्ष

प्रस्तुत काव्य विनाआख्यानीकरणको संरचनामा रचित आध्यात्मिक काव्य हो । यसमा आख्यानको एकदेशीयता र पूर्णता दुबै तत्त्व पाइँदैनन् । यो पात्रविधानको दृष्टिले पनि निर्बल काव्यकोटिमा पर्दछ । यहाँका एकपात्र काव्यभरि अस्वभाविक किसिमले उपदेश दिइरहन्छन् भने शिष्य पात्र चाहिँ विनाप्रतिक्रिया एकोहोरो प्रवचनश्रवण गरिरहन्छ । त्यस्तै काव्यकार

घटनाको जानकारी दिनका लागि मात्र उपस्थित भएका छन् । काव्यमा आवश्यक ठानिने परिवेशचित्रण पनि यस काव्यमा नगण्य स्थानमा रहेको छ । प्रसङ्गवश अप्रस्तुत रूपमा चित्रित परिवेश अलौकिक, क्रमहीन र खण्डित भएकोले यो सबल देखिदैन । प्रस्तुत काव्यको मूल उद्देश्य सारवस्तु प्रदान गर्नु रहेको छ । यस कार्यमा काव्य पूर्ण सफल देखिएको छ ।

यहाँका अधिकांश पद्यहरूमा विध्यर्थ पाइनाले पनि काव्य उपदेशप्रधान भएको स्पष्ट हुन्छ । अतः सारतत्त्वका दृष्टिले काव्य सफल छ । त्यस्तै यस काव्यको लययोजना पनि सशक्त देखिन्छ । कविले काव्यमा वर्णमात्रिक छन्दका विभिन्न लयमा कवितानुवाद गरेर काव्यलाई श्रुतिमधुर तुल्याएका छन् । त्यस्तै यस काव्यमा बिम्ब, अलङ्कार र प्रतीकको प्रयोग पनि समान्यरूपमा देखिएको छ । भाषाशैली सरल, मिठासपूर्ण एवं काव्यात्मक छ । कतै कतै संस्कृतका जटिल शब्द एवं कहीं छन्दबन्धनले भाषिक दुर्बोध्यता निम्त्याए पनि समष्टिमा भाषागत कठिनाइ देखिदैन । अनुवादकले अनुवादको शीर्षकचयन गरेका छैनन् । प्रस्तुत काव्य महाकाव्यको आकार र आयामको भएर पनि यसमा महाकाव्यअनुरूपका तत्त्वहरू पूर्णतः देखिदैनन् । महाकाव्यअनुसारको विषयवस्तु तदनुरूपको स्रोत र नायक यसमा पाइदैन । यसमा महाकाव्यसिद्धान्तअनुसारको रसयोजनाको पनि पूर्ण अभाव देखिन्छ । त्यस्तै महाकाव्यअनुकूलको प्रबन्धात्मक सर्गयोजना पनि यसमा देखिदैन । यति भएर पनि प्रस्तुत काव्य महाकाव्यअनुकूल भाषाशैली र आयाममा फैलिएको छ । त्यस्तै यसमा महाकाव्यमा आवश्यक लययोजना र बिम्ब, अलङ्कार एवं प्रतीकयोजना पाइएको छ । यसमा महाकाव्यका उपर्युक्त सबल तत्त्वहरू पाइए पनि यो महाकाव्य होइन । यसमा प्राप्य सबल तत्त्वहरू संरचना पक्षका नभई रूपपक्षका मात्र हुन् । संरचनागत सबलता नभएर रूपपक्ष बलियो भएर मात्र पनि महाकाव्य हुनसक्दैन । यसमा विद्यमान आध्यात्मिक विषयवस्तुले यो आध्यात्मिक काव्यहरूको पंक्तिमा उभिएको छ । अतः यो आध्यात्मिक विषयवस्तु भएको आयामका दृष्टिले महाकाव्यसमकक्षी औपदेशिक काव्य हो भन्न सकिन्छ ।

यस काव्यमा मौलिकताका प्रशस्त भिल्काहरू पाउन सकिन्छ । प्रस्तुत काव्य नेपाली काव्यपरम्पराको आधुनिक कालीन अनुवादकाव्य हुनाका साथै आध्यात्मिक विषयवस्तु भएको महाकाव्य समकक्षी औपदेशिक काव्य हो ।

परिच्छेद चार

मुक्तिनाथ आचार्यका जीवनीपरक कृतिहरूको विवेचना

४.१ 'भानुको भावना' को विवेचना

४.१.१ रचनाकाल, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव

मुक्तिनाथ आचार्यले 'भानुको भावना' को रचना वि.सं. २०२५-२९ बीच र प्रकाशन वि.सं. २०२९ आषाढमा गरेका हुन् । यस कृतिको रचना गर्नमा भानुभक्त आचार्यप्रति रहेको मानिसहरूको असीम श्रद्धा र प्रेम हो भन्नेकुरा लेखकले बताएका छन् । यसका साथै भानुभक्त आचार्यको आध्यात्मिक र साहित्यिक व्यक्तित्व एवं भानुभक्तको जीवनी लेख्ने मुक्तिनाथपूर्वका जीवनीकारहरू पनि यस कृतिको निर्माणमा प्रेरक देखिएका छन् । त्यस्तै अध्यात्मदर्शन सम्बन्धी तत्कालीन पुस्तकहरू तथा भानुभक्तसँग सम्बद्ध पूर्ववर्ती रचनाहरू यस कृतिका प्रभावस्रोत हुन् । यिनै प्रेरणा र प्रभावको विषयस्रोतमा आफ्नो अध्यात्मदर्शन सम्बन्धी अध्ययन, भानुभक्तीय जीवनी, उनको व्यक्तित्व र कृतित्वको समायोजना गरेर प्रस्तुत कृतिको निर्माण भएको हो । प्रस्तुत कृतिलाई तल जीवनी साहित्यका आधारभूत तत्वहरू चरित्र, घटना, परिवेश, उद्देश्य र भाषाशैली^{६९} का आधारमा तल विवेचना गरिन्छ ।

४.१.२ चरित्रनायक

प्रस्तुत कृतिका मुख्य चरित्र भानुभक्त आचार्य हुन् । उनैको केन्द्रीयतामा यस कृतिको कलेवर तयार भएको छ । यस कृतिको शीर्षक पनि उनकै नामबाट चयन गरिएको छ । यद्यपि यस कृतिमा भानुभक्तका बाजे श्रीकृष्ण आचार्य, बाबु धनञ्जय र उनका छोरा रमानाथ पनि प्रसङ्गवश आएका छन् तर अन्य पात्रहरू गौण रहेकाले यहाँ तिनीहरूको चरित्रचित्रणभन्दा भानुभक्त आचार्यको चरित्रचित्रण नै प्रमुख रहेको छ ।

भानुभक्त बाल्यकालदेखि नै ओजस्वी पात्रका रूपमा चिनिएका व्यक्ति हुन् । उनलाई यस कृतिका लेखकले हुने विरुवाको चिल्लोपात, स्थिर स्वभाववान्, स्मरणशील र शारीरिक तन्दुरुस्त व्यक्तित्वका रूपमा चित्रण गरेका छन् । निश्चय पनि उनी राष्ट्रियता, जातीय स्वाभिमान र कुलीय मानमर्यादाका कट्टर समर्थक थिए । उनले बनारसमा गएर पनि आफ्नो देश, क्षेत्र र कुलको परिचय प्रस्तुत गरेको घटनाबाट यही कुरा प्रमाणित हुन्छ । उनी अध्ययनप्रति पूर्ण प्रतिबद्ध पात्र हुन् । तत्कालीन परिवेशमा पनि शिक्षाप्रति देखिएको उनको जागरुकता काठमाडौँबाट उनले आफ्ना छोरालाई लेखेको पत्रले पुष्टि गर्छ । भानुभक्तको चरित्रमा पाइने अर्को विशेषता ठट्ट्यालोपन हो । उनले ख्याल-ठट्टा र रमाइलो गर्ने क्रममा तीन दर्जन जति रमाइला पद्यहरूको सिर्जना गरेका छन् । शारीरिक अङ्गबोधक नाम सङ्कलित पद्य, गणेश चौथीमा आवश्यक फूल-पातहरूको नाम सङ्कलन गरी रचना गरेको पद्य, कालुजैसीको घरमा विनासितनको भुटेको मकै खानुपर्दा बनाएको पद्य, डिङ्गा विचारीलाई सम्बोधित गरी लेखेको पद्य, ढबाट सुरु गरी ढमै टुङ्ग्याउने गरी बनाएको पद्य, लामखुट्टेले सताएका बेला कमान्डर इन चिफलाई सम्बोधन गरी रचेको पद्य लगायतका रमाइला

^{६९} थापा, हिमांशु. साहित्य परिचय. पूर्ववत् पृ. २२९ ।

पद्यहरू यसका नमुना हुन् । उपर्युक्त पद्यहरूमा भानुभक्त मनोरञ्जनप्रिय, लहडी र निर्भीक व्यक्तित्वका रूपमा चिनिएका छन् । साहित्यिक सन्दर्भमा अध्ययन गर्दा भानुभक्त सहज प्रतिभावान् चरित्र देखिन्छन् । उनी सहज रूपमा कविता रचन सक्थे, उनमा आशुकवित्व थियो । उनका अधिकांश फुटकर कविताहरू नियोजित रचना नभएर प्रासङ्गिक मात्र देखिएका छन् । ती कविताको रचनामार्फत उनी आशुकविका रूपमा परिचित छन् । उनका यस्ता फुटकर कविताहरू करिब ३ दर्जन जति उपलब्ध हुनाले तिनीहरू आकस्मिक भएर पनि नियमित भएको पुष्टि हुन्छ । यी कविताहरूमा कवित्वशक्तिको प्रबलता नपाइए पनि सहजता पाइन्छ । ती कविताहरू अन्तस्करणको प्रेरणाबाट उद्भूत हुन् । कवि भानुभक्तको व्यक्तित्वको अर्को महत्त्वपूर्ण पक्ष राष्ट्रभक्ति हो । उनले विदेशमा पनि आफ्नो देश र क्षेत्रको नाम सगर्व उच्चारण गरेका छन् । देशका प्राकृतिक वैभवहरूको महत्त्वगान गर्दै अतुलनीय वैदेशिक सम्पदासँग तिनीहरूको सारूप्य देखाउनु राष्ट्रभक्तिको पराकाष्ठा हो । राष्ट्रप्रेमको अनुरागमा मोहित भएको चरित्रले स्वर्गको अमरावती र बेलायतको लण्डनभन्दा हाम्रो कान्तिपुरीलाई महत्त्वशाली देख्न सक्छ, काव्यात्मक वर्णनको सन्दर्भमा यसलाई स्वभाविक मानिन्छ । यही गुण कवि भानुभक्तमा पनि विद्यमान छ । भानुभक्तको अर्को चारित्रिक विशेषता आध्यात्मिक-नैतिक सन्देश प्रदान गर्नु हो । उनी १८ वर्षको उमेरमै वेदान्तदर्शनबाट प्रभावित भई शङ्कराचार्यकृत प्रश्नोत्तरीको अनुवादतर्फ आकृष्ट हुनु एवं त्यसै समयमा भक्तमालाको लेखन आरम्भ गर्नुले यही कुरा पुष्टि हुन्छ । यसरी अध्यात्मदर्शन विषय रोजेर उनले ती कृतिमार्फत यस लोकको नश्वरता र हाम्रो वैषयिक मोहको चर्चा गरेका छन् । विषयप्रतिको हाम्रो आसक्तिले हामी प्रतिदिन मोक्षपन्थबाट च्युत भइरहेका छौं । उनका ती पुस्तकहरूमा पाइने सारकुरा यिनै हुन् । यस क्रममा उनले भक्तिबाट ज्ञान प्राप्त गर्न सकिने र ज्ञानप्राप्तिपछि मोक्षावस्थामा पुगिने चर्चा गरेका छन् । साथै हाम्रो जीवनमा उपयोगी व्यावहारिक उपदेशहरू पनि उनले प्रदान गरेका छन् । अतः उनलाई आध्यात्मिक नैतिक सन्देशप्रदाताका रूपमा पनि हेर्न सकिन्छ । भानुभक्तको चरित्रको अर्को पक्ष व्यावहारिकता हो । उनी एक कुशल गृहस्थ हुन् । त्यसैले गृहस्थानुरूपको व्यवहार उनको चरित्रमा झल्किन्छ । यस कृतिले उनको गार्हस्थ्य जीवनको यथार्थ चित्र उतारेको छ । सम्पत्तिमा उनी मनोरञ्जनप्रेमी, असल गृहस्थ, आध्यात्मिक उपदेशक, सहजप्रतिभावान् कवि र देशप्रति औधि माया गर्ने सत्पात्र हुन् ।

४.१.३ घटना

प्रस्तुत कृति श्रीकृष्ण आचार्यको गार्हस्थ्य जीवनको चर्चाबाट सुरु भएर धनञ्जय आचार्यको उत्तरवयको चित्रण एवं मूलचरित्र भानुभक्त आचार्यको इतिवृत्तको वर्णन गर्दै कवि पुत्र रमानाथको छोटो परिचयका साथ टुङ्गिएको छ । यस बीचमा श्रीकृष्ण आचार्यको कल्पवास एवं निधन, धनञ्जय आचार्यको जागिरप्रसङ्ग तथा जागिरे अवस्थामै मृत्यु र रमानाथ आचार्यका कृति र उनको देहत्याग प्रसङ्गहरू अतिरिक्तप्रसङ्गका रूपमा आएका छन् । तल यस कृतिका चरित्रनायक भानुभक्तको इतिवृत्तसँग सम्बद्ध मुख्य घटनाहरूको विवरण प्रस्तुत गरिन्छ :-

भानुभक्तको जन्म एवं अध्ययन : यस कृतिमा उल्लेखभएअनुसार भानुभक्त आचार्य वि.सं. १८७१ असार २९ गते रविवार, कृष्णअष्टमी तिथिको दिन बेलुकी सूर्यास्त हुन करिब ४/५ घडी बाँकी रहँदा धनञ्जयकी पत्नी धर्मवतीको कोखबाट जन्मिएका

हुन् । उनले अक्षरारम्भ पछि अमरकोश, यजुर्वेद, मध्यसिद्धान्तकौमुदी र ज्योतिषशास्त्रको सामान्य अध्ययन गरेका थिए ।

भानुभक्तको विवाह : भानुभक्त ११ वर्ष पुगेपछि उनको विवाह भएको हो । उनको सो विवाह तनहुँ मान्हुँ निवासी विद्याधर खनालकी सुपुत्री १० वर्षीया चन्द्रकला देवीसँग भएको थियो ।

भानुभक्तका प्रारम्भिक रचना : बनारसमा अध्ययनरत भानुभक्तसँग कुनै दिन एक विद्वान्ले परिचय माग्दा उनले सुनाएको “ पाहाडको अति बेस देश् ...” स्वपरिचायात्मक कविता नै उनको प्रथम रचना हो । त्यसपछि उनले वि.सं. १८८९ मा काशीबाट फर्किएपछि आफ्नो जन्म कुण्डलीको अध्ययन गरेर “श्रिशालिवाहन्का ...” पद्य रचेका थिए । उनको तेस्रो रचना “केश् कञ्चेट् कुहुनु ...” हो ।

भानुभक्तको घाँसीसँग भेटप्रसङ्ग : भानुभक्त घाँसीबाट प्रेरित भई काव्यरचनामा संलग्न भएका होइनन् भन्ने कुरा मुक्तिनाथले उल्लेख गरेका छन् । यस प्रसङ्गमा उनी भन्छन् :- “गलत कुरालाई प्रश्रय दिँदा एकातिर वास्तविकताको लोप भएको छ भने अर्कातिर लोकहितकारी विशाल भावना भएका भानुभक्तलाई सानो कीर्तिलोभी देखाएर सङ्कुचित बनाइएको छ ।”

कविको प्रथम राजधानी यात्रा : भानुभक्त आचार्य पशुपतिको दर्शन एवं राजधानीको मनोरम दृश्य अवलोकन गर्ने उद्देश्यले वि.सं. १९९७ वैशाखमा काठमाडौँ गएका थिए । यात्राका क्रममा उनले बालाजु गएर “यतिदिन पछि मैले ...” पद्यको रचना गरे । त्यसपछि पशुपतिनाथको दर्शन एवं काठमाडौँको सौन्दर्यावलोकन गरेर “चपला अबला ...” पद्य रचना गरे ।

गजाधरको घरमा बासप्रसङ्ग : भोर्लेटार निवासी आफ्ना मामाका छोरा कलाधरलाई गायत्रीमन्त्र सुनाउने प्रयोजनले भानुभक्त त्यसतर्फ प्रस्थान गर्दा बाटामा पर्ने तारुका गाँउस्थित गजाधर सोतीको घरमा बास माग्न पुगेका थिए । तर त्यसदिन गजाधर सोती घरमा नभएको कारण देखाई उनकी ब्राह्मणीले बास नदिएपछि उनी अलि परको कुनै रिक्तो गोठमा बसी आफ्नो बाटो लागे ।

तारापतिको घरमा बास : भानुभक्तको रम्घास्थित घरबाट एक कोष दक्षिणमा अवस्थित महिबलमा भानुभक्तका मित्र तारापतिको घर थियो । भानुभक्त एकदिन कामविशेषले त्यहाँ जाँदा मित्रको आग्रहअनुसार त्यही बास वसेका थिए । राती त्यस घरमा सासूबुहारीको भ्रगडा परेको कारणले उनी रातभर निदाएनन् र सोही रात उनले बुहारीहरूलाई काम लाग्ने बध्दुशिक्षाको रचना गरे ।

गिरिधारी भाटसँग मुद्दाप्रसङ्ग : चुँदी खोलामा बाँध बाँधेर आचार्य, अर्याल, भाट, ढकाल आदि मोही एवं भानुभक्तले बराहकुलोको निर्माण गरेका थिए । सो कुलोको सञ्चालन भानुभक्तको नेतृत्वमा भएको थियो । वि.सं. १९२१ को वर्षायाममा चुँदीमा आएको बाढीले उक्त बाँध भत्काइदिएपछि सबैको सल्लाहअनुसार गिरिधारी रानाभाटको खेतको बीचबाट कुलो निर्माण भई सञ्चालित हुनथाल्यो । त्यसको केही महिनापछि गिरिधारीले ‘भानुभक्तले मेरो खेत टापू बनाइदियो’ भनेर पोखरा अदालतमा मुद्दा दर्ता गर्‍यो र उक्त उजुरीअनुसार दौडाहा आई सोधपुछ गर्दा भानुभक्तले “ख्वामित् यस् गिरिधारिले ...” पद्यमा घटनाको विवरण सुनाए । त्यसैगरी भानुभक्त र उसको जग्गाको अर्को मुद्दामा पनि उसले अदालतमा नालिस हाल्यो । कविले “साँचा हुन् ... ” बाट त्यसको पनि प्रत्युत्तर दिए । गिरिधारीसँगको

सो मुद्दा किनारा लाग्न ढिलो भएपछि भानुभक्तले “बिन्ती डिट्ठा बिचारी ...” पद्य लेखेर पोखरा अदालतका हाकिमलाई निवेदन दिए ।

विविध प्रसङ्गमा रचिएका पद्यहरूको विवरण :

१. भानुभक्तले फोहोर्नी नारीलाई चेतावनी दिएर “कतै खरानी छरी ...” पद्य रचना गरेका थिए ।
२. कुनै दिन वकलाड निवासी कालु जैसीकोमा दिउँसोको धुपमा पुग्दा भुटेका मकै बिनासितन खान दिएपछि उनले “असल् मुङ्गे केरा ...” पद्य रचना गरेका थिए ।
३. अदालतमा कार्यरत रहँदा मरेका आफ्ना बाबुको हिसाब फर्स्योट नहुँदासम्म थुनिएका भानुभक्तले आफ्ना छोराको व्रतबन्धमा घर जान पाऊँ भनी कमान्डर इन चिफलाई “चालीस वर्ष पुग्याँ” पद्य लेखेका थिए ।
४. छोराको व्रतबन्धमा घर आएका भानुभक्त तुरुन्तै कुमारीचोक फर्कन नसकेपछि शारीरिक अस्वस्थता देखाई कमान्डर इन चिफलाई “शरीर छ अतिकच्चा ...” पद्य लेखी पठाएका थिए ।
५. मित्र धर्मदत्तले आफ्ना पाल्पाली साथीलाई पठाउनुपर्ने पत्र भानुभक्तले लेखिदिएका थिए । सो पत्र “खर अक्षर ...” हो ।
६. पाल्पाली मित्रले धर्मदत्तलाई पठाएको टोपी सानो भएकोले अर्को पठाउन अनुरोध गरी “बिकै टोपी ...” पद्य पठाएका थिए ।
७. धर्मदत्तका पाल्पाली मित्रले पठाएको पत्र बेढङ्गको भयो भनी धर्मदत्तले पठाउने पद्य “भाषा श्लोक भनूँता ...” पद्य लेखेका थिए ।
८. अयस आराममा लागेका काठमाडौँका कुनै मित्रलाई भानुभक्तले “नपोथी पात्रा छन् ...” पद्यमार्फत होसियारी गरेका थिए ।
९. विवाहमा हुने अन्त्याक्षरीमा अरूलाई कठिन बनाइदिन भानुभक्तले ढबाट सुरु भै ढमै टुङ्गिने “ढीटा छन् ...” पद्य रचना गरेका थिए ।
१०. गणेश चौथीको सामग्री जुटाउन सजिलो होस् भन्ने उद्देश्यले भानुभक्तले “मास् भृङ्गी ...” पद्य रचेका थिए ।
११. दिनभर गिरा, डन्डीबियो खेल्ने भतिजालाई सम्झाउन भानुभक्तले “पढ्नु गुन्नु ...” पद्य रचेका थिए ।
१२. भानुभक्तले कौडीको दाउ चिन्न “तिन् सात्” पद्य रचेका थिए ।
१३. एकदिन जूवा हारेपछि भानुभक्तले “तान्यो एघार पन्ध्र ...” पद्य रचेका थिए ।
१४. ईर्ष्या र डाहले लड्ने सौताबारे भानुभक्तले “क्या लड्छन् ...” पद्य रचेका थिए ।
१५. कविले काठमाडौँबाट आफ्नी पत्नीलाई “बिन्ती एक म ... ” पद्य लेखी पठाएका थिए ।
१६. धर्मदत्तको घरमा रहेको खुकुरी पाउन भानुभक्तले “विद्वान् जन्ते” पद्य रचेका थिए ।
१७. कर्णेल शिवशङ्करलाई भेट्न जाँदा नभेटेपछि भानुभक्तले “आएथें मनका कुरा” पद्य रची छोट्टिदिएका थिए ।

रमानाथको योगदानको चर्चा : रमानाथले पिताबाट शिक्षादीक्षा र तालिम पाएका थिए । उनको शास्त्रमा श्रद्धा र ईश्वरमा विश्वास थियो । उनले पूर्वजन्म, धनमहिमा, परमेश्वरको व्यापकता, तीर्थमहिमा, जीवको चौरासीलाख योनी, मान्हुवर्णन तथा वि.सं. १९४८ मा लागेको अनिकालको वर्णन गरी कविता रचना गरेका छन् ।

कृतिको सातौं अध्यायमा भानुभक्तमा विद्यमान आध्यात्मिक भावनाको विशेष चर्चा गरिएको छ ।

४.१.४ परिवेश

प्रस्तुत कृतिका घटनाहरू वि.सं. १८८० बाट सुरु भै वि.सं. १९६८ मा टुङ्गिएका छन् । अतः यस कृतिअन्तर्गत करिब एक शताब्दीको पारिवेशिक सङ्केत पाइन्छ । भानुभक्त आचार्यका बाजे श्रीकृष्ण आचार्य, बाबु धनञ्जय र उनका छोरा रमानाथको जीवनी र तिनीहरूसँग सम्बद्ध दैशिक, कालिक र सामयिक परिवेशको दिग्दर्शन यस कृतिमा अतिरिक्तपरिवेशका रूपमा चित्रित छ भने चरित्रनायक भानुभक्त आचार्यको जीवनकालमा आएका घटना एवं तत्कालीन स्थानगत, समयगत र ऐतिहासिक परिवेशको चित्रण कृतिमा सामान्यरूपमा गरिएको छ । दैशिक परिवेशअन्तर्गत यस कृतिमा चुँदी र रम्घागाउँ एवं वरपरका क्षेत्रहरू तारुकावेँसी, भोर्लेटार, मान्हु, वकलाड, महिबल आदि ठाउँहरू नामतः उल्लेख छन् भने टाढाका ठाउँहरूमा काठमाडौँका बालाजु, कान्तिपुरी, पोखरा, कुमारीचोक आदि ठाउँहरू उल्लेख छन् । आफ्नो गाउँठाउँ, छिमेकी गाउँहरू, मावली, ससुराली गाउँ र ती ठाउँ एवं अन्य ठाउँहरूमा पैदलयात्रा गर्दा भेटिएका र बास बसेका गाउँहरूको यस कृतिमा कतै सामान्य चित्रण र कतै स्थानसङ्केत गरिएको पाइन्छ । आफ्नो गाउँअन्तर्गत कविले चुँदीखोला र बराहकुलोको वरिपरि पर्ने क्षेत्रको चिनारी र ती ठाउँका विशेषताबारे सामान्यसङ्केत गरेका छन् । छिमेकी गाउँहरूमा वकलाडको नामोच्चारणमात्र छ भने महिबल निवासी तारापतिको घर एवं तिनको पारिवारिकस्थितिको सामान्य चिनारी गराइएको छ । त्यस्तै भानुभक्त मावली जाँदा बाटामा पर्ने तारुका गाउँ एवं विसीको चित्रण र त्यहाँका मानिसहरूको स्वभाव तथा भोर्लेटारस्थित आफ्नो मामाघरको सामान्य चिनारी गराइएको छ । कृतिको प्रारम्भिक चरणमा भानुभक्तको ससुराली गाउँको परिचय प्रस्तुत छ । र कृतिको अन्तमा मान्हु गाउँको सौन्दर्यवर्णन आकर्षक छ । यसकृतिमा चित्रित टाढाका क्षेत्रहरूमध्ये इच्छानुसार चित्रण गरेका बालाजु, कान्तिपुरी र कुमारीचोक छन् । माथिका दुई ठाउँमा काठमाडौँको मनोरम चित्रण छ भने तेस्रो ठाउँ कुमारीचोकअन्तर्गत नसिहतखानाको दुःस्थिति वर्णित छ । टाढाका अन्य ठाउँहरूमा पाल्पाको स्थलगत चित्रण देखिँदैन । काशी पनि उच्चारित मात्र छ । त्यहाँको जनजीवन र चालचलनबारे कृतिमा कुनै चर्चा पाइँदैन । टाढाको अर्को ठाउँ पोखराअदालत हो । कृतिमा पोखराका सम्बन्धमा कुनै उल्लेख देखिँदैन । यसरी कृतिमा स्थानसङ्केत गर्न आएका केही स्थानीय, राष्ट्रिय एवं अन्तर्राष्ट्रिय ठाउँहरूले तत्कालीन परिवेशको सामान्य दिग्दर्शन गराएका छन् । यस कृतिका परिवेशबोधक केही सङ्केतहरू तल प्रस्तुत गरिन्छ जसले ऐतिहासिक तथ्यलाई उजागर गरेका छन् ।

उन्नाइसौं शताब्दीको उत्तरार्द्धमा वृद्धवृद्धाहरू काशी जाने प्रचलन रहेको, तत्कालीन परिवेशमा चुँदीभेगमा विद्यालयको अभाव रहेको, त्यतिवेला संस्कृतभाषाको विशेष महत्त्व रहेको, त्यस समयमा पनि काठमाडौँ सुन्दर नगरी रहेको, तत्कालीन परिवेशमा नारीप्रति सम्मान गर्ने परम्परा नरहेको, वि.सं. १९२१ म चुँदीमा बाढी आएको, तत्कालीन परिवेशमा

मुद्दा जाँचबुझ गर्न दौडाहा टोली हिड्ने प्रचलन रहेको, पोखरामा अदालत रहेको, पाल्पामा तहसील अड्डा रहेको, कुमारीचोकले पक्काउ गर्ने गरेको, त्यसबेलाका मानिसहरूमा जूवा खेल्ने चलन रहेको र वि.सं. १९४८ मा खडेरी परेको लगायतका सङ्केतहरू यस कृतिका इतिहाससम्बद्ध सङ्केत हुन् । यिनीहरूले यस कृतिमा समयक्रमको बोध गराएका कारणले यिनीहरू कालिक सङ्केत बनेका छन् ।

यस कृतिमा पाइने पारिवेशिक अन्य सङ्केतहरूमा तत्कालीन वातावरण, रहनसहन, मानववृत्ति, मानवीय स्थिति आदि बुझाउने सङ्केतहरू प्रशस्तै छन् । यस कृतिमा वर्णित समयावधिका मानिसहरू अधिकांश निरक्षर र अशिक्षित देखिन्छन् । रमाइलोको रूपमा जूवा खेल्नु, अन्ताक्षरी गाउनु, माथिल्लो वर्गको चाकडी गर्नु, सानो निहुँमा भैँभगडा गर्नु, शिष्टता प्रदर्शन गर्न नसक्नु तत्कालीन मानिसहरूको स्वभाव देखिन्छ । धनी मान्छेहरूमा आभिजात्यपन स्पष्ट भल्कन्छ, भने गरिवहरू भैँभगडा, घमण्ड, बेमेल आदिमा अल्झिएका छन् । तत्कालीन मानिसहरूमा धार्मिक आस्था भने निकै नै बलियो छ । पुराण भन्ने र सुन्ने, कर्मकाण्ड गर्ने, दैनिक एवं पार्वणिक पूजापाठ गर्ने एवं धार्मिक नियमहरूको अनुसरण गर्ने चलन तिनीहरूमा देखिन्छ ।

यस कृतिमा दुई प्रकृतिका परिवेशहरू देखिएका छन् । पहिलो भानुभक्तीय रचनामा पाइने परिवेश र दोस्रो मुक्तिनाथका कृतिमा वर्णित परिवेश । कृतिमा दुबैथरी परिवेशको सामान्य सङ्केत देख्न पाइन्छ । मुक्तिनाथले आफ्नो कृतिमा भानुभक्तकालीन परिवेशको कल्पना गरेर कृतिलाई तदनुकूल बनाउने प्रयास गरेका छन् । लेखक त्यसकार्यमा अन्य दृष्टिले आंशिक सफल भए पनि भाषिक दृष्टिले सफल हुनसकेका छैनन् । समग्रमा- स्थानीय एवं दैशिक चित्रण, करिव एक शताब्दीको घटनासङ्केत र तत्कालीन रीतिरिवाज एवं मानवीय व्यवहारको चित्रण नै यस कृतिमा पाइने पारिवेशिक सङ्केतका विशेषता हुन् ।

४.१.५ उद्देश्य

प्रस्तुत कृति रचनाका मूलभूत दुई उद्देश्य देखिएका छन् । पहिलो भानुभक्तीय भावनाको प्रकाशन र दोस्रो उनको जीवनी एवं रचनाहरूको प्रचार-प्रसार गर्नु । आदिकवि भानुभक्त आचार्यमा विद्यमान आध्यात्मिक भावना र त्यसको गहिराइबारे पूर्ववर्ती लेखक समीक्षकहरूबाट अध्ययन हुन नसकेकोले त्यसबारे चिन्तन मनन एवं विवेचना गर्न यस कृतिको रचना गरिएको कुरा लेखकले यस अध्येतालाई बताएका छन् । उनको भनाइअनुरूप कृतिको शीर्षक पनि 'भानुको भावना' राखिएको छ । यसका साथै कृतिको सप्तम अध्याय पुरै भानुभक्तमा रहेको आध्यात्मिक भावनाको प्रकाशनार्थ उपयोग गरिएको छ । अतः यस कृतिको प्रमुख उद्देश्य भानुभक्तीय भावनाको प्रकाशन हो । यसका साथै भानुभक्तीय जीवनी र उनका रचनाहरूको प्रचार गर्नु पनि यस कृतिको अर्को उद्देश्य हो । नेपाली जातिका आस्थाकेन्द्र भानुभक्तको जीवनी स्पष्ट हुन नसक्दा आइपरेका कठिनाइहरूले निरन्तर घच्च्याएका कारण उनको इतिवृत्तबारे आफूले जानेबुझेका कुरा उल्लेख गर्न यस कृतिको रचना गरिएको उनले बताएका छन् । यी दुई उद्देश्यका अतिरिक्त यश प्राप्ति र धनार्जन पनि यस कृतिबाट अपेक्षित उद्देश्य हुन् । समग्रमा भानुभक्तीय भावना र जीवनीको प्रकाशन तथा आफ्नो व्यक्तित्व र कृतिको प्रचार नै प्रस्तुत कृति रचनाको हो ।

४.१.६ भाषाशैली

व्यक्तिका मनमा उत्पन्न भावना वा विचार प्रकटीकरण गर्ने ढङ्ग शैली हो । त्यस्तो विचार सामान्यतया अङ्गचालन र चेष्टा आदिबाट संभव भए पनि मूलतः भाषाकै माध्यमबाट गरिन्छ । अतः सर्जकका मनबाट उद्भूत विचारलाई पद, वाक्य र अनुच्छेदको भाषिक एकाइमा सुव्यवस्थित गर्नु नै भाषाशैलीको कार्य हो । यस सन्दर्भलाई आधार मानेर नै शैलीलाई भावना वा विचार प्रकट गर्ने भाषिक माध्यम भनिएको हो । गोपीकृष्ण शर्माका वाक्यमा भन्दा “आफ्नो विचार वा कुनै विषयवस्तुलाई अरू छेऊ सम्प्रेषण गर्न तयार गरिएको शब्द वाक्य र अनुच्छेदको बुनोट नै शैली हो । शैली भाव र भाषाको सङ्गमस्थल हो ।”^{६२} अतः शैलीले भाव र भाषालाई समन्वित गरेको हुन्छ ।

व्यक्तिको इतिवृत्त र कृतित्वको प्रकाशन गर्ने उद्देश्यले लेखिएका जीवनीहरू वर्णनात्मकशैलीमा र व्यक्तिको अन्तर्निहित भावनाको उद्घाटन गर्ने जीवनवृत्तहरू भावुकशैलीमा लेखिएका पाइन्छन् । यी दुवै तत्त्वलाई प्रकाशित गर्ने जीवनीहरू भावुक र वर्णनात्मक शैलीको मध्यबिन्दुबाट रचिएका हुन्छन् । प्रस्तुत कृति पनि भावना र इतिवृत्त प्रकाशन गर्ने लक्ष्यले संरचित हुनाले यसमा वर्णनात्मक र भावुक दुवै शैलीको समायोजन पाइन्छ । तर कृतिको मूल उद्देश्यअनुसार यसमा भावुकशैलीको प्राधान्य हुनुपर्नेमा सो नभई वर्णनात्मकशैलीको आधिक्य पाइएको छ । भानुभक्तको जीवनवर्णन प्रसङ्गमा यही शैलीको उपयोग छ । कृतिमा उपदेश प्रसङ्ग, भानुभक्तको स्वभाव आदिको वर्णन, भानुभक्तका आध्यात्मिक रचनाहरूको विवेचन र भानुभक्तमा विद्यमान आध्यात्मिक भावनाको उद्घाटन प्रसङ्गका वर्णनहरू वर्णनात्मकताबाट माथि उठेर भावुक भएका छन् । अतः तिनीहरूमा भावुकशैली पाइन्छ । अन्यत्र घटनाहरूको वर्णन प्रसङ्गमा वर्णनात्मकता त्यति भङ्ग भएको छैन । घाँसीप्रसङ्ग र गजाधरको घरमा बास लगायतका केही घटनाहरूमा लेखकले पूर्ववर्ती लेखकका विचारको खण्डनसमेत गरेकाले ती ठाउँहरूमा विश्लेषण र समालोचनात्मकताको भिनो सङ्केत देख्न सकिन्छ । लेखकले ठाउँ-ठाउँमा भानुभक्तका कविताहरूको व्याख्या विवेचना गरेका छन् । ती ठाउँमा व्याख्यानशैलीको प्रयोग देखिन्छ । लेखकले भानुभक्तजन्म, श्रीकृष्ण आचार्यको उपदेश, भानुभक्तको प्राथमिक अध्ययन आदि प्रसङ्गहरूमा अतिरञ्जित विशेषणको उपयोग गरेर कृतिलाई आलङ्कारिक बनाई आलङ्कारिक शैलीको सामान्य

प्रयोग गरेका छन् । यी वर्णनपरकशैली र भावुकशैलीको मध्यबिन्दुबाट प्रस्तुत कृति निर्मित देखिन्छ । प्रस्तुत कृतिको भाषा सामान्य छ । लेखकले भानुभक्तकालीन परिवेश र घटनाको उल्लेख गरेर पनि तत्कालीन भाषाको प्रयोग गरेको देखिँदैन । कृतिका धेरै वाक्य सरल छोटो र स्पष्ट छन् भने केही वाक्य जटिल, घुमाउरो र अस्पष्ट पनि देखिएका छन् । लेखकले कहीं-कहीं लामा वाक्यको समेत प्रयोग गरेका छन् । ती लामा र जटिल वाक्यहरूमा विद्यमान अस्पष्टताले भावसम्प्रेषणमा कठिनाई देखिएको छ र कतै अर्थगत अस्पष्टताका साथै अर्थगत सन्देह पनि उब्जिएको छ । उनको वाक्यगठनमा मात्रागत, वर्णगत, पदगत र वाक्यगत अशुद्धिहरू धेरै ठाउँमा पाइन्छन् । संस्कृतका सूक्ति र संस्कृतपद्यका भावको अधिकतम प्रयोगले कतिपय ठाउँमा उनको भाषा संस्कृतमुखी बनेको छ । यसका साथै कहीं कहीं उनले उखानटुक्काको प्रयोग गरेर वाक्यमा माधुर्य पनि थपेका छन् । समग्रमा भावुक एवं वर्णनात्मकशैलीको उपयोग र मात्रिक, वार्णिक, पदगत र वाक्यगत शुद्धिको सामान्यपालना प्रस्तुत कृतिको भाषाशैलीमा पाइने मुख्य विशेषता हो ।

^{६२} शर्मा, गोपीकृष्ण. नेपाली निबन्ध परिचय. दशौं सं., काठमाडौं: रत्नपु.भ., २०१५, पृ. २० ।

४.१.७ निष्कर्ष

प्रस्तुत जीवनीका चरित्रनायक भानुभक्त आचार्य हुन् । उनलाई यस कृतिमा उत्कर्षनायक वा काव्यमा वर्णित धीरोदात्त नायकका रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । उनी जीवनीसाहित्यमा वर्णित नायकका वैशिष्ट्य गुणानुरूप छन् । अतः पात्रको दृष्टिले प्रस्तुत कृति उत्कृष्ट देखिन्छ । त्यस्तै जीवनीको अर्को तत्त्व घटना हो । जीवनीमा पात्रको जीवनमा घटेका घटनाहरूको क्रमिक वर्णन हुन्छ । घटनाको सिलसिलेवार वर्णनले नै चरित्रनायक जीवन्त बन्छ । प्रस्तुत कृतिमा पनि चरित्रनायक भानुभक्तको जीवनयात्राको क्रमबद्ध वर्णन छ । अतः घटनाको क्रमको दृष्टिले पनि प्रस्तुत कृति उत्कृष्ट छ । जीवनीमा आवश्यक तेस्रो तत्त्व पारिवेशिक चित्रण हो । जीवनीमा परिवेशले कलात्मकता ल्याउदै चरित्रनायकलाई प्रकाशित गरेको हुन्छ । यस कृतिमा प्रस्तुत भानुभक्तकालीन दैशिक, कालिक र सामयिक सङ्केतहरू तत्कालीन रीतिरिवाज संस्कृति एवं चरित्रनायकलाई उज्यालो बनाउने आधार हुन् । यिनीहरूले यस कृतिलाई उत्कृष्ट बनाएका छन् । जीवनीको चौथो तत्त्व जीवनदृष्टि वा उद्देश्य हो । “जीवनीमा जीवनप्रतिको हेराइ र सोचाइ अन्तर्निहित हुन्छ ।”^{६३} प्रस्तुत कृतिका लेखकले चरित्रनायक भानुभक्तसँग आफ्नो जीवनदृष्टिको सारूप्य देखाएर भानुभक्तीय दृष्टिकोणको विश्लेषण गरेका छन् । भानुभक्तको जीवनदृष्टि भनेको संसारको क्षणिकता र जीव ब्रह्मैकता (जीव नै ब्रह्म हो)को प्रतिपादन हो । यस कृतिमा अद्वैतपरक उक्त भावनाको सविस्तार वर्णन छ । अतः यस दृष्टिले पनि प्रस्तुत कृति उत्कृष्ट छ । जीवनीको पाँचौं तत्त्व भाषाशैली हो । भाषाशैली जीवनीकारको भाषिकशिल्प र क्षमतामा निर्भर गर्छ । जीवनीको भाषा, परिपक्व, परिष्कृत र खोजमूलक हुनुपर्छ । यसका साथै भाषामा सहजता सरलता र सरसता पनि अपेक्षित हुन्छ । जीवनीमा वस्तुगत भाषाको पनि आवश्यकता पर्छ । तर प्रस्तुत कृतिको भाषाशैली आलङ्कारिक र भावपरक छ । लेखक कहीं कहीं भावनामा डुबेर विषयवर्णनभन्दा निकै पर पुगेका छन् । कतिपय ठाउँमा लेखकले आफ्ना चरित्रनायकलाई अतिरञ्जित विशेषण पनि गुथाएका छन् । अतः भाषाशैलीगत दृष्टिले यो कृति जीवनी साहित्यको सामान्यकृतिअन्तर्गत पर्दछ ।

प्रस्तुत जीवनी मुक्तिनाथको प्रथम प्रयास भएकोले यसमा सङ्कलित विषय र भानुभक्तीय भावनालाई उनले सैद्धान्तिक मान्यताअनुरूप प्रस्तुत गर्न नसकेका हुन् तापनि यसको निर्माण र सामग्रीसङ्कलनविधि जीवनीसाहित्यमा वर्णित आधार (चरित्रनायकका चिठी, डायरी, उनीवारे लेखिएका पुस्तक, उनलाई थाहा पाउने जीवित व्यक्ति एवं उनले उठ्बस गरेका ठाउँको अध्ययन)^{६४} अनुसार भएको छ । मुक्तिनाथको प्रथम प्रयासका रूपमा सृजित प्रस्तुत कृतिमा जीवनीतत्त्वहरूको सामान्य पालना भएको छ र प्रस्तुत कृति जीवनी साहित्यको आधुनिककालीन कृतिपर्तिमा सामान्य कृतिका रूपमा परिचित छ ।

४.२ आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनीको विवेचना

४.२.१ रचनाकाल, प्रकाशन, प्रेरणा र प्रभाव

मुक्तिनाथले ‘आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी’को रचना वि.सं. २०३९/०४२ बीच र प्रकाशन वि.सं. २०४२ मा गरेका हुन् । प्रस्तुत कृति भानुको भावनाको विकसित र परिवर्द्धित रूप हो । लेखकले यसको रचनामा आफ्नो पुर्खा भानुभक्त

^{६३} थापा, मोहन हिमांशु. साहित्य परिचय. पूर्ववत् पृ. २२९ ।

^{६४} प्रधान, भिक्टर. नेपाली साहित्य कोश. पूर्ववत्. पृ. २९९-३०० ।

आचार्यको व्यक्तित्व र आफ्ना पूर्ववर्ती लेखकसमीक्षकहरूको कृतिलाई प्रेरक स्वीकारेका छन् र आफ्ना पुर्खाको जीवनगाथा लोकसामु प्रस्तुत गर्न आफ्नो अन्तस्करणले निरन्तर घच्चच्याएको कारणले पनि यसको रचना गरिएको उनले उल्लेख गरेका छन् । यसको मुख्य विषय भानुभक्तको जीवनी, व्यक्तित्व र उनको कृतित्वको बयान गर्नु हो । लेखकले यसको स्रोतका रूपमा आफ्नो पारिवारिक सूत्रबाट पाएको जानकारी र कागजपत्र, सम्बद्ध स्थलको अध्ययन एवं सम्बन्धित परिवारका सन्ततिहरूसँग सोधपुछ गर्दा पाएका सामग्रीहरू एवं भानुभक्तसँग सम्बन्धित आफ्ना पूर्ववर्ती जीवनीकारहरूका रचनाहरूको अध्ययन र भानुभक्तले लेखेका रचनाहरूको विश्लेषणबाट उपलब्ध तथ्यहरूलाई स्वीकार गरेका छन् । उपर्युक्त व्यक्तिगत, स्थानगत र कृतिगत स्रोतका आधारमा संकलित विषयवस्तुको अध्ययन एवं विश्लेषण गरेर निस्केको सारतत्त्व स्वरूप प्रस्तुत कृतिलाई तल जीवनी साहित्यका आधारभूत तत्त्वहरूका आधारमा विवेचना गरिएको छ ।

४.२.२ चरित्रनायक

प्रस्तुत कृतिका चरित्रनायक भानुभक्त आचार्य हुन् । उनले नेपाली साहित्यको कविता उपविधाको लघुतम, लघु, मझौला र बृहत् रूपका कृति रचना गरेका छन् । यी रचनाहरूमा उनी एक कुशल समाजसुधारक चरित्रका रूपमा पनि प्रस्तुत छन् । यसरी साहित्य र समाजसुधारको क्षेत्रमा चर्चित उनको चरित्रलाई तल साहित्यकार र सामाजिक व्यक्तित्वका रूपमा विभाजित गरेर अध्ययन गर्न सकिन्छ ।

आदिकवि भानुभक्त आचार्य खोजपूर्ण जीवनी कृतिका आधारमा भानुभक्तको साहित्यिक व्यक्तित्वलाई औपदेशिक तथा आध्यात्मिकदार्शनिक कविका रूपमा हेर्न सकिन्छ ।

भानुभक्तका फुटकर रचनाहरूका आधारमा उनको सामाजिक व्यक्तित्वलाई निर्भीक व्याक्तित्व, समाजसुधारक व्यक्तित्व, रसिक व्यक्तित्व, अध्ययनप्रेमी व्यक्तित्व र स्तुतिवादी व्यक्तित्वका रूपमा विभाजित गर्न सकिन्छ । भानुभक्त निर्भीक व्यक्तित्व थिए । उनले थुनाबाट कमान्डर इन चिफ कृष्णबहादुर राणालाई एवं पोखरा अदालतका हाकिमलाई लेखेका पत्रहरूले उक्त कुराको पुष्टि गर्छन् । उनी निर्भीक हुनाका साथै एउटा हक्की समाजसुधारक पनि थिए । उनले आफ्नो घरमा फोहोर गर्ने नारीलाई कठोर शब्दमा चेतावनी दिएका छन् । त्यस्तै नपठेर बस्ने मित्रका छोरोलाई पनि पढ्नका लागि संझाएर कविता लेखेका छन् । यी दुई कविता र गजाधरकी ब्राह्मणीलाई सिकाएको अतिथि सत्कारका आधारमा भानुभक्तलाई समाजसुधारक भन्न सकिन्छ । त्यस्तै उनका केही फुटकर कविताहरूले उनलाई रसिक व्यक्तित्व सिद्ध गरेका छन्, यस कुरालाई पुष्टि गर्न धर्मदत्तले कुनै मित्रलाई लेख्नुपर्ने चिठीमा उनले लेखेको व्यहोरा, कालु जैसीसँगको भेटमा भानुभक्तले रचना गरेको पद्य, भानुभक्तले धर्मदत्तसँग बठ्याईं गरेर खुकुरी प्राप्त गरेको प्रसङ्ग, तिहारमा जूवामा हारेपछि उनले रचना गरेको पद्य आदिलाई लिन सकिन्छ । भानुभक्तमा शृङ्गारिक भावना थिएन, उनलाई नारीको आर्कषणले बाँध्न सकेको थिएन भन्ने भनाइहरू^{६५} सुनिए पनि उनले आफ्नी श्रीमतीलाई लेखेको शृङ्गारिक पद्य एवं बालाजु वर्णनको अन्त्यमा आएको शृङ्गारिक भावले उनलाई शृङ्गारिक व्यक्तित्व सिद्ध गरेको छ । त्यस्तै भानुभक्तमा सानो कीर्तिको लोभ थिएन, उनी त महान् कीर्तिप्रिय थिए भन्ने कुरा मुक्तिनाथ आचार्यले उल्लेख

^{६५} सुन्दास, लक्ष्मीदेवी, “भानु र नारी”, भानु (भानुभक्त विशेषाङ्क). वर्ष-८, किरण-१६, २०२८ असोज, पृ. २६७ ।

गरेपछि उनको घाँसी प्रसङ्ग सम्बन्धी पद्य र रामायण, बधूशिक्षा, प्रश्नोत्तर आदि कृतिका आधारमा उनी कीर्तिप्रिय भएको पुष्टि हुन्छ । त्यस्तै उनको व्यक्तित्वमा राष्ट्रवादी व्यक्तित्वको झलक पाउन सकिन्छ । यस कुराको पुष्टि गर्ने उनका कान्तिपुरीवर्णन र बालाजुवर्णन कविताहरू हुन् । भानुभक्तको युग शैक्षिक दृष्टिले अन्धकारमय थियो । त्यस बेला चुँदी भेगमा विद्यालय पाठशाला थिएनन् । त्यस्तो परिस्थितिमा पनि उनले आफ्ना बाजेसँग संस्कृतका प्रारम्भिक ग्रन्थहरूको अध्ययन गरेका थिए र पछि बनारसमा उनले लगनका साथ संस्कृत ग्रन्थहरूको अध्ययन गरे । यसरी अध्ययनप्रति अनुराग देखाएका भानुभक्तले आफ्ना छोरालाई लेखेको चिठी एवं आफ्ना मित्रपुत्रलाई चेतावनी दिन लेखेको पद्यले उनी अध्ययनप्रेमी थिए भन्न सकिन्छ । भानुभक्तमा उपर्युक्त सकारात्मक विशेषता हुँदाहुँदै पनि उनी स्तुतिवादी थिए । उनी माथिल्लो ओहोदाका मानिसलाई चाकडी गर्थे भन्ने आरोप छ । छोराको व्रतबन्ध पछि कुमारी चोकमा हाजिर हुन ढिलो हुँदा उनले घरैबाट कमान्डर इन चिफलाई लेखेको पत्र, गिरीधारी भाटसँगको मुद्दामा कृष्णबहादुर ज.ब.रा. सामु पठाएको बिन्तीपत्र र कर्णेल शिवशङ्करलाई भेट्न जाँदा भेट नभएपछि लेखिएको पद्यबाट सो कुराको अवगत हुन्छ । समग्रमा भानुभक्त आचार्य सहज प्रतिभा भएका राष्ट्रप्रेमी मनोरञ्जनप्रिय र उपदेशक कवि हुनाका साथै समाजमा सुधार र परिवर्तन ल्याउने परिवर्तनकारी, रसिक र अध्ययनप्रेमी व्यक्तित्व हुन् भन्ने निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ ।

४.२.३ घटना

‘आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी’ चरित्रनायक भानुभक्त आचार्यको जीवनमा घटेको घटना विवरण प्रस्तुत गर्न तथा केही घटनाहरूको विश्लेषण गर्नसमेत केन्द्रित छ । यस कृतिमा वर्णन गरिएका मुख्यघटनाहरू यस प्रकार छन् -

भानुभक्तको जन्म र जन्मस्थान : भानुभक्तको जन्म वि.सं. १८७१ आषाढ २९ गते रविवार बेलुकी दिनको अन्दाजी ४ घडी बाँकी रहँदा भएको हो । त्यसदिन कृष्णअष्टमी तिथि पर्दथ्यो । उनी पिता धनञ्जय एवं माता धर्मवती देवीका ज्येष्ठ सुपुत्रका रूपमा हालको गण्डकी अञ्चल, तनहुँ जिल्लाको भानु गा.वि.स. वडा नं. ३ मा पर्ने रम्घा गाउँको रम्घाधर्मशालामा जन्मिएको हुन् ।

भानुभक्तको अध्ययन : यस कृतिमा उल्लेख भएअनुसार उनले आफ्ना बाजे श्रीकृष्ण आचार्यबाट अक्षरारम्भ गरेका थिए । त्यसपछि बाजेले उनलाई अमरकोश तीनकाण्ड, लघुकौमुदी र ज्योतिषशास्त्र पढाएका थिए । उक्त अध्ययन पछि भानुभक्तले बनारसमा सिद्धान्तकौमुदी आदि व्याकरणग्रन्थ र ज्योतिषशास्त्रको विशेष अध्ययन गरेको बुझिन्छ । उपर्युक्त तथ्यबाट भानुभक्तको अध्ययनस्थान आफ्नो घर र बनारस रहेको स्पष्ट हुन्छ ।

भानुभक्तको विवाह : यस जीवनीमा उल्लेख भएअनुसार भानुभक्तले दुई विवाह गरेको देखिन्छ । उनको प्रथम विवाह आठ वर्षको उमेरमा तनहुँ रामरुड निवासी परशुराम खनालकी छोरी चन्द्रकान्ता देवीका साथ भएको थियो । विवाहको १८ महिनापछि चन्द्रकान्ताको मृत्यु भएपछि उनले ११ वर्षको उमेरमा तनहुँ मान्हूका विद्याधर खनालकी छोरी चन्द्रकलासँग दोस्रो विवाह गरेका हुन् ।

भानुभक्त घाँसीभेट प्रसङ्ग : भानुभक्त कुनै दिन काठमाडौं जाँदा सहर नजिकै पुगेपछि थकाइले शीतल छहारीमुनि पल्टिएका थिए । त्यसै समयमा रिक्तो डोको बोकेको एउटा घाँसी आइपुग्यो । भानुभक्तले ऊसँग तिमी को हौ ? के गछौं ? भनेर सोधपुछ गर्दा उसले आफू घाँस काटेर बेची जीविका गर्ने घाँसी भएको कुरा बतायो । गफ-गाफकै क्रममा खर्च गरेर बचेको पैसाले एउटा कुवा खनाएको र भविष्यमा सत्तल पाटी बनाउने इच्छा रहेको कुरा गयो । र आफ्नो बाटो लाग्यो । घाँसीका कीर्तिराखे कुराले भानुभक्त प्रभावित भए र उनले “भर्जन्म घासतिर मन् दिई ...” पद्यको रचना गरे ।

भानुभक्तको काठमाडौं यात्रा र कविता रचना : वि.सं. १९०५ तिर भानुभक्त काठमाडौं गएको अवस्थामा बालाजुको सौन्दर्य देखेर मोहित भई उनले बालाजु वर्णन गरेका थिए । बालाजुको भ्रमण पछि राजधानीको सुन्दर वर्णन गरेर भानुभक्तले सारा नेपालीहरूमा राष्ट्रिय भावनाको बीजारोपण गरे ।

गजाधरको घरमा बासप्रसङ्ग : भानुभक्तको रम्घा गाउँस्थित घरबाट करिब १६ माइलजति टाढा उनका मामा कप्तान जयलालको घर थियो । उनले मूलनक्षत्रमा जन्मिएका सालोतिरको भदो नाता पर्ने कलाधरलाई आफ्नो घरमा ल्याएर पालेका थिए । उनको व्रतबन्धमा मन्त्रदान दिनका लागि अनुरोध गरी भानुभक्तलाई लिएर आउन जयलाले कुनै मानिस पठाएका थिए । सो मानिस व्रतबन्धको अधिल्लो दिन मध्याह्नतिर चुँदी रम्घा आइपुग्यो र ढिलो भएको हुनाले भानुभक्त तत्कालै त्यसतर्फ हिँडे । यसरी अपरान्हमा हिँडेका भानुभक्त तारुकावेँसी पुग्दा साँझ परेकोले गजाधर सोतीका घरमा बास माग्न गए । सो दिन गजाधर घरमा नभएका र उनकी ब्राह्मणीले फतफताएर बास नदिएका कारण उनीहरूले केही पर गई रिक्तो गोठमा रात बिताए । भोलिपल्ट बिहान सबेरै उठेर उनीहरू खानाखाने समयमा भोलैँटार स्थित मामाघर पुगे । बिहानै आइपुगेका भाञ्जालाई मामाले कसरी बिहान आइपुग्नु भयो ? भनेर प्रश्न गर्दा भानुभक्तले “गजाधर सोतीकी...” पद्यमा अधिल्लो दिनका घटना विवरण बताए ।

तारापतिको घरमा बास : चुँदीरम्घाबाट दक्षिणमा पर्ने करिब दुई माइल जति टाढाको महिबल गाउँका तारापति पौडेल भन्ने ब्राह्मणसँग भानुभक्तको राम्रो चिनाजानी थियो । तारापतिको अनुरोधअनुसार त्यसदिन भानुभक्त उनको घरमा बास बस्न जाँदा घरको बाहिरी कोठामा उनी सुतेका थिए । राती तारापतिकी कर्कशा बुहारीले आफ्नी सासूसँग भगडा गरेको सुनेपछि भानुभक्तलाई पनि रातभर निद्रा लागेन र उनले तत्कालै बध्दुशिक्षाको रचना गरे ।

भानुभक्तबाट अध्यात्मरामायणको थालनी एवं अन्त्य : बनारसमा रहँदा भानुभक्तले अध्यात्मरामायणको अध्ययन थालेका र घरमा पनि अध्ययनलाई निरन्तरता दिएका थिए । त्यसपछि वि.सं. १९०५ बाट उनले सो रामायणको भाषानुवाद सुरु गरेका हुन् । यसपछि क्रमशः घरव्यवहारबाट फुर्सद निकालेर उनले बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड र अरण्यकाण्डको अनुवाद गरे । कुमारी चोकमा थुनिंदा किष्किन्धाकाण्ड एवं सुन्दरकाण्डको अनुवाद गरे । जेलबाट छुटेपछि युद्धकाण्ड र उत्तरकाण्डको भाषानुवाद तयार गरेर वि.सं. १९१९ वैशाखसम्ममा उनले रामगीता सहित अनुवादकार्य समाप्त गरे ।

भानुभक्त कुमारी चोकमा : भानुभक्तका पिता पाल्पा तहसिल अड्डामा हाकिम भई काम गर्थे । जागिरकै क्रममा वि.सं. १९०९ मा उनको देहावसान भएकोले उनको अंश खाने व्यक्तिको सामुन्नेमा हिसाब फर्स्योट गर्नुपर्ने कुमारी चोकको नियम भएअनुसार भानुभक्तलाई चारमहिनासम्म निगरानीमा राखी हिसाब हेर्दा धनञ्जयको सबै हिसाब दुरुस्त देखिएपछि वि.सं. १९११ साउनमा उनी थुनामुक्त गरिए ।

गिरिधारी रानाभाटसँग मुद्दा : चुँदीमा भानुभक्त आचार्यको नेतृत्वमा संचालित बाँधकुलो थियो । उक्त कुलोको मुहानस्थित बाँधलाई वि.सं. १९२१ को भलवाढीले भत्काएपछि साविकको बाँधकुलोबाट पानी चलन नसक्ने भई अर्को ठाउँमा सार्नु पर्ने भयो र सबैको सल्लाहअनुसार गिरिधारी रानाभाटको खेतको बीचबाट कुलो निर्माण गरेर समस्या समाधान गरियो । तर कुलो निर्माण भएको केही दिन पछि गिरिधारी रानाभाटले भानुभक्तले मेरो खेत टापु बनाइदियो भनेर कविका नाउँमा उजुरी दर्ता गर्‍यो । त्यसपछि दौडाहाले भानुभक्तलाई भिकाएर बुभ्दा भानुभक्तले उक्त टोलीलाई सरजमिन गर्न अनुरोध गर्दै “ख्वामित् यस गिरिधारिले...” पद्य मार्फत घटनाको विवरण अवगत गराए । उक्त दौडाहा टोलीले घटनाबारे बुभ्दा गिरिधारीले बदमासी गरेको ठहर्‍यो र भानुभक्त निर्दोष सावित भए । त्यो मुद्दामा हार भएपछि गिरिधारीले रिसका कारण “भानुभक्तले मेरो जग्गाको साँध मिच्यो” भनेर पोखरा अदालतमा अर्को नालिस हाल्यो । उक्त नालिसमा भानुभक्तले कवितामै इजहार(प्रतिउत्तर) लेखेर दिए । ती प्रत्युत्तर “साँचा हुन्...” भन्ने दुई पद्यमा थिए । सो मुद्दा चाडो नछिनेर भानुभक्तले प्रतिमहिना तारेखमा हिड्नुपर्दा अदालतका कर्मचारीको व्यवहारको दिग्दर्शन गराएर उनले कृष्णबहादुर ज.व.रा. लाई विन्ती चढाए । त्यसपछि “कविको मुद्दा तुरुन्त किनारा लगाउनु” भन्ने तोक आदेश आएपछि अदालत्वाट साक्षी प्रमाण आदि बुभ्दा गिरिधारीले हालेको नालिस भुटो ठहारियो र भानुभक्तलाई सफाइ मिल्यो ।

भानुभक्तसँग सम्बन्धित विविध घटना : यस कृतिमा भानुभक्तको व्यक्तित्वलाई प्रकाशित पार्ने छोटो र रोचक थुप्रै घटनाहरू रहेका छन् । ती घटनाहरूमा भानुभक्तले कुनै नकुनै पद्यको रचना गरेका छन् । भानुभक्तको अशिक्षित नारीहरूप्रति चेतावनी, कालुजैसी सँगको भेट, धर्मदत्तको अनुरोधमा कविता रचना, मित्रका छोरालाई दिएको चेतावनी, फूल एवं प्रपत्रहरूको नामावली, सौता-सौताबीचको झगडा, धर्मदत्तबाट खुकुरी प्राप्ति, शृङ्गारिक कविताको रचना, कर्णेल शिवशंकरसँग भेट नहुँदा रचिएको पद्य, भानुभक्तको जूवामा हार आदि प्रसङ्गहरूमा उनले फुटकर कविताहरू रचना गरेका छन् ।

भानुभक्तको देहावसान : भानुभक्तले वि.सं. १९२५ अश्विन शुक्ल पञ्चमीको दिन मर्स्याङ्दी नदीको तिर (जलाशय) मा आफ्नो पार्थिव शरिर परित्याग गरेका हुन् ।

कविपुत्र रमानाथको परिचय र योगदान : कविपुत्र रमानाथ वि.सं. १९०२ मा जन्मिएका हुन् । उनले पिता भानुभक्तबाट शिक्षा, सीप र ज्ञान प्राप्त गर्ने राम्रो अवसर पाएका थिए । कविका सन्तान भएकाले उनमा पनि कविता रचना गर्ने संस्कार थियो । उनले वैराग्यबोध, काठमाडौं वर्णन, पुनर्जन्मको सङ्केत, ज्ञान चर्चा, मान्हु वर्णन, अनिकालको वर्णन र गाउँले केटा/केटीलाई अर्ती आदि कविता रचेका छन् । तिनीहरूमध्ये वैराग्यबोध बाराणसीबाट प्रकाशित भएको चर्चा मुक्तिनाथले गरेका छन् । उनको निधन वि.सं. १९६८ पौषशुक्ल प्रतिपदामा भयो ।

४.२.४ परिवेश

प्रस्तुत खोजपूर्ण जीवनी वि.सं. २०४२ मा रचिएको भएपनि यसले भानुभक्तकालीन परिवेशको सामान्य सङ्केत गरेको छ । प्रस्तुत कृति श्रीकृष्ण आचार्यको गृहस्थ जीवनको परिचर्चाबाट आरम्भ भई रमानाथ आचार्यको मृत्युसमय(वि.सं. १९६८)मा टुङ्गिएको छ । यस क्रममा भानुभक्तको जन्म, बाल्यकाल, युवावस्था, गृहस्थप्रवेश, कुमारी चोकमा थुनुवा, रामायणको समाप्ति, गिरीधारी रानाभाटसँगको मुद्दा, भानुभक्तको देहावसान, कविपुत्र रमानाथको जन्मकाल, युवावस्था र कवितारचनाकाल एवं मृत्युसमय आदि घटना घटेको अवधि र अन्य सङ्केतहरू यस कृतिमा आएका कालगत सङ्केत हुन् ।

यस कृतिका घटनास्थलहरूमा चुँदीरम्घास्थित आचार्यहरूको मूलघर एवं चुँदीरम्घा र बेसीको सेरोफेरो, काशीको विद्वत्सभा र अन्य ठाँउ, काठमाडौँको बालाजु, महाबौद्ध, कुमारीचोक, कमान्डर इन चिफको दरवार, कर्णेल शिवशङ्करको घर, कान्तिपुरी नगरीको सेरोफेरो, तारुकाबेसी, भोर्लेटार, महिबल, पाल्पा अड्डा र पोखरा अदालत आदि पर्दछन् । कृतिमा ती ठाँउहरूको नाम उल्लेख भएपनि अधिकांश ठाँउहरूको चर्चा पाइदैन ।

कृतिले श्रीकृष्ण आचार्यको पारिवारिक सम्पन्नता, गाँउमा उनको श्रेष्ठता, रम्घाका मानिसहरूको खेती गर्ने प्राचीन प्रचलन, चुँदी बासीहरू हिउँदमा (कार्तिक-चैत) बेसी भर्ने र वर्षायाममा (वैशाख-असोज) औलोबाट बच्न गाउँ जाने परम्परा, रम्घालीहरूको धार्मिक आस्था, समय समयमा पुराण सुन्ने परिपाटी, धनञ्जयले जागिर खाएको समयमा जागिर खाने मानिसहरूको अभाव हुने हुँदा बाटोमा हिँड्ने कुनै योग्य मानिस देख्नसाथ सरकारले जागिरमा लगाउने प्रचलन, चुँदीभेगमा विद्यालय पाठशालाको अभाव, त्यस समयमा बालविवाहको प्रचलन, विद्वान् मानिसहरू कल्पबास गर्न काशी जाने चलन, त्यतिबेला ९८% निरक्षर, (अनुमानित तथ्याङ्क हुन सक्छ) एकभारी घाँस बेच्दा २/४ आना पैसा पाइने परिवेश, तत्कालीन काठमाडौँमा घाँसी, इनार, सत्तल र पाटीहरूको प्रचलन आदि सङ्केतहरू परोक्षरूपमा परिवेश बुझाउन प्रयोग भएका छन् । यसका अतिरिक्त वि.सं. १९२१ मा चुँदी खोलामा ठूलो बाढी आएको, त्यस समयमा दौडाहा टोली घुम्ने चलन रहेको, वि.सं. १९४८ मा कम वर्षा भएर गाउँमा अनिकाल परेको, वि.सं. १९२० सालतिर चुँदीबाट नजिकको अदालत पोखरा रहेको, त्यस समयमा पनि जूवा खेल्ने परिपाटी रहेको, कुमारीचोक नसिहतखाना रहेको, अड्डाका कर्मचारीलाई सरकारले जग्गा दिने गरेको लगायतका ऐतिहासिक तथ्यलाई यस कृतिले उजागर गरेको छ । समग्रमा भानुभक्तकालीन देश, काल र वातावरणको सङ्केत एवं ऐतिहासिक र सांस्कृतिक पक्षको परोक्ष चित्रण नै यस कृतिको पारिवेशिक विशेषता हो ।

४.२.५ उद्देश्य

प्रस्तुत जीवनीको उद्देश्य चरित्रनायक भानुभक्त आचार्यको जीवनी, व्यक्तित्व र उनका कृतिहरूलाई अभि प्रकाशित गर्नु रहेको छ । यसभन्दा पूर्ववर्ती लेखकहरूले लेखेका जीवनीमा भानुभक्तको जीवनमा घटेका घटनाहरूबारे कतिपय ठाउँमा ढाकछोप गरिएको र केही घटनाको वास्तविकताबोध हुन नसकेकोले कति घटनाहरू तिरोहित भएका देखिन्छन् । यस जीवनीका लेखक मुक्तिनाथ भानुभक्तको पारिवारिक स्रोतका आधिकारिक व्यक्ति भएका र उनले आफ्नो पारिवारिक सूत्रबाट बुझेका भानुभक्तसम्बन्धी कतिपय तथ्यहरू पूर्ववर्ती जीवनीकारबाट प्रकाशित हुन नसकेका कारण जीवनीकारले यस कृतिको रचना गर्नुपरेको बताएका छन् । लेखकको उपर्युक्त भनाइ र यसलाई अन्य कृतिसँग यसको तुलना गर्दा

यसका केही विषयमा भिन्नता देख्न सकिन्छ । अतः प्रस्तुत कृति माथिको उद्देश्यमा सफल छ । कृतिभित्रको विषयगत उद्देश्य भने भानुभक्तमा विद्यमान आध्यात्मिक भावनाको प्रचार गर्नु रहेको छ । युवावस्थादेखि भानुभक्तमा रहेको आध्यात्मिक अनुरागलाई अन्य लेखक समीक्षकहरूले प्रकाशित गरेको देखिदैन । अतः उक्त भावनालाई प्रकाशमा ल्याउनु पनि प्रस्तुत जीवनीको उद्देश्य हो । त्यस्तै कविपुत्र रमानाथ आचार्यबारे अन्य अन्वेषकहरूले अध्ययन नगरेका कारणले सो तथ्यको जानकारी दिनु समेत यस कृतिको उद्देश्य रहेको छ । समष्टिमा तिरोहित पक्षको उद्घाटन, घटना एवं पात्रहरूको चिनारी, परिवेशको प्रकटीकरण र भाषिक शिल्पको प्रदर्शन नै प्रस्तुत कृतिको उद्देश्य हो भन्न सकिन्छ ।

४.२.६ भाषाशैली

मुक्तिनाथ आचार्यको प्रस्तुत कृति प्रायशः वर्णनात्मक शैलीमा लेखिएको छ । लेखक विषयवस्तुको वर्णनात्मक उठान गर्छन्, वर्णनात्मकशैलीमै घटनाको जानकारी दिन्छन् र घटनालाई जोड्ने पद्य प्रस्तुत गरेर वर्ण्य विषयको समाप्ति गर्छन् । भानुभक्तले फुटकर कविता रचेको प्रसङ्गमा विशेषतः यसशैलीको प्रयोग भएको छ । अन्य प्रसङ्गहरूमा विषयान्तमा पद्यहरूको प्रयोग नभएपनि वर्णनात्मकता भङ्ग भएको छैन । भानुभक्तको जन्म, बाल्यजीवन र विद्याध्ययन, काशीमा विशेष अध्ययन, गजाधरको घरमा बासयाचना लगायतका अधिकांश शीर्षकअन्तर्गतका विषयवस्तुहरू केवल जानकारी दिने उद्देश्यले मात्र रचिएका छन् । अतः तिनीहरूमा पूर्ण वर्णनात्मकता/विवरणात्मकता/जानकारीमूलकशैली अपनाइएको पाइन्छ । घाँसीसँग भेट प्रसङ्ग, शीर्षकअन्तर्गत विषयवस्तुको उठान र गजाधरको घरमा बास शीर्षकको विषयवस्तुवर्णन क्रममा संवादशैलीको प्रयोग भएको छ । लेखकले घाँसी प्रसङ्गको संवादमा भावुकतावश आँखाले देखेको घटना भै वर्णन गरेका छन् । संवादशैली खुकुरीप्राप्ति प्रसङ्गमा पनि प्रयुक्त छ । तर त्यहाँको संवाद भावुक छैन । लेखकले घाँसीसँग भेटप्रसङ्गको व्याख्यान खण्डमा एवं गजाधर सोतीको घरमा बास खण्डमा पूर्ववर्ती लेखकहरूका विचार प्रस्तुत गरेर ती विचार र घटनाबीच एक-आपसमा तुलना एवं विश्लेषण गरेर अन्तमा आफ्नो मत स्थापना गरेका छन् । अतः यी दुई खण्डमा तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मकशैली पाउन सकिन्छ । त्यसैगरी रामायण अनुवादको सुरु र अन्त्य शीर्षकमा मुक्तिनाथले मोतीराम भट्टको विचार प्रस्तुत गरेर उनको विचारको विश्लेषणका साथ रामगीता रामायण उत्तरकाण्डकै अंश हो भन्ने पुष्टि गरेका छन् । यहाँ उनी विश्लेषणात्मकशैलीको उपयोग गर्छन् । त्यस्तै तारापतिको घरमा बधूशिक्षाको रचना, रम्घाधर्मशालामा भानुभक्तको जन्म, “गजाधर सोतीकी...” पद्यको परोक्ष रचना आदि शीर्षकअन्तर्गत लेखकले व्याख्यानशैलीको विशेष प्रयोग गरेका छन् । प्रस्तुत जीवनी विवरणमूलक भएकोले यसमा विचारको गहिराइ एकाध ठाउँमा मात्र पाइन्छ । लेखकले ‘दार्शनिक भावनायुक्त कवि भानु’ शीर्षकमा एवं भक्तमाला र प्रश्नोत्तर कविताको व्याख्यानक्रममा जीवन जगत् अध्यात्मदर्शनसँग सम्बद्ध भावनाको प्रस्तुतीकरण गरेका छन् । थोरै लामा र जटिल वाक्य एवं अधिकांश सरल वाक्यको प्रयोग, विचारको स्पष्टता, व्याकरणिक शुद्धिको सामान्य पालना, प्रायशः नेपाली तत्सम शब्दहरूको प्रयोग उनको शैलीशिल्पगत विशेषता हो । लेखकले चरित्रनायकलाई उच्च आदरार्थी सर्वनाम एवं क्रियापदको प्रयोग गरेर सम्बोधन गरेका छन् । लेखकले कृतिका बीच-बीचमा संस्कृतका सूक्ति र नेपाली उखानटुक्काको समेत प्रयोग गरेका छन् । प्रस्तुत कृति भानुभक्तसँग सम्बद्ध भएकोले यसमा उनका सबै फुटकर रचनाहरू समावेश छन् । लेखकको अनुसन्धान क्षमता

पनि भानुको भावनाको तुलनामा निखर बन्दै गएको देखिन्छ । समग्रमा विषयवस्तुको वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण, वैचारिक स्पष्टता र खोजमूलक लेखन एवं वार्णिक, पदगत र मात्रिक शुद्धिको सामान्य पालना प्रस्तुत कृतिको भाषाशैलीगत विशेषता हो ।

४.२.७ आयाम

प्रस्तुत जीवनी पाँच परिच्छेद र ११४ (१०४+१०) पृष्ठको आयाममा फैलिएको छ । यसअन्तर्गतको पाँचौँ परिच्छेद कविपुत्र रमानाथ आचार्यको परिचय एवं योगदानको वर्णनमा केन्द्रित छ भने अन्य चार परिच्छेद भानुभक्तसँगै सम्बन्धित छन् । पाँचौँ परिच्छेदमा नौवटा शीर्षक छन् । ती शीर्षकअन्तर्गत पहिलोमा रमानाथको छोटो परिचय र अन्तिममा रमानाथको इच्छा मरणको चर्चा छ । अन्य चार परिच्छेदमा भानुभक्तको जन्मदेखि मृत्यु सम्मका घटनाहरू वर्णित छन् । भूमिकाखण्डअन्तर्गत शुरुमा लेखकको मन्तव्य छ । यसरी पाँच परिच्छेद ती अन्तर्गतका ४४ शीर्षक र भूमिकाखण्डको फैलावट नै यस कृतिको आयाम हो ।

४.२.८ अन्य कृतिसँग तुलना

भानुभक्तको जन्ममिति सम्बन्धमा : भानुभक्त स्वयंले “श्रीशालिवाहनका...” पद्यमा उल्लेख गरेअनुसार उनको जन्म श्रीशालिवाहनशक १७३६ असार २९ गते दिनको ३१ घडी र ३२ पला जाँदा भएको बुझिन्छ । यस कुरालाई भानुभक्तको जन्मदिनबारे ज्योतिषीय अध्ययन गरेका दिनेशराज पन्तले समेत पुष्टि गरेका छन् । उनको अध्ययनअनुसार वि.सं. १८७१ असार २९ गते श्रावणकृष्ण अष्टमी तिथि पर्दथ्यो । सो अष्टमीले त्यस दिन ५३ घडी ३२ पला भोग गरेको थियो । सोही दिनको ३१ घडी र ३२ पला बित्दा भानुभक्त आचार्यको जन्म भएको हो भनेर उनले उल्लेख गरेका छन् ।^{६६} मुक्तिनाथले भानुभक्त दिनको करिब ४ घडी बाँकी रहदाँ गोधुली बेलामा जन्मिएका हुन्^{६७} भन्ने बताएका छन् । वि.सं. २०६० असार २९ गतेको दिनमान अवलोकन गर्दा ३४ घडी ५ पला देखिन्छ । यसरी ३४.५ बाट ३१.३२ घटाउदा २ घडी ३३ पला बाँकी रहन्छ । अतः मुक्तिनाथाको यस विषयको अध्ययन आधिकारिक तथ्यको नजिक छ भन्न सकिन्छ ।

भानुभक्तको जन्मसाल एवं समयको वास्तविकता सर्वप्रथम सुब्बा रङ्गनाथले पत्ता लगाएका हुन् भनेर ब्रतराज आचार्यले लेखेका छन् ।^{६८} तर विष्णुमायाले भानुभक्तको जन्मकुण्डली प्रकाशित गराएकी^{६९} ले जन्ममितिको वास्तविकता पत्ता लगाउने श्रेय विष्णुमायालाई दिनु उचित देखिन्छ । जन्मकुण्डली प्रकाशित हुनुअघि भानुभक्तको जन्मसाल वि.सं. १९६९ मानिएको थियो । भानुभक्तका पहिला अध्येता मोतीराम भट्टले भानुभक्तका भतिजा रामदत्तबाट प्राप्त स्रोतलाई आधार मानेर सोही सालको उल्लेख गरेका छन् ।^{७०}

^{६६} सुवेदी, लक्ष्मी. भानुभक्त आचार्यको जीवनी र कृतित्वको अध्ययन. ने.के.वि. अप्रकाशित शोधपत्र, २०५६, पृ. १ ।

^{६७} आचार्य, मुक्तिनाथ. “... खोजपूर्ण जीवनी.” पूर्ववत्, पृ. २ ।

^{६८} आचार्य, ब्रतराज. आदिकवि भानुभक्त आचार्य... पूर्ववत् पृ.

^{६९} विष्णुमाया (रङ्गनाथ शर्मा), भानुभक्त मणिमाला, वाराणसी: वि.के. शास्त्री, १९९८

^{७०} भट्ट मोतीराम, कवि भानुभक्तको जीवनचरित्र, पूर्ववत्, पृ. ४ ।

मोतीरामको यही तथ्यलाई आधार मानेर शम्भुप्रसाद ढुङ्गेल र ब्रह्मशमशेर ज.ब.रा.ले पनि सोही मितिको अनुसरण गरेका थिए । जन्मकुण्डली प्रकाशित भएपछि भने भानुभक्तको जन्म मिति वि.सं. १८७१ नै ठहरिएको छ । तर विष्णुमायाले आफ्नो खोजमा भानुभक्तको जन्म आषाढकृष्णअष्टमी तिथिमा भएको थियो भन्ने उल्लेख गरेपछि परवर्ती अनुसन्धाताहरू आषाढ वा श्रावणकृष्ण हो भन्ने कुरामा भ्रमित भएका थिए । यस विषयमा शिवराज आचार्यले अनुसन्धान गरी उक्त सालको आषाढकृष्ण अष्टमी जेठ ३१ गते र श्रावणकृष्ण अष्टमी आसार २९ गते परेको^{७१} स्पष्ट पारेका छन् । उक्त अध्ययनसँग ज्योतिषी दिनेशराज पन्त पनि सहमत छन् । अतः भानुभक्तको जन्मतिथि श्रावणकृष्ण अष्टमी नै हो भन्ने स्पष्ट हुन्छ । खोजपूर्ण जीवनीमा मुक्तिनाथले पक्षको उल्लेख नगरी अष्टमी तिथि मात्र लेखेका छन् ।

भानुभक्तको जन्मस्थान: मोतीराम भट्टले भानुभक्तको एउटा पद्य^{७२} उद्धृत गर्दै उनी हालको तनहुँ जिल्लाको चुँदी रम्घाका निवासी हुन् भन्ने उल्लेख गरेका छन् । यस विषयमा मोतीरामदेखि नरनाथपूर्वका जीवनीकारका धारणहरूमा मतभेद पाइदैन । नरनाथ आचार्यले भने भानुभक्तको जन्म पाल्पा वा तनहुँ तामाकोटको श्रीकृष्ण आचार्यको मूलघरमा भएको हुनसक्छ^{७३} भन्ने अनुमान गरेका छन् । नरनाथको कथनलाई उनका नाति आमोदवर्धन कौडिन्यायनले पनि समर्थन गरेको देखिन्छ ।^{७४} तर मुक्तिनाथ उपर्युक्त कथनको खण्डन गर्दै रम्घा धर्मशालामै भानुभक्तको जन्म भएको स्वीकार गर्छन् । यस भनाइलाई समर्थन गर्दै ब्रतराज आचार्य लेख्छन्- “वि.सं. १८७१ को परिवेशमा नेपालमा युद्धको बादल मडारिइरहेको हुनाले धनञ्जयले आफ्नी पत्नीलाई पाल्पा लैजानु संभव देखिदैन । अर्को कुरा भानुभक्तको जन्मसमयमा श्रीकृष्ण आचार्यको परिवारको बसाइ गाउँ र बेसी दुबैतिर पाइन्छ, तापनि वर्षायाममा भानुभक्त जन्मेका हुँदा भानुभक्तको जन्मस्थल शिखर कटेरी (हालको धर्मशाला) हो भन्नेकुरा किटानीका साथ भन्न सकिन्छ ।^{७५} “यस विषयमा मुक्तिनाथ आफ्नी हजुरआमाबाट सुनेका कुरालाई प्रमाण मान्दै लेख्छन्- “रम्घालीहरू औलोबाट बच्न गर्मी याममा गाउँमा जानेहुँदा भानुभक्त रम्घा धर्मशालामा जन्मिएका हुन् ।” उनी अगाडि लेख्छन्- “पहिले हाम्रो रम्घाको घर हालको धर्मशालामा थियो । र मेरी हजुरआमालाई विवाह गरी भित्र्याएको पनि सोही घरमै हो ।”^{७६} यस विषयमा भा.ज.वि.स. ले उक्त घरेडीको उत्खनन गरी जुटाएको प्रमाण पनि थप आधार भएको छ । वि.सं. २०५४ साल कार्तिकमा इतिहास केन्द्रीयविभाग कीर्तिपुरका प्राध्यापक राजाराम सुवेदीको नेतृत्वमा उत्खनित सो भग्नगृहमा घरमा प्रयोग हुने सामग्रीहरू “पनियो, फलामे टुकटुके, तामाको एक पैसा, चाँदीको आधा बालो, घैँटाको प्रसस्त खपेटा, चुलामा डढेको रातोमाटो, अङ्गार, खरानी,

^{७१} आचार्य, शिवराज. ‘आदिकवि भानुभक्त आचार्यको जन्मदिन’ मधुपर्क. वर्ष-५, अङ्क-२, २०२९ असार ।

^{७२} भानुभक्त भनी प्रसिद्ध नरमा जस्को त नाउँ पनि ।
घर तिन्को तनहुँ त बेसी चुँदि हो गाउँ छ रम्घा भनी ॥
कवि भानुभक्तको जीवन चरित्र पृ. ४ ।

^{७३} आचार्य, नरनाथ. “...सच्चाजीवन चरित्र.” दो.सं. पूर्ववत् पृ.१९ ।

^{७४} कौडिन्यायन, आमोदवर्धन. ‘भानुभक्तका जीवनीको खोजी परम्पराका क्रमलाई हेर्दा’, गोरखापत्र. २०४४ असार २७ ।

^{७५} आचार्य, ब्रतराज. पूर्ववत् पृ. २९ ।

^{७६} आचार्य मुक्तिनाथ. पूर्ववत् पृ. ४ ।

कोइला, अँगोनो, आछ्यान, पूजाकोठा, चन्दनखोरी, सिलौटी, लोहोरो आदि”^{७७} वस्तुहरू पाइएका थिए । उपर्युक्त अवशेषका आधारमा उत्खनक प्राध्यापक सुवेदीले सो घर भानुभक्तकै हुनुपर्ने ठहर गरेका छन् । हालको धर्मशाला नै भानुभक्तको जन्मघर हो भन्ने कुरामा चुँदीका बूढापाका र अध्येता ब्रतराज आचार्य पनि सहमत छन् । हाल उक्त धर्मशालामा घनाजङ्गल भई पहिले बस्ती नबसेको जस्तो देखिएपनि वि.सं. १९४३ सम्म भानुभक्तका सन्तति बसेका थिए भन्ने कुरा मुक्तिनाथका माथिका भनाइले पुष्टि गर्दछन् । उनी अगाडि लेख्दछन् “वि.सं. १९४३ फागुन महिनामा औलो र डढेलोको समेत भय हुन लागेको कारणले गर्दा बूढा मावली नाताका भोटू भन्ने ईश्वरीदत्त पण्डितसँग रम्घा गाउँको जग्गा घडेरी मागी धर्मशालाको घर भत्काई त्यही घरको काठपातबाट माथिको घर निर्माण गरी सोही सालबाट मेरा हजुरबुबा माथिको घरमा सर्नु भएको हो”^{७८} मुक्तिनाथले रमानाथकी पत्नीलाई आधार मानेर उक्त कुराको उल्लेख गरेका हुन् । निष्कर्षमा चुँदीबासीहरूको परम्परागत कथन, अध्येताहरूको अध्ययन र भग्नगृहको उत्खननबाट पाइएका अवशेषका आधारमा सो स्थल भानुभक्तको जन्मस्थल हो भन्ने प्रमाणित हुन्छ । अतः यस विषयको मुक्तिनाथको अनुसन्धान प्रमाणिक देखिन्छ ।

भानुभक्तको अध्ययन : भानुभक्तले कहाँ-कहाँ कुन-कुन पुस्तकको अध्ययन गरे भन्ने विषयमा मोतीरामले केही उल्लेख गरेका छैनन् । “भानुभक्त अठार वर्षको उमेरमा लिखपढमा हुँसियार भए”^{७९} मोतीरामले भानुभक्तको अध्ययनबारे उल्लेख गरेको कुरा यति हो । भानुभक्तको अध्ययन प्रसङ्गको उठान गर्ने पहिला व्यक्ति सुब्बा रङ्गनाथ हुन् । उनले भानुभक्तको अक्षरारम्भ पाँच वर्षमा भएको र उनले अक्षरारम्भ पछि आफ्ना बाबुबाट याज्ञवल्क्य प्रणीत सप्तश्लोकी सूर्यकवच, अमरकोष, वेद, काव्य, कौमुदी^{८०} आदि पुस्तकहरू पढेको उल्लेख गरेका छन् । ज्योतिष चाँहि उनले कुनै ज्योतिषीसँग पढेको उल्लेख गरेका छन् । नरनाथ भने भानुभक्तले आफ्ना जिबाउले स्तोत्र पाठ गरेको र धर्म एवं अध्यात्मको चर्चा गरेको कुरा उनले सुनेका थिए । यस्तै वातावरणमा जिबाउले भानुभक्तलाई दुर्गाकवच, सप्तशती, चण्डी, रुद्री, वेद, व्यावहारिक ज्योतिषका मुहूर्त मार्तण्डादि ग्रन्थ, अमरकोष, रघुवंशादि काव्यका केही सर्ग र मध्यकौमुदी चुरादिसम्म तनहुँ चुँदीमै पढाएका थिए^{८१} भन्ने उल्लेख गर्छन् । यस विषयमा ब्रतराज आचार्यको मत भने फरक देखिन्छ । उनी “भानुभक्तले आफ्ना बाजेसगँ संस्कृतका रुद्री, वेद, कौमुदी एवं काव्यग्रन्थको अध्ययन घरमै गरेर ज्योतिष पढ्न कास्की गुरुकुल गएको” उल्लेख गर्छन् । त्यसपछि उनी १५-१६ वर्षको उमेरमा काशी गएका थिए । त्यहाँ रहेर उनले कोष, व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष एवं दर्शनशास्त्रको अध्ययन गरेका थिए^{८२} भन्ने जानकारी दिन्छन् । मुक्तिनाथ

^{७७} सुवेदी, राजाराम. ‘आदिकवि भानुभक्तको विलुप्त जन्मघरको खोजी’. कान्तिपुर. (२०५४ कार्तिक ३०) ।

^{७८} आचार्य, मुक्तिनाथ. पूर्ववत् पृ. ४ ।

^{७९} भट्ट, मोतीराम. पूर्ववत् पृ. ६ ।

^{८०} शर्मा, रङ्गनाथ. **भानुभक्त मणिमाला**, वाराणसी: वि.के. शास्त्री, १९९८, भूमिका १४-१५ ।

^{८१} आचार्य, नरनाथ. पूर्ववत्, पृ. २०-२१ ।

^{८२} आचार्य, ब्रतराज. पूर्ववत्, पृ. १५-१७ ।

भानुभक्तको अध्ययनबारे लेख्छन्- “श्रीकृष्ण आचार्यबाट अक्षरारम्भ गरेपछि भानुभक्तले उनैबाट दुर्गाकवच, चण्डी, अमरकोष, लघुकौमुदी आदि व्याकरणग्रन्थ र व्यावहारिक ज्योतिषको अध्ययन गरे । त्यसपछि उनले बनारसमा सिद्धान्तकौमुदी र ज्योतिषशास्त्रको विशेष अध्ययन गरे ।”^{८३} उपर्युक्त मतहरूको अध्ययन गर्दा भानुभक्तले कहाँ-कहाँ के-के ग्रन्थ र विषय पढे भन्ने कुरा किटानी गर्न मुस्किल देखिन्छ । तर यति चाँहि निश्चयसाथ भन्न सकिन्छ कि: धनञ्जय आचार्य पाल्पामा जागिरे भएकाले घरमा हुर्किएका छोरा भानुभक्तलाई उनले अक्षरारम्भ गराएका होइनन् । अतः उनको अक्षरारम्भ र प्रारम्भिक शिक्षा श्रीकृष्ण आचार्यबाटै भएको हुनपर्छ । नेपालको गुरुकुलीय परम्पराको अध्ययन गर्दा पहिलेदेखि हालसम्म पनि श्रीपञ्चमीको दिन बालकलाई अक्षर चिनाएर सर्वप्रथम दुर्गाकवच र अन्य स्तोत्रहरू, सप्तशती चण्डी, लघुकौमुदी आदि पढाउने र बालकको व्रतबन्ध भएपछि उसलाई वेदारम्भ गराउने, कसैलाई रुद्रीमात्र पढाउने प्रचलन देखिन्छ । भानुभक्तका जिबाउ पनि धुरन्धर पण्डित भएकाले उनले सोही विधिअनुसार नातिलाई पढाउनु स्वभाविक हुन्छ । भानुभक्तले ज्योतिष पढेका थिए भन्ने कुरामा त उनको जन्मकुण्डली पद्य नै प्रमाण छ । त्यस्तै उनले लघुकौमुदी पनि पढेका थिए भन्न मुक्तिनाथले भानुभक्तलिखित लघुकौमुदीको अन्तिमपत्र प्रस्तुत गरेका छन् । त्यस्तै अध्यात्मरामायणको अनुवाद गर्न संस्कृतकोश पनि राम्ररी पढेको हुनपर्छ । यस दृष्टिले विश्लेषण गर्दा भानुभक्तले संस्कृत व्याकरण, ज्योतिष र अमरकोश राम्ररी पढेको बुझिन्छ । भानुभक्तले रोजेको विषय अध्यात्मदर्शन देखिन्छ । उनले रामायणको अनुवाद गर्दा वाल्मीकीय रामायण नरोजेर अध्यात्मरामायण रोज्नु यसको प्रमाण हो । अतः उनले दार्शनिक कृतिहरू समेत पढेका थिए । भानुभक्तले हातले लेखेको तुलसी पूजाविधिको पाण्डुलिपि पाइनाले उनले कर्मकाण्डको पनि अध्ययन गरेका थिए भन्न सकिन्छ । गुरुकुलमा पढ्ने प्राय विद्यार्थीहरू कर्मकाण्ड पढ्छन् । भानुभक्तले तुलसीपूजाविधिको पुस्तक लेख्नु, मामाका भदासालोलाई मन्त्रदान दिनु, सप्ताह वाचन गर्नु एवं गणेशचौथीको पूजामा आवश्यक प्रपत्रहरूको कविता बनाउनु यसका प्रमाण हुन् । उपर्युक्त प्रमाणहरूका आधारमा उनले दुर्गाकवच, चण्डी, अमरकोश, रुद्री, लघुकौमुदी, सिद्धान्तकौमुदी र ज्योतिषशास्त्रको अध्ययन गरेका थिए भनेर मुक्तिनाथद्वारा उल्लेख गरिनु समुचित देखिन्छ ।

भानुभक्तको घाँसीसँग भेट : यस प्रसङ्गको उठान सर्वप्रथम मोतीराम भट्टले गरेका हुन् । उनले वि.स. १८९१ मा भानुभक्त नदी किनारमा घुम्दै जाँदा घाँसीसँग भेट भएको र सो घाँसीका कीर्तिराख्ने कुराबाट भानुभक्त प्रभावित भई “भर जन्म...” पद्यको रचना गरेको उल्लेख गरेका छन् ।^{८४} यसरी मोतीरामले भानुभक्तसँग घाँसीलाई जोडेपछि भानुभक्तको जीवनमा घाँसी काव्यप्रेरकका रूपमा देखिएको छ । मोतीराम पछि शम्भुप्रसाद, ब्रह्मशमशेर, सुब्बा रङ्गनाथ र सूर्यविक्रम ज्ञवालीले उक्त घाँसीप्रसङ्गलाई विनासङ्कोच समर्थन गरे । तर वि.स. १९९९ मा टुकराज र पद्मराज मिश्रले ‘रामकृष्ण कुवर’ नामक उपन्यासको भूमिकामा “घाँसीप्रसङ्ग

^{८३} आचार्य, मुक्तिनाथ. पूर्ववत्, पृ. १० ।

^{८४} भट्ट, मोतीराम, पूर्ववत्, पृ. ६-८ ।

मोतीरामद्वारा कल्पित घटना हुनसक्छ”^{८५} भन्ने आशङ्का उठाएपछि यस विषयमा विवादको सुरुवात भएको मानिन्छ । त्यसपछिका बाबुराम आचार्य, बालचन्द्र शर्मा, ताना शर्मा, मच्छिन्द्र प्रधान आदि समीक्षकहरूले घाँसीप्रसङ्ग मोतीरामको परिकल्पना हो भन्ने टिप्पणी गरे । यता घाँसी समर्थक नरनाथ आचार्य, ब्रतराज आचार्य, आमोदवर्धन कौडिन्यायन, मुक्तिनाथ आचार्य, केशवप्रसाद उपाध्याय, वामदेव पहाडी प्रभृति लेखक समीक्षकहरूले पनि घाँसी प्रसङ्गलाई स्वभाविक बनाउने दृढ कसरत गरे । आमोदवर्धनले घाँसीको नाम वसन्त पन्थ^{८६} र ब्रतराज आचार्यले स्थानीय व्यक्ति नारायणदत्त के.सी. लाई स्रोत मान्दै चामुनारायण पन्थ^{८७} उल्लेख गरे । नरनाथ आचार्यले भरजन्म पद्यको “मो” पद बाहेकका अरू दशपदलाई भानुभक्तका अन्य पद्यहरूसँग तुलना गरेर ती दुई पद्य भानुभक्तकै हुन् भन्ने प्रमाणित गर्ने प्रयास गरे ।^{८८} केशवप्रसाद उपाध्यायले चुँदी रग्घामा इनार सत्तल असम्भव भएपनि भानुभक्त ती वस्तुसँग परिचित हुनु संभव छ भन्ने तर्क दिए ।^{८९} वामदेव पहाडीले भानुभक्तको घाँसी नेपालको नभई गोरखपुरिया, मुजफ्फरपुरिया वा बनारसिया हुनसक्ने अनुमान गरे ।^{९०} मुक्तिनाथ आचार्यले भानुको भावनामा घाँसी शब्द नै प्रचलनमा नरहेको तत्कालीन परिवेशमा घाँसी हुन नसक्ने बताएका छन् । त्यस पुस्तकमा उनी लेख्छन्- “घाँसी प्रसङ्गको परिकल्पना मोतीराम भट्टले गरेका हुन् । त्यो प्रसङ्ग समयको अन्तरालमा किंबदन्तीको रूपमा लोकमा प्रचलित भयो र सबैले भानुभक्त घाँसीबाट प्रेरित भएका हुन्^{९१} भनी लेखे पनि उक्त धारणालाई खोजपूर्ण जीवनीमा परिवर्तन गरेका छन् । खोजपूर्ण जीवनीमा उनी लेख्छन्- “घाँसी पद्यमा “मो” को प्रयोग भएको र भानुभक्तका अन्य कुनै रचनामा उक्त पद नभएको तथा चुँदीमा तत्कालीन परिवेशमा घाँसी, इनार, सत्तल आदि शब्दहरूको प्रचलन नरहेको परिस्थितिमा सो पद्य मोतीरामले कल्पना गरेका हुन् कि ? भन्ने आशङ्का हुनु स्वभाविक देखिन्छ, तर “मो” पद लाई छोडी उक्त कविताका अन्य भाव भङ्गिमा आदि सबै मिल्ने देखिएकाले “मो” बाहेक उक्त दुई पद्य भानुभक्तकै रचना भएको प्रमाणित हुन्छ । यसरी आफ्ना दुई पुस्तकमा रहेका भिन्न भिन्न धारणाबारे स्पष्ट पार्दै उनी लेख्छन्- “भानुभक्तसँग सम्बन्धित कृतिहरू मोतीरामले बढाइ-चढाइ गरेर राखेका हुन् भन्ने कुरामा हालसम्म कुनै ठोस प्रमाण पाउन नसकिएकोले विना लिखित प्रमाण मनमा उब्जिएको आशङ्कालाई प्रश्रय दिदै जाँदा एकातिर अनवस्थादोष हुन जाने र अर्कोतिर मोतीराम भट्टको आदर्शप्रतिभामा समेत धक्का पुग्न जाने कुरा

^{८५} मिश्र, टुकराज. ‘अझै घाँसी पत्ता लागेन’. गोरखापत्र. (वि.स. २०५५ चैत्र १३)

^{८६} मिश्र, डिल्लीराम. नेपाल अधिराज्यमा तनहुँ. दो.सं. पूर्ववत् पृ. १२१७ ।

^{८७} पूर्ववत्, पृ. १२१८ ।

^{८८} आचार्य, नरनाथ. ‘...सच्चा जीवन चरित्र’ दो.सं. पूर्ववत्, परिशिष्ट, पृ. अ-लृ ।

^{८९} उपाध्याय, केशवप्रसाद. प्राथमिक कालीन कवि र काव्यप्रवृत्ति. ते.सं. काठमाडौं: साभ्ना प्र. २०४९, पृ. २०८-२१२ ।

^{९०} पहाडी, वामदेव. आलोचनाको वृत्त, काठमाडौं ने.रा.प्र.प्र. २०५४, पृ. २४ ।

^{९१} आचार्य, मुक्तिनाथ. भानुको भावना, काठमाडौं: मुक्तिनाथ आचार्य, २०२९, पृ. २४ ।

स्वतः सिद्ध छ ।”^{९२} यसरी घाँसीप्रसङ्गलाई काल्पनिक मान्दा अनवस्थादोष हुने भएपछि मुक्तिनाथ उक्त प्रसङ्गलाई स्वभाविक बनाउन काठमाडौँ सहर नजिकै भानुभक्तको घाँसीसँग भेट भएको थियो भन्ने काल्पनिक घाँसीप्रसङ्ग जोड्छन् ।

वस्तुतः मुक्तिनाथको घाँसीप्रसङ्गमा यथार्थ कम र कल्पनाको मात्रा बढी हुनुपर्छ । भानुभक्तको घर काठमाडौँमा पनि भएकोले र उनले रामायण बालकाण्डको अनुवाद समेत त्यहीं गरेकाले उनी काठमाडौँ आवत-जावत गरिरहनु संभव छ । अतः तनहुँको घाँसी प्रसङ्ग अस्वभाविक र असंभावित भएको परिप्रेक्ष्यमा घाँसीप्रसङ्गलाई स्वभाविक बनाउन उक्त घटनाको परिकल्पना गरेका हुन् । अतः मुक्तिनाथद्वारा उत्थापित घाँसीप्रसङ्गमा स्वभाविकता पाइए पनि यथार्थता पाइदैन । अर्को कुरा यसरी एउटै विषयमा पृथक्-पृथक् अवधारण प्रस्तुत गरेर उनी विवादित समेत भएका छन् । यस विषयमा आमोदवर्धन कौडिन्यायन लेख्छन्- “नेपाली राष्ट्रिय आदिकवि भानुभक्त आचार्यका विषयमा परम्परागत कुराहरूमा अनुसन्धान गर्दै प्रामाणिक रूपमा परिवर्तन गर्दै जानु राम्रो कुरा हो तर विनाप्रमाण कहिले केही र कहिले केही भरेर अन्योलको वातावरण सुष्टि गर्नु राम्रो देखिदैन ।”^{९३}

भानुभक्तको काठमाडौँ यात्रा र कवितारचना: मोतीराम भट्टले वि.सं. १९०६ मा जग्गावापतको भगडामा कागजपत्र लिएर भानुभक्त काठमाडौँ गएका र काठमाडौँदेखि एककोष उत्तरतर्फको बालाजीमा गएर बालाजीको र त्यसपछि फर्किएर काठमाडौँको वर्णन गरेको उल्लेख गरेका छन् ।^{९४} यसरी भानुभक्त काठमाडौँ गएर कविता रचेको संवत् र उनको काठमाडौँगमन प्रथम पटक थियो थिएन भन्ने विषयमा उत्तरवर्ती समीक्षकहरूमा मतैक्य पाइँदैन । बाबुराम आचार्यले “खैचेर इन्द्रकन” पङ्क्तिलाई आधार मानेर भानुभक्त गधा पच्चीसी उमेरमा काठमाडौँ गएको हुनुपर्छ भन्ने तर्क प्रस्तुत गर्दै वि.सं. १८९५-१९९६ को समयलाई गमन समय ठहर्‍याएर यो गमन भानुभक्तको पहिलो थियो”^{९५} भनेका छन् । त्यस्तै अर्का समीक्षक बालचन्द्र मोतीरामको अनुसरण गर्दै वि.सं. १९०६ लाई काठमाडौँगमन समय स्वीकार्छन् ।^{९६} नरनाथ आचार्य भने बाबु मरेपछि उनको नाममा रहेको स्रेस्ता बुझाउन भानुभक्त काठमाडौँ जाँदा कविता गर्न मन लागेर कान्तिपुरी वर्णन गरेको बताउँछन् । उनले काठमाडौँगमन संवत् दिएका छैनन् ।^{९७} मुक्तिनाथ आचार्यले वि.सं. १९०५ तिर कुनै काम विशेषले काठमाडौँ जाँदा त्यसबेला बालाजी र कान्तिपुरीको सौन्दर्यले कविलाई आकर्षित गर्‍यो र ती दुई कविता रचिएका हुन् भन्ने उल्लेख गरेका छन् । मुक्तिनाथ अगाडि लेख्छन्- “भानुभक्तको घर

९२ आचार्य, मुक्तिनाथ. “.....खोजपूर्ण जीवनी” पूर्ववत्, पृ. २५ ।

९३ कौडिन्यायन, आमोदवर्धन, “भानुभक्तका जीवनीको खोजी: परम्पराका क्रमलाई हेर्दा” गोरखापत्र (शनिवासरिय परिशिष्टाङ्क), २०४४ असार २७ ।

९४ भट्ट, मोतीराम. पूर्ववत्, पृ. ११-१२ ।

९५ आचार्य, बाबुराम. पुराना कवि र कविता. छैठौँ, काठमाडौँ: साभा प्र. २०५०, पृ. ९१ ।

९६ शर्मा, बालचन्द्र. भानुभक्त. दो.सं., काठमाडौँ: रत्नपु.भ., २०३१, पृ. ८३-८४ ।

९७ आचार्य, नरनाथ. ...सच्चा जीवन चरित्र. दो.सं., पूर्ववत् पृ. २९ ।

काठमाडौंमा पनि थियो र उनी काठमाडौंको घरमा बसेर अध्यात्मरामायणको अनुवाद गर्थे ।”^{९८} यी माथिका भनाइअनुसार भानुभक्त पहिले काठमाडौं गइसकेका र त्यस पटक कामविशेषले गएको अवगत हुन्छ । भानुभक्तको घर काठमाडौंमा पनि हुनु र उनको उमेर पनि त्यतिवेला ३४ पुगिसकेकोले उनी यसपूर्व पनि काठमाडौं जानु संभव छ । यदि यसपूर्व पनि उनी काठमाडौं गएका भए बालाजु नगएका हुनसक्छन् र बालाजुको सौन्दर्यवर्णन पछि मात्र उनलाई काठमाडौंको सौन्दर्य चित्रण गर्ने मनसुवा भएको हुनसक्छ वा त्यसपटकको गमनमा कवितास्फुरण भएको पनि हुनसक्छ । भानुभक्तले बालाजु वर्णनमा “यति दिन पछि मैले आज बालाजी देख्याँ” लेखेका

छन् । यसको अर्थ उनले धेरै दिनपछि बालाजु देखेको भन्ने हुन्छ । यस अर्थलाई आधार मान्दा भानुभक्तको यो काठमाडौं यात्रा प्रथम थिएन भन्ने स्पष्ट हुन्छ । भानुभक्त त्यस पटक काठमाडौं गएको समयबारे मुक्तिनाथ मोतीरामकै अनुसरण गर्छन् । समग्रमा भानुभक्तको उक्त काठमाडौं यात्रा पहिलो थिएन भन्ने निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ । यस विषयको मुक्तिनाथको अभिमत सही देखिन्छ ।

गजाधरको घरमा बासप्रसङ्ग : यस प्रसङ्गको उठान सर्वप्रथम मोतीराम भट्टले गरेका हुन् । वि.सं. १९०१ कार्तिकमा कलाधर ब्राह्मणलाई मन्त्र सुनाउन जाँदा भानुभक्त गजाधरको घरमा बास माग्न पुगेका, घरबुहारीले पिढीमा बस्न भनेकी, ब्राह्मणीले त्यहाँ बस्न प्रतिबन्ध लगाएकी, त्यसपछि बुहारीले बस्ने ठाँउ छाप्रो देखाएकी ब्राह्मणीले त्यहाँबाट पनि लखेटेकी र अलिपर कुनै रूखमुनि भानुभक्तले रात बिताएर बिहान गजाधर सोतीको ६/७ वर्षको छोरोलाई गजाधर सोतीकी... ” पद्य तनामा बाँधिदिएर भानुभक्त आफ्नो बाटोलागेका^{९९} लगायतका घटनाहरू मोतीरामले उल्लेख गरेका छन् । यिनै घटनाबीजलाई आधारमानेर उत्तरवर्ती समीक्षकहरूले यस प्रसङ्गको समर्थन/टिप्पणी गरेका छन् र कतिपयले चाहिँ उक्त घटनालाई मोडेर अनुकूल व्याख्या समेत गरेको देखिन्छ । नरनाथले यो घटना वि.सं. १९१५ फागुनमा भएको बताउँदै भानुभक्त आफ्ना मामाका छोरा कलाधरलाई मन्त्र सुनाउन जाँदा छोरासँग गएका, भानुभक्त गजाधरकोमा पुग्दा उनी घरै भएका, श्रीमतीको वश भएका कारण उनले आफ्नो घरमा भानुभक्तलाई बास दिन नसकेका र भानुभक्त अलिपर कुनै गरिब सोतीब्राह्मणकहाँ बास बसेका र उक्त पद्य रचेर सुनाउँदा सुनाउँदै प्रचार भएको^{१००} आदि विवरणहरू प्रस्तुत गरेका छन् । तर नरनाथले परिवर्तन गरेका ती घटनाहरू स्रोतको अभावमा काल्पनिक देखिएका छन् । मुक्तिनाथले पनि मोतीरामद्वारा प्रस्तुत घटनामा केही परिवर्तन गरेको देखिन्छ । उनले कलाधर भानुभक्तका मामाका भदासालो रहेका, भानुभक्तका मामाको नाम जयलाल रहेको, गजाधरकोमा बास नपाएपछि भानुभक्त रिक्तो गोठमा बास बसेका र भोलिपल्ट मावली पुगेर “गजाधर सोतीकी...” पद्य रचेका^{१०१} आदि घटनाहरू थपेका छन् ।

^{९८} आचार्य, मुक्तिनाथ. ...**खोजपूर्ण जीवनी**. पूर्ववत्, पृ. २७ ।

^{९९} भट्ट, मोतीराम. पूर्ववत्, पृ.९ ।

^{१००} आचार्य, नरनाथ. ...**सच्चा जीवन चरित्र**. दो.सं., पूर्ववत्, पृ. ४१-४३ ।

^{१०१} आचार्य, मुक्तिनाथ. पूर्ववत् पृ. ३१-३३ ।

तिनीहरूको अधिकारिकताबारे खोजपूर्ण जीवनीमा कुनै स्रोत पाइँदैन । तिनीहरूको स्रोतबारे प्रश्न गर्दा मुक्तिनाथ भन्छन्- “मैले यो कुरा भोर्लेटार निवासी कलाधर घिमिरेको नाति करिब ६५ वर्षिय रामकृष्ण घिमिरेबाट थाहा पाएको हुँ ।”^{१०२} यसरी मोतीराम नरनाथ र मुक्तिनाथले बताएका पृथक् पृथक् घटनाचक्रले यो प्रसङ्ग अझ अन्योलपूर्ण बन्दै गएको सन्दर्भमा मुक्तिनाथद्वारा परिवर्तित यस घटनामा प्रमाणको भिनो अंश पाइन्छ । यदि रामकृष्ण घिमिरेले थाहापाएको विषयवस्तु सत्य हो भने यस स्रोतलाई आधार मान्ने मुक्तिनाथ सत्यको नजिक छन् ।

नरनाथले भानुभक्तको मावली पोल्याड उल्लेख गरेकोमा पछि अनुसन्धानबाट भोर्लेटार प्रमाणित भयो । त्यहाँ १८ वर्षीय भानुभक्तले सप्ताह वाचन गरेको तथ्य समेत प्रकाशित भयो । मुक्तिनाथले यी घटनाहरू पनि विनाआधार प्रस्तुत गरेको छैनन् । अतः तारुकाबेंसीको स्थलगत अध्ययन, गजाधर सोती एवं कलाधरका सन्ततिहरूबाट प्राप्त जानकारी एवं जिजुमावलीका सन्ततिहरूले बताएका सन्दर्भहरूलाई स्रोत मानेर उल्लेख गरिएका माथिका प्रसङ्गहरू यथार्थमूलक देखिन्छन् । तर त्यस घरमा गजाधर थिए-थिएनन् ? बुहारीले बस्न दिइन्-दिइन् ? भानुभक्त माघमा वा फागुनमा गए ? यी मसिना विषयहरूमा विवाद गर्नुको कुनै औचित्य देखिँदैन । यस घटनाको अध्ययन गर्दा स्वभाविक र स्थूल विषयलाई मात्र लक्ष्य बनाउनु पर्ने हुन्छ । मुक्तिनाथले पत्ता लगाएको अर्को महत्त्वपूर्ण कुरा “गजाधर सोतीकी...” पद्यमा प्रयुक्त भूतकालीन प्रयोग हो । यसमा रहिछन्, भइछन्, पुग्यौं, बसियो, निकालिन्, गरियो जस्ता अज्ञातभूत र सामान्यभूत जनाउने क्रियापद एवं ‘पुग्यौं साभूमा तिन्का’ वाक्यमा विद्यमान दूरताबोधक सर्वनाम (तिनी) को प्रयोगले उक्त पद्यले बितिसकेको घटनाको वर्णन गरेको स्पष्ट हुन्छ । गजाधरको ६/७ वर्षको छोरोको तनामा बाँधेर भानुभक्त गए भन्ने कुरा मोतीरामले उठाए पनि त्यो त्यति सान्दर्भिक देखिँदैन । न त यसमा तार्किकता नै छ । हुनसक्छ भानुभक्तले भोर्लेटार पुगेर सो पद्य सुनाएपछि सबैले मनपराए अनि यसको प्रचार भयो । उपर्युक्त विश्लेषणका आधारमा गजाधर सोती प्रसङ्गमा मुक्तिनाथले थप गरेको विषयहरू प्रामाणिक छन् भन्ने निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ ।

रामगीतानुवाद सम्बन्धमा : रामगीतानुवादको रचनाप्रसङ्गबारे मोतीराम लेख्छन्- “वि.सं. १९२५ मा भानुभक्त विशेषकामले चुँदी आउँदा घर आइपुग्नासाथ ज्वरोले थलिए । घर आउदा सुब्बा धर्मदत्तले रामगीताको भाषानुवाद गर्नु भनेकाले आफ्नो ज्वरोलाई कालज्वर ठानेर उनले छोरो रमानाथलाई लेख्न लगाएर रामगीताको भाषानुवाद गरे ।^{१०३} यसको रचना संवत्बारे अन्य जीवनीकारहरू मोतीरामकै अनुसरण गर्छन् भने मुक्तिनाथ चाहिँ वि.सं. १९१९ वैशाखमा भानुभक्तले काठमाडौँबाट रमानाथलाई लेखेको पत्रलाई आधार मानेर रामगीतानुवादको समय १९१९ मान्दछन् ।^{१०४} भानुभक्तको पत्रमा- “म घर आइपुग्न्या थियाँ उत्तरकाण्ड रामायण केही बाँकी बनाउनुहयाको थियो र सभै इष्टमित्रले त्यो रामायण समाप्ति गरी जानुभया, लोकले गाउन्या छ... सय डेढसय श्लोक बनाउँन बाँकी छ, त्यो सिद्ध

^{१०२} मुक्तिनाथ आचार्यले दिएको जानकारी ।

^{१०३} भट्ट, मोतीराम. पूर्ववत्, पृ. २१-२२ ।

^{१०४} आचार्य, मुक्तिनाथ. पूर्ववत्, पृ. ४९ ।

गराई भरि वैशाखमा अवश्य आइपुग्छु” भन्ने उल्लेख भएअनुसार रामायण उत्तरकाण्डका सय/डेढसय श्लोक बनाउन बाँकी रहेको अवगत हुन्छ । चिठी लेख्दा बनाउन बाँकी पद्यसंख्या १५० मानेमा भानुभक्तले उत्तरकाण्डको १०७ औं पद्यबाट अनुवाद गर्न बाँकी रहेको बुझिन्छ । यसलाई आधार मानेमा यस काण्डको १२०-१४९ पद्यबीच रहेको रामगीता वैशाखमा रचिएको बुझिन्छ । करिब १०० पद्य बनाउन बाँकी रहेको भन्ने अर्थ लगाएमा उत्तरकाण्डका १५७ औं पद्यबाट अघाडि बाँकी रहेको तथ्य अवगत हुन्छ । यस्तो मानेमा १२०-१४९ बीचको रामगीता चिठी लेख्नु अगाडि नै रचिसकेको बुझिन्छ । त्यसपछि भानुभक्त रामायण समाप्त गरी कहिले घर आए ? भन्ने विषयमा कुनै प्रमाण पाइएको छैन । मुक्तिनाथले उत्तरकाण्ड समेतको रामायण वि.सं. १९१९ वैशाखमा समाप्त गरेर घर आएका भन्ने उल्लेख गरे पनि उक्त पत्रअनुसार भानुभक्त निर्धारित समयमा समाप्त गरी आउन सके/सकेनन् ? अवगत हुनसकेको छैन । यदि १९१९ मा उत्तरकाण्ड समाप्त गरेर आएका भए रामगीता पछि अनुवाद गरिएको हो भन्ने प्रश्नै उठ्दैन । किनकि रामगीता त अध्यात्मरामायण उत्तरकाण्डको पाँचौं सर्ग हो । यस काण्डमा यसपछि चार सर्ग बाँकी छन् । मोतीरामले भनेअनुसार रामगीता बाहेकको रामायण यदि कतै उपलब्ध छ भने रामगीता पछि अनुवाद हुनु संभव छ । यस विषयमा ब्रतराज आचार्य लेख्छन्- “रामायणका अन्य सबै लेखोटमा रामगीता नपाइनु र प्रकाशित रामायणमा पनि वि.सं. १९४८ सम्मका प्रकाशनहरूमा रामगीता नपाइनु तथा कविको हस्ताक्षरको रामायणमा भने रामगीतासहितको रामायण पाइनाले रामगीता अन्त्यकालमा रचिएको पुष्टि हुन्छ ।”^{१०५} मुक्तिनाथले १९१९ भन्नुको अर्थ भानुभक्तीय पत्र हो । सो पत्रअनुसार रामायणको समाप्ति १९१९ वैशाखमा भएको बुझिन्छ । तर वि.सं. १९४८ पूर्व प्रकाशित रामायणमा रामगीता नपाइनुको अर्थ रामगीताको रचना छुट्टै हुनु हो । मुक्तिनाथले उक्त प्रमाण नभेटेकाले रामगीताको रचनाकाल १९१९ स्वीकारेका हुनसक्छन् । यस विषयमा उनको लेखन विचारणीय छ ।

भानुभक्तको जागिर र कुमारीचोकको थुनुवाप्रसङ्ग: भानुभक्तले जागिर खाएको प्रसङ्ग मोतीरामले कोट्याएका हुन् । मोतीरामको भनाइअनुसार भानुभक्तले कृष्णबहादुरको चाकडी गरेर वि.सं. १९०७ वैशाखमा मधेसमा जागिर खाएका थिए । वि.सं. १९०९ मा सो जागिर खोसिएपछि काम गर्दाको आम्दानी खर्च समेत स्याहा बुझाउन बाँकी रहेकाले उनी पाँच महिनासम्म कुमारीचोकमा थुनिनुपरेको हो ।^{१०६} सूर्यविक्रम ज्ञवालीले पनि मोतीरामको अनुसरण गर्दै भानुभक्तले कृष्णबहादुरको चाकडी गरी वि.सं. १९०७-०९ बीच दुई वर्षसम्म मधेसमा जागिर खाएका र दुई वर्षपछि कागजपत्र बुझाउँन नसक्दा उनले कुमारीचोकमा थुनिनुपरेको उल्लेख गरेका छन् ।^{१०७} बाबुराम आचार्यले भने वीरेन्द्रकेसरीलाई स्रोत मान्दै भानुभक्त पाल्पामा

१०५ आचार्य, ब्रतराज. आदिकवि भानुभक्त, पूर्ववत् पृ. ३८ ।

१०६ भट्ट, मोतीराम. पूर्ववत् पृ. १५-१६ ।

१०७ ज्ञवाली, सूर्यविक्रम, भानुभक्तको रामायण चौ.सं काठमाडौं: साभा प्र. २०५८, पृ. ६-७ ।

खरदार भएका थिए^{१०८} भन्ने लेखेका छन् । यसरी भानुभक्तले वि.सं. १९०७-०९ बीच जागिर खाएर १९०९ मा खोसुवामा परेको कुरा नरनाथ आचार्यभन्दा पूर्ववर्ती जीवनीकारहरूले बताउदै आए पनि नरनाथ आचार्य भानुभक्तले जागिर खाएका थिएनन् भन्ने कुरामा जिकिर गर्छन् । उनी - “धनञ्जय आचार्य जागिरे जीवनमै मरेका हुनाले आफ्ना बाबुको कागजात बुझाउँन जाँदा भानुभक्त पाँचमहिना सम्म कुमारी चोकमा थुनिएका हुन्”^{१०९} भन्ने विवरण दिन्छन् । मुक्तिनाथ आचार्य पनि आफ्नो पारिवारिक सूत्रबाट पाएको जानकारीलाई आधार मानेर जागिरे जीवनमा मरेका बाबुको हिसाब बुझाउँन जाँदा कुमारीचोकले हिसाब फर्सोट नगरेकाले उनी करिब चारमहिनासम्म थुनिनु परेको कुरा लेख्छन् । भानुभक्तको पारिवारिक सूत्र र उनका नजिकका इष्टमित्रहरूका सन्ततिहरू भानुभक्तले जागिर खाएका थिएनन् भन्ने कुरामा सहमत छन् । यस कुरालाई भानुभक्तको “जागिर छैन...” पद्यले समेत पुष्टि गर्छ । भानुभक्तको जागिरप्रसङ्ग मोतीराम प्रभृति टाढाका अनुसन्धाताहरूले उठाएको कुरा हो । यस कुरामा उनीहरूले कुनै प्रमाण दिएका छैनन् । भौगोलिक दूरताले यथार्थ ज्ञान हुन नसकेको मात्र हो । वस्तुतः “भानुभक्तले जागिर खाएका थिएनन् । यो कुरा आफूले रमाकान्त देवी (हजुरआमा) एवं देवीभक्तवाट सुनेको तथ्य आदिबाट किटानीका साथ भन्न सकिन्छ” भनेर मुक्तिनाथ बताउछन् । निकर्षमा भानुभक्तले जागिर खाएका थिएनन् । उनी त बाबुको बक्यौता बुझाउँन जाँदा कुमारी चोकमा थुनिएका थिए भन्ने निष्कर्षमा पुग्न सकिन्छ । अतः यस विषयको मुक्तिनाथको अनुसन्धान आधिकारिक देखिन्छ ।

भानुभक्तको आदिकवित्व : भानुभक्त आचार्यलाई आदिकविको पगरी सर्वप्रथम मोतीराम भट्टले गुथाएका हुन् । उनले सो उपाधि प्रदान गर्दा लेखेको वाक्य यस्तो छ: “गोरखा भाषामा हुन त धेरै नामका कवि भानुभक्तभन्दा पहिले भए तर कविताको मर्म जानी भाषापद्य लेख्ने कविहरूमा आदिकवि भानुभक्त नै हुन् ।”^{११०} मोतीरामले पनि भानुभक्तलाई तत्कालै आदिकविको उपाधि दिएका छैनन् । वि.सं. १९४१ मा प्रकाशित भानुभक्तीय रामायणको बालकाण्डमा उनले भानुभक्तलाई ‘प्राचीन कवि’ भनेको देखिन्छ । त्यसको सात वर्षपछि मात्र उनी भानुभक्तलाई आदिकवि स्वीकार गर्छन् । यसरी मोतीरामद्वारा प्रदत्त भानुभक्तको आदिकवित्वबारे हालसम्म धेरै अध्ययन टिकाटिप्पणी र बचावट भएका छन् । उनी आदिकवि हुन् वा होइनन् भन्ने विषयमा धेरै लेख समालोचना लेखिइसकेका छन् । यस शोधको उद्देश्य भानुभक्तको आदिकवित्वको पक्ष-विपक्षमा वकालत गर्नु नभई यस विषयमा मुक्तिनाथले प्रस्तुत गरेका धारणाको विवेचना गर्नु मात्र हो । मुक्तिनाथले भानुभक्तलाई आदिकवि भने पनि समयक्रमलाई आधार मानेर पहिला कवि स्वीकारेका होइनन् । उनी यसबारे लेख्छन्- “यद्यपि भानुभक्तको समयभन्दा पहिले र समकालमा पनि नेपाली भाषामा कविता लेख्ने कविहरू अरू पनि नभएका होइनन् तर नेपाली भाषालाई विशुद्धरूप दिएर रचना गरी सफलता प्राप्तगर्न असमर्थ भएबाट तिनीहरूमध्येका कुनै एकले

^{१०८} आचार्य, बाबुराम. पुराना कवि र कविता, पूर्ववत् पृ. ९३ ।

^{१०९} आचार्य, नरनाथ. “...सच्चा जीवनचरित्र.” दो.सं. पूर्ववत् पृ. २९,३२,३४,३७ ।

^{११०} भट्ट, मोतीराम. पूर्ववत् पृ. ४ ।

पनि आदिकविको सम्मानले विभूषित हुन नसक्नु स्वभाविकै थियो ।”^{१११} उनको भनाइमा भानुभक्त आचार्य यदुनाथ, रघुनाथ, वीरशाली पन्त, वसन्त शर्मा आदि कविहरूभन्दा समय क्रमले पछाडि जन्मिएका भएपनि ती पूर्ववर्ती कविका तुलनामा नेपालीहरूका हृदयमा छाप छोड्ने, मीठा सरस कविता लेख्ने र रामायणको भाषानुवाद गरेर नेपालीहरूमा प्रभाव छोड्न सफल भएका छन् । गर्हित नेपालीलेख्य रूपलाई प्रतिष्ठित बनाउन उनी नै सफल भए । त्यसैले उनलाई आदिकवि मान्नुपर्छ । यस कारण भानुभक्तलाई श्री ३ जुद्धशमशेरबाट दिइएको ‘आदिकवि’ को उपाधि समुचित छ भन्ने उनको ठहर रहेको छ । यसको उदाहरणका रूपमा उनी आगाडि दौडिएर पनि सामर्थ्यको अभावमा दौड हार्ने एवं पछाडि दौडिएर पनि सामर्थ्यले दौड जित्ने व्यक्तिको दृष्टान्त प्रस्तुत गर्छन् ।^{११२} भानुभक्त निश्चय पनि पहिला कवि होइनन् । तर भाषिक कारणले विभाजित हाम्रो देशलाई उनले भाषाका मीठा-मीठा पद्यहरूले भरिपूर्ण रामायणका माध्यमबाट एकीकृत गरे । उनीपूर्व अन्य थुप्रै कविहरू भए पनि प्रभाव छोड्ने कविहरूमा उनी नै पहिला भए । यही तथ्यलाई आधार मानेर मुक्तिनाथले उनलाई आदिकवि मानेको देखिन्छ ।

४.२.९ मुक्तिनाथका निजी खोजहरू

मुक्तिनाथले भानुभक्तको जीवनसँग सम्बन्धित केही घटनाहरूबारे खोज अनुसन्धान गरेर खोजपूर्ण जीवनीमा नवीनतम तथ्यहरू प्रकाशित गरेका छन् । तल ती सत्यतथ्यहरूलाई बुँदागत रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ:

- क) भानुभक्तको जन्म रम्घा धर्मशालामा भएको हो ।
- ख) रमानाथका पुर्खाहरूको बसोबास हालको धर्मशालास्थित घरमा रहेको र रमानाथको परिवार वि.सं. १९४३ मा त्यस ठाउँबाट रम्घा गाउँ (शिखर) मा सरेको थियो ।
- ग) भानुभक्तले हातैले लेखेर पढेको लघुकौमदीको अन्तिम पातो पाइएको छ ।
- घ) भानुभक्तको प्रथम विवाह आठ वर्षको उमेरमा भएको थियो । सो विवाह उनले तनहुँ राडरुड निवासी परशुराम खनालकी छोरी चन्द्रकान्ता देवीका साथ गरेका र विवाहको १८ महिनापछि चन्द्रकान्ता मरेकी थिइन् ।
- ङ) महाबौद्ध काठमाडौँमा धनञ्जय आचार्यले सरकाबाट बिर्ता स्वरूप जग्गा पाएका थिए भन्ने कुराको प्रमाण लालमोहरको प्रतिलिपि प्रस्तुत गरेका छन् ।
- च) गजाधरको हिउँदेघर तारुकाबेंसीमा थियो ।
- छ) भानुभक्तका मामा जयलाल पौडेल थिए । उनी आर्मीको कप्तान पदमा जागिर खान्थे ।
- ज) भानुभक्तले १८ वर्षको उमेरमा भोर्लेटारस्थित मामाघरमा सप्ताहवाचन गरेका थिए ।
- झ) गजाधर सोतीकी ...” पद्यमा भूतकालीन प्रयोग पाइएकोले त्यो भोलिपल्ट मामाघरमा सुनाइएको थियो ।

^{१११} आचार्य, मुक्तिनाथ. पूर्ववत् पृ. ५७-५८ ।

^{११२} आचार्य, मुक्तिनाथ. पूर्ववत् पृ. ५७ ।

- त्र) भानुभक्तका मामा जयलालले मूलनक्षत्रमा जन्मिएका भदासालो नाताका कलाधरलाई व्रतबन्धसम्म पालेका थिए ।
- ट) कविपुत्र रमानाथको संक्षिप्त परिचय र उनको योगदान चर्चा मुक्तिनाथले गरेका छन् ।

४.२.१० दुई जीवनीपरक कृतिका एकै घटनामा फरक मत

मुक्तिनाथद्वारा लिखित भानुभक्तसँग सम्बद्ध 'भानुको भावना' एवं 'खोजपूर्ण जीवनी' का एउटै घटनामा उनले भिन्न-भिन्न मत प्रस्तुत गरेका छन् । यसरी फरक मत अभिव्यक्त गर्दा उनी विवादित पनि भएका छन् । तिनीहरूको संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत गरिन्छः

भानुभक्तको अध्ययन सम्बन्धमा : भानुको भावना (पृ. १२) मा भानुभक्तले अक्षरारम्भ पछि अमरकोश, यजुर्वेद, मध्यसिद्धान्तकौमदी र ज्योतिष शास्त्रको अध्ययन गरेका थिए भन्ने उल्लेख छ भने खोजपूर्ण जीवनी- (पृ.७) मा अक्षरारम्भ पछि अमरकोश, लघुकौमदी आदि व्याकरणग्रन्थ र ज्योतिषशास्त्रको अध्ययनप्रसङ्ग वर्णित छ ।

घाँसीसँग भेटप्रसङ्गबारे : भानुको भावना- (पृ. २३) मा हिजोआज पनि घाँस बेच्ने प्रचलन नरहेको तनहुँमा त्यसबेला घाँस बेच्नु असम्भव भएको, यस भेगमा इनार, पाटी र सत्तलहरू नरहेका एवं भानुभक्तले अन्यत्र कतै 'मो' शब्दको प्रयोग नगरेका हुनाले घाँसीपद्य भानुभक्तले रचेको होइनन्, भानुभक्तले घाँसीबाट प्रेरणा पाएका पनि होइनन् लेखिएकोछ भने खोजपूर्ण जीवनी- (पृ.२२) मा कुनै समय भानुभक्त काठमाडौँ जाँदा सहरनजिकै एउटा घाँसी भेटिएको, सो घाँसीले कीर्ति राख्ने कुरा गरेको र उक्त कुराबाट प्रेरित भई भानुभक्तले तत्कालै "भर्जन्म..." रचेका थिए भन्ने उल्लेख छ ।

बालाजु गएको संवत्बारे : भानुको भावना- (पृ.२३) मा भानुभक्त वि.सं.१८९७ मा काठमाडौँ पुगेर बालाजुको वर्णन गरे भनिएको छ भने खोजपूर्ण जीवनी (पृ.२७) मा वि.सं. १९०५ वैशाखमा भानुभक्त काठमाडौँ गई त्यहाँको वर्णन गरेका थिए भन्ने लेखिएको छ ।

गजाधरको घरमा बास प्रसङ्गबारे : भानुको भावना (पृ.४१) मा भानुभक्तले गजाधरको घरमा बास नपाएपछि उनी रिक्तोगोठमा बास बसेको र "गजाधर सोतीकी..." पद्य रचेका थिए भन्ने लेखिएको छ भने खोजपूर्ण जीवनी (पृ.३३) मा भानुभक्त रिक्तो गोठमा बास बसेर भोलि विहान मावली पुगेर उक्त पद्य सुनाइएको उल्लेख छ । त्यसैगरी भानुभक्त गजाधरको तारुकास्थित गाँउको घरमा वा बेंसीको घरमा गए ? भन्ने विषयमा पनि मतभेद छ । भानुको भावना (पृ.३८) मा भानुभक्त गजाधरको तारुका गाँउस्थित घरमा गए लेखिएको छ भने खोजपूर्ण जीवनी (पृ.३०-३१) मा गजाधरको बेंसीस्थित घरमा गए भन्ने उल्लेख छ ।

कलाधरसँग मामाको सम्बन्धबारे : भानुभक्त आचार्यको कलाधर घिमिरेसँग के सम्बन्ध थियो भन्ने विषयमा भानुको भावना र खोजपूर्ण जीवनीमा मतैक्य पाइदैन । भानुको भावना (पृ.३७) मा कलाधर भानुभक्तका मामाका छोरा र खोजपूर्ण जीवनी (पृ.३०) मा भदासालो भएको उल्लेख छ ।

४.२.११ निष्कर्ष

प्रस्तुत कृति भानुको भावनाको विकसित, परिवर्धित र परिष्कृत रूप हो । यसमा भानुभक्तीय जीवनीका गौणपक्षबारे पनि चर्चा गरिएको छ । ती घटनाहरूको समायोजनबाट चरित्रनायकको इतिवृत्त पूर्ण बनेको छ । तर कुन घटना कुन संवत्मा घट्यो भन्ने विषयमा भने आधिकारिक प्रमाण र पूर्ववर्ती अन्वेषकको खण्डन पाइदैन । मिति राख्नुपर्ने ठाँउमा लेखकले कहीं मोतीराम, कतै बाबुराम र कुनै ठाउँमा अन्य अन्वेषकको अनुसरण गरेका छन् । प्रस्तुत कृति भानुभक्त आचार्यको पारिवारिक स्रोतबाट प्राप्त घटनाविवरण जनसामु ल्याउन भने पूर्ण सफल छ । आफ्ना बाबु, हजुरआमा, फुपू र अन्य स्रोतबाट प्राप्त नवीनतम एवं तथ्यपरक विवरणको समावेशले नै यो कृति उत्कृष्ट बनेको हो । यो नै यस कृतिको महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हो । तर ती नयाँ तथ्यहरू विनाप्रमाण समाविष्ट हुँदा पाठक अन्योलग्रस्त बन्छन् र घटनालाई कल्पित संझन्छन् । अतः उपलब्ध प्रमाण प्रस्तुत गर्न नसक्नु यस कृतिको दुर्बल पक्ष हो । जीवनीकारले यस कृतिमा घाँसीप्रसङ्गको परिकल्पना पनि गरेका हुँदा पाठकले यस्तो सोच्नु स्वभाविक देखिन्छ । निष्कर्षमा प्रस्तुत कृति तिथि मितिको निर्धारण एवं प्राप्तस्रोतको प्रकाशनमा दुर्बल रहेपनि पारिवारिक स्रोतबाट प्राप्त जानकारीको प्रकाशन र जीवनीतत्त्वको दृष्टिले उत्कृष्ट छ ।

परिच्छेद पाँच

मुक्तिनाथका फुटकर रचनाहरूको विवेचना

५.१ परिचय र विवरण

मुक्तिनाथ आचार्यका फुटकर रचनाहरू वि.सं. २०४१ देखि प्रकाशित छन् । उनका ती रचनाहरू राष्ट्रिय र स्थानीय पत्रिका एवं मुखपत्रहरूमा प्रकाशित देखिन्छन् । उनका त्यस्ता रचनाहरूको संख्या हालसम्म (उपलब्ध) बाह्र पुगेको छ । यसअन्तर्गत छवटा रचना कविता-उपविधाका छन् भने छवटा चाहिँ गद्यविधाका छन् । तल तिनीहरूको विवरण प्रस्तुत छ :-

क) कविता

| शीर्षक | प्रकाशित पत्रिका | प्रकाशित मिति |
|-----------------------------------|----------------------------------|---------------|
| अ) क्रान्तिकारी व्यक्तित्व भानु | प्रतिक्रिया साप्ताहिक | २०४१/४/१ |
| आ) राष्ट्रभक्ति र जनसेवा: देवपूजा | प्रतिक्रिया साप्ताहिक | २०४१/४/२२ |
| इ) यो देह नै काप्दछ | राष्ट्रिय साहित्य सम्मेलन, तनहुँ | २०५३ |
| ई) आदेश पालन गरौं | भानुश्री | २०५४/०५५ |
| उ) परोपकार नै पुण्य हो | कविता | २०५६ वैशाख |
| ऊ) गन्तव्यमा पुगनु छ | नव व्यासवाणी साप्ताहिक | २०५७/२/१५ |

ख) गद्यविधा

| शीर्षक | प्रकाशित पत्रिका | प्रकाशित मिति |
|---------------------------------------|-----------------------------|---------------|
| अ) आचार्य देवो भव | गाउँ सेवा स्मारिका (अङ्क ४) | २०४१/०४२ |
| आ) भावनामा परिवर्तन ल्याउनु समयको माग | गोरखापत्र | २०४२/१/१० |
| इ) भौतिक र आध्यात्मिक उन्नतिको समन्वय | गोरखापत्र | २०४२ |
| ई) आदिकविको आध्यात्मिक चिन्तन | चन्द्रिका बर्ष १ (अङ्क १) | २०४८ |
| ई) आदिकवि भानुभक्तको सं. जीवनी | रामायण (परिशिष्ट) | २०५० |
| उ) विद्वान्को कसी नै विनय हो | भानु सं.मा.वि. स्मारिका | २०५३ |

५.२ मुक्तिनाथका फुटकर कविताहरूको विवेचना

क्रान्तिकारी व्यक्तित्व भानु : प्रस्तुत कविता मुक्तिनाथ आचार्यको प्रथम प्रकाशित रचना हो । यो वि.सं. २०४१ को प्रतिक्रिया साप्ताहिकमा प्रकाशित देखिन्छ । यो कविता उनको 'भानुको परिचय' (२०३२) नामक अप्रकाशित कविता सङ्ग्रहबाट साभार गरिएको छ । यस कवितामा भानुभक्त आचार्यको धर्मदत्तसँग आत्मिक सम्बन्ध रहेको कुरा खुलासा भएको छ । खोजपूर्ण जीवनीमा उल्लेख भएअनुसार भानुभक्तका मित्र धर्मदत्तले आफ्ना

पाल्पाली मित्रलाई बिके टोपी पठाउन अनुरोध गर्दा ती मित्रले पठाएको टोपी सानो भएछ र धर्मदत्तले अर्को ठूलो टोपी पठाउन अनुरोध गरेर पुनः कवितामै प्रत्युत्तर दिएछन् । तर उक्त पत्र ज्यादै अशुद्ध देखेपछि धर्मदत्तले छेड हानेर त्यसको जवाफ पठाउने निधो गरेछन् । र उनले भानुभक्तलाई उक्त चिठी लेख्न अनुरोध गरेछन् ।^{११३} ती मित्रको अनुरोधअनुसार भानुभक्तले लेखिदिएको “ भाषाश्लोक भन्नुता अवश्य अबता...” पद्यप्रसङ्गबारे मुक्तिनाथले यस कवितामा चर्चा गरेका छन् । शार्दूलविक्रीडित छन्दका आठ पद्यमा रचित प्रस्तुत कविता भानुभक्तीय जीवनीको एक प्रसङ्ग आख्यानका रूपमा देखिएको छ । यस कवितामा कविले सुललित र मीठो भाषामा भानुभक्त आचार्यको क्रान्तिकारी व्यक्तित्वको चर्चा गरेका छन् । कविता सरल भाषामा निबद्ध भएकोले सु-स्वादु छ । प्रस्तुत कविताले भानुभक्त आचार्यलाई क्रान्तिकारी व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउने प्रयास गरेको छ । यो कुरा कविको सातौँ पद्यबाट स्पष्ट हुन्छ :

भाषालाई विशुद्ध पारन भनी कम्मर कसेका कवि ।

खूबीदार छ कोही लौ यदि भने आऊ अगाडि सरी ॥

भन्दै हाँक दिँदै अगाडि बढ्दै भाषा कविताहरू ।

भन्दै क्रान्ति गरे भए सफल ती निस्केन कोही अरू ॥

यसरी कविले यहाँ भानुभक्तलाई भाषिक क्रान्तिका सूत्रधार मान्दै महान् क्रान्तिकारीका रूपमा उभ्याएका छन् । प्रस्तुत कवितामा भाषिक र छन्दगत नियमको सामान्य पालना भए पनि भावगत दृष्टिले कविता उत्कृष्ट छ ।

राष्ट्रभक्ति र जनसेवा: देवपूजा : प्रस्तुत कविता मुक्तिनाथको दोस्रो प्रकाशित कविता हो । यो कविता उनको ‘हितको संवाद’ खण्डकाव्यको ‘देवपूजाको रहस्य’ शीर्षकबाट प्रतिक्रिया साप्ताहिक पत्रिकाको २०४१ श्रावण २२ गतेको अङ्कमा प्रकाशित देखिन्छ । यस कवितामा उक्त शीर्षकका दश पद्य छानेर प्रकाशित गरिएका छन् । अनुष्टुप् छन्दमा आबद्ध ती कविताहरूमा देशको सेवा गरेर देवता खुशी पार्न सकिने आशय व्यक्त गरिएको छ । जनताको हितमै देवता खुशी हुने हुँदा देवतालाई खुशी पार्न धोतीपाटा फेरेर पूजा होइन गरिब, दुःखी र असहायको सेवा गर भन्ने कविको विचार छ । कवि भन्छन्-

राष्ट्रको हितको लागि जस्ले जे काम गर्दछ ।

देवताको पूजा त्यसले गरेको मान्नुपर्दछ ॥

सच्चा पूजा त्यही नै हो शास्त्रले यही भन्दछ ।

यस्तो पूजा गर्न सके जीवन् साफल्य बन्दछ ॥

यसरी राष्ट्रसेवामार्फत गरिने देवपूजाबाट देवीदेवताहरू खुशीहुन्छन् र यो पूजा शास्त्रसम्मत पनि छ भन्ने कविको ठहर छ ।

यो देह नै काण्ड छ : राष्ट्रिय साहित्य सम्मेलन तनहुँ - २०५३ को स्मारिकामा प्रकाशित प्रस्तुत कविता शार्दूलविक्रीडित छन्दका छ पद्यमा फैलिएको छ । प्रस्तुत कविता देशका जिम्मेवार मानिसहरूले गरेको भ्रष्टाचारबाट प्रताडित नेपालआमाको आर्तनादका रूपमा प्रस्तुत छ । यस कविताको पहिलो पद्यमा नेपालीहरूको व्यवहारबाट खिन्न बनेकी नेपालआमाले राष्ट्रदेव पशुपतिनाथसँग बिलौना गरेकी छन् । त्यस पछिका कवितामा उनको चिन्ता अभिव्यक्त भएको छ । यसरी चार

^{११३} आचार्य, मुक्तिनाथ. ...**खोजपूर्ण जीवनी**. पूर्ववत्, पृ. ५६ ।

पद्यमा देशको बेथिति र विडम्बनाको चर्चा गरेपछि उनले अन्तिम पद्यमा ती अबुभ र माटाको माया नभएका नेपालीहरूलाई सद्बुद्धि प्रदान गर्न पशुपतिनाथसँग अनुरोध गरेकी छन् । उनी भन्छिन् -

हे शम्भो प्रभु राष्ट्रदेव भगवन ! विन्ती छ मेरो खूब ।
सम्हारपट्टि नलागी यी अबुभमा सद्बुद्धि देऊ तब ॥
तेसैबाट भलो हुनेछ सबको शान्ति मलाई पनि ।
होला कि ? भनी आशमा छु बहुतै आशामुखी नै बनी ॥

नेपालीहरूको दुर्व्यवहार र दुराचारबाट नेपालआमाको हृदय छिया-छिया भएको र त्यसको अनुभव गर्ने कवि स्वयंको पनि देह काँपेको भन्ने अर्थमा प्रस्तुत कविताको शीर्षक 'यो देह नै काप्दछ' सार्थक देखिन्छ । यस कवितामा काव्यिक सौन्दर्य कम भए पनि भावप्रवाह सुन्दर छ ।

आदेश पालन गरौ : प्रस्तुत कविता तनहुँ दमौलीस्थित आदिकवि बहुमुखी क्याम्पसबाट प्रकाशित 'भानुश्री' नामक पत्रिकामा सङ्कलन गरिएको छ । शार्दूलविक्रीडित छन्दका छ पद्यमा फैलिएको यस कवितामा अन्तर्यामी परमात्माको आज्ञा पालन गर्न अनुरोध गरिएको छ । जसरी कस्तूरी आफ्नो नाभिस्थित बास्ना थाहा नपाएर सुवासको खोजीमा यत्रतत्र भौतारिई सिकारीको बन्धनमा पर्छ, त्यसरी नै अज्ञानी प्राणी पनि आफूमा विद्यमान अन्तर्यामी परमेश्वरलाई नचिनेर उसको खोजीमा हिँड्दा-हिँड्दै सांसारिक बन्धनमा पर्दछ । कवि यस कुरालाई तल यसरी व्यक्त गर्छन् :-

जस्तो कस्तूरी नाभिमै निहित त्यो सूवासको खोजीमा ।
भौतारिन्छ र पर्छ त्यो सहाजमा सीकारीको जालमा
त्यस्तै मानिसले पनि हृदयको ईश्वर नचिन्हीकन
ईश्वर खोज्दछ बाहिरै तिर फिरी लिएर अन्धोपन ॥

यसरी सतही बनेर ईश्वरको खोजी गर्ने कार्यलाई उनले अन्धोपन भनेर आफ्नै अन्तःकरणको ईश्वरको आज्ञापालन गर्न सवैसामु अनुरोध गरेका छन् ।

प्रस्तुत कवितामा छन्दगत नियम र भाषिक शुद्धिको सामान्य पालना भएको छ । त्यस्तै कवितामा कलात्मकता पनि सामान्य छ । आध्यात्मिक विचारको प्रकटीकरणका दृष्टिले प्रस्तुत कविता उत्कृष्ट छ ।

परोपकार नै पुण्य हो : प्रस्तुत कविता नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठानबाट प्रकाशित 'कविता' (साहित्यिक पत्रिका) को छन्दोबद्ध कविता विशेषाङ्क २०५६ वैशाख-साउन अङ्कमा सङ्कलित छ । वंशस्थ छन्दका दश पद्यमा फैलिएको यस कवितामा परोपकारी महापुरुषहरूको उदाहरण दिँदै मानिसलाई परोपकारी बन्न अनुरोध गरिएको छ । मानिस सुख प्राप्त हुने लालसामा भौतिक कष्ट भोगेर दुःख निम्त्याइरहेछ । उसले जुन बाटोबाट सुख पाउने आशा गरेको छ त्यो सर्वथा गलत भएर पनि ऊ त्यसैको पछि दौडिरहेछ । सुख पाउन त वसिष्ठ व्यासादिले बताएको मार्ग अवलम्बन गर्नुपर्छ, जुन कुरा आजको मानिसलाई ग्राह्य छैन । व्यासले अठार पुराणको निष्कर्ष परोपकार ठहर्‍याएका छन् । यसबाट नै मानिसलाई सुख मिल्छ भन्दै कवि लेख्छन् :

परोपकारै त अनन्त पुण्य हो
पीडा पराई सब घोर पाप हो,

मनुष्य पुण्यैतिर बहनुपर्दछ ।

र पापदेखिन् पछि हटनुपर्दछ ॥

यसरी आफूलाई चिनेर परोपकार गर्नाले नै मनुष्य सुखी हुन्छ भने उनको विचार रहेको छ ।

प्रस्तुत कविताको भाषा सरल र स्पष्ट छ । कवितामा छन्दगत नियमको सामान्य पालना भएको छ । कविता अध्यात्मचिन्तनतर्फ बढी आकृष्ट देखिन्छ ।

गन्तव्यमा पुगनु छ : प्रस्तुत कविता तनहुँ दमौलीबाट प्रकाशित हुने साप्ताहिक पत्रिका 'नवव्यासवाणी' साप्ताहिकको वि.सं. २०५७ जेठ १५ गतेको अङ्कमा प्रकाशित छ । प्रस्तुत कविता शार्दूलविक्रीडित छन्दका सात पद्यमा फैलिएको छ । हाम्रो जीवनको एकमात्र उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति गर्नु रहेकोले तदनुकूल आचरण गरौं र आत्मा चिनेर परमात्मा प्राप्त गरौं भन्ने यस कविताको मूल आशय रहेको छ । सांसारिक विषयवासनामा लट्टिएका मानिसहरू भौतिक उन्नतिलाई सर्वस्व ठान्छन् र परिवार पोषणमै जीवन बिताउँछन् । वस्तुतः त्यसबाट हाम्रो कदापि उन्नति हुन सक्दैन ।

स्थायी शान्ति त अध्यात्मज्ञान हाँसिल गरेपछि मात्र प्राप्त गर्न सकिन्छ । यसै प्रसङ्गमा कवि भन्छन् :-

स्थायी शान्ति र सुख मिल्दछ ठुलो अध्यात्मज्ञानबाट नै ।

शान्ती भौतिकवादको क्षणिक हो, त्यो शान्ति नै हैन क्यै ॥

स्थायी शान्ती लिने छ मन्सुव भने अध्यात्मवादी बनौं ।

आध्यात्मीक बने त चिरसुखी नै होइन्छ पक्का बुझौं ॥

वस्तुतः भौतिकताको सञ्जालबाट टाढिएपछि मनुष्यले शान्ति प्राप्त गर्दछ र अध्यात्मवादी बनी तदनुकूल आचरण गर्नु भने ऊ चिरसुखी हुनेछ भन्ने कविको ठहर रहेको छ । त्यसैले हाम्रो जीवनको गन्तव्य प्राप्त गर्न अध्यात्मवादी बनौं भन्ने कविको अनुरोध रहेको छ ।

साहित्यिक कला कम र नैतिक उपदेश अधिक रहेको यस कवितामा छन्दसम्बन्धी नियमको सामान्य पालना भएको छ । भाषाशैलीगत दृष्टिले पनि प्रस्तुत कविता सामान्य छ । निष्कर्षमा साहित्यिक लयमा आध्यात्मिक उपदेश प्रदान गर्नु नै यस कविताको अभीष्ट देखिन्छ ।

५.३ मुक्तिनाथका लेखरचनाहरूको विवेचना

आचार्य देवो भव : प्रस्तुत लेख तनहुँ जिल्ला, मिलुङ्ग ज्यामरुक कवाचित सहयोग समितिद्वारा प्रकाशित 'गाउँ सेवा' नामक पत्रिकाको वि.सं. २०४१/०४२ को अङ्कमा सङ्कलित छ । यस लेखमा गुरु वा आचार्यको शरण परी जीवन सफल बनाउन सकिने चर्चा छ । जसरी मन्दिरमा विद्यमान मूर्तिलाई प्रकाशित गर्न बत्तीको आवश्यक पर्छ, त्यसरी नै आफ्नै अन्तःकरणमा शुद्ध चैतन्यका रूपमा अवस्थित आत्मालाई प्राप्त गर्न गुरुको आवश्यकता छ । गुरु पारसमणिभन्दा पनि चम्किला र शक्तिशाली हुन्छन्, किनकि पारसमणिले फलामलाई सुन बनाउन सके पनि पारसमणि नै बनाउन सक्दैन, तर गुरुले आफ्ना शिष्यलाई आफू समान तुल्याउन सक्छन् भन्दै लेखकले यस संसारका दुईथरी गुरुको उल्लेख गरेका छन् । भौतिक ज्ञान प्रदान गर्ने गुरु आध्यात्मिक ज्ञान दिने गुरु । भौतिक ज्ञानदाता गुरुले

रोजीरोटीको समस्या हल गरी बाह्य आनन्द एवं सुख प्रदान गरे पनि आध्यात्मिक आनन्द दिन सक्दैनन् । त्यसैले चिरसुखी बन्न अध्यात्मवादी गुरुको सेवा गर्नुपर्छ भन्ने लेखकको विचार रहेको छ । 'आचार्य देवता हुन् उनको सेवा गर' र उनीबाट आत्मिक ज्ञानार्जन गरी जीवन सफल बनाऊ भन्ने लेखकको अनुरोध छ ।

प्रस्तुत लेख चिन्तनमूलक देखिन्छ । लेखकले बीचबीचमा गीता र अन्य आध्यात्मिक पुस्तकका संस्कृत सूक्तिहरू समावेश गरेका छन् । भाषा सरल र सुबोध छ ।

भावनामा परिवर्तन ल्याउनु समयको माग : प्रस्तुत लेख वि.सं. २०४२ वैशाख-१० गतेको गोरखापत्रमा प्रकाशित छ । यो लेख साहित्यभन्दा अध्यात्मतर्फ बढी आकृष्ट देखिन्छ । लेखकले अद्वैतसंस्थामा सत्सङ्ग र चिन्तन गर्दा आर्जन गरेको अद्वैतपरक भावनालाई यस लेखमार्फत अभिव्यक्त गरेका छन् । उनी भन्छन् - "जहिले सम्म मानिसको भावनामा परिवर्तन आउन सक्दैन, तहिले सम्म मानिसको परमकल्याण एवं देशको समुन्नति हुनु असम्भव छ । यही बीजलाई आधार मानेर नै भावनामा परिवर्तन आउनु आवश्यक छ भन्ने अर्थमा यस लेखको रचना भएको हो । लेखकले यहाँ विचारलाई भावना भनेका छन् । त्यो विचार स्पष्ट, कल्याणकारी र हितकर हुनाका साथै व्यक्तिगत स्वार्थको घेराबाट माथि उठेको हुनुपर्छ । मानिसले सत्व, रज र तमो गुणको अधिष्ठान आफूलाई स्वीकारी कामकोधादि भावना त्यागेर करुणा, क्षमा, मैत्री, अहिंसा शान्तिजस्ता सद्भावनाको आफूमा विकास गर्नुपर्छ र वसुधैव कुटुम्बकंको भावनालाई आत्मसात् गर्नुपर्छ भन्ने विचार लेखकले प्रकट गरेका छन् । त्यस्तै आत्मिक उन्नतिको लागि तत्त्वमसि महावाक्यले बताएको अर्थलाई हृदयङ्गम गरी आत्मा-परमात्माको समान देख्नुपर्छ अनि मात्र मुक्त भइन्छ भन्ने भावना लेखकको रहेको छ । यसरी असद् भावना र सांसारिक प्रपञ्चका कारणहरूबाट कमशः विरत भई मानिसमा सद्भावनाको अभ्युदय भएपछि परमात्मातत्त्वसँग प्राणी एकाकार हुन्छ र अद्वैत बनी मुक्त हुन्छ भन्ने यस लेखको सार रहेको छ ।

भौतिक र आध्यात्मिक उन्नतिको समन्वय : प्रस्तुत लेख वि.सं. २०४२ जेठ २७ गतेको गोरखापत्रमा प्रकाशित छ । यो लेख अध्यात्मतर्फ आकृष्ट भई जीवनजगतको चिन्तन प्रस्तुत गर्न केन्द्रित छ । आध्यात्मिक उन्नति भनेको मनको उन्नति र ज्ञानको उन्नति हो, जबसम्म मानिसले अशुद्ध एवं चञ्चल मनलाई कर्मयोगको माध्यमबाट शुद्ध र शान्त तुल्याई आफू र आफ्नो कर्तव्य चिन्दैन तबसम्म मानिसमा दुर्वासना हट्दैन । अतः मनलाई सर्वप्रथम शुद्ध तुल्याउनुपर्छ भन्ने लेखकको विचार रहेको छ । यसरी मन निर्मल भई ज्ञान प्राप्त गरेपछि भौतिक उन्नतिको द्वार उद्घाटित हुन्छ । त्यसपछि अध्यात्मचिन्तन गरी परमेश्वर प्राप्त गर्न अवलम्बन गरिने मार्ग नै उन्नतिको मार्ग हो । यी दुईको समन्वय भए मात्र परमेश्वरसँग साक्षात्कार हुनसक्छ भन्ने लेखकको विश्वास रहेको छ । यस शीर्षकअन्तर्गत पाइने विषयवस्तु यही नै हो ।

आदिकविको आध्यात्मिक चिन्तन : प्रस्तुत लेख चन्द्रावती माध्यमिक विद्यालय तनहुँबाट प्रकाशित वार्षिक पत्रिका "चन्द्रिका" २०४८ को अङ्कमा प्रकाशित छ । यस लेखको स्रोतका रूपमा लेखकको "भानुको भावना" नामक कृतिलाई लिन सकिन्छ । छोटो कलेवरमा प्रकाशित यस लेखमा उनले भानुभक्तमा विद्यमान आध्यात्मिक भावनाको चर्चा गरेको छन् । उनी यस लेखमा लेख्छन् - भानुभक्त आचार्यको भावना भौतिक रूपमा बहुजन हिताय र बहुजन सुखाय थियो भने आध्यात्मिक

रूपमा अद्वैतपरक थियो । उनले जीव र ब्रह्मबारे राम्रो अध्ययन गरेका थिए । अद्वैतदर्शनले बताएको 'जीवो ब्रह्मैव नापर' को भावना नै उनको वास्तविक भावना थियो । उनले रामायण, प्रश्नोत्तरमाला र भक्तमालामा यही कुरा बताएका छन् । अतः भानुभक्तको चिन्तन जीवनमुक्ति दिलाउने थियो भन्ने यस लेखको सार रहेको छ ।

आदिकवि भानुभक्तको संक्षिप्त जीवनी: प्रस्तुत लेख साभ्ना प्रकाशनद्वारा वि.सं. २०५० मा प्रकाशित 'भानुभक्तको रामायण' को परिशिष्टका रूपमा सङ्गृहीत छ । यस लेखमा उनले भानुभक्त आचार्यको जन्म, जन्मस्थान, शिक्षा-दीक्षा, भानुभक्तीय रामायणको क्रमिक रचना, बधूशिक्षा, भक्तमाला, प्रश्नोत्तर पञ्चाशिका आदिको रचना र भानुभक्तको रसिक स्वभावको चर्चा गरेका छन् । अन्त्यमा वि.सं. १९२५ आश्विन शुक्लपञ्चमीको दिन भानुभक्त आचार्यको देहावसान भएको कुरा उल्लेख छ ।

विद्वान्को कसी नै विनय हो : प्रस्तुत लघुलेख भानु संस्कृत माध्यमिक विद्यालयको स्वर्णजयन्ती-२०५१ को स्मारिकामा प्रकाशित छ । यो अत्यन्तै लघु आकारको रहेको छ । यस लेखमा उनले जसरी सुन कसीमा घोटेर चम्किलो बन्छ त्यसरी नै विद्वान् पनि विनयको कसीमा मापित भएर चिनिन्छ भन्ने आशय प्रस्तुत गरेर अन्त्यमा नम्रशील बन्न सबैलाई अनुरोध गरेका छन् । यस लेखको मूल-आशय यही हो ।

परिच्छेद : छ उपसंहार तथा निष्कर्ष

६.१ उपसंहार

मुक्तिनाथ आचार्य वि.सं. १९८३ ज्येष्ठ २४ गते आइतवारका दिन पिता देवीभक्त तथा माता दिव्यलोकाका साहिंला पुत्ररत्नका रूपमा हालको गण्डकी अञ्चल तनहुँ जिल्लाअर्न्तगत पर्ने चुँदीरम्घा गाउँमा जन्मिएका हुन् । उनको बाल्यकाल हजुरआमा तथा बाबुआमाको बात्सल्यप्रेम र बालसुलभ क्रियाकलापमा बितेको पाइन्छ । उनले ६ वर्षको उमेरमा पिता देवीभक्तसँग अक्षरारम्भ गरी संस्कृतमा प्रथमा र निजामतीतर्फ ११ कक्षा उत्तीर्ण गरेका छन् । अध्ययनकै क्रममा वि.सं. १९९७ फागुनमा उनको विवाह भयो । त्यसपछि उनले वि.सं. १९९९ बाट लेखनदाससिपाही पदमार्फत जागिरमा प्रवेश गरे र वि.सं. २०१२ मा अवकास लिई पुनः २०१७ मा केन्द्रीय तथ्याङ्कविभागमा नियुक्त भई वि.सं. २०२० सम्म सेवा गरी जागिरे जीवनबाटै अवकास लिए । त्यसपछि उनले व्यावसायिक रूपमा लेखनदास, तालुकदार र घरेलु उद्योग सञ्चालन लगायतका काम गरे । साथसाथै अद्वैतसंस्थामा प्रवेश लिई वि.सं. २०३६ - ३९ बीच सो संस्थाको कन्द्रीय सचिव समेत बन्न पुगे ।

मुक्तिनाथ आचार्य नेपाली साहित्यमा मूलतः भानुभक्तीय जीवनीकार, कवि, अनुवादक र अंशतः निबन्धकारका रूपमा परिचित छन् । उनी अध्यात्म र अद्वैतदर्शनसँग सम्बद्ध कृतिहरूको लेखन - प्रकाशन तथा प्रवचन आदिमा संलग्न रहदै आएका छन् । यसका अतिरिक्त उनी नेतृत्वदायी समाजसेवी, सामान्य व्यवसायी र भ्रमणशील व्यक्तित्वका रूपमा पनि समाजमा चिनिएका छन् ।

मुक्तिनाथ आचार्यको साहित्यिक यात्रा वि.सं. २०१८ बाट सुरु भए पनि उनले वि.सं. २०२८ सम्म कुनै पुस्तकाकार र फुटकर रचना प्रकाशित नगरेका हुँनाले उनको साहित्यिक यात्राको यस अवधिलाई पृष्ठभूमिकाल मानी वि.सं. २०२९ मा प्रकाशित आह्वान खण्डकाव्यलाई आधार मानेर यसै कृतिमार्फत उनको साहित्यिक यात्राको प्रारम्भिककाल निर्धारण गरिएको हो । यो अवधि गुणवत्ताको दृष्टिले उनको साहित्यिक यात्राको अभ्यासावस्था हो । यस अभ्यासलाई उनले वि.सं. २०४१ मा परिष्कार र परिवर्धन गरेका कारणले यसपछि उनको लेखनको उत्कर्षकाल प्रारम्भ हुन्छ । गुणवत्ताको दृष्टिले यस अवधिलाई उनको साहित्यिक यात्राको दोस्रो चरणभन्दा पृथक् मानिएको छ ।

मुक्तिनाथका पृष्ठभूमिकालीन कविता भावगत सरल, कम साहित्यिक, गीतिमय र प्रचारमुखी छन् । तिनीहरूमा नैतिक उपदेशको ईषद् आभासमात्र भत्किन्छ । यसै चरणका उनका निबन्धहरू बालबालिकालाई अनुशासित बनाई राष्ट्रप्रेमको बीजाङ्कुरण गराउन प्रयत्नरत छन् । साथै बालमस्तिष्कमा आचार, नीति-उपदेश र आध्यात्मिक जागरणको बीजारोपण गर्न पनि तिनीहरू सहयोगी भएका छन् । तिनीहरूमा साहित्यिक भाव, आलङ्कारिकता र चिन्तनको गाम्भीर्य कम र उपदेश ज्यादा पाइन्छ । भाषाशैलीगत दृष्टिले पनि ती निबन्धहरू ज्यादा सरल छन् ।

मुक्तिनाथको साहित्यिक यात्राको प्रारम्भिक चरणका कृतिहरू खण्डकाव्य र जीवनी उपविधामा विभक्त छन् । उनका यस चरणका खण्डकाव्यहरूमा प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन, नैतिक र सामाजिक जागरण एवं कर्तव्यनिर्देशन पाइन्छ । त्यस्तै दोस्रो खण्डकाव्यमा आध्यात्मिक र नैतिक उपदेशका साथै सांसारिक विषयवासनाको क्षणिकता र लौकिक प्रपञ्चको अवास्तविकता सिद्ध गर्दै मोक्षप्राप्तगर्न अवलम्बन गर्नुपर्ने उपायहरूको सामान्य वर्णन गरिएको छ । यसै चरणको जीवनीमूलक कृतिमा चाहिँ भानुभक्त आचार्यको जीवनचरित्रको मनोरञ्जक वर्णन गर्दै उनमा विद्यमान आध्यात्मिक भावनाको प्रकाशन

गरिएको छ । यस चरणसम्म आइपुग्दा उनी एक प्रारम्भिक जीवनीकार र कुशल खण्डकाव्यकारका रूपमा परिचित भएका छन् । साथै एउटा कुशल अध्यात्मवादी चिन्तक, प्रखर उपदेष्टा र जुभारु कवि व्यक्तित्वको विकास उनको यस चरणको लेखनले गरिसकेको छ । यस चरणका उनका कृतिहरू विषय-वस्तुगत सरलताबाट गम्भीरतातर्फ आकृष्ट हुँदै सामान्य उपदेशबाट प्रकृति, ईश्वर र भौतिक जगत्को गहन चिन्तनमा संलग्न भएका छन् । यी कृतिहरूमा दार्शनिक बोझको हलुका आभास पनि पाइन्छ ।

उनको साहित्यिक यात्राको उत्कर्षकालमा एउटा जीवनीमूलक र अर्को अनुवादकाव्य गरी दुई कृति प्रकाशित छन् । दुई भिन्न-भिन्न विषय र विधामा प्रकाशित ती कृतिबीच लेखकीय प्रौढताको साधर्म्य पाइएकोले ती दुई कृतिलाई एकै कालखण्डमा समावेश गरिएको हो । यस चरणको खोजपूर्ण जीवनी भानुको भावनाको परिमार्जित र परिष्कृत चेतनाको विकास एवं अध्ययनक्षेत्र विस्तारको परिणति हो भने विवेकचूडामणिको अनुवाद पनि अद्वैतसंस्थामा समावेश भई दुई दशकभन्दा बढी चिन्तनमनन, प्रवचन र अध्ययन गर्दाको परिणाम हो । यी दुवै कृतिले मुक्तिनाथलाई परिष्कृत र प्रौढ लेखक सिद्ध गरेका छन् । खोजपूर्ण जीवनीमा मुक्तिनाथले भानुभक्तको पारिवारिक स्रोतबाट प्राप्त गरेका कतिपय तथ्यहरू (जस्तै भानुभक्तको प्रथम विवाह, भानुभक्तको जन्मस्थान, भानुभक्तले सप्ताहवाचन गरेको प्रसङ्ग, भानुभक्तका मामाको पहिचान र घर, भानुभक्तले पढेको लघुकौमुदीको अन्तिम पातो, कविपुत्र रमानाथको परिचय र “गजाधर सोतीकी... ” पद्यको परोक्ष रचना) थप गरेका छन् ।

यी विषयमा उनको खोजी महत्त्वपूर्ण सावित भएको छ । दोस्रो कृति विवेकचूडामणिलाई नेपालीमा पद्यानुवाद गरेर उनले नेपाली भक्तिसाहित्यका पाठकलाई महत्तम उपलब्धि प्रदान गरेका छन् । विवेकचूडामणि आफैमा गम्भीर र दार्शनिक गूढार्थयुक्त कृति हो । यसको दार्शनिक बोझलाई सामान्य पाठकले सहजै वहन गर्न सक्दैन । तर मुक्तिनाथले यसलाई नेपालीमा पद्यबद्ध भावानुवाद गरेर निकै जटिल कार्य सम्पन्न गरेका छन् । यस कृतिको अनुवादबाट उनी गहकिला दार्शनिक व्यक्तित्वका रूपमा चिनिएका छन् । यस अनुवादको भाषाशैली ज्यादै क्लिष्ट नभई सामान्य पाठकले अर्थबुझ्न सक्ने किसिमको छ । यसको अनुवादशैलीको पनि छुट्टै विशेषता छ ।

मुक्तिनाथका फुटकर रचना र कविता आध्यात्मिक नैतिक लेखका रूपमा विभाजित छन् । ती फुटकर कविताहरूको निष्कर्ष राष्ट्रप्रेम र सामाजिक जागरणको उद्घोष रहेको छ भने उनका लेखरचनाहरूको निष्कर्ष चाहिँ आध्यात्मिक चेतनाको प्रचार गर्नु देखिन्छ ।

धारागत दृष्टिले अध्ययन गर्दा उनका कृतिलाई नैतिक औपदेशिक धारा, सामाजिक सुधारात्मक धारा र अध्यात्मचिन्तनमूलक धारा गरी तीन पौरस्त्यधाराअन्तर्गत समेटेर अध्ययन गर्न सकिन्छ । उनको आह्वान खण्डकाव्यमा नैतिक उपदेशका साथै सामाजिक सुधारको दिग्दर्शन गराइएको छ भने हितको संवादमा नैतिक उपदेशलाई आधारबिन्दु मानेर आध्यात्मिक जागरणको शङ्खघोष गरिएको छ । साथै यस कृतिमा वेदान्तदर्शनसम्मत अध्यात्मचिन्तनको बीजाधान भएको छ, जुन विवेकचूडामणिमा सशक्त रूपमा प्रस्फुटित हुन्छ ।

मुक्तिनाथका दुई जीवनीमूलक कृतिलाई शैलीगत रूपमा अध्ययन गर्दा भावका दृष्टिले पहिलो भावुकशैलीप्रधान छ भने दोस्रो चाहिँ संयतशैलीमूलक छ । प्रथम जीवनीमा उनी आफ्ना चरित्रनायकलाई भावुकतावश अतिरञ्जित विशेषणबाट विभूषित गरी यथार्थबाट टाढा पुऱ्याउछन् भने दोस्रो कृतिमा चाहिँ उनी अन्वेषकीय भाषातर्फ आकृष्ट बन्दै गएकाले संयमित भएका छन् ।

भाषाका दृष्टिले दुवै जीवनीमा प्रासादशैलीको प्रयोग भएको छ । दुवै जीवनीको भाषाशैली सरल, सुबोध र सर्व-ग्राह्य छ । कता-कता वाक्यगत घुमाउरोपन र अर्थगत अस्पष्टता पाइए पनि समग्र कृति सरल छ ।

विषयवस्तुको प्रतिपादनका दृष्टिले दुवै जीवनी वर्णनात्मक शैलीमूलक छन् । पहिलो कृतिको वर्णनमा आत्मपरकताको सामान्यसङ्केत देखिए पनि व्याप्त छैन । दोस्रोमा भने केही ठाउँमा व्याख्यान र समालोचकीय शैलीको पनि उपयोग छ । तापनि त्यसमा वर्णनमूलकता नै पाइन्छ ।

६.२ निष्कर्षहरू

समग्रमा मुक्तिनाथका कृतिगत निष्कर्षलाई बुँदागत रूपमा यसरी प्रस्तुत गर्न सकिन्छ :

- १। मुक्तिनाथरचित कृतिका प्रेरणास्रोत आदिकवि भानुभक्त आचार्य, क्षितीशचन्द्र चक्रवर्ती र लेखनाथ पौड्याल हुन् ।
- २। उनी आख्यानमुक्त संरचनामा काव्यरचना गर्छन् ।
- ३। उनका पात्रहरू मानवीय र मानवेतर, दुवैथरी हुन्छन् । तिनीहरूमा आपसी क्रियाकलाप पाइँदैन ।
- ४। ती जीवनीमा चरित्रनायकको चरित्र उद्घाटनका साथ-साथै तत्कालीन परिवेशको पनि दिग्दर्शन गराइएको छ ।
- ५। उनले काव्य एवं जीवनीमा हाम्रो देशका हिमाल पहाड र तराईको चित्रण गर्नाका साथै कुनै कृतिमा अलौकिक परिवेशको पनि सामान्य सङ्केत गरेका छन् ।
- ६। उनका कृतिको सारवस्तु अध्यात्मचिन्तन नैतिक-सामाजिक उपदेश र चरित्रनायकको चरित्र प्रकाशन गर्नु हो ।
- ७। उनी शीर्षक प्रयोगमा सारवस्तु, शैली र विषयलाई मुख्यआधार मान्छन् ।
- ८। उनका कृतिमा रसगत सबलता पाइँदैन ।
- ९। उनी कतै खण्डहीन र कतै खण्डीय संरचनामा खण्डकाव्य निर्माण गर्छन् । र उनका कृतिको आयाम मझौलो हुन्छ ।
- १०। उनका कृतिमा लयगत सबलता स्पष्ट भल्कन्छ ।
- ११। उनका कृतिको कथनपद्धति अधिकांश प्रत्यक्ष, कतै अप्रत्यक्ष र न्यून ठाउँमा मिश्रित हुन्छ ।
- १२। उनका काव्यमा उपमानवाची बिम्बको अधिकतर प्रयोग छ, भने मानसिक चित्रबोधक र सुन्दर अनुच्छेद बुझाउने बिम्बको पनि सामान्य प्रयोग छ ।
- १३। उनका काव्यमा अर्थालङ्कारको अधिकतम र शब्दालङ्कारको सामान्य प्रयोग छ ।

- १४। उनका अनूदित काव्यको भाषाशैली अपेक्षाकृत कठिन भए पनि अन्य काव्य र जीवनीमा भाषाशैलीगत सरलता कायम छ ।
- १५। उनका दुई जीवनीमा चरित्रनायक भानुभक्तलाई सद्पात्र, सामाजिक व्यक्तित्व र कविका रूपमा उभ्याइएको छ ।
- १६। यी दुई जीवनीले र अनूदित काव्यले मुक्तिनाथलाई राष्ट्रियस्तरको जीवनीकार एवं अनुवादक कविका रूपमा चिनाएका छन् ।

भावी अनुसन्धनाका विषयहरू

१. विवेकचूडामणि (छन्दोबद्ध नेपाली भावानुवाद) -को मूल कृतिसँग तुलना ।
२. विवेकचूडामणि (छन्दोबद्ध नेपाली भावानुवाद) -मा मौलिकता ।
३. मुक्तिनाथको खोजपूर्ण जीवनीसँग अन्य भानुभक्तीय जीवनीको तुलना ।
४. मुक्तिनाथका साहित्यिक कृतिमा नीति र अध्यात्मदर्शन ।

परिशिष्ट : क

प्रस्तुत शोधपत्रको निर्माण-क्रममा मुक्तिनाथको जीवनी र व्यक्तित्वबारे अवगत भएका समकालीन/सहपाठी/ज्ञाता केही व्यक्तिहरूसँग छोटो अन्तर्वार्ता लिइएको थियो, त्यसको केही अंश तल प्रस्तुत छ :

१. सूर्यनाथ ढकाल चुँदीरम्घा तनहुँ ।

⇒ तपाईं मुक्तिनाथ आचार्यलाई कहिलेदेखि जान्नुहुन्छ ?

मुक्तिनाथजीको र हाम्रो घर चुँदीमा पहिले देखि नै सँगै हो । तापनि उहाँ अग्रज हुनुभएकोले सानो छँदा हाम्रो सम्पर्कमा आउनु भएन । विशेष चिनारी चाहिँ उहाँ वि.सं. २००८ मा बन्दीपुर सरुवा भई आउनु भएपछि भएको हो । त्यसपछि केही वर्ष हामी सँगै भयौं ।

⇒ त्यसो भए वि.सं. २०११ मा मुक्तिनाथ थुनामा पर्नाको कारण तपाईंलाई थाहा होला नि ?

त्यस समयमा हामी सँगै बस्थौं । थाहा नपाउने त कुरै भएन । र मैले त्यस घटनालाई नजिकबाट नियालेको छु । खास कुरा के हो भने बन्दीपुरका साहूमहाजनहरू त्यसक्षेत्रमा आउने कुनै पनि नयाँ मानिसलाई अधिनमा राख्न चाहन्थे । मुक्तिनाथ पनि कसैसँग हच्किनुहुन्नथ्यो । त्यसकारण दुबैपक्षबीच चिसोपन बढिरहेको थियो । यस्तो परिस्थितिमा वि.सं. २०११ असोजमा तनहुँ घिरिङ् नाङ्गेटार निवासी गुणाखर देवकोटाको घरमा भएको चोरीकाण्डमा परेको उजुरीमा मुक्तिनाथ आचार्यको टोलीले पत्ता लगाई ल्याएका चोरहरूमध्ये जुद्धे कुमाल भन्ने व्यक्ति अस्वस्थताको कारण थुनिएको २१ औँ दिनमा मर्‍यो । सो घटनाको दोषी मुक्तिनाथलाई ठहर्‍याई चोरका आफन्तहरूले बन्दीपुर अदालतमा उजुरी गरे । सो उजुरीमा बन्दीपुरेहरूले पनि चोरकै पक्ष लिए । र उक्त मुद्दा फैसला नभएसम्म उहाँ चारखाल अड्डा काठमाडौँमा एकमहिनासम्म थुनिनु भयो । सो मुद्दामा सफाई पाएपछि पुनः बन्दीपुरमा हाजिर भई प्रधानन्यायालयमा जागिर सारेर वि.सं. २०१२ मा उहाँले जागिर छोड्नु भयो ।

⇒ वि.सं. २०१२ पछि उहाँले के गर्नुभयो ?

जागिर छोडेपछि उहाँले आधुनिक प्रविधिले खेती गर्ने, बाखापालन गर्ने लगायतका योजना बनाई दुईवर्षसम्म त्यसअनुसार काम गर्नु भयो । तर दुई वर्षसम्ममा पनि आशानुरूप सफलता नभएपछि उहाँले सो कार्य पनि छोड्नु भयो ।

⇒ वि.सं. २०१७ पछि नि ?

वि.सं. २०१७ पुसमा उहाँ केन्द्रीय तथ्याङ्कविभागमा खरदार पदमा नियुक्त भई पुनः जागिरमा प्रवेश हुनुभयो । र २०१८ र ०१९ का जनगणना, कृषिगणना एवं जनगणना सर्वेमा सहभागी हुनुभयो । वि.सं. २०२० मा सो कार्यालयबाट अवकाश लिएपछि लेखनदास, तालुकदारी, उद्योग सञ्चालन लगायतका काम गर्नुभयो मुक्तिनाथ धेरै क्षेत्रमा लागेर पनि सफल नहुनाको कारण के हो ?

मुक्तिनाथमा प्रभावकारी र अस्थिर दुई व्यक्तित्व छन् । प्रभावकारी व्यक्तित्वका मद्दतले उहाँ कुनै नयाँ काम थाल्नुहुन्छ, त्यसपछि उहाँको अस्थिर व्यक्तित्वले जित्छ, अनि थालेको काम बीचमै छोड्नुहुन्छ ।

२. ऋषिभक्त ढकाल

चुँदीरम्घा, तनहुँ ।

⇒ मुक्तिनाथ आचार्यसँग तपाईंको सम्पर्क कहिलेबाट भएको हो ?

म वि.सं. २००८ सालमा बन्दीपुरस्थित हाईस्कूलमा पढ्थेँ, त्यसैबेलादेखि उहाँसँग मेरो निकट सम्पर्क भएको हो ।

⇒ उहाँमा त्यस्तो के खूबी पाउनुभएको छ ?

मुक्तिनाथमा अरूलाई प्रभावित पार्न सक्ने असाधारण कला छ । त्यसैबाट उहाँ देश विदेशमा महिनौंसम्म घुमफिर गर्नुभएको छ र धेरै मानिसलाई आफ्नो बनाउनुभएको छ ।

⇒ उहाँको दुर्गुण ?

उहाँ पहिले अलि बढी महत्त्वाकाङ्क्षी हुनुहुन्थ्यो । त्यसैले जागिरमा बर्षेनि बढुवा भएर पनि टिक्न सक्नुभएन र धेरै ठाउँमा असफल पनि हुनुभयो । यसका साथै उहाँमा अहम् पनि देखिन्छ ।

⇒ उहाँबाट सिक्नुपर्ने कुरा ?

मानिसले सधैं केही नकेही गरिरहनुपर्छ । सफलता-असफलता हाम्रो वशको कुरा होइन । कहीं पनि हामीले आफ्नो स्वाभिमान गुमाउनुहुन्न ।

३. रामचन्द्र पण्डित

अद्वैतसंस्था, शाखा कार्यालय देवघाट, तनहुँ ।

⇒ तपाईं मुक्तिनाथलाई कहिलेदेखि जान्नुहुन्छ ?

वि.सं. १९९१ पछि गुरु रुद्रशङ्कर पौड्यालसँग हामीले सँगै पढेका हौं । त्यसपछि म करिब चारदशक उहाँको निकट सम्पर्कमा भइँन । वि.सं. २०३६ तिर उहाँ अद्वैतसंस्थाको केन्द्रीय सचिव बनाइनुभयो र हाम्रो सम्पर्क पुनः बढेर गयो ।

⇒ उहाँको स्वभावबारे तपाईंलाई के-कति थाहा छ ?

उहाँ स्मरणशक्ति तीव्र भएको र खरा स्वभावका हुनुहुन्थ्यो । कुनै पनि काममा सधैं अगाडि सर्ने उहाँको बानी थियो । गुरुले लगाउनुभएको काम पनि उहाँ सहजै सम्पन्न गर्नुहुन्थ्यो त्यसैले गुरुले उहाँलाई वि.सं. २०३७ मा “प्रोज्ज्वल तारा पदक” द्वारा विभूषित गर्नुभयो । मलाई अद्वैतसंस्थाको केन्द्रीय सह-सचिव बनाउन उहाँले नै सिफारिश गर्नुभएको हो ।

⇒ त्यसोभए उहाँलाई वि.सं. २०३९ मा लागेको अनियमितताको आरोपबारे बताइदिनुहुन्छ कि ?

वि.सं. २०३७-३९ बीच श्री ५ को सरकारले अद्वैतसंस्थालाई प्रौढशिक्षा सञ्चालन गर्न जिम्मेवारी दिएको थियो । त्यसअनुसार मुक्तिनाथले हालको तनहुँको डुम्रीखर्कमा उक्त कार्यक्रम चलाउनु भएको थियो । कक्षासञ्चालनको एक वर्षपछि त्यहाँका शिक्षक श्रीदीर्घनारायण श्रेष्ठले मासिक पारिश्रमिक नपाएको भनी यस संस्थाको केन्द्रीय समितिमा आवेदन दिए । त्यस समयमा मुक्तिनाथ सङ्गठन विस्तारका क्रममा कैलाली, धनगढी र महेन्द्रनगरतिर जानुभएकाले गुरुले त्यस निवेदनमाथि छानविन गर्न वसन्तलाल चुकेलाई सुम्पिनु भयो । वसन्तलालको छानविनअनुसार मुक्तिनाथले रकमनिकासा गरी निजलाई नदिएको ठहरियो र गुरुले तुरुन्तै उहाँलाई अद्वैतसंस्थाबाटै निलम्बन गर्नुभयो । भ्रमणबाट फर्किएपछि उहाँले त्यो कुरा थाहा पाउनु भयो र पनि गुरुको सम्पर्कमा जानुभएन । त्यसबेला मुक्तिनाथ र वसन्तलालजीको सम्बन्ध राम्रो नभएकाले वास्तविकता नबुझी थप केही भन्न सकिन्न ।

४. वसन्तलाल चुके

नारायणगढ, चितवन

⇒ तपाईं मुक्तिनाथजीलाई कहिलेदेखि चिन्नुहुन्छ ?

मेरो पुर्ख्यौली घर तनहुँ बन्दीपुर हो । त्यसैले मैले उहाँलाई सामान्य रूपमा वि.सं. २००८/००९ बाटै चिनेको हुँ । वि.सं. २०३६ मा उहाँ अद्वैतसंस्थाको केन्द्रीय सचिव हुँदा म केन्द्रीय उप-सभापति थिएँ । त्यसपछि भने हाम्रो उठवस प्रायः सँगै हुन्थ्यो ।

⇒ के मुक्तिनाथजीले अनियमितता गर्नुभएकै हो त ?

उहाँले अनियमितता गर्नुभयो भएन ? मलाई थाहा छैन तर ती शिक्षकले पारिश्रमिक नपाएपछि गरिएको छानविनमा त्यस्तै देखियो । त्यसपछि उहाँ सम्पर्कमा पनि आउनुभएन र त्यसको प्रतिवाद पनि गर्नुभएन ।

⇒ उहाँको अन्यव्यवहार चाहिँ कस्तो थियो ?

तीनवर्षे सहवासमा मैले उहाँमा अन्य कुनै नकारात्मक सोच र व्यवहार पाइन । उहाँ असाध्यै लागनशील हुनुहुन्थ्यो । संस्थाले लगाएका अन्य सबै काम उहाँले सफलतापूर्वक गर्नुभएको छ । आफूले जान्नुभएको कुरा उहाँ सधैँ वितरण गर्नुहुन्थ्यो ।

⇒ उहाँको अद्वैतदर्शनप्रतिको चिन्तन कति गहिरो छ ?

उहाँको तत्कालीन अध्ययन त्यति गहिरो थिएन । त्यति बेलाका उहाँका लेखहरूबीच आपसी तालमेल थिएन भनेर गुरु सधैँ टिप्पणी गर्नुहुन्थ्यो । हाल म उहाँको सम्पर्कमा छैन ।

५. प्रयागदत्त आचार्य
चुँदीरम्घा, तनहुँ ।

⇒ मुक्तिनाथजीले सफलता पाएका क्षेत्र कुन-कुन हुन् ?

उहाँ समाजसेवामा सफल हुनुभएको छ । असहाय र पीडित मानिसलाई कानुनी सहयोग प्रदान गर्न पनि सफल हुनुभएको छ । विद्यालय निर्माण, व्यवस्थापन, धार्मिक कार्य सञ्चालन आदिमा पनि उहाँ सफल बन्नुभएको छ । उहाँको त्यो भन्दा सफल क्षेत्र साहित्य हो । र साहित्यभन्दा पनि सफल क्षेत्र चाहिँ अध्यात्मचिन्तन हो ।

⇒ उहाँको जागिरप्रवेश प्रसङ्गबारे तपाईंलाई केही थाहा छ कि ?

मलाई सामान्य कुरा चाहिँ थाहा छ । मैले बुझेअनुसार उहाँकी फुपु विष्णुमायाको राणापरिवारमा राम्रो सम्बन्ध थियो । त्यही सम्बन्धका कारण उहाँ मुलुकी अड्डाबाट जागिरमा प्रवेश गर्नुभएको हो ।

परिशिष्ट 'ख'

मुक्तिनाथले वि.सं. २०१८ र ०१९ मा सार्वजनिक रूपमा गाउँदै हिडेका दुई कविता

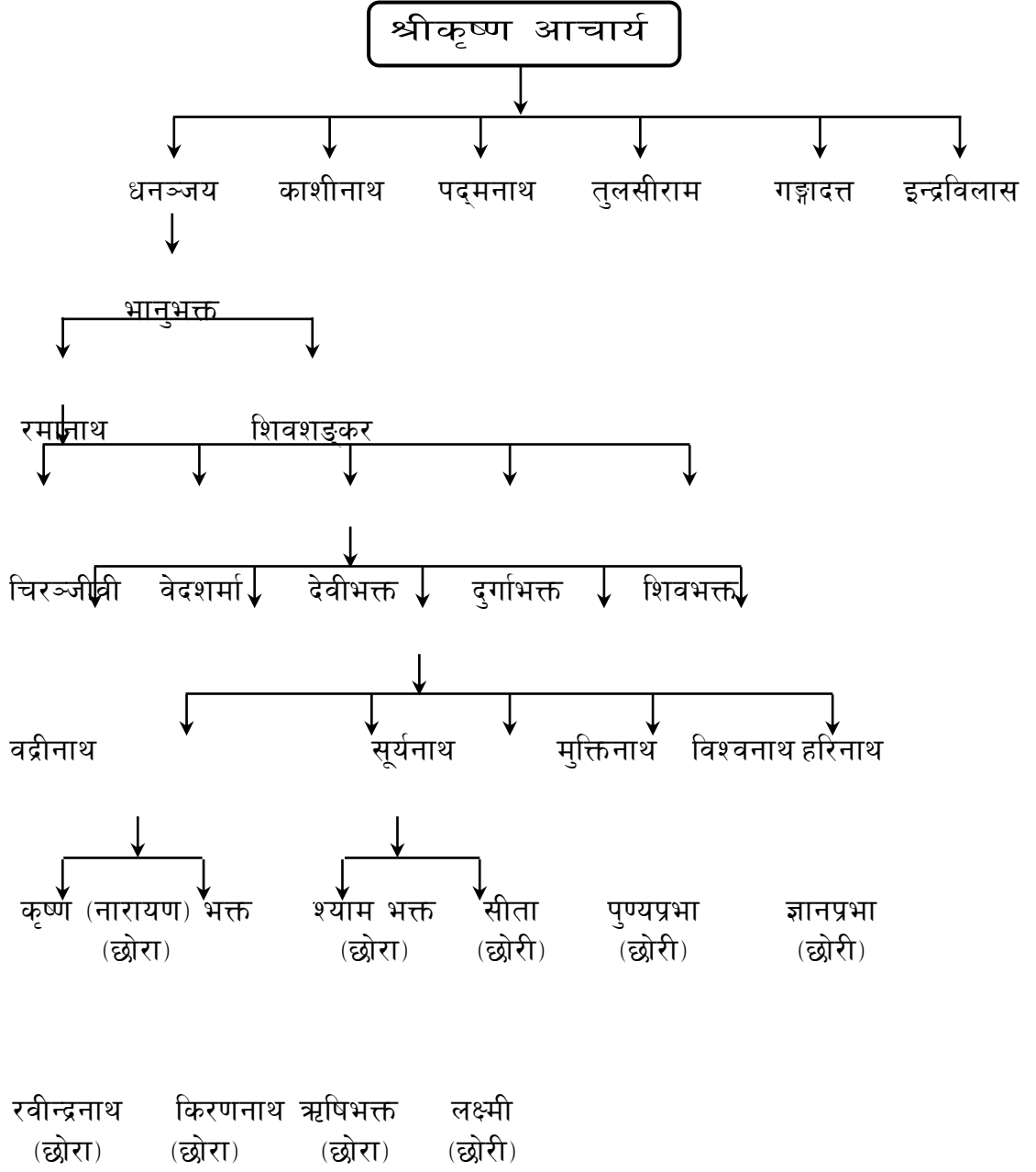
१. देशको ठूलो धन: जनबल

सबैभन्दा ठूलो छ जनबल यो हाम्रो देशको
जनसङ्ख्या ख्याल नभै गरिएको काम ।
घटिबढी पर्न गई नास हुन्छ धन ॥
जनबलकै आधारमा आयोजना बन्छ ।
जानी बुझी काम गरे देश राम्रो हुन्छ ॥
सबैभन्दा ठूलो छ धन जनबल यो हाम्रो देशको ॥
दुईवर्ष अघि हाम्रो जनसङ्ख्या भयो ।
देशभरि कति जना मान्छे थाहा भयो ॥
जनताकै सङ्ख्या लिई हाम्रो सरकार ।
योजनाकै वनदोवस्त गर्न लाग्यो हेर ॥
सबैभन्दा ठूलो छ धन जनबल यो हाम्रो देशको ॥
जनसङ्ख्या अनुसार इस्कूल अस्पताल ।
बाटो-घाटो कारखाना बन्छ साल-साल ॥
देश हाम्रो बन्छ-बन्छ धन्दा छैन हेर ।
सबैभन्दा ठूलो छ धन: जनबल यो हाम्रो देशको ॥
प्रतिवर्ष जन्म मृत्यु कुन रूपले हुन्छ ।
घटबढ के के हुन्छ ? कति असर पर्छ ?
सबै लगत ठिक गर्न हाम्रो सरकार ।
जनसङ्ख्या सर्भे गर्न लाग्यो आज हेर ॥
सबैभन्दा ठूलो छ धन जनबल यो हाम्रो देशको ॥
वर्षभरि जन्म मृत्यु कति भयो भन ।
विदेशमा कति गए ? कति घरै छन ॥
कुन मैन्हामा कति जन्मे ? कति जना मरे ?
कति जना जिल्ला छाडी अन्ततिर से ॥
भनी सोधी भरेर लगत सरकार गर्दैछ सुधार
योजनाको दुबै आँखा जनसङ्ख्या हुन्छ ।
भन्ने कुरा बुझ्नुपर्ने बेला आइरैछ ॥
साल भर्को जन्म मृत्यु पत्तालगाउन ।
जनसङ्ख्या सर्वे आज बोलाउछ सुन ॥
सबैभन्दा ठूलो छ धन: जनबल यो हाम्रो देशको ॥

२. कृषिसङ्ख्या लिएको किन ?

कृषिसङ्ख्या लिएको किन ? नेपाललाई फुलाउन फलाउन ।
अरू अरू देशमा भै हाम्रो देशमा सब
कृषिसङ्ख्या हुनलाग्यो पैलो पटक अब ।
आशा हाम्रो पूर्ति हुने बेला आयो राम्रो,
दुःख जति भागी भागी जान लाग्यो हाम्रो ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ?...
हाम्रो देश नेपालमा उब्जा कति हुन्छ ?
कस्तो खेतीपाती कहाँ कति हुन्छ ?
सबैकुरा जान्नु पन्यो सरकारलाई पैले
त्यसै निमित्त कृषिसङ्ख्या लिन खोज्यो ऐले ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ?...
जनसङ्ख्याअनुसार उब्जा हुन्छ हुन्न ?
भूखमरी हाहाकार नपरोस् है सुन ।
यै कुरालाई ध्यानमा राखी वनदोवस्त गर्न
सरकारले आँट्यो अब हाम्रो दुःख हर्न ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ?...
कस्तो कस्तो साधनले खेतीपाती हुन्छ ?
कृषकलाई सधैँभरि दुःखदर्द कुन्छ ?
जानीबुझी योजनाको काम सुरु गर्ने
सरकारको मन्साय छ सबको दुःख हर्न ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ?...
कृषिभन्दा खेतीपाती वस्तुभाउ सब
त्यसैभिन्न पर्न जान्छ, बुभनुहोला अब ।
खुशीसाथ तथ्य कुरा लेखाउनु होला,
घटिबढी पार्नुहुन्न राम्रो बुभनु होला ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ? नेपालमा उन्नति बढाउन ॥
घटिबढी पर्न गए विग्रिगयो चाला
सधैँभरि दुःख पाई हामी हिन्छौँ होला ।
एकातिर सरकारको नास हुन्छ कोष
काम राम्रो नभएमा कस्लाई दिने दोष ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ? नेपालीको भाग्यलाई जगाउन ॥
अरू-अरू देशमा भै हाम्रो देशमा पनि,
उन्नति र विकासलाई बढाउन भनी ।
सरकारले कस्यो कम्मर् सत्य मान्नु होला,
यस्मा कति शंका छैन हुक्क पर्नु होला ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ? नेपाललाई विकसित बनाउन ॥
सरकारको कदमलाई कदर गरिकन
सहयोग दिनुहोला खुशी भई कन ।
मौका आउछ पखिँदैँन समयको कर्म
मौकाछोपी करम गर्नु मानिसको धर्म ॥
कृषिसङ्ख्या लिएको किन ? नेपाललाई फुलाउन फलाउन ॥

परिशिष्ट ग
मुक्तिनाथ आचार्यको वंशवृक्ष



परिशिष्ट घ

मुक्तिनाथ आचार्यले वि.सं. २०२४ मा रचना गरेको र हालसम्म प्रकाशित हुन नसकेको 'कर्णधारको लागि' निबन्धसङ्ग्रहका बारेमा वरिष्ठ साहित्यकारहरूले भूमिका लेखेका छन् । तल तिनीहरूलाई क्रमशः प्रस्तुत गरिएको छ :

१. बालकृष्ण समले लेखेको भूमिका

श्रीमुक्तिनाथ आचार्यले लेखेकाहरूको 'कर्णधार' को लागि मैले हेरेँ । उहाँले बालक बालिका तथा प्रौढहरूको समेत विचार तथा चरित्रबोध उच्च होस् भन्ने उद्देश्यले लेखेकाहरूको यो पुस्तक प्रशंसनीय छ । श्रीआचार्यज्यूलाई यसमा सफलता मिलोस् भन्ने मेरो हार्दिक शुभकामना छ, किताबले उहाँलाई सफलता मिलेको अर्थ नै देशविकासमा लाग्ने कर्णधारहरूको सफलता हुन आउँछ । त्यस्तै होओस् ।

शोकेन्द्र काठमाडौं
२०३० आषाढ ४

बालकृष्ण सम

२. सूर्यविक्रम जवालीले लेखेको भूमिका

श्री मुक्तिनाथ आचार्य सित अब नेपाली
साहित्य जगतको ^{परिचय} वरिष्ठ विविध कृतिहरू द्वारा
मै सकेको छ। वहाँ आफ्नो
रचना गर्नु भयेका अनेक रचनाहरू न भयेता पनि
प्रातः स्मरणीय मानुषहरूका वंशजका रूपमा
प्रत्येक नेपाली साहित्य प्रेमी सित वहाँको
स्वाभाविक परिचय हुने थियो।

यो पाखा आचार्यज्यूले हाम्रो राष्ट्रका
भविष्यका कर्णधार किशोर किशोरीहरू सित
आफ्नो यो पुस्तक "कर्णधारको लागि" का माध्यम
बाट कुरा गर्नु भयेको छ। उनीहरूलाई आफ्ना
बानि तथा अनुभव द्वारा स्वारियेको उपदेश
दिनु भयेको छ। जीवनका जती
असह्य कुरा मानियेका छन् तिनको महत्त्व
तिनका पालनमा नै निर्भर गर्छ। असह्य गुण
मानिसका बानिमा परिवर्तित हुनु पर्छ। तेस्रो
भयेन भने सो गुण गफको साधन मात्र हुन्छ।
गुणलाई बानिमा परिवर्तित तथा विकसित
गराउने असह्य उमेर बाह्यमापस्था तथा ~~लेखे~~ त्यो
पक्षको किशोरवस्था नै हो। सम्पूर्ण शिक्षा
तथा सभ्यताको मूल उद्देश्य नै राम्रो बानिको
विकास हो।

यो पुस्तक ले छात्रो जानी कसवो हुन
 पछि उनो कुरो सिकाउंछ । राष्ट्रको गौरव नै आफ्नो
 गौरव हो भने सबै भन्दा ठूलो कुरो छात्रा
 लेपाली किशोर किशोरी हुने हो राष्ट्रारी बुझ्नु
 परेको छ । सो बुझ्नु यो पुस्तकमा वर्णन गरिएको
 अनेक गुण प्राप्त गर्न पछि राष्ट्रको इतिहास,
 संस्कृति इत्यादि सित पारिबित हुन पछि । त्यो
 महान् कर्तव्यपत्रको, मार्गदर्शक स्वरूप यो
 पुस्तक तथा यसमा भनियेका अर्थ हुन् । यो
 आफ्नो विद्या पढ्ने । यो रनीश जोषामा आफ्नो

मार्ग आफैं पहिचान गर्ने वा निर्णय गर्ने शक्ति
 बढ्दै जाने छ । उनीहरु आफुलाई जीवन पथमा
 सफै लतापूर्वक हिंडाउन सक्ने छन् ।
 आचार्यद्विपुको यो दिशात्मक गरिएको
 प्राथमिक उपयोग स्वरूप यो । सानो ग्रन्थबीज
 बाट यो सञ्चालनी अरु हुला हुला विचारपूर्ण
 ग्रन्थ बने बाट
 भविष्यमा लेखियेलाग्नु भन्ने भाषा गर्दै तथा
 वहाँको यो प्रयासको अडिगपदन गर्दै आफ्नो
 यो सानो वक्तव्य समाप्तो ज समाप्त गर्छ ।

हरि विद्यामाला

शरणा ६ २०४०

समल होओरि ए उहाँवरि अगउरि वएन पुं रण मित
भनु हामी सबैको कर्तव्य हो । यस पुस्तकले शिक्षा-
क्षेत्रका अधिकारिक व्यक्तित्वको ध्यानकर्षण गर्न लक्ष्य
र विशेष- किशोरीहरूको चरित्र-निर्माणमा सहयोग
गर्ने आफ्नो लक्ष्य प्राप्त गर्न संकेत भन्ने आकाङ्क्षा
पनि म व्यक्त गर्दछु ।

प्राध्यापक आवास गृह,
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
कीर्तिपुर ।

— वासुदेव त्रिपाठी

१० : पहिलो अंश, २०३०।

४. बदरीनाथ भट्टराईले लेखेको भूमिका

श्री

निवेदन

श्री मुक्तिनाथ आचार्यज्यूलेले खुम-
एको (आचार्यदेको भव) इत्यादि ३ विषय
भएको ज्ञानकुञ्जिका हेर्ने पाउँदा मलाई
प्रसन्नता आउनु स्वाभाविकै हो। आद्योपात्त
पछि ^{आस्थाको} अनुकूल नभएकोले ठाउँ ठाउँमा
मैले पर्छु। आध्यात्मिक विषय भएकोले
र लेखकको सरल तथा स्पष्ट लेखनकला
ले मेरो हृदयमा आनन्दको प्रादुर्भाव
गर्‍यो। यसै गरी पाठकहरूको मनको
शंका रूप नाश र शैली हृदयमा
ज्ञानदीप बालेर अज्ञानरूप अन्धकार हटाइ
दिनेछ भन्ने आशा गर्दु।

बदरीनाथ भट्टराई
२०४३ ज्येष्ठ कृष्ण दशमी

परिशिष्ट च

मुक्तिनाथको उद्योगसञ्चालन इजाजत प्रमाण पत्र

क्र. नं. २००७/१०३०

श्री २ श्री सरकार

उद्योग विभाग
सुदूरपश्चिम प्रदेश
विभाग विभाग
२०११

उद्योग विभाग

इच्छेता विभागा वरि
मि. २०३०/६१ प्र. वि. वि.
पुस्तक फर्मको पुस्तक २४०/०००
काम गरी पत्रको
२०३०/६१
मु. उ. वि. वि. वि.
मु. उ. वि. वि. वि.



प्रमाण-पत्र

शानु शक्ति कपडा उत्पादन कन्सु सम्बत २०३० साल जेठ
२८ गते रोज २ मा प्राईमेट फर्म रजिष्ट्रेशन ऐन २०१४ बमोजिम रजिष्ट्रेशन गरि

यो प्रमाण पत्र दिइएको छ ।

प्राईमेटको नाम श्री मुक्तिनाथ डाम्बाय,
ठेगाना श्री डी. डी. तर्कू चौडेर चौकोर दोर दोर गा. प. वार्ड ३
पु. ज. २५, १६२। अठारस हजार एकसय बासी,
उद्देश्य मुक्ति कपडा उत्पादन।
फर्मको रजाना :- २१

निर्देशक

नोट:- यो प्रमाण-पत्र चेत्र मसालत सामग्री बहाल हुनु। चेत्र मसालत अगाडि सांसको १ पटक लाग्ने रिन्युबल प्राईमेट फर्म रजिष्ट्रेशन बस्तुर संगोशन र पब्लिकरण नियमहरू २०१९ अनुसार बस्तुर तिरो सम्बन्धित गरी, गोरखरामा रिन्यु गाराउनु पर्छ। यो प्रमाण-पत्रमा लेखिएको उद्देश्य बाहेकको काम गर्न हुदैन। रिन्यु गाराउनु ल्याउने वा पठाउने वा प्रमाण-पत्र साधे लिई आउनु पर्छ। यही प्रमाण-पत्रको पछाडी सम्बन्धित भक्तिबाद रिन्यु भएको निस्सा पार्दिने छ ।

सन्दर्भ सामग्री विवरण

क) आधार पुस्तकहरूको सूची

आचार्य, मुक्तिनाथ. आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी. वाराणसी: मुक्तिनाथ आचार्य, २०४२ ।

_____. आदिकवि भानुभक्त आचार्य: खोजपूर्ण जीवनी. दो.सं.काठमाडौं: कृष्णआचार्य, २०५८ ।

_____. आह्वान, नारायणगढ: मुक्तिनाथ आचार्य. २०२९ ।

_____. हितको संवाद. काठमाडौं: मुक्तिनाथ आचार्य, २०३९ ।

_____. विवेकचूडामणिको नेपाली भावानुवाद. विराटनगर: गौतम प्रकाशन, २०५८ ।

ख) सन्दर्भ पुस्तकहरूको सूची

आचार्य, नरनाथ. आदिकवि भानुभक्त आचार्यको सच्चा जीवनचरित्र. दो.सं., काठमाडौं: पण्डित नरनाथ आचार्य, २०३६ ।

_____. कविसम्राट् भानुभक्त आचार्यको सच्चा जीवनचरित्र. काठमाडौं: कविराज पण्डित नरनाथ आचार्य, २०१७ ।

आचार्य, ब्रतराज. आदिकवि भानुभक्त... . ललितपुर: भा.ज.वि.स. २०५८ ।

आचार्य, शिवराज र अन्य सम्पा. भानुदर्शन १६ औं भानु जयन्ती स्मारिका. काठमाडौं: प्रा. सोमनाथ पौडेल, २०३३ ।

आचार्य, तीर्थराज र अन्य सम्पा. भानु सं.मा.वि.स्वर्ण जयन्ती स्मारिका. काठमाडौं : स्वर्ण ज.स.आ.स., २०५१ ।

आचार्य, बाबुराम. पुराना कवि र कविता. छैठौं, काठमाडौं: साभा प्र., २०५० ।

उपाध्याय, केशवप्रसाद. प्राथमिक कालीन कवि र काव्य प्रवृत्ति. ते.सं.काठमाडौं: साभा, २०४९ ।

कार्की, उपेन्द्र. शिक्षामनोविज्ञान. काठमाडौं: विद्यार्थी पु.भ., २०५४ ।

गौतम, मेघराज. नन्दनहरि व्यक्ति र कृति. काठमाडौं: ध्रुवहरि अधिकारी र अन्य, २०५६ ।

गौतम, कृष्ण. आधुनिक आलोचना अनेकरूप अनेकपठन. काठमाडौं: साभा प्र. २०५० ।

घिमिरे, भवानी. भानु (भानुभक्त विशेषाङ्क). वर्ष ८, किरण १६, २०२८ असोज ।

ज्ञवाली, सूर्यविक्रम. भानुभक्तको रामायण. चौ.सं., काठमाडौं: साभा प्र., २०५८ ।

थापा, मोहनहिमांशु. साहित्यपरिचय. चौ.सं., काठमाडौं: साभा प्र., २०५० ।

दुङ्गाना, लावण्य र अन्य. नेपाली खण्डकाव्य सिद्धान्त... . काठमाडौं: विद्यार्थी पु.भ., २०५८ ।

दुङ्ग्याल, शम्भुप्रसाद. आदिकवि भानुभक्त आचार्यको जीवनचरित्र. काठमाडौं: नीहार प्र.गृ., २०४९ ।

प्याकुल्याल, शम्भु. विवेकचूडामणि. काठमाडौं: भक्तगण, २०५१ ।

पहाडी, वामदेव. आलोचनाको वृत्त. काठमाडौं: ने.रा.प्र.प्र., २०५४ ।

पोखेल, बालकृष्ण र अन्य सम्पा. नेपाली बृहत् शब्दकोश. काठमाडौं: ने.रा.प्र.प्र., २०५२ ।

बराल, ईश्वर र अन्य सम्पा. नेपाली साहित्यकोश. काठमाडौं: ने.रा.प्र.प्र., २०५५ ।

बराल, कृष्णहरि र अन्य. उपन्यास सिद्धान्त र नेपाली उपन्यास. दो.सं., ललितपुर: साभा प्र. २०५८ ।

भट्टराई, घटराज र अन्य सम्पा. प्राचीन नेपाली पद्य. दो.सं., काठमाडौं: साभा प्र., २०४८ ।

भट्ट, मोतीराम. आदिकवि भानुभक्तको जीवनचरित्र. ललितपुर: साभा प्र., २०३८ ।

मिश्र, डिल्लीराम. नेपाल अधिराज्यमा तनहुँ. काठमाडौं: शर्मिला मिश्र, २०४५ ।

____. नेपाल अधिराज्यमा तनहुँ. दो.सं., काठमाडौं: शर्मिला मिश्र, २०५७ ।

मम्मट. काव्यप्रकाश (चतुर्थ उल्लास). वाराणसी: ज्ञानमण्डल लिमिटेड, ... ? ।

याज्ञवल्क्य. याज्ञवल्क्य स्मृति (आचाराध्याय). वाराणसी: चौ.सं.सं. २०५० ।

विष्णुमाया. भानुभक्त मणिमाला. वाराणसी: वि.के. शास्त्री, १९९८ ।

शर्मा, गोपीकृष्ण. नेपाली निबन्ध परिचय (भाग-३). ।

शर्मा, बालचन्द्र. भानुभक्त. दो.सं., काठमाडौं: रत्न पु.भ., २०३१ ।

शर्मा, मोहनराज र अन्य, शोधविधि, ललितपुर : साभा प्र., २०५२ ।

शर्मा, शरदचन्द्र र अन्य सम्पा. प्राचीन नेपाली गद्य. दो.सं., काठमाडौं: साभा प्र., २०४८ ।

शर्मा, ताना. भानुभक्तदेखि तेस्रो आयामसम्म. छैठौं, काठमाडौं: साभा प्र., २०५० ।

शमशेर, ब्रह्म. कवि भानुभक्त. वाराणसी: ब्रह्म शमशेर, १९९५ ।

श्रेष्ठ, दयाराम र अन्य सम्पा. नेपाली साहित्यको सं. इतिहास. पाँचौं सं. काठमाडौं: साभा प्र., २०५६ ।

____. नेपाली कथा भाग-४. ललितपुर: साभा प्र., २०५० ।

श्रेष्ठ, ईश्वरकुमार. पूर्वीय एवं पाश्चात्य.... दो.सं., काठमाडौं: साभा प्र., २०५४ ।

ग) शोधपत्रको सूची

सुवेदी, लक्ष्मी. भानुभक्त आचार्यको जीवनी र कृतित्वको अध्ययन. ने.के.वि., अप्र. शो., २०५६ ।

घ) पत्रपत्रिकाहरूको सूची

- अज्ञात, 'आह्वान परिचय', नयाँ किरण. (२०३० कार्तिक ९)
अधिकारी, निर्मलमणि. 'आदिकविलाई समेत राजनीतिबाट माथि राख्न सकेनन्'. देशप्रेम.
(२०६० असार २६) ।
- अधिकारी, निर्मलमणि. 'आदिकविकै परम्परामा'. घटना र विचार, (२०५९ चैत्र १९) ।
आचार्य, मुक्तिनाथ. 'आचार्य देवो भव'. गाउँ सेवा स्मारिका. अङ्क ४ (२०४१/०४२) ।
_____. 'गन्तव्यमा पुग्नुछ'. नवव्यासवाणी. (२०५७ जेठ १५) ।
_____. 'क्रान्तिकारी व्यक्तित्व भानु'. प्रतिक्रिया. (२०४१/४/१) ।
_____. 'राष्ट्रभक्ति र जनसेवा देव पूजा'. प्रतिक्रिया. (२०४१/४/२२) ।
_____. 'यो देह नै काप्दछ'. राष्ट्रिय सा.स. (२०५३, तनहुँ) ।
_____. 'आदेश पालना गरौं'. भानुश्री. (आ.क.भा.व.क्या. (मुखपत्र), २०५४/०५५) ।
_____. 'परोपकार नै पुण्य हो'. कविता. (छन्दोबद्ध कविता विशेषाङ्क, २०५६ वैशाख-
साउन) ।
_____. 'भावना परिवर्तन ल्याउनु समयको माग'. गोरखापत्र. (२०४२/१/१०) ।
_____. 'भौतिक र आध्यात्मिक उन्नतिको समन्वय'. गोरखापत्र. (२०४२/२/२७) ।
_____. 'आदिकविको आध्यात्मिक चिन्तन'. चन्द्रिका. (वर्ष १, अङ्क १, २०४८) ।
आचार्य, उपेन्द्र. 'हितको संवाद परिचय'. सगरमाथा. (२०३९ आश्विन ८) ।
आचार्य, शिवराज. 'आदिकवि भानुभक्त आचार्यको जन्मदिन'. मधुपर्क. (वर्ष ५, अङ्क २
(२०२९ असार) ।
कौडिन्यायन, आमोदवर्धन. 'भानुभक्तका जीवनीको खोजी: परम्पराका क्रमलाई हेदा'.
गोरखापत्र. (२०४४ असार २७) ।
घिमिरे, माधवप्रसाद. 'विवेकचूडामणिको नेपाली अनुवाद'. हिमालय टाइम्स. (२०५९ असार
१६) ।
घिमिरे, माधवप्रसाद. 'शङ्कराचार्यको कृति शान्तिको स्रोत हुनसक्ने'. कान्तिपुर. (२०५९
असार १६) ।
मिश्र, टुकराज. 'अझै घाँसी पत्ता लागेन'. गोरखापत्र. (२०५५ चैत्र १३) ।
रेग्मी, रत्ननिधि. 'कवि मुक्तिनाथ आचार्य'. साप्ताहिक विमर्श. (२०५१ चैत्र ३) ।
सुवेदी, राजाराम. 'आदिकवि भानुभक्तको विलुप्त जन्मघरको खोजी'. कान्तिपुर. (२०५४
कार्तिक ३०)